श्रीहंसविजयजी जैन लायब्रेरी ग्रन्थमाला नं० ५.

श्रीमन्मुनिश्री हंसविजयजीविरचित.

# हंसविनोद.

### वसंततिलका.

आनंदसूरिपदपद्ममनोज्ञ हंस
लक्ष्मीप्रपूर्वविजयाभिधपण्डितस्य ।
शिष्यैः कृता जयतु हंसविनोदनामा
स्तुत्यावलिर्जगति हंसविनोदनीयम् ॥ १ ॥

प्रसिद्धकर्त्ता,

श्रीहंसविजयजी जैन लायब्रेरी तरफथी

सेक्रेटरी–जेशंगभाई छोटालाल सुतरीया,

अमदावाद.

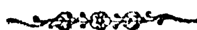
[illegible]

मुम्बइमां- निर्णयसागर छापखानामां छाप्युं.

वीर. २४४२, विक्र. १९७२, सन १९१६, आत्म २१.

किंमत १२ आना.

# मान्यवर साहायदाताओंके नाम।



१५१ मेंसाणा वाला पारी त्रीकमदास हीराचंद तरफसे

७५ महिदपुरवाला सोनी केशरीमलजीकी माता चंपाबाई देवलीबाई तरफसें साधु साध्वीको अर्पण करने की नकल १०० के

५१ शेठ देवकरण मूलजी मुम्बईवाले

५१ शेठ हर्षचंद गुलाबचंद तेल्हारावाले

५० शेठ फतेचंदजी मांगीलालजी अमरावतीवाले

५० शेठ किसनचंदजी हीरालालजी वर्धावाले

३० एक भाविक तर्फसें

२५ घीया कुंदनमलजी कपूरचंदजी


Published by Jeshangbhai Chotalal Sutaria, Ahmedabad, for Hansavijaya Jain Library.



Printed by Ramchandra Yesu Shedge at the Nirnaya-sagar Press, 23 Kolbhat Lane, Bombay.



श्रीमान्मुनिराज श्रीहंसविजयजी महाराज.

# अर्पण-पत्रिका।

इंदोर निवासिनी धर्मात्मा श्रीमती सुंदरबाई तथा जडावबाई को सहस्रशः धन्यवाद दिया जाता है कि जिन्होंने प्रस्तुत ग्रंथके छपावने में अच्छि रकम देकर अपनी उदारता बतलाई है आप धर्मात्माओंने प्रभू पालणेका वरघोडादि अनेक सत्कृत्य करके अपनी लक्ष्मी को सफल किई है थोडाही अरसा हुआ आपने श्रीसम्मेत शिखरजी कि यात्रा करने ता० करानेमें हजारो रुपया खरच करके अनेक भव्यात्माओं को यात्रामें लाभ दिया था इस लिये हम सहर्ष यह ग्रंथ आपको समर्पण करते है इसमें सहायक शेठ नथमलजी गंभीरमलजी तरफसे श्रीयुत बालचंदजी थे.

श्रीहंसविजय जैन लायब्रेरी.



# ( पुष्पांजलि )

## हरिगीत छंद।

जगवंद्य **विजयानंदसूरि** तपगण गयण दिवाकरु,
तसज्ञान लब्धिनिधान समश्री **लक्ष्मीविजय** पटोधरु;
तसशिष्य **हंसे** ग्रंथ **हंसविनोद** वर रची उद्धर्यो,
जिनस्तवन टोडरमाळ **हंसविनोद** भवि कंठ धरो. १
दक्षिण पुरव कच्छ मरु मेवाड दक्षिण भर्तमां,
गुजरातने पंजाब विचर्या सकळ आर्यावर्तमां;
जिनभुवनने भूमितिर्थ स्पर्शि कर्यो वर्णन संघरो,
जिनस्तवन टोडरमाळ **हंसविनोद** भवि कंठे धरो. २
महा मानसर जिनशासनेथी मौक्तिको हंसे ग्रह्यां,
जिनस्तवनमाळा सरस विरची विविध रागोमां कह्यां;
ते कंठ धरी गुण गाइ रसना भविकजन पावन करो,
जिनस्तवन टोडरमाळ **हंसविनोद** भवि कंठे धरो. ३
मनमेल वरजी हंस सम उज्वळ बनो बाह्यांतरे,
अर्पण करो जिनचरणमां चित्त आत्मा राखो संवरे;
झट स्वर्गने अपवर्गनां साम्राज्यनी जयश्री वरो,
जिनस्तवन टोडरमाळ **हंसविनोद** भवि कंठ धरो. ४
क्षीर निरथीपय उद्धरे जेम हंस तेम आ उद्धर्यो,
श्रुतसार पयनुं पान करीआ ग्रंथ **मुनिहंसे** कर्यो;
शुभछंद सांकळचंद कहे नित्य रटण नरनारी करो,
जिनस्तवन टोडरमाळ **हंसविनोद** भवि कंठ धरो. ५

भवदीय श्रमणोपासक,

**सांकळचंद पीतांबरदास शाह.**

# प्रस्तावना.



अनादिकालसें ऐरावन हस्तिकी गतिसें चलते हुए इस परमात्माके उत्तम शासनमें हरएक भव्यमनुष्य कर्मपंजरसें मुक्त होकर अनंत सुख स्वरूपसिद्धि सौधमें प्रवेश करनेकी कामना रखता है, परंतु—महात्माओंका फरमान है कि—"सामग्री वै जनकः" प्रत्येक कार्यकी सिद्धिमें कारणकलापकी जरूर आवश्यकता रहती है.

जैसा कार्य होवे कारणभी ततूसदृश ही होना चाहिये अर्थात् बाह्य कार्यकी सिद्धिमें बाह्य और आंतरिक कार्यकी सिद्धिमें आंतरिक कारण ही कार्यसाधक होता है.

अनंत कालसें चातुर्गतिक संसार सागरमें पडे हुए इस आत्मारूप देवमणिको निकालकर अक्षय निधान मोक्ष खजानेमें रखना, यह आंतरिक कार्य है इसमें सर्वज्ञ सर्वदर्शी परमात्माके कहे हुए असंख्य योगरूप कारणोंमेंसे किसी भी कारणको सेवन करनेकी जरूरत है.

एक नगरमें प्रवेश करनेके अनेक मार्ग होते हैं तब हरएक व्यक्ति अपनी २ इच्छानुसार मर्जी चाहे उस रास्तेसे यथेच्छ नगर प्रवेश करसक्ती है। प्रसिद्ध है कि प्रथम और चरम तीर्थंकरोंके जीवोंने शुद्धाध्यवसायसें

दान दिया इससे ही उन्होंने त्रैलोक्यनाथ पद प्राप्त किया है. ठिकाने ठिकाने कलह करानेवाला जिसके निमित्तसे शांत स्थलोंमें भी रुधिरकी नदियें वही हैं ऐसा नारद जो स्वर्गापवर्गका भोगी होता है, यह माहात्म्य विशुद्ध शीलका है; एक घोर पापका करनेवाला जीव जब न्यायसे नरकातिथि होता है तो चार हत्याओंका करनेवाला दृढ प्रहारी, और ६ महीनेतक निरंतर ७–७–पंचेन्द्रियजीवोंकी हत्या करनेवाला अर्जुनमाळी कर्ममुक्त हुआ यह प्रभाव वगैर तपके और किसका समझा जा सक्ता है ? एक हजार वर्षतक घोरतप तपता हुआ और संयम पालता हुआ कंडरीक सातमी नरकमें गया और भरत महाराज ६ खंडकी साहिबी भोगते हुए भी गृहस्थावस्थामें केवल ज्ञानी हुए उसका कारण देखा जावे तो शुद्धभाव विना दूसरा नहीं है;

उपरके दृष्टान्तोंसे सिद्ध है कि—भव्यात्माओंके तरनेके अनेक मार्ग हैं, जिसको जिसमें ज्यादा आह्लाद होवे वह उसीसे अपने अनादि कालके रोगको दूरकर सक्ता है.

औषधियें सब एकही धन्वंतरीकी बतलाई हुई है जैसा जैसा रोग हो इसपर वह वस्तु उपयुक्त होनेसे उन उन जीवोंके लिये वह ही उपकारी हो जाती है.

जैसे अन्यअसंख्य योग आत्मकल्याणके हेतु हैं वैसे

"परमात्मभक्ति" भी एक मुख्य साधन है परमात्मभक्तिमें तल्लीन हुआ हुआ जीव खुद परमात्मरूप बन सक्ता है.

जैनशास्त्रका फरमान है कि "परमात्मा" यह एक पद्वी है इसके योग्य जो कोई सामग्री संपादन करता है वह खुद परमात्मपद पासक्ता है, परंतु प्रभुकी उपासना करनेवालेको प्रभुके यथार्थ गुणोंमें तलालीन होजाना चाहिये. संसारमें देव देवेंद्र चक्रवर्तीभी सेवककी सेवा अनुसार फलप्रदान करते हैं परंतु परमात्माकी दानशक्ति तो अलौकिकही है. लिखा है कि—**देशाधीशो ग्राममेकं ददाति, ग्रामाधीशः क्षेत्रमेकं ददाति । क्षेत्राधीशः सक्थिकां संप्रदत्ते, सार्वस्तुष्टः संपदं स्वां ददाति ॥१॥** तीन जगतमें परमेश्वरके वगैर ऐसा कोई नहीं जो सेवकको अपने समान करसके. केवल परमेश्वर ही अपने सेवककों खास अपने तुल्य बना सक्ते हैं, प्रभुभक्तिमें अपने और दूसरेके आत्माकों उल्लास आवे इसवास्ते कविलोग गद्यपद्य लालित्यमय स्तवन स्तुतिएं स्तोत्र वगैरहकी रचना करते हैं. प्रस्तुत ग्रंथमें अनेक संस्कृत—गुजराती—हिंदी दक्षिणी स्तवन स्तोत्र सझाय हैं जिनसे अनेक भव्यात्मा आत्मोन्नतिका मार्ग प्राप्तकर सक्ते हैं, यह स्तवन स्तोत्र ऐसे तो भावयुक्त और रसात्मक हैं कि जिनके वांचने पढनेसे आत्मा क्षणमात्रमें अपूर्व शांति प्राप्त कर सक्ता है.

इस ग्रंथका नाम कर्त्ताके नामानुसार "हंसविनोद" रखा गया है.

आजतक इसकी चार आवृत्तियें छपकर अनेक स्थलोंमें पहुंच चुकी है. ऐसा कोई प्रसिद्ध स्थल न होगा कि जहां जैनसंप्रदायकी संस्था हो और "हंसविनोद" न हो, चौथी आवृत्ति हाथोहाथ खप जानेसें यह पांचमी आवृत्ति कर्त्ताके संक्षिप्त जीवनके साथ प्रकाशित होकर जिज्ञासुओके करकमलोंको अलंकृत कर रहीहै।

" पुरुषप्रामाण्ये वचनप्रामाण्यम्" यद्यपि प्रस्तुत ग्रंथके लेखक श्रीमान्की प्रामाणिकता जगजाहिर ही है तथापि—कुछ अनभिज्ञ लोगोंके जानने वास्ते, मुख्य तो "महात्मनां कीर्त्तनं हि श्रेयोनिश्रेयसास्पदम्" इस मार्गका आश्रय लेकर थोडे अक्षरोंमें ग्रंथकर्त्ता महर्षिकी जीवनीका परिचय दिलाया जाता है.

## पूज्यपाद—प्रातःस्मरणीय—
## श्रीमान्—हंसविजयजी महाराजका संक्षिप्त जीवन चरित्र.



गुजरातमें गायकवाड महाराजकी राज्य गादीका मुख्य स्थान "वडोदा" नामका अकलीम और मशहुर शहर है, यहां अनेक नामी और आदर्श पुरुष रत्न पैदा हुए हैं और हो रहे हैं. अपने चारित्र नायकने भी अपने

अवतारसे इसी ही नगरकों पृथ्वीभूषण बनाया है; सो पाठकगण आगे चलकर देखेंगे.

बडोदा शहरमें वीसा श्रीमाली "जगजीवनदास" नामके सुप्रसिद्ध शाहुकार थे. आप बडे धर्मात्मा सरलस्वभावी उदार गृहस्थ रहते थे, राज्यके कार्यवाहकोंके साथ आपका अच्छा घनिष्ठ संबंध था,

बडोदा और वडोदाके समीपवर्ती ग्राम नगरोंमें आप की अच्छी इज्जत आबरोथी व्यापारी वर्गमें आप एक कुशल विश्वासपात्र व्यक्ति थे;

धर्मार्थकामरूप तीनों ही वर्गका आप न्यायपूर्वक साधन और सेवन करते थे, संसारसुरद्रुके फलरूप आपके ३ पुत्र और ४ पुत्रियें थीं. आपके वडे पुत्र जिनका नाम "दलपतभाई" है, वह सपरिवार वडी अच्छी स्थितिमें आज भी वडोदेमें आनंदसे जीवन गुजारते हैं, दलपतभाईसें लघु जो आपके लडके थे उनका नाम "छोटालालभाई" यह ही महाशय हमारे चारित्रनायक होंगे।

शेठ जगजीवनदासके तीसरे पुत्र जिनका नाम "नाना" भाई था वह थोडी ही उमरमें कालधर्मको प्राप्त हो गये थे. इनका एक पुत्र लालुभाइ विद्यमानहै.

शेठजीकी चार पुत्रियोंमेंसे "केवलबहन" और 'विजलीबहन" यह अबीतक भी हयात हैं; केवलबहन सब भाई बहिनोंमेंसे वडे हैं. वैद्य मगनलाल चूनीलालके

नामकों प्रायः सभी साक्षर पिछानते हैं वह इसी धर्मो-त्माकी कुक्षीके रत्न थे, मगनलालभाई सिर्फ वैद्यक विद्यामें ही विशारद थे ऐसा नही बल्कि धार्मिक ज्ञानमें भी संपन्न थे, इंग्रेजी और संस्कृत विद्यामें तो इनकी बडी ही अच्छी स्फुरति थी. संस्कृत "कुमारपालप्रबंध" और जैन तत्वसारका गुजराती अनुवाद आपही की लेखनीका नमूना है स्वर्गस्थ शेठ—मनसुखभाई भगुभाई द्वारा प्रकाशित " सिद्धहेमशब्दानुशासनवृत्ति" "न्यायालोक" "खाद्यखंडन" वगैरहके मुद्रित करानेमें और संशोधन करनेमें आप मुख्य सहायक थे; आपके विचार बडे उच्च और विशाल थे;

मगनभाईके दूसरे भाई जमनादास चूनीलाल भी वडो-देके वैद्योंमें एक अनुभवी शास्त्रसंपन्न वैद्य हैं;

स्व० शेठ जगजीवनदासके तीन पुत्रोंमेंसें दूसरे पुत्र रत्न जिनका नाम "छोटालालभाई" था वह ही महात्मा "श्रीहंसविजयजी महाराज" के नामसें आज महीमंड-लमें विख्यात हैं इनहीकी संक्षिप्त जीवनकथाका यह उपोद्घात लिखा गया है अब उन महर्षियोंकी जीवनीपर वाचकवृंद ध्यान देवें.

## " जन्म और कलाग्रहण"

विक्रम संवत् १९१४ अषाढवदि अमवास्या ( जिसको लौकिकमें दीवासा महापर्व कह ते है ) उसरात आपका जन्म शेठ—जगजीवनदासकी धर्मपत्नी "माणिक्यबाई"

सें हुआ था; मातापिताने आपका "छोटालाल" यह नाम दिया था.

आप बाल्यावस्थासें ही वडे विनीत और भद्रिक थे, आपका सौभाग्य इस कदर आला था कि स्वजन लोग आपसें हमेशां अणहद प्यार किया करते थे,.

आपकी उमर जब करीबन ८ वर्षकी हुई तब पिता श्रीने आपकों पाठशालामें पढनेके लिये वैठाया था.

"भाग्यानुसारिणी कीर्त्तिर्बुद्धिः कर्मानुसारिणी"

पूर्वकृत सुकृतके वशसे आप बडे प्रतिभाशाली थे. थोडे ही अरसेमें आप गुजराती साहित्य गणितविद्या इतिहास भूगोल आदि अनेक विषयोंमें प्रवीण होगये थे. आप अपने विद्याभ्यासकों समाप्त कर जब व्यापारी लाईनपर चढे थे तब पिताश्री और वडेभाईके साहचर्यसें अच्छे व्यापारीभी होगये थे. आपके पिताश्रीका व्यापार कपडे दुशालेका था, मगर आप तो जौहरातका धंदा भी सीख गये थे;

## "शादी और वैराग्य"

आपकी उमर जब अंदाज १६ वर्षकी थी तब इस ही शहरके सुप्रसिद्ध एक शाहुकार की "सुरजबाई" नाम सुशीला कन्यासें आपकी सगाई की गई थी इस हालतमें भी पानीमें कमलकी तरह आप विरक्त थे बलकि यहांतक कि जिस दिन आप वरराजा वनकर सकल परिवारके

साथ उस प्रणयिनीकों विवाहने जारहे थे रास्तेके एक उपाश्रयमें परम वैरागी महातपस्वी (श्रीमद्विजयानंदसूरि श्रीआत्मारामजी महाराजके वृद्धगुरुभाई) श्रीमान् नीतिविजयजी महाराज विराजमान थे. आप मनमें यह ही संकल्प करते जाते थे कि इस वक्त भी अगर पिताजी मुझे इजाजत दे देवें तो घोडेसें उतरकर इस सर्व समुदाय के साथ गुरु महाराजके पास जाकर दीक्षा अंगीकार करुं और आज भी दुनियांकों दिखा दूं कि प्रभु श्रीनेमिनाथ स्वामीने इस तरहसें नवभवके प्रेमवाली पत्नीका त्याग किया था !! परंतु क्या होसक्ता था ? पिताश्रीका आपके उपर असीम प्रेम था, वडे आडंबरसें आपका विवाहकार्य समाप्त हुआ आप अब घरबारी हुए परंतु अबीतक भी आप इस जंजालसें छूटनेकी ही योजनामें थे. हरएक मौकेपर हरएक कार्यमें हरएक स्थानमें आप संसार त्यागके साधनोंकों ही ढूंढते थे. "भोगावली" कर्म एक दृढ शृंखला है. इससें आप २१ वर्षकी उमरतक घरमें रहे. अब आपका मनोरथ कल्पतरु फलनेपर आया है. एक शुभ प्रसंगपर आप सुश्रावक गोकुलभाई दुर्लभदासके घर भोजन करनेके लिये गये थे "**यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी**" आपकी इच्छा थी कि हमें कोई धर्मसहायक मिले वह इच्छा भी पूरी हुई. श्रीयुन्–छगनलालभाई वहां जीमणमें मिले सो आपको मददगार हुवे. दोनु स्वधर्मी भाइयोने

वहांसें सिधा स्टेशनका रास्ता लिया और देशपंजाब--शहर अंबालामें जाकर सं. १९३५ के माघ वदि ११ को दीक्षा अंगीकार की, गुरुमहाराजने आप दोनो भाग्यशालियोंको दीक्षा देकर क्रमसें मुनि श्रीकांतिविजयजी--मुनि श्रीहंस-विजयजी नाम दिये और पंडित लक्ष्मीविजयजी महाराजको गुरु स्थापन किये. शेप साधुपनेकी क्रिया सिखनी भी शुरु करवाई इधर जब आप घरसें निकले तब आपके स्वजनवर्गकों बडा ही क्षोभ और दुख पैदा हुआ "आप कहां गये हैं" इस निश्चयके लिये अनेक स्थलोंमें तार--पत्र मनुष्य भेजे गये मगरकहीसें भी कुछ संतोपकारक समाचार न मिला. आखीर ढुंढते २ एक महिना होने आया इधर शेठ जगजीव-नदासके आडतीये दुसालावाले जो ( अमृतसर रहते थे ) उनका एक आदमी हुसीयार पुर आया था इसने और श्रीहंसविजयजी महाराजने वडोदे दीक्षासंबंधि पत्र दिया तब मालुम हुवा के पंजाबमें हैं.

बस "छोटालाल कहां गये ?" यह चर्चा समाप्त हुई. सिर्फ वडोदेमें ही क्या ? प्रायः गुजरातके सब गाम नगरोंमें आपके चारित्र ग्रहणकी चर्चा फैला गई. आपके पिताश्री फौरन पंजाबकों रवाना हुए और दृढ संकल्प करलिया कि सर्वस्व खर्च कर दूंगा परंतु प्राणप्रिय पुत्रकों वापिस लाउंगा !!" अरे दीक्षा ?, दीक्षा किसकों ?, मेरे पुत्रकों ?, क्युं ?, क्या मेरा पुत्र भूखा मरता था ?, या किसी तरह दुखी था ? ऐसे सुकुमाल बालकों दीक्षा

देनेवाला कौन? दिलानेवाला कौन? मुझे वहां पहुंचने तो दो सबकी खबर लेता हुं, रेलगाडी एक विमान है तीसरे ही दिन शेठजी पंजाबमें पहुंचे, इधर महाराज साहिबभी नवीन शिष्योंके साथ अंबालेसें विहार करके शहर हुश्यारपुर पहुंचे,शेठजी भी वहां गये अब कहना ही क्या था? इस वक्तकी चर्चाकों ठीक २ वह ही कहसक्ता है जो उसवक्त वहां मौजूद हो पूज्यपाद प्रवर्तक श्रीमत् कांतिविजयजी साहेब फरमाया करते हैं कि "मुनिश्री-हंसविजयजीने जो जो अनुकूल और प्रतिकूल कष्ट पिता-तरफसे सहन किये हैं उन्हे सहन करनेका उनका ही जिगर है अन्य ऐसा दृढ चित्तवाला इस कालमें हो-ना मुशकिल है"

शेठजीकों एक तो अनिवार्य पुत्रप्रेम था, दूसरा धनका जोर था, मन माना बोलने लगे मनमाना करने लगे लेकिन धर्मरुचि होनेसें लडाई के साथ प्रभावनाभी करने लगे महाराजसाहेबसें भी खूब चर्चा चलनेलगी जिसका थोडासा अहवाल नीचे दिया जाता है.

शेठजी–आपने मेरे पुत्रको दीक्षा क्युं दी?

महाराज साहेब–इनकों संयमके योग्य और भावी कालके शासन रक्षक जानकर, हमारे गुरुभ्राता श्रीम-न्मुक्तिविजयजी ( मूलचंदजी ) की आज्ञानुसार दीक्षा दीगई है. आप भाग्यशाली हैं जिनके पुत्रने युवावस्थामें चारित्रका भार बडे उत्साहसें उठाया है। आपकों भी

योग्य है कि यथाशक्ति धर्मसाधन कर इस मनुष्य-जीवनको सफल करें" इत्यादि.

शेठजी—( गुस्सेमें आकर ) क्या आपने मेरे पुत्रकों कंगाल समझा था ?. जबाबमें श्रीगुरु महाराज बोलते ही थें कि आज्ञा लेकर आप स्वयं बोले क्या कंगाल दीक्षा लेते हैं ? दीक्षा यह त्रैलोक्य नाथकी मुद्रा और आचरणा है, यदि कंगालोंका काम होवे तो श्रीशांतिनाथ कंथुनाथ अरनाथ भरतचक्री सगरचक्री सनत्कुमार वगैरह चक्रियोंने ६ खंडकी राज्यरिद्धी और ६४—६४ हजार सुरूप रमणियें छोडकर दीक्षा क्युं ली ? जंबूकुमार शालीभद्र धन्यकुमार धन्नाकाकंदीथावच्चापुत्र आदी श्रेठी पुत्रोंने अभयकुमार आर्द्रकुमार मेघकुमार आदि राजपुत्रोंने अपनी अतुल रिद्धी और परिवार क्युं छोडा ?

इस तरह एक मासतक पिता पुत्रके सवाल जबाव होते रहे. आखीर साधु और श्रावक भी चिंतातुर हुए कि यह झगडा कहांतक चलेगा ? एकदिन पिता पुत्र एकांतमें मिले पिताजीने कहा बेटा ! हम तुमको लेने आये हैं जरूर लेकर ही जावेंगे । मुनिश्रीजीने जबाव दिया कि आप पिता हैं मरजी आवे सो कहें परंतु मेरी तो यह अटलश्रद्धा है और रहेगी कि इस जन्ममें अब मुनिमुद्राकों छोडकर बडोदे न जाउंगा, अगर आप ज्यादा बलात्कार करके ले जावेंगे तो मेरा मृतक शरीर ही आपके साथ आवेगा ! ! ! बस इससें ज्यादा क्या सुनना था ?

पिताकों निश्चय हुआ कि मेरा पुत्र मेरे स्नेहमें आकर कदापि मुनिपना नही छोडेगा.

उसीवक्त शेठजी—महाराज साहेबके पास आये और नम्रतासें प्रार्थना करने लगे कि साहेब! मैं आज श्रद्धापूर्वक आपकों पुत्रभिक्षा देता हुं, आप इनकी सर्व प्रकारसें रक्षा करें और इनके ज्ञान ध्यान तप संयमकी वृद्धि होवे ऐसा प्रयत्न करें। उधर पुत्रकों भी आशीर्वाद दियाकि—तुमने सिंहके समान संसार त्याग किया है इसी ही आचरणासें यावज्जीवतक चारित्रका पालन करना।

अंत्यमें हाथ जोडकर सकल मुनिमंडलसें और विशेपकर गुरुमहाराजसें प्रार्थनाकी कि मैंने एकमाससें आप लोगोंको कपडे खोसनेआदि प्रयत्नसें खेद पहुंचाना शुरु किया हुआ है आपके ज्ञान ध्यानमें बहुत विघ्न डाला है, आप जानते हैं मोहराजा बलवान् है और विशेषकर इनकी स्थिरता देखनेके लिये भी मैंने ज्यादा आडंबर किया है आप क्षमाप्रधान मुनिराज हैं क्षमा यह आपका मुख्य धर्म है आप श्रीजी मुझपर क्षमा करें, इस तरह मुनिमंडलकों खमाकर शेठजी घरतर्फ रवाना हुए और चलते समय महाराज साहेबसें यह प्रार्थना करते आये कि इनकी छोटी दीक्षामें तो हम हाजरनही होसके परंतु वडी दीक्षा हमारे सामने वडोदेमें ही होवे ऐसी आप कृपा करें.

महाराज श्रीने जवाव दिया कि आपकी विज्ञप्ति

ख्यालमें है. ज्ञानी महाराजने जैसा ज्ञानमें देखा होगा वैसा होगा. अब मुनिमहाराज श्रीहंसविजयजी निर्विघ्नतासें गुरु महाराजके साथ विचरणे लगे और अपूर्व ज्ञान संपादन करके आत्माकों भावित करने लगे.

## ३७ चउमासोंका संक्षिप्त हाल तथा धर्मोपदेश द्वारा धर्म क्रियायें.

१ पहला चौमासा आपका श्रीयुतलक्ष्मी विजयजी गुरु-महाराजके साथ शहर हुश्यारपुरमें हुआ। २ दूसरा—गुरु-महाराज श्रीलक्ष्मीविजयजीके साथ रामनगरमें हुआ. ३ तीसरा जीरामें यह चउमासा भी आपका गुरुमहाराजके साथ ही हुआ. ४ चौथा चउमासा उपाध्याय श्रीवीरवि-जयजी तथा—प्रवर्त्तक श्रीकांतिविजयजी महाराजके साथ शहर जयपुरमें हुआ. यहां सहपरिवार जब गुरुमहाराज पंजाबसें पधारे तब इनकी आज्ञा लेकर अजमेर नवा शहर पाली आदि शहरोंके चैत्यजुहारते गोलवाडकी पंचतीर्थी तथा तारंगाजीकी यात्रा करके आप बडोदे पधारे. पिताश्रीने राजा महाराजाकी स्वारी जैसे ठाठसें नगर प्रवेश करवाके बडे आडंबरके साथ गणिवर्य श्रीमुक्तिविजयजी ( मूलचं-दजी ) महाराजसें संव० १९३९ जेठ सुदि १० को बडी दीक्षा दिलाई ५ मां चउमासा भी शहेर बडोदामें हुवा. ६ मां चउमासा शहेर अमदाबादमें बडे महाराजके साथ । ७

मां चउमासा सूरत महाराज श्रीके ही साथ। ८ मां चउमासा पालीताणे भी महाराज श्रीजीके साथ हुआ। ९ मां चउमासा अणहिलपुर पाटणमें हुआ. व्याख्यानमें उत्तराध्ययन कमल संयमीटीका और स्थूलिभद्र चरित्र वांचा गया. चउमासे बाद शेठ झवेरचंद गुमानचंदके संघके साथ पालीताणे आए और बडे ठाठसें सिद्धाचलकी यात्रा की. वहांसे चलकर आप गिरनारजीकी यात्रा करनेवास्ते जूनागढ पधारे. वहांसें मांगरोल वैरावल प्रभासपाटण पोरबंदर देलवाडा होकर "जामनगर" पधारे और दशमा ( १० ) चौमासा वहां किया ! व्याख्यानमें "श्राद्धविधि" और "वासुपूज्यचरित्र" वांचा. चउमासेके बाद मोरबी होकर पालणपुर पधारे और तीर्थाधि राजसम्मेत शिखरकी यात्राका निश्चय किया, महाराज साहेबकी आज्ञा लेकर आबुराजकी यात्रा करके सिरोही जयपुर भरतपुर वगैरह होकर आप "लश्कर" पधारे और अग्यारमां चउमासा यहां ही किया। व्याख्यानमें ज्ञाता सूत्र और चंद्रप्रभुचरित्र सुनाकर श्रोताओंके मनकों अति प्रफुल्लित किया. उठे चउमासे आपके पिताजीके संघके साथ आप शौरिपुर प्रयाग बनारस सिंहपुरी चंद्रावती आरा पट्टणा होकर नगरियोंकी यात्रा करते हुए श्रीसम्मेत शिखरजी पहुंचे और परम उल्लाससें तीर्थाधिराजजीकी यात्राकी वहांपर कलकतेसें राय० बद्रीदासजी बाबु आदि सद्गृहस्थ आप श्रीजीको विनंती करनेके लिये हाजर हुवे थे, इनकी विनंति स्वीकारके

आप श्रीशीतलनाथ स्वामीकी यात्रा करनेवास्ते कलकत्ते पधारे. रा० बद्रिदासबाबु ता० शेठ पुनमचंदजी आदि श्रीसंघने बडा भारी सान्मानिक ( सामेला ) करके कलकत्तेके बजारमें अंदाज अढाइसो[१] रुपेकी वृष्टिकी. यह कलकत्तेके इतिहासमें पहिला बनाव है रॉयल एसियाटिक सोसायटीके ऑनररी सेक्रेटरी डॉक्टर भट्ट ए० एफ रुडॉल्फ हारनल साहेबने भी महाराज साहेबकी बडी नम्रतासें मुलाकात ली और केईसवालोके यथार्थ उत्तर मीलनेसें संतोष प्रदर्शित किया—वहांसें आप अजीमगंज पधारे बाबु लोकोने बडा भारी प्रवेश महोच्छव किया. श्रीसंघका अतिआग्रह होनेसे बारमा चउमासा आपने मकसूदावाद किया चउमासापेस्तर, आपने जब राजगृही नगरीके वैभार गिरिपर्वत उपर श्रीमुनिसुव्रत स्वामीकी मूर्ति, टुटा हुवा एक देवलमें घासके अंदर देखी और उसमूर्त्तिको बडोदावाले संघद्वारा पहाडके नीचे उतराकर धर्मशालामें पधराइ थी, वहांपर प्रभुके चार कल्याणक होनेसे तिर्थका उद्धार करनेका उपदेश दिया. तब राजाविजयसिंहकी माता मासी आदि श्राविकाओने धर्मशालाके पास मंदिर बंधवाके तथा मूर्तिको लेप करवाके पहाडके नीचे तीर्थ स्थापन किया. रायधनपतिसिंह बहादुरने श्रीसमवसरजीकी रचना करवाके बडा भारी महोत्सव किया उसमें

---

टीप—२५० रूपै उछालके सेठ पूनमचंदजी हर्षचंदजी ने सन्मान किया.

राणी मीनाकुमारीने सोनेके जब ता-चांदिके चावल ता-मोतिके स्वस्तिक करके हिराजडित सोपारी चढाइ। व्याख्यानमें शत्रुंजय माहात्म्य और दानोपदेशमाला वांची गई। कल्पसूत्रकी वांचनामे मोतियोंके स्वस्तिक पूरे जाते थे। केईदफे रुपैयोंकी प्रभावना भी होती थी, सुपने उतारनेका प्रारंभ हुवा। चउमासे पीछे राणी मीनाकुमारीने समेत शिखर वगैरहका संघ निकाला जिसमें हाथीवगैरहका बडा ठाठ था. इस संघके निकालनेमें इस श्राविकाने हजारो रुपैयोंका खर्चकर गुरु महाराजको यात्रा कराई। समेत शिखरकी यात्रा करके आप पंजाब पधारे और "जंडियाला गुरुका" इस शहरमें श्रीमद्विजयानंद सूरि महाराजके दर्शन कर कृतार्थ हुए. गुरु महाराजने भी बडा आदर सत्कार किया और श्रीभगवतीसूत्रकी टीका पढाना शुरुकर दिया. महाराज श्रीकी आज्ञानुसार तेरमा चउमासा शहर "अमृतसर" में किया—चउदमा "जीरा" और पंदरमा "बीकानेर" कीया वहांपर समवसरणकी रचना प्रथम ही होनेसे हजारां स्वपरमतीने लाभ लीया सोलमा "जयसल मेर" कीया वहां प्राचीन भंडारको भूमि गृहमेंसे तथा. पाषाणकी कोठीयोमेंसे निकलवाकर त्रुटक तथा संपूर्ण पुस्तकोंको अलग करके पंन्यास श्रीसंपत विजयजी पास अच्छे बंधनोमें बंधवाके तथा अतिउपयोगी पुस्तके लिखारियोंद्वारा लिखवाकर पाषाण की नइ आलमारीयोंमें पधराये और टीप (लिष्ट) कराकर ज्ञानका उद्धार

किया । वहांसे आपका फलोधीमें आना हुवा धर्मका बडा उद्योत हुवा गुले छा फूलचंदजीने समवसरणकी रचनाकी अनेक पुन्यात्माओने दर्शन पूजनसें अपने इस मानव जीवनकों सफल किया । वहांसें फूलचंद भाईके संघके साथ आप श्रीओसिया नगरी पधारे और आनंदसें यात्रा की और सवालाख ओसवाल बनानेवाले श्रीरत्नप्रभसूरिप्रतिष्ठित महावीर स्वामीके देवलपर धजा चढवाके यहां फाल्गुण सुदि तीजका सालाना मेला कायम किया. वहांसे आप पालणपुर पधारे और सतरमां चउमासा यहां ही किया. चउमासेमे आप श्रीज्ञाता सूत्रका व्याख्यान सुनाते रहे इस चउमासेमे शेठ अमोलखचंदने श्रीसिद्धाचलजीका संघ निकालनेका निश्चय किया उतरे चउमासे आप श्रीसंघके साथ सिद्धक्षेत्र पधारे और तलाजाकी यात्रा भी की यहांपर श्रीविजयानंद सूरीश्वर महाराजका स्वर्गगमनसंबंधि गुजरान वालेसें तार आया इससें बडा रंज पैदा हुवा इसकी शांतिके लिये तलाजाका श्रीसंघने बडा भारी अठाइ महोत्सव तथा दानपुण्य किया. फेर पालीताणेमें अठारमा चउमासा रहकर गिरिराजके ध्यानसें आत्महंसकों अति उज्वल किया तथा फलोधिवाले मोतिलालजी कोचरको उपदेश देकर गिरिराजके उपर श्रीवीसविहरमान स्वामीके देवलका जीर्ण उद्धार करवाया तथा लखतरके दिवान फूलचंद भाइको उपदेशदेकर श्रीअष्टापदजीमें श्रीगौतम स्वामीजीकी मूर्ति तथा रावण मंदोदरीकी मूर्तियें पधाराइ

कपडवणजवाले श्रीयुत बालाभाइको उपदेश देकर श्री-विजयानंदसूरीश्वर महाराजकी मूर्ति गिरिराजके उपर पधाराई वहांसें आप अमदाबाद होकर पादरे पधारे और ऊगणीसमा चउमासा यहां किया यहां ११५ वर्षसें एक टंटा जारी था जो आपकी अतुल उपदेश-शक्तिसें नाबूद हुवा और श्रीआत्मानंद पाठशालाकी स्थापना भी हुइ इसके पीछे आप बडोदे पधारे और वीसमा चउमासा यहां किया इस चउमासेमें अठाइ महोत्सवादि धर्मकृत्य अछे हुवे और श्रीविजयानंद सूरी-श्वरजीकी मूर्ति मंगवाई इसको विराजमान करनेके लीये श्रीमती श्राविका विजली बहीनने आरस की छत्री बंधवाके उसमूर्तिके साथ श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजकी चरणपादुका पधराइ. तथा वहांपर श्रीनवपदजीके मंडलकी बडी भारी पूजा हीरा मोति माणेक आदि सामग्रीसें हुई. बडोदरेसें विहारकर आप दक्षिण तर्फ पधारे सखाराम शेठने तथा कच्छी श्रावकोने एक माईलतक धूलिया शह-रको वाइसरायके प्रवेश जैसा ध्वजा पताका तथा विविध जातिके सोनेरी ता. मोति वगैरेके तोरणसें ता. दरवाजेसें शणगारके प्रवेश करवाया और झवेरातसें ता. सोने रुपेके फूलोंसें वधाये फेर आप पारोले पधारे वहां तथा दुसरे अनेक गामोमें बारा वर्षके तड पडे थे इसलीये सखारा-मसेठने सब गामोवालेका वहां संमिलनकरके महाराजके उपदेशसें संप करलीया इक्कवीसमा चउमासा धूलि-

यामें गुजारश किया चौमासे पीछे आमलनेरवाले रूप चंदमोहनचंदके संघके साथ आप अंतरिक्षजी पधारे वहांसें बालापुर आकोला होकर आप अमरावती पधारे और बावीसमा चाउमासा वहां ही हुआ उसवक्त सो-भाग्यचंद फतेचंदने उद्यापन महोत्सव किया मंदिर-जीमें आरस ता. सोनेरी काम हुवा वहांसें वर्धा नागपुर होकर तेल्हारे पधारे तेल्हाराके रहनेवाले शेठ हर्षचंद गुलाबचंदने महाराज पास नियम करके प्रभुका चैत्य बंधवाया था आपके हाथसें प्रतिष्ठा हुई और श्रीपद्मप्रभुकों गादी बैठाये तथा श्रीआत्मारामजी महाराजकी मूर्ति और गुरुमहाराजके चरण पधराये उसके बाद आप अनेक ग्राम नगरोंको पावन करते हुए बुराणपुर पधारे और यह तेवीसमा चउमास यहां ही ठहरे बुराण पुरके मंदिरोका जिर्णोद्धार करवाके नये मंदिरकी प्रतिष्ठा की तथा लोकोके घरोमेंसें हजारों रुपैये देवद्रव्यके निकलवाये इसके बाद आप मालव देशमें उतरे और श्रीमांडव गढतीर्थकी यात्रा करके इस तीर्थको बहुत मशहुर किया. यहांपर धर्म-शाला न होनेसें यात्रालुओंको मस्जिदमे उतरना पडता था इस लिये आप श्रीजीके सदुपदेशसे धर्मशाला बननी शुरु हुई धर्मशालाके लिये जो जमीन खोदी जाती थी उसमेंसे

---

१ यहां हीरालालजी एक श्रावक आपके खास सेवक हैं. इस पुस्तकमें जो श्रीजीका फोटो दिया गया है वह इन महाशयोंकी तर्फसे तथा पूर्वोक्त अमरावती वालेकी तरफसें है. २ अमलनेरवाली श्राविका चुनांबाई तरफसें.

अंबाडी सहीत रजवाडी अनेक हाथी वगेरे सामग्रीसें महान् प्रवेश महोत्सव किया पंन्यास श्रीसंपतविजयजीने वहां उपधान तप करवाया। वहांसें सूरत पधारे और ३२ मा चउमासा प्रवर्त्तक श्रीजीके साथ सूरतमें ही किया चउमासामें उपधान आदि अनेक पवित्र उत्तम कार्य हुए। चउमासे पीछे आप सचीन पधारे वहांके नबाब साहेब आपकी मुलाकात लेनेको आप श्रीजीके पास पधारे और अतर पान दुशालादिसें स्वागत करना चाहा लेकिन निस्पृह महात्माने साधु वृत्तिका स्वरूप सुणाके संतुष्ट किया और जीवदयाका उपदेश दिया फेर आप नवसारी जलालपुर वलसाड उंटडी वापी होते हुए दम्मण पधारे श्रीसंघकी प्रार्थना होनेसें ३३ मां चउमासा वहां ही किया इस चउमासेमें सटीक दशवैकालिक सूत्र काव्याख्यान देकर आपने श्रोताओंकों बडी योग्यता प्राप्त कराई। दम्मणके चउमासे बाद आपने सुरतमें साडंवर प्रवेश करके श्रीगोडीजी महाराजके देवलमें शीरोहीके दिवान मेलापचंदजीकी तरफसें श्रीआत्मारामजी महाराजकी मूर्त्ति पधाराई वहां अठाइ महोत्सव हुवा। वहांसें आप बडोदे पधारे वहां मुनिसंमिलनमें करीबन २ महीनेसें अधिक रहना हुआ और सम्मेलन समाप्त होनेसें आप श्री सीनोर पधारे ३४ मां चउमासा वहां होनेसें संघमे अनेक धर्मक्रियाए हुई। मंडपकी रचना करवाके श्रीसंघने उद्यापन अठाई महोत्सव आदि बडा

जलसा किया. वरघोडेमें गायकवाड सरकारका हाथीकी अंबाडी विगेरह सामग्री हाजर थी रुपेकें रथमें प्रभुकी स्वारी निकली. यहांसें विहारकर आप फिर बडोदे पधारते थे रास्तेमें नांदोद स्टेटके प्रतापनगरवाले ठाकोर साहेबकी ता. नांदोदके वकिल छगनलाल वैष्णवकी प्रार्थना होनेपर आप मुनि महाराज श्रीवल्लभविजयजीको साथ लेकर वहां पधारे नांदोदमें श्रावकका कोई घर न होनेसें वकिल साहेबने दरबारी निसान डंकादि ठाठसें प्रवेश करवाया. आपकें मधुर वचनोंसें और विद्वान शिरोमणि मुनिमहाराज श्रीवल्लभविजयजीकें जाहेर व्याख्यानोंसें राजा छत्रसिंहजी ता. दिवान साहेबादि सर्व सभासद खुश हुवे और दरबार साहेबने अपना संतोष जाहेर किया. धर्म्मोन्नति बहुत अच्छी हुई. नांदोदके व्याख्यानोंकी खबरें जो कि हिंदकें प्रसिद्ध २ पत्रोंमें प्रकट होचुकी थी गायकवाड महाराजने भी सुनी और बडे सन्मान पूर्वक डाक्टर बालाभाइ एल. एम. एंड. एसद्वारा पत्र लिखवाकर आपकों बडोदरे बुलाया. आपने महाराजाकी प्रार्थनाकों मान देकर बड़े सरघसके साथ पुन्यक्षेत्र बडोदेमें प्रवेश किया. कुछ ही दिनोंमें आप मुनिमहाराज श्रीवल्लभविजयजी कों साथ लेकर महाराजा "गायकवाड" सें मिलें, गायकवाड सरकार आप दोंनो महानुभावोंकी उपदेश वाणीसें बडे प्रसन्न हुए और कहा कि आप बडोदरेमें जाहेर व्याख्यान देकर सत्य धर्मका प्रचार करें, आप तो उपकारमें ही परायण थे, इस बातकों स्वीकार किया, शहरकें सरकारी

प्रसिद्ध स्थान न्यायमंदिरमें आप श्रीजीके प्रमुख स्थानपर विराजमान होनेसे मुनिमहाराज श्रीवल्लभविजयजीके दो व्याख्यान हुए इन प्रभावशाली व्याख्यानोंसें शहरकें सब ही साक्षर वर्गकों अनहद लाभ हुआ. यहांसें आप शहर पाटण पधारे. यहां पं० श्रीसंपतविजयजीके संसारि भ्राताने प्रवेश महोत्सव कियाइ. चूनीलाल खूबचंद उत्तमचंद खीमचंद और खीमचंद भूखणजीने उद्यापन किया, यहां पर पालणपुरका संघ विज्ञप्ति करनेवास्ते आया था. आपने श्रीसंघकी प्रार्थना स्वीकारकर प्रस्तुत ३५ मां चउमासा पालणपुर किया. चउमासे उठे आप पेथापुरके श्रीसंघकी प्रार्थनासें वहां पधारे और बावन जिनालय मंदिरमें १४ देरीयों की प्रतिष्ठाकी उसवक्त श्रीनेमीनाथ स्वामीकी प्रतिमासें अमृत झरने लगाथा इस महोच्छव मे अंदाज वीस हजार रुपए उत्पन्न हुवे थे। वहांसें आप पाटणके संघकी प्रार्थनासें धुलेवा मंडण श्रीकें सरियाजी की यात्रा करनेके लिये मेवाड पधारे उसवक्त आपकें साथ ३२ साधु साध्वी और करीबन ५०० श्रावक श्राविका थे यात्रा करकें आप डुंगरपुर वनकोडा सागवाडा वांसवाडा वगैरह विकटरस्ते होते हुवे रतलाम पधारे श्रीसंघने विविध जातिकें ध्वजा पताकासें ता.कलाबतु, वंगडीयां, काचके गोले आदि नाना प्रकारकें तोरणोंसें शहर शणगारकर बडे दबदबासें प्रवेश करवाया ३६ मां चउमासा वहां हुवा चउमासामें आप श्रीआवश्यक सूत्रसटीक और श्राद्धगुण विवरणका व्याख्यान

देते थे जिससें श्रोताओंकों अपूर्वलाभ हुआ पंन्यासजीने उपधान तप करवाकें समवसरण महोच्छवके साथ श्रीवल्लभ विजयजीकें शिष्य श्रीसोहन विजयको गणिपद ता. पंन्यास पद प्रदान किया वहांसें आप परतापगढ पधारे घीया लक्ष्मीचंदजीने महाराजकें नामकें स्वागत बोर्ड ता. पताकासें शहरको शोभायमान करके प्रवेश करवाया. वहांके राजासाहेब, महाराजजीके दर्शनके लिये पधारे वहांपर महाराज श्रीहंसविजयजी साहेबके प्रमुख पदमें मुनिराज श्रीलब्धि विजयजीने दो भाषण दिये. राजकीय वर्ग ता. हजारों हिंदु मुसलमान खुश हुवे वहांसें वही पार्श्वनाथ तीर्थकीं यात्राकर आप रिंगणोदमें आये पांच प्रभुकीं मूर्त्तियें ता. एक अंबिका देवीकी मूर्ति जमिनसें प्रगट हुइ थी उनके दर्शन करके आप जावरा वगेरहमें विचरते हुए मंदसोर पधारे ३७ मां चउमासा यहां हुवा. आपकें अलब्ध पूर्व उपदेशसें यहांपर भी पाठशालाका जारी होना तथा पूर्वधर आर्यरक्षित स्वामीकी ता. श्रीविजयानंद सूरि महाराजकी मूर्तियां मंगवाना वगैरह अनेक धर्म्मकार्य हुए. चउमासे बाद बोतल गंजमें श्रीपद्म प्रभुस्वामीकी प्रतिष्ठा करवाई वहांसें आप सीतामउके तेसीलदारसाहेबत. नगरसेठ आदि सद्गृहस्थोंके साथ, परासली तीर्थकीं यात्रा करके महिदपुर पधारे वहां समहोत्सव १६ मां श्रीशांतिनाथ भगवानकी प्रतिष्ठा करवाकें श्रीविजयानंद सूरि महाराजकी मूर्त्ति पधराई वहांसे उज्जयनी नगरीमें श्रीअवंती पार्श्वनाथजीकी यात्राकरके शहेरवड़-

नगरमें पधारे वहां लगातार एकवीस दिन पूजाएं पढाइ गई वहांसें आप गौतमपुरा गोकलपुरा देपालपुरा हातोद होकर इंदोर पधारे है। और हाल कयाम आपका वहां ही है। जैन शासनके मुनिमंडलमें आप एक प्रभावशाली पुरुषरत्न हैं, आपकी शांति विरक्तदशा उपदेशशक्ति और सहनशीलता कोटिशः धन्यवाद और श्लाघापात्र है. इस प्रस्तावनाका लेखक कुछ अरसा आप श्रीजीकी सेवामें रहा है इसलिये हृदयगत भक्तिसें यह लेख लिखागया है. यद्यपि जो कुछ देखा या सुना है उसमेंसें कोटितमांशभी लिखना अशक्य जैसी बात है तथापि अगर स्वतंत्र जीवनीके रूपमें इस लेखकों लिखनेकी घटनाकी जाती और लिखनेकें समय एक स्थानमें स्थिरता होती तो आशा थी कि लेख एक आदर्श जीवनके रूपकों पकडता, परंतु लेखकों हंस-विनोदकी प्रस्तावनाके स्थानपर रखना है फारमज्यादा न बढनेकें सबब और खास कारण यह कि इस लेखकें लिखनेकें समय लेखक श्रीशत्रुंजय गिरनारकी यात्राकें लिये काठियावाडकें विहारमें है, इत्यादि कारणोंसे ज्यादा न लंबाकर इसे इतनेमें ही खतम करता हुआ परमोपकारी पंन्यासजी महाराज श्रीमान् "संपत्‌विजयजी" महाराज का उपकार मानता हुं कि जिनकें हुकमसें मुझे इस शुभ प्रसंगका लाभ मिला है—

आपका कृपाकांक्षी—

श्रीमद्वल्लभविजयचरणोपासक मुनिललितविजय.

ता० १९-५-१६ जूनागढ (गिरनार) चैत्र वदि द्वितीया—

# अनुक्रमणिका.



## काठियावाडनां स्तवनो.

## मारवाडनां.

## वराड तथा खानदेशना स्तवनो.

## मालव देश स्तवन.

## तपतिथिना स्तवनो.

## गहुंलीयो.

---

## पुस्तक मलवानां ठेकाणां.

श्रीहंसविजय जैनलायब्रेरी
मु. अमदाबाद—लुणसावाडा.

श्रीआत्मानंद जैनसभा
मु. भावनगर—हेरिसरोड.

श्रीआत्मानंद पुस्तकप्रचार मंडल
मु. आगरा रोशनमहल्ला.

॥ श्री ॥

# ंसाविनोद.

## चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः

अनुष्टुब् वृत्तम्.

स नाभेयो जिनो जीया—द्दूरुस्थवृषलक्षणः॥ श्रीशत्रुंजयतीर्थस्य, मस्तके मुकुटोपमः॥१॥ वन्देऽजितं देवं, लीलया जितमन्मथम् ॥ कर्मवल्लीविनाशाय, कुठारसदृशं विभुम् ॥ २ ॥ श्रीमत्संभवनाथाय, भुवनार्त्तिहराय च ॥ तृतीययोगिनाथाय, नमो विश्वैकभानवे ॥ ३ ॥ तुर्यकं जेननाथं च, अभिनंदननामकः ॥ स्वजन्मावसरे मेरौ, प्राप्तं नौमि सुनिर्मलम् ॥ ४ ॥ सुमतिं सुमतिर्देया—त्पञ्चमः परमेश्वरः ॥ तनोतु वः दुःखान्यष, संसाराब्धिपारगः ॥ ५ ॥ पद्मप्रभप्रभुर्नाम, तनोतु विमलां श्रियम् ॥

मोहमल्लजयेनेव, भाति यः कमलद्युतिः ॥६॥ जीयाः सुपार्श्वदेव ! त्वं, सुवर्णद्युति-धारकः ॥ मोहांधानां जडानां च, तमोनाशाय भास्करः ॥७॥ समुल्लसितशोभाढ्य-श्चंद्रास्यश्चंद्रलांछनः ॥ चंद्रचारुशरच्छायः, पातु चंद्रप्रभः प्रभुः ॥ ८ ॥ स्फुरद्रम्यतम-श्रीकः, सर्वदर्शी जिनोत्तमः ॥ आंतरारि-विघातोय, ददातु सुविधिर्विधिम् ॥९॥ श्री-भद्दिलपुरीवासी, शीतलः शीतला जिनः। विभासंभारसंशोभी, शीतलान्नः करोतु सः ॥ १० ॥ दिश्याच्छ्रेयांसि सः श्रीमान्, जिनः श्रेयांस उच्चकैः ॥ चमत्कारकरस्फार-प्रभाप्राग्भारभासुरः ॥ ११ ॥

इंद्रवज्रा छंदः.

भ्राजिष्णुचंचद्धरपद्मवर्णः, प्रोल्लसर्पत्स्फुटपद्मनेत्रः॥ सत्पद्मसंशोभिनखाऽरुण-श्रीः, श्रीवासुपूज्यः किल मां पुनातु ॥१२॥

उपेंद्रवज्रा छंदः.

लसत्प्रकृष्टोज्ज्वलवज्रतुल्य—रदप्रभोद्धा-

सततसभ्यवर्गः ॥ प्रभाव स्थं [illegible] करोतु, जिनाधिनाथो विमला।भधो माम् ॥१३॥

उपेंद्रवज्रा छंदः.

अनंतवि ।।नमनंतनाथं, नमामि भक्त्या [illegible]तपापमाथम् ॥ वरो । यं श्रीजगद[illegible]थमनंतसारातिशया।धेनाथम् ॥ १४ ॥

रथोद्धता छंदः.

स्तौमि सकि[illegible], मूर्तधर्ममिव [illegible]म् ॥ पर्वते [illegible]रिमिवाशनिश्रितं, गर्वपर्वतचयप्रणाशकम् ॥ १५ ॥

शांतेकांति [illegible]तिमुक्तिदं वरं, सांद्रशं वितर मे तु सत्वरम् ॥ [illegible]ांतिनाथ ! जिन ! शांतिकारक ! रोगशोकभयमोहवारक !१६॥

स्वागता छंदः.

ज्योतिषां ततिषु राजति [illegible]र्यस्तारकेषु च यथा ननु चंद्रः ॥ वेगिनां मरुदिवासजनेषु, कुंथुनाथ[illegible]ष्ठि तथासौ ॥ १७ ॥

वसंततिलका छंदः.

आलंबयष्टय इ[illegible]श्वरस्यांगुल्यो-

दशापि पदपङ्कजगस्य यस्य ॥ पापौघकर्द-
मानेमज्जदशेषजंतु-निष्कासनाय हि बभुर्ब
लवत्त रास्ताः ॥ १८ ॥

मालिनी वृत्तम्.

नयनकुमुदचंद्रः क्षीरवर्णाभकायो, बहु-
लसुखजयंताद्देवलोकाच्च्युतो यः ॥ स जयति
जगदीशो मल्लिनाथो जिनेंद्रो, जनशमसु-
खकारः कर्मवल्लीकुठारः ॥ १९ ॥

त्रोटक छंदः.

मुनिसुव्रतनाथ ! तव क्रमयोर्नखचंद्र-
मसो दश भांति विभो ! ॥ रचिता इव र-
त्नचयैरंकुराः, शुभमुक्तिवधूबहुकेलिक-
राः ॥ २० ॥

शिखरिणी वृत्तम्.

स्फुटश्रीरोचिष्णुं शमरसनिमग्नेक्षणयु-
गं, प्रसन्नास्यांभोजं प्रहरणसमूहोज्झितक-
रम् । विरक्तं रामाया निखिलजनसंतोष-

जनकं, भजे तं विश्वेशं नमिजिनवरं कल्मषहरम् ॥ २१ ॥

हरिणी वृत्तम्.

प्रणमतजनाः! श्रीमन्नेमिं विकस्वरवैभवं, प्रवणहृदयं प्राणित्राणे मनोहरता‌ृतम् । भवजलनि‌ौ द्वीपप्रायं श्रितं गिरिरैवतं, प‌ जिनजनैः सार्द्धं त्यक्तस्वराजिमतिप्रियम् ॥ २२ ॥

मंदाक्रांता वृत्तम्.

वंदे पार्श्वं प्रवरविभवं पार्श्वसंसेव्यपार्श्वं, कल्याणानां वि‌लसदनं राजमान‌भावम् । सत्कल्पद्रुं त्रिभुवनमनःकल्पनातुल्यदाना‌, वामाकुक्षिप्रवरस‌ाराजहंस‌ ॥ २३ ॥

शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्.

विभ्राजिष्णु कलाकलापकलित‌वकंयुग्मेन च, सद्भक्त्या विनयान्वितेन वि‌ता पूजा हि यस्य प्रभोः । स श्रीवीर जिनः प्र-

भावभवनं श्रेयांसि दिश्या सदानंतज्ञा-
नविशुद्धरूपकलितः कामेभपंचानन ॥२४॥

॥ इति चतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

वसंततिलका.

सर्वोत्तमेषु सुभगेषु तपाभिधेषु, गच्छे-
षु तिष्ठति सदा परमोपकारी ॥ आनंदसू-
रिरिति तस्य सुशिष्यलक्ष्मीरत्नस्यास्ते हंस-
विजयः स इमां चकार ॥ १ ॥

## श्रीसम्मेताशिखरतीर्थस्तोत्रम्.

सौधर्मेंद्रादयोदेवाः, त्रिदिवस्थानसं-
स्थिताः ॥ सेवंते यं सदातीर्थ—राजं तस्मै न-
मोनमः ॥ १ ॥ चमरेंद्रमुखाश्चापि, कृत्स्ना
भुवनपालकाः । सेवंते यं सदातीर्थ—राजं त-
स्मै नमोनमः ॥ २ ॥ नभोमणिनिशारत्न—
ग्रहनक्षत्रतारकाः ॥ सेवंते यं सदातीर्थ—रा-
जं तस्मै नमोनमः ॥ ३ ॥ भूपाश्चक्रपाण्या-
द्या, मर्त्यलोकनिवासिनः ॥ सेवंते यं सदा-
तीर्थ—राजं तस्मै नमोनमः ॥ ४ ॥ विंशति-

तीर्थपा यत्र, सिद्धा मुनिगणा न्विताः॥ तत्र-
सम्मेतशैलाद्रै, भूयात्सौख्यं ममाप्य ो॥५॥

॥ इति सम्मेतशिखरस्तोत्रं ॥

## श्री पंचपरमेष्ठिस्तोत्रम्.

उत्पन्नसज्ज्ञानमहोमयेभ्यः, सत्प्राति ा-
र्यासनसं थितेभ्यः । सद्देशनाऽऽनं तस-
ज्जनेभ्यो नमोनमोनित्यम ोजिनेभ्यः ॥१॥
सिध्धेभ्य आनंदरमालयेभ्यो, नमोनमोऽनं-
तचतुष्टयेभ्यः। सूरिभ्यउज्झांकृत ग्रहेभ्यो,
नमोन ः सूर्यसमप्रभेभ्यः ॥ २ ॥ सूत्रार्थ-
विस्तारणतत्प भ्यो, नमोनमोवाचककुंजरे-
भ्यः । साधुभ्य आराधितसंयमेभ्यो, नमो-
नमः शुध्धदयादमेभ्यः ॥ ३ ॥

॥ इति पंचपरमेष्ठीस्तोत्रम् ॥

## श्री आ िनाथस्तोत्रम्.

जयदेवाधिदेव ! त्वं, जयनाभिनंद्र ज !।
जयका मेतकल्पद्रु ! जयसंसारतारक !॥१॥
जयचिन्मात्रमग्न ! त्वं, जयतत्वाप शक !

जयदारादराऽरक्त, जय स्फारादरान्वित ॥२॥
जयज्ञाना-तासक्त, जयध्याना-ताचल ।
जययोगींद्रनाथत्वं, जयभागींद्र सेवित ॥३॥

॥ इति आदिनाथस्तोत्रम् ॥

## श्रीअजितनाथस्तोत्रम्.

जगदाद जिता देवो, न च कोप्यजितं जयेत्। अजितेनजिताः सर्वे, अजिताय नमो-नमः ॥ १ ॥ अजिताज्जयवंतोन्ये, अजितस्य जयो महान्। अजिते जयलक्ष्मीश्च, सुखं वसति सर्वदा ॥ २ ॥ ताहशोऽजितो देवो-ममा े दयांबुजे ।सदा तिष्ठतु भाग्यं चेत्, मराल इव ानसे ॥ ३ ॥

॥ इति अजितनाथस्तोत्रम् ॥

## अथ श्रीसंभवनाथस्तात्र .

नमः संभवनाथाय, त्रैक्यस्वामिने ध्रुवम्। पुण्योदयसंभवाय, भवभावभिदे पुनः ॥१॥ नमः धनपूर्णाय, गर्ज ाय च।

रंगव्यान रंगाय, शमसाम्राज्यसंपदे ॥२॥
विकारपापानां तु, मूलादुन्मूलनाय च ।
दुःखदारिद्र्यदुर्भिक्ष–भेदनाय महात्मने॥३॥

॥ इति संभवनाथस्तोत्रम् ॥

## श्रीशिखरगिरिचैत्यवन्दनम् .

जयजयशिखरगिरीशइश, विशजिनेश्वरनामी; अणसणकरीने इहां कने, पंचमी गति पामी. ॥ १ ॥ बीजा पण बहु मुनिवरा, शिवगतिना गामी; परमातमपदपामीया, वंदु शिरनामी. ॥ २ ॥ ए अवदात सुणी करी, हुं ए पदकामी; आव्योछुं तुज आगले, किम कीजे खामी ? ॥३॥ श्रीशामलीया पार्श्वनाथ । तुमे पण दीनदयाल; ए अरजी सुणी माहरी, द्यो निजपद लाल. ॥ ४ ॥ हुं अनाथ भमीयो घणुं, न मील्योतुमसमोनाथ; आपी पद पोता तणुं, राखो निज साथ. ॥ ५ ॥ रागरीस क्रोधे

भयों, निंदकने अविवेक; ए सघलुं उवेखीने, राखो मुज टेक. ॥६॥ मुज पापीना पापने, दूर करी हजूर; निजलक्ष्मीने आपशो, आशा छे भरपूर. ॥ ७ ॥

इति श्रीशिखरगिरिचैत्यवन्दन.

---

# अथ चोवेशी प्रारंभ.

## ॥ श्री आदिनाथ स्तवन ॥

कुमकुमने पगले पधारो राज, कुम० ए देशी.

॥ आतम तुं तो आदि जिणंद भज ले, आतम तुं तो प्रथम जिणंद भज ले ॥ ए आंकणी ॥ जुगलाधर्म निवारण स्वामी, शिल्प कला सज ले ॥ आतम० ॥ १ ॥ प्रथम राय आदिनाथ कहावे, प्रथम मुनि सघले ॥ आतम. ॥२॥ प्रथम तीर्थना नाथ नकी छे; झट दर्शने लग ले ॥ आतम. ॥ ३ ॥ संयम लई निरहार जगत्प्रभु, व-

रस फर्यां पगले ॥ आतम. ॥ ४ ॥ श्रेयांस घर प्रभु दान थकी थयुं, द्रव्य घणुं ढगले ॥ आतम. ॥ ५ ॥ केवलज्ञान दिवाकर थइ गया, मोक्ष एक डगले ॥ आतम. ॥ ६ ॥ ए प्रभुनुं हंस ध्यान धरीने, शिवसुखडां मंगले ॥ आतम. ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ श्री अजितनाथ स्तवन ॥

॥ अब मोहे डागरीयां ॥ ए देशी ॥

छो जगतारणहार, अजित जिन, छो जगतारणहार ॥ भवोदधि पार उतार ॥ अजित ॥ त्रिभुवनना आधार, तुमें प्रभु मंगलना करना ॥ कर्म रोग काटण कारण तुमें, वैद्य तणा अवतार ॥ वै. ॥ छो ज. ॥ १ ॥ ज्ञानवंत जाणो सहु जगने, तोपण मुझ संसार ॥ वीतक जे वीत्युं छे साहेब ! मातपिता परे धार । मा. ॥ छो ज. । २ । बालकनी लीलाकृत बालक, मा आगल करे लाड़ ॥ तिम हुं कहुं साहेब !

तुझ आगल, मुझ विनती अवधार ॥ मु. ॥
छो. ॥३॥ दान न दीधुं मुनि जनने बहु,
शील न पाल्युं लगार ॥ तपथी तो बहु
त्रास धरुं दिल, शा थशे मुझ हाल ? ॥ शा.॥
छो ज. ॥४॥ क्रोध रूप दावानल बलीयो,
लोभ अही विक ाल ॥ वलग्यो छे मुझनें
शुं करवुं ? कहो प्रभु दीनदयाल ! ॥ क. ॥
छो. ॥ ५ ॥ मान महा अजगरना मुखमां,
पडियो छुं निरधार ॥ मायाजालथकी बं-
धाणो, कर्मतणे अनुसार ॥ क. ॥ छो. ॥६॥
आ भव परभव ितकारा कांइ, कीधुं न
काम लगार ॥ तिण कारण सुख लेश न
पाम्यो, गयो जन्म निज हार ॥ ग. ॥ छो.
॥ ७ ॥ जाण आगल प्रभु शुं बहु कहेवुं,
जलदी करो ऊ ार ॥ अवगुण सघला
ऊवेखीने द्यो, शिवलक्ष्मी ातार ॥ द्यो.
॥ ८ ॥ इति ॥

## ॥ श्री संभवजिन स्तवन ॥

॥ हारे केने देख्या हमेरा स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ संभवजिन छो जगस्वामी, स्वामीजी जिनपद् पामी रे ॥ संभव० ॥ ए टेक ॥ तुम समदेव नहीं कोइ जगमां, अन्य देव छे कामी रे ॥ संभव० ॥ १ ॥ रागद्वेष नही तुजमां दीसे, मूर्त्तिमां नही खामी रे ॥ सं० ॥ २ ॥ अपर देव पूजाय धतूरे, तुमें जासुदे सुखधामी रे ॥ संभव० ॥ ३ ॥ संभव नाम सुख संभव दाता, जपो तुमें भवि शिरनामी रे ॥ संभव० ॥ ४ ॥ सेवकनो उद्धार करो प्रभु, राजहंस गति गामी रे ॥ संभव० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री अभिनंदनजिन स्तवन ॥

॥ मनहिमें वैरागी भरतजी ॥ म०॥ ए देशी ॥

॥ अभिनंदनजिन वाणी रे, प्राणी सांभलो गुणनी खाणी ॥ जयवंती वरते छे

जगमां, मिथ्यातिमिर मीटाणी ॥ कठिण कर्म काटण कारण ए, सुंदर जेसी कृपाणी० रे ॥ अ० ॥१॥ ए विण जन संसार भमे छे, जेम घांचीनी घाणी ॥ संशय सकल निवारण ए वली, भविजन साची जाणी रे ॥ प्राणी० ॥ अ० ॥ २ ॥ देव कुदेव न ते विण लहीयें, एम भाषे मुनि वाणी ॥ सुगुरु कुगुरुना भेद विना नही, शीव सुंदरी पटराणी रे ॥ प्राणी० ॥ अभि० ॥ ३ ॥ धर्म अधर्म छे अमृत विष सम, एक करो केम ताणी ॥ तेहनुं जाणपणुं करीने तुमें, लहो शिवलक्ष्मी शाणी रे ॥ ॥ प्राणी० ॥ अभि० ॥ ४ ॥

## ॥ श्री सुमतिजिन स्तवन ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंदशुं विनति रे, भव अटवी दूर टाल ॥ हुं अनादि निगोदमां रे, भमीयो अनादी काल ॥ सुमति जिन

मुझ विनति अवधार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सिद्ध एकनी साह्यथी रे, निकल्यो त्यांथी बाहार ॥ बादर स्थावरमां पडयो रे केमे न आव्यो पार ॥ सुम० ॥ २ ॥ विगलेंद्रियमांहे वस्योरे, पण थिरता नहीं कयांय ॥ पंचेंद्रियपणुं पामीयो रे, पुण्योदय महिमाय ॥ सुम० ॥ ३ ॥ त्यां पण नरकमां उपन्यो रे कर्म तणे अनुसार ॥ सागर तेत्रीश तिहां रह्यो रे, कष्ट तणो नही पार ॥ सुम० ॥ ४ ॥ तिर्यंच गति मांहे गयो रे, चढ्यो कसाइने द्वार ॥ छेदन भेदन त्यां सह्यां रे, केणे न लीधी मोरी सार ॥ सुम० ॥५॥ देव तणे भवे दुःख घणुं रे, मरणनो भय मनमांह्य ॥ मनुष्य गतिमां आवीयो रे, शुभोदयनी साह्य ॥ सुम० ॥ ६ ॥ देश अनारजमां थयो रे, नीच कुले अवतार ॥ त्यां पण तुम दर्शन विना रे, गयो जन्मारो हार ॥ सुम० ॥ ७ ॥ इण विध नाटक बहु

परें रे, नाच्यो दानदयाल ॥ हवे तुम चरणमां आवीयो रे, भव अटवी दूर वार ॥ सुम० ॥ ८ ॥ विनति सुणी प्रभु माहरी रे, सेवकनी करो सार ॥ महेर करी मुज कीजियें रे, शिवलक्ष्मी शिरदार ॥ सुम० ॥ ९ ॥ मुज मन सरोवरमां वसो रे, हंस तणी परें आज ॥ तेह थकी दूरे टले रे, दुष्ट कर्मनां काज ॥ सुम० ॥ १० ॥ इति ॥

## ॥ श्री पद्मप्रभजिन स्तवन ॥

॥ जगजिवन जगवालहो ॥ ए देशी ॥

॥ पद्मप्रभ जिन वालहा, देव पूजित पादपीठ लाल रे ॥ शक्ति रहित भक्ति करुं, त्रेपा[1] थईछे अदीठ[2] लाल रे ॥ प० ॥ १ ॥ गुण समुद्र गुण गायवा, शक्तिमान् कुण थाय लाल रे ॥ जिम कल्पांत समुद्रनें, भुजबले न तराय लाल रे ॥ प० ॥ २ ॥ तोपण तुम भक्तिथकी, स्तवना करूं म-

---

१ लज्जा २ अदृष्ट.

हाराय लाल रे ॥ मृग मृगेंद्र समीप ज्युं, धाय बाल मन लाय लाल रे ॥ प० ॥३॥ नाथ स्तुति करवाथकी, पाप सवी क्षय जय लाल रे ॥ अंधकार जिम सूर्यना, कीरणोथी प्रपलाय लाल रे ॥ प० ॥ ४ ॥ एम जाणी स्तवना करो, भवि तुमे चतुर सुजाण लाल रे ॥ पद्मप्रभपद पंकजें, हंस परें करो ठाण लाल रे ॥ प० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री सुपार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ शांत वदन कज देख नयन मधुकर मन लीनो रे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सेवो सुपार्श्व जिनदेव, आज तुम भाव घणेथी रे ॥ भा० ॥ इक्ष्वाकु कुल भया अवतार, मघवादिक मन हर्ष अपार ॥ हेमाद्रिपर स्नात्रसार, करता भक्तिथी रे ॥ सेवो सु० ॥ १ ॥ चार अतिशय जनम ते सार, कर्मनाशसें भये अग्यार ॥ ओगणीस किये सुरने उदार, चोत्रीश संख्याथी रे॥

सेवो सु० ॥ २ ॥ समवसरण बेसी जिन-राज, पांत्रिश गुणयुत वाणी वर्षाज ॥ भव्य जिव श्रवणनके काज, करते करुणाथी रे ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ धर्म दान देई महाराज, अनेक प्राणीके तारे समाज ॥ मेरी तो नही राखी लाज, तकसीर क्याथी रे ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ अथवा प्रभु तरणिसम न्याय, जगत्‌जिवका तिमिर पलाय ॥ घूक प्राणी कुंस एव थाय ॥ तस दुरित नडयाथी रे ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ तोपण जीन गुणसरकी पाल, हंसपरे रमे भविक बाल ॥ जिन वाणी मोतियनकी माल, अर्पण करवाथी रे ॥ सेवो सुपार्श्वजिन देव आज, तुम भाव घणेथी रे ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ श्री चंद्रप्रभजिन स्तवनं ॥

॥ मल्लिजिन नाथ जी व्रत लीजेंरे ॥ ए देशी ॥

॥ चंद्रप्रभनाथजी सुख दीजें रे ॥ सुख

---

१ घुवड पक्षी.

दीजें माहारा प्रभु सुख दीजें ॥ चंद्रप्रभ० ॥ माता लक्ष्मणायें प्रभु जया रे, तिहां इंद्र इंद्राणीमली आयारे, जई मेरुशिखर नवराया ॥ चंद्र० ॥१॥ महसेनराजा कुलचंद रे, विकसे ज्ञान कुमुद अमंद रे, मुनि मधुकर लहे मकरंद ॥ चंद्रप्रभ० ॥ २ ॥ निशाकर नामें अभिज्ञान रे, जगजीव करे गुणगान रे, माने सुधा तणुं कर्युं पान ॥ चंद्रप्रभ० ॥ ३ ॥ प्रभु दीक्षा अवसर जाणी रे, रुषि सहस सहित गुणखाणी रे, वर्या संयम शुभ पटराणी ॥ चंद्रप्रभ० ॥ ४ ॥ उपासकविजय अभिधान रे, देवी भ्रकुटी गुणवान् रे, मानुं लक्ष्मी तणे ए समान ॥ चंद्रप्रभ० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री सुविधिजिन स्तवन ॥

॥ छोड चला बनजारा ॥ सुने० ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधिजिन कुगति निवारी, मुज सार करो दिल धारी ॥ सुग्रीव राजा कुल

आये, जब रामा मात झुलाये रे, तव प्रभुने कीइ किलकारी ॥ मुझ० ॥ १ ॥ जिन यौवन वयकुं पावे, तव लोकांतिक सुर आवे रे, ल्यो दिक्षा जगहितकारी ॥ मुझ० ॥२॥ संयमरमणी जब पाई, तब मनपर्यव हुवो धाइ रे, पींछे केवल ज्ञान स्वीकारी ॥ मुझ० ॥ ३ ॥ मिल ईंद्रादिक देव आई, शुभ समवसरण बनाई रे, सुणि वाणी मोहनगारी ॥ मुझ० ॥ ४ ॥ सब कर्मोका बंध छोडाइ, दोय धर्म शुकल ध्यान ध्यायी रे, शिवलक्ष्मी लही प्रभु प्यारी ॥ मु० ॥ ४ ॥

## ॥ श्री शितलनाथजिन स्तवन ॥

॥ हुं तो भुली गयो छुं अरिहंतने जो ॥ ए देशी.

॥मुने शीतल जिनतुम प्रीतडी जो, तोरी प्रतिमा शीतल दीठडी जो, तेथी आंखडली माहरी ठरी जो ॥ मुने० ॥१ ॥ प्रभु कल्याणना मंदिर छो जो, तुमें मेरु गिरी परें धीर छो जो ॥ मुने० ॥ २ ॥ तुमें पाप तणा भे-

दनार छो जो, तुमें कुमतीना छेदनार छो जो ॥ मु० ॥ ३ ॥ तुमें अभयदान देनार छो जो, भवि जीवने पास लेनार छो जो ॥ मु० ॥ ४ ॥ हुं तो संसारमां पडी रह्यो जो, त्यांतो दुःखथकी जलि रह्यो जो ॥ मुने० ॥ ५ ॥ प्रभु सेवक सुखीयो कीजीयें जो, शिवलक्ष्मीथी सुखीयो कीजीये- जो ॥ मुने० ॥ ६ ॥ इति.

## ॥ श्री श्रेयांसजिन स्तवन ॥

॥ चिंतामणीपास प्रभु अर्ज करूं में तुजकुं ॥

॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु श्रेयांस सुणो आप मेरी बात कही, तुम विना कोण धरे कान टुक सुणो तो सही ॥ प्रभु श्रे० ॥ १ ॥ में हुवा सनाथ अब प्रभु तुम हाथ ग्रही, तुम विना कोण करे सार मेरी पास लही ॥ प्रभु श्रे० ॥२॥ अंग मेरा संग करे चंग गुण केरा नही, एक मुने रंग तेरे नामका जेसा छे दहीं ॥

प्रभु श्रे० ॥ ३ ॥ करो मुझे हितधार संसार कारागार बही, हंस लहे वास तुम चरण कज पास रही ॥ प्र० ॥ ४ ॥

## ॥ श्री वासुपुज्यजिन स्तवन ॥

## ॥ लावणी ॥

॥ श्री अजितनाथ माहाराज गरिबनीवाज० ॥
॥ ए देशी ॥

श्रीवासुपूज्य महाराज, सकल सुख काज, सुधारो आज, सुधारो आज ॥ जयवंता छो जगमांहि, तुमें माहाराज ॥ ए आंकणी ॥ देवोमां जेहवो ईंद्र, तारामां चंद्र न्यायीमां राम, न्यायीमां राम ॥ तेम स्वरूपवंतमां रुडो दीसे काम ॥ रुपवंती मांहे नार, खरेखर सार, विराजे रंभा, विराजे रंभा ॥ तिम वादित्रोमां वागे रुडी भंभा ॥ साहासिमां रावण आप, खपावी पाप, कर्युं निज काज, कर्युं निज काज ॥ ज० ॥ १ ॥ ऐरावण हस्तिमां बडो छे तांहि,

बीजो कोई नाही, बीजो कोई नाही ॥ तिम अभय विराजे बुद्धिवंतनी मांहि ॥ तीर्थोमां मोटुं तेह, शत्रुंजय जेह, नथीकोइ बीजुं नथी कोइ बीजुं ॥ जिम पुण्य पापथी बलि नहिकोई त्रीजुं ॥ नवकार समो नहि मंत्र, नही कोई तंत्र, नहि कोई साज, नहि कोई साज ॥ ज० ॥ २ ॥ सहकार तरुमां सार, बराबर यार, कहुं छुं साचुं, कहुं छुं साचुं ॥ तिम वासुपूज्य जिन देव जोई हुं राचुं ॥ नहि देव जगतमां थाय, विद्रुम समकाय, बीजो कोई तेवो, बीजो कोई तेवो ॥ श्री वासुपूज्य माहाराज जिनेश्वर जेवो ॥ तसगुण गणसरनी पाल, रमे छे मराल, सुखने काज, सुखने काज ॥ जय० ॥ ३ ॥ इति श्री वासुपूज्य जिन० ॥

## ॥ श्री वीमलनाथजिन स्तवन ॥

॥ विमलाचल विमला प्राणी ॥ ए देशी ॥

प्रभुविमलनी विमला वाणी, धरो हृद-

यकमले तुमें प्राणी, एतो गुणगण सकलनं खाणी, एतो मिथ्या तिमिर मीटाणी ॥ विमलजिननाथने भवि सेवो, नहि देव जगतमां एह्वो ॥ विमलजिन० ॥१ ॥ त्रण लोक तणा एज स्वामी, तीर्थंकर पदवी पामी, ज्ञानरुप धरे गुणधामी, योगींद्र पदे विशरामी ॥ विमल० ॥ २ ॥ संसारमां लही अवतार, थया एकांते हितकार, जगनाथे पूर्ण धरी प्यार, कर्यो मोक्षमारगनो उद्धार विमल० ॥ ३ ॥ संसार समुद्रमां झाज, भव्य जीवने तारण काज, देखाडण मुक्तिनुं राज, पाम्या संयम श्रीमहाराज ॥ विमल० ॥ ४ ॥ इति.

## ॥ श्री अनंतनाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥

॥ अब तो पार भये हम साधु ॥ ए देशी ॥

अनंतनाथ महाराज तुमें प्रभु, मुझ मन वसज्यो महेर करी रे ॥ ए आंकणी ॥

मन माहरूं मेलुं छे साहेब, रहे नही शुभ ठाम ठरी रे, ॥ तिण कारण साहेब तुज आगल, अरज करूं छुं पाय पडी रे ॥ अनंत० ॥ १ ॥ जेम मलिन जल कतक चूर्णना, जोगथकी निर्मलता ग्रहे रे ॥ तिम तुम जोगथकी मन माहारूं, शांत थई स्वछताकुं लहे रे ॥ अनंत० ॥ २ ॥ तुम मुख चंद्र समायोगें करी, मन माहारूं न आणंद झर्युं रे ॥ तिण कारण दिलमां इम मानुं, पथ्थरथी पण कठिण ठर्युं रे ॥ अनंत० ॥ ३ ॥ समजाव्युं समजे नहीं साहेब, श्वान, पूछ ज्युं वक्र वले रे ॥ चंचळता बहु एहनी दीसे, बाल परें ठाम ठाम चले रे ॥ अनंत० ॥ ४ ॥ तुमें प्रभु मनडु थिर करी लीधुं, कामण एहवुं शुं करि दीधुं ॥ तिम माहरूं करशो जो साहेब, तो मुझ कारज सघलुं कीधुं ॥ अनंत० ॥ ५ ॥ तुम चरणांबुज राजहंस परें, जो मन माहरूं वास करे

रे ॥ तो मुझ संपद् सघळी साहेब, तुम पसायथी आवी मळे रे ॥ अनंत० ॥ ६ ॥

## ॥ श्री धर्मनाथजिन स्तवन ॥

॥ राग ठुमरी ॥

॥ महावीर चरणमें जाय, मेरो मन लागी रह्यो ॥

॥ ए देशी ॥

श्री धर्मनाथ तुम पाय, मेरो मन लागि रह्यो ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ कर जोडी कहुं छुं सुण साहेब, मिथ्या तिमिर मिटाय ॥ मे०॥ श्री०॥१॥ दोष सहित [illegible]खडुं में कीधुं, परनिंदा बहु गाय ॥ मे० ॥ श्री०॥२॥ परनारी निरखेसें नयणां, निर्मळ नांहीं गिणाय ॥ मे० ॥ श्री० ॥३॥ परपीडा चिंतिने चित्तमां, चित्त कर्युं दुःख दाय ॥ मे०॥ श्री० ॥ ४ ॥ धन्य दृष्टि जेणे तुमने जोया, सुंदर तेह मनाय ॥ मे० ॥ श्री० ॥५॥ धन्य रसना जेणे स्तुतिरस लीनो, तेह प्रमाण कराय ॥ मे० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ धन्य हृ[illegible]यकज तेहनुं

कहीये, जिन .सलीयो रे बेठाय ॥ मे० ॥ श्री० ॥ ७ ॥

## ॥ श्री शांतिनाथजिन स्तवन ॥

॥ राग जंगलो ॥

॥ महावीर तोरा समवसरणकी रे ॥ ए देशी ॥

॥ शांतिजिन मूर्त्ति तोरी लागे मने प्यारी रे ॥ हुं नीरखुं दीलमां धारी ॥ शां० ॥ ए आंकणी ॥ कंचन सम काया रे, शांतिनाथ कहाया रे, प्रणमुं हुं तोरे पाया, तुम अजब ध्यान लगाया ॥ शांति० ॥१॥ शांत वदनतुम शोभे रे, इंद्र चंद्र मन लोभे रे तुम नयन युगल ने मोभे, मृगनां नेत्रो नहिं थोभे ॥ शांति०॥२॥ पदवी बे पामी रे, चक्रीजिन स्वामी रे, वंदु छुं हुं शिर नामी, नहीं तुम दर्शनमां खामी ॥ शांति०॥ ३ ॥ तुज समो कोई नाणी रे, जगमां नहीं प्राणी रे, तुम मुक्ताफलसम वाणी, चावी हंसे गुण खाणी ॥ शांति० ॥ ४ ॥

## ॥ श्री कुंथुनाथजिन स्तवन ॥

॥ राग दादरो ॥

॥ चाल इंग्रेजी वाजानी ॥

कुंथुजिनेंद्र चंद्र प्रभु ऐसी क्या करी, हमकुं लगाई नेह प्रीत और शुं धरी ॥ कुंथु० ॥ १ ॥ अपना सुणाई नाम मेरा चित लीया हरी, अब कया गुनाह मेरा प्रीतसें गये ड-री ॥ कुंथु० ॥ २ ॥ तुम दर्शकुं तरसे छे मेरी आंखडी खडी, प्रभु दीजीयें दर्शन माफ मागुं पग पडी ॥ कुंथु० ॥३॥ तुम ध्यान विना जाय मेरी पाप में घडी, तुम मूर्त्ति विना ध्यान मेरा जाय छे गडी ॥ कुंथु० ॥ ४ ॥ जिस्सें तुमेरा नेह, उस्सें मेराबी वली, प्रभु कीजीयें दयाल मिले लक्ष्मी भली ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री अरनाथजिन स्तवन ॥

॥ श्री श्रीशांतिनाथ, जोडुं हुं बे हाथ, नमी करूं प्रणाम, नित उठीने प्रभात ॥ ए देशीं ॥

अरनाथ जिनराज, पकड कुमति हाथ,

तुं होय जासनाथ,नहि तो झुरेगा दिन रात ॥ ए चाल ॥ साची मूर्ति साहेबकी छे, एसी नहि कोइ होय ॥ जैनधर्मना पंडितोयें, परखी लीधी सोय ॥ अरना० ॥ १ ॥ द्रौपदीये प्रतिमा पूजि हे, ज्ञातासूत्रें जोय ॥ कामदेवकी प्रतिमा आगळ, नमुथ्थुणं नहि होय ॥ अरना० ॥ २ ॥ जंघाचारण विद्याचारण, प्रतिमावंदन काज ॥ नंदीश्वरद्वीपें जा पहोचे, भगवती देखो आज ॥ अरना० ॥३॥ जो ते मुनियो विद्यासें वली, सेल करनकुं जाय ॥ तोवहांके परवतको वंदी, कैसे नहीं मकलाय ॥ अरना० ॥ ४ ॥ सूर्याभें प्रतिमा पूजी हे राय पसेणी पाठ ॥ वोह पण कुमतीकर्णविवरमें, तप्त त्रपु ज्युं ठाठ ॥ अरना० ॥ ५ ॥ चैत्य शब्दका ज्ञान अर्थ तुं करे धरी मन हाम ॥ पण पंडित हंसोकी समाजे, काग परें तुझधाम ॥ अरना० ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीमल्लिनाथजिन स्तवन ॥

॥ राग परज ॥

॥ निशदिन जोउं तारी वाटडी, घेर आवोने ढोला ॥

॥ ए देशी ॥

मल्लीजिनेश्वर साहेबा, वसीया मन मेरा ॥हृदयकमळ थापन करी, धरुं ध्यान में तेरा ॥ मल्ली० ॥१॥ माहादेव तुझ मानकें, अन्य देवकुं छोडा ॥ जिस तुल्य जगमें को नहीं उनका कुण जोडा ॥ मल्ली० ॥२॥ अनुचित कथन करणसें, ब्रह्मा शिर तोडा ॥ जाग्र-तराय मदनसें, रवि बन गया घोडा ॥ मल्ली० ॥ ३ ॥ वचन भ्रष्टता होणसें, हरिरोग हे डोला ॥ लुप्तशिश्न कुकर्म सें बन गया हर भोला ॥ मल्ली० ॥ ४ ॥ तिण कारण नहीं देव ए, इम बहुजनबो-ला ॥ मोहरायप्रतिमल्ल्ले, मल्लिनाथ एकीला ॥ मल्ली०॥५॥ प्रभु दर्शनसें पामवा, अनुभव रस चोला ॥ तुम पद पद्मसरो-वरे करे हंस कल्लोला ॥ मल्ली० ॥६॥ इति०

## ॥ श्री मुनिसुव्रतजिन स्तवन ॥

॥ राग पीलु ॥

॥ तीर्थ उजारो अब, करीयें भविक वृंद, दाख्यो रे जिनंदपद, आनंद भरें रे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ मुनि सुव्रतजिन, नमीनें चेतन राय जाचो रे सुगति गाय, गुण गण वृदं रे ॥ मुनि० ॥ ए आंकणी ॥ स्वामी जिनाधीश जोय, भवभय दुःख खोय, जयजयकार होय, कटे कर्म कंद्रे ॥ मुनि० ॥ १ ॥ सेवना प्रभुनी करी, पापपंक परिहरी, शुभ पंथ पग धरी, हरो सर्व फंद रे ॥ मुनि० ॥२॥ मनमां मगन थाइ, सेवो जिन तुमें भाइ, करो न ठगाइ कांइ, वरोनें आनंद रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ देवनी करीने सेव, दूरे करी खोटी टेव, ध्यान धरो नित्यमेव, पद्मानो नंद रे ॥ मुनि० ॥४॥ प्रावृट कालने लही, हंस जय

सर बही, तिम तजी जावो मही, जिहां प्रभु चंद रे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥

## ॥ श्री नमिजिन स्तवन ॥

॥ राग माढ ॥

॥ थारी गइ रे अनादिनी निंद जरा टुंक जोवो तो सही ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु वप्रानंदन चंद नमी, जिन जोवो तो सही ॥ जोवो तो सही, महारा साहिब जोवो तो सही ॥ प्रभु० ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञानवंत भगवंत, ध्यानमां लेवो तो सही ॥ मारा साहीब लेवो तो सही तुम विण कुण छे आधार, मने टुंक कहेवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सकलकलाकलाप तु में, प्रभु देवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु ज्ञात तत्व त्रण तत्व रुप, द्यो मेवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भाग्यहीन नही देवनें, पामे तेवो तो सही ॥ मे० ॥ श्री नम नाथ महाराज, तमारा

जेवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥३॥ तिण कारण मुझ भाग्य ीनता, धोवो तो सही ॥ मे० ॥ करी निरमल निरुपम अद्भुत, सुंदर छोवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥४॥ नील कमल उरुमां थापी, पत खोवो तो सही॥ मे० ॥ ए हंस तणुं छे ठाम तुमें, केम ढोवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ हंस बेठावी त्यांय तुमें, यश बोवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु ितकारो महाराज, जगतना होवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

## ॥ श्री नेमिनाथजिन ्तवन ॥

॥ राग भैरवी ॥

॥ लागी लगन कहो केसें छूटे, प्राण जीवन प्रभु प्यारेसें ॥ ला० ॥ ए देशी ॥

॥ नेमी जिणंद जुहार रे प्राणी, नेमी जिणंद जुहार रे ॥ ए अं कणी ॥ शिवा देवी जठरे जन्म लीयो हे, तीन ज्ञान दिल धार रे ॥ ती० ॥ ने० ॥ १ ॥ गदाकौ मो-

दिकी वालकें कीनी, जेसी वृक्षकी डाल रे ॥ जे० ने० ॥ २॥ अद्भुत बल देखी चित जमक्यो, हरि भयो हरि वत काल रे ॥ ह०॥ ने० ॥ ३ ॥ राजुल रुडी छोड चले प्रभु, जाइ चढे गिरनार रे ॥ जा० ॥ ने० ॥ ४॥ अद्भुत ध्यान धरि तिहांकीनो, शिव लक्ष्मी स्वीकार रे शि० ॥ ने०॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री पार्श्वजिन स्तवन ॥

### ॥ राग खमाच ॥

॥ शांतवदनकज देखनेन मधुकर मन लीनो रे ॥ ए देशी

॥ पार्श्वनाथ महाराज आज दुर्गति दुःख वारो रे ॥ भला दुर्गति दुःख वारो रे ॥ पार्श्व० ॥ ए आंकणी ॥ तें प्रभु राग उरग गारुडूर, वक्र दारुण कर्यो चकचूर, वेनता नंदन जेम शूर, भला० निर्भय सुख धार्यो रे ॥ भला० ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ अत्यंत द्वेषी रोषी द्वेष भीषणने प्रभु तुमें विशेष महा

भटनी परें जिनेश, भला० जीत्यो जयकारो रे ॥ भला० ॥ पार्श्व० ॥ २ ॥ छल गवेशी महा विकराल, मोह पिशाच जगतनो काल, तेनो निग्रह कीधो लाल, भला० जेम मांत्रिक सारो रे ॥ भला० ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ अश्वसने कुलकमल उल्लास, करवामां प्रभुरवि प्रकाश, वामा उदरदरीमां खास भला० केसरी अवतारो रे भला० ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ इक्ष्वाकु कुलभुषण गुणवान्, गतदूषण दूरीकृतमान, उभय पक्ष जस हंस समान, भवकूप नीवारो रे ॥ भला० ॥ पार्श्व० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री महावीरजिन स्तवन ॥

॥ सिद्धाचलगिरि भेट्या रे, धन्य भाग्य हमारां ॥ ए देशी ॥

॥ महावीरजिन जग प्यारा रे, मन[illegible]नगारा ॥ त्रिशलानंदन प्यारा रे, मन-

मोहनगारा ॥ ए आंकणी ॥ प्राणत देव लोकथी चवीया, जग जनना आधारा ॥ त्रिशला उदरसरोज हंस ज्युं, स्वामी लह्यो अवतारा रे ॥ मन० ॥ १ ॥ माता चौद सुपन तव देखे, अनुक्रमें मंगलकारा ॥ गजवर वृषभ सिंह ने देवी, दाम शशी रवि सारा रे ॥ मन० ॥ २ ॥ ध्वज कुंभ पद्मसरोवर सागर देवविमान उदारा ॥ रत्नसमुह वन्हिनी ज्वाला, राणी कहे सुण वहाला रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ शुं फल होशे कहो मुझ स्वामी, तव कहे राय विचा-रा ॥ राज्यपति राजा तव नंदन, थासे जिन मनोहार रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ चैतर शुदी तेरशने दिवसें, जन्म थयो सुख-कारा ॥ नारकने पण आनंद ते दिन, हंसा-दिक जयकारा रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ इति० ॥

॥ इति चोवीशी समाप्त ॥



## ॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

तिरथनी आशातना नवि करीए ॥ ए देशी ॥

विमलाचल नगनाथने, चित्त धरीयें ॥ हांरे चित्त धरियें रे, चित्त धरियें ॥ हांरे चित्त धरियें तो शिववधू वरियें हांरे तरियें भव पाथ ॥ विमला० ॥ ए आंकणी ॥ चौद म..नदी शोभती तिण ठाम, हांरे तेमां शत्रुंजी अति अभिराम, हांरे हारी गंगा फरे अन्य ठाम, हांरे एतो .ण्यनो रेख ॥ विमला० ॥ १ ॥ तटिनी पतिना तट प्रतें करे लीला, हांरे तालध्वज उत्संगमां क्रीडा, हांरे करती काटे कर्मपीडा, हांरे नदी सर्वमां सार ॥ वमला० ॥ २ ॥ क्रोड सहस भवनां कर्यां भवि प्राणी, हांरे निज पातकनी करे हाणी, हांरे ए.वोजिन गणधरनी वाणी, हांरे धरी पगलुं एक ॥ ..ला० ॥ ३ ॥ रहित होवे कर्मरजथकी पंथ रजथी, हांरे भव भ्रमण मिटे त्यां भ्रम-

णथी, हांरे थिर संपदा होय द्रव्यव्ययथी, हांरे पूजे होय पूज्य ॥ विमला ॥ ४ ॥ कंडुराय महा पापीयो इहां आवी, हांरे शीलसन्नाहें काय [illegible]ीपावो, हांरे व्रत शस्त्रथी मोह हरावी, हांरे वरी शिववधू सार ॥ विमला० ॥ ५ ॥ दुष्टअदनी राजादनी तलें भालो, हांरे आदिनाथ चरणने जुहारो, हांरे मोहराय सुभटने निवारो, हांरे टालो भवपीड ॥ विमला० ॥ ६ ॥ गिरिभूपति शिर सेहरो जिनभासे, हांरे आदिनाथ जगतने प्रकाशे, हांरे जराजन्म मरणने निकासे, हांरे एतो जगतना तात ॥ विमला० ॥ ७ ॥ अणहिल्लपुर पाटणथकी संघ लावे, हांरे झवेरचंद गुमानचंद भावे, हांरे [1][illegible]ंवतवेद अब्धि सुहावे, हांरे नंद इंदु मिलाय ॥ विमला० ॥ ८ ॥ कृष्णपक्ष पोषमासनी तिथि सारी, हांरे दशमी लागे

---

१ संवत् १९४४.

मुने प्यारी, हांरे मानुं लक्ष्मी विजय कर-
नारी, हारे भेटया आदिजिणंद ॥ विमला०
॥ ९ ॥ इति ॥

## ॥ श्रीसिद्धाचलमंडन आदि-
## जिन विनति ॥

॥ शी गति थासे हमारी, हे दिनानाथ शी गति० ॥
॥ ए देशी ॥

सार करोने हमारी, हे आदिनाथ सार करोने हमारी ॥ ए अंचली ॥ जयवंता वर्त्तो जगमांही प्यारा । जगदीश्वर जय-कारी ॥ आदि० ॥ १ ॥ जगबांधव जगने तुमे छो प्यारा । जगजीवने उपगारी ॥ हे आदि० ॥ २ ॥ लोकालोक विलोकन हारा प्यारा । केवलालोकना धारी ॥ हे आदि० ॥ ३ ॥ रविसम भुवन कमल विकसे छे प्यारा । देखी छबिने तुमारी ॥ हे आदि० ॥ ४ ॥ मोह विनाशक नीति प्रकाशक प्यारा । नमुं छुं वार हजारी ॥ हे आदि०

॥ ५ ॥ कल्याणकारी तुं कलेश निवारी प्यारा । भवसंतापनो हारी ॥ हे आदि० ॥ ६ ॥ राग रोष मोह हण्या तुमें ते प्यारा। मुजने हणे अति खारी ॥ हे आदि० ॥ ७ ॥ ते कारण शरणे आव्यो छुं प्यारा । सेवक लेज्यो उगारी ॥ हे आदि० ॥ ८ ॥ चारकषाय अराति[1] हण्यातें प्यारा । तेह पडया मुज ल्हारी ॥ हे आदि० ॥ ९ ॥ अति बलवंत महंत तुमे छो प्यारा । वेगे दियोते निवारी ॥ हे आदि० ॥ १० ॥ हुं आठ कर्म बंधन बंधायो प्यारा । तें तो लीलाये दियां टारी ॥ हे आदि० ॥ ११ ॥ बंध विमोचक नाम धरावो प्यारा । मुज बंधन दियो गाली ॥ हे आदि० ॥ १२ ॥ भवअर्णव लीलाए तर्या छो प्यारा । डुबुं हुं कर्मथी भारी ॥ हे आदि० ॥ १३ ॥ धर्मपोतपसाए करीने प्यारा । डुबताने

१ शत्रु.

लियो तारी ॥ हे आदि० ॥ १४ ॥ निद्रालु बोधक बोध पमाडो प्यारा मिथ्यात्व उंघ उडाडी ॥ हे आदि० ॥ १५ ॥ शुं बहु कहुं पालो पालो मने हो प्यारा । अंतर शत्रु ठाडो ॥ हे आदि० ॥१६॥ तुं स्वामी तुं गुरु तुंहि मित्र प्यारा । जन्म जरा द्यो मटाडी ॥ हे आदि० ॥१७॥ जगजंतु संतान पालक प्यारा । भक्ति तमारी मुक्ति बारी ॥ हे आदि० ॥ १८ ॥ तेम पसाय करो परमेश्वर प्यारा आणा पालुं तुज सारी ॥ हे आदि० ॥१९॥ सिद्धाचलपर समवसर्या छो प्यारा । पूर्व नवाणुं वारी ॥ हे आदि० ॥ २० ॥ दर्शन वार नवाणुं करीने प्यारा । हंसे अरज करी प्यारी ॥ हे आदि० ॥ २१ ॥ इति०

## ॥ श्रीपुंडरिकगिरिमंडन पुंडरीक ॥
## ॥ स्वामी स्तवन ॥

॥ ओ साहेब बाहु जिनेश्वर विनवुं ॥ ए देशी ॥

हे पुंडरीक मुजपरे सिद्धगिरि सेवज्यो ।

एम कहे आदिनाथ हो । हे पुंडरीक मुक्ति निबंधन एह छे। भवजल तरवा हाथ हो ॥ हे पुं० ॥ १ ॥ हे० तीर्थ ए ताहरा नामथी । जगमां जाहेर घणुं थाशे हों । हे० जेम जग रचना मुज थकी। लोकमांहे कहेवाशे हो ॥ हे पुं० ॥ २ ॥ हे० पांच इंद्रियमन वश करी । रोकी आश्रव परिणाम हो । हे० आत्मस्वरुपे रमण करो । जेम लहो अविचल ठाम हो ॥ हे पुं० ॥ ३ ॥ हे० घाती कर्म बाली करी । लही केवल अभिराम हो । हे० गिरिमहिमाथी तुमे थशो । मुक्तिपति सुख धाम हो ॥ हे पुं० ॥ ४ ॥ हे० हंस कहे जिन शिखडी । शिर धरी कर्यों भव अंत हो ॥ हे० तेम तुज आणा मुज होज्यो । जेहथी थाउं भलो संत हो ॥ हे पुं० ॥ ५ ॥

# ॥ श्री पुंडरीकगिरि स्तवन ॥

॥ महावीर तोरा समवसरणकी रे ॥ ए देशी ॥

आव्यो गिरि शरणे त .ारां भव भटकीरे हवे लेजो सार ह्मारी, हुं अरज करुं वारंवारी, नाठानी नथी कोइ बारी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ पुंडरीक गुरु तारी रे, पुंडरीक नाम धारी रे, चैत्रीराकातिथी सारी, पांच क्रोड भला अणगारी, तें लीधा इहां उगारी ॥ आव्यो. ॥ १ ॥ धर्मर...दिक आवे रे, पांडव भले भावे रे मुनि विशक्रोडने लावे, ते पण इहां मुक्ति पावे आसो सुदि पुनम सुहावे ॥ आव्यो. ॥२॥ पुंडरीकगिरि राया रे, आदिनाथकहायारे, ते पूर्वनवाणुं सधाया, गुरु लक्ष्मी विजय सुपसाया, हंसे गिरिवर गुण गाया ॥ आव्यो. ॥ ३ ॥ इति० ॥

# ॥ श्री सिद्धाचल तीर्थ स्तवन ॥

॥ पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धाचल स्मरण करी हंसा, पामो परमानंदरे । सर्व तीर्थमां उत्तम ए गिरि जेम तारामां चंदरे ॥ सि० ॥ १ ॥ रायण हेठल ऋषभजिनेश्वर, पूर्वनवाणुं वाररे । समवसर्या तिहां पगलां प्रभुनां, वंदि लहो भव पाररे ॥ सि० ॥ २ ॥ ते काले पचास योजननो, मुले गिरि विस्ताररे । उपर ॥ दशयोजन तेम जाणो, उंचो आठ विचाररे ॥ सि० ॥ ३ ॥ द्रव्यभाव शत्रुंजयकारक, शत्रुंजय शुभस्थानरे । आव्यां सुर समुदाय विटाणा, स्वामी श्रीवर्धमानरे ॥ सि० ॥ ४ ॥ इंद्र तणां आसन तव कंप्यां, सुचवतां होय जेमरे । चोसठ इंद्र घणा देवोथी, समवसरण करे तेमरे ॥ सि०

॥ ५ ॥ सुरपति बहु देवे परवरीया, जिनवं-
दनने काजरे । गगनमंडल दीपावता
कहे छे, सेवकने सुणो आजरे ॥ सि०
॥ ६ ॥ शे[illegible]हू वरवा वेदिका समगिरि,
एम कहे अरिहंतरे । भवसागरमां डुबताने
ए, अंतरीपसमो संतरे ॥ सि० ॥ ७ ॥
देव मनुष्यादिक भवमांहे, जेहने ए गिरि
रायरे । देख्यो नहि नजरे ते प्राणी जाणो
तुमे पशु प्रायरे ॥ सि० ॥ ८ ॥ सिंह सर्प
ने मोर विगेरे, पापी प्राणी जेहरे । विम-
लाचलपर नाथ निहाली, स्वर्ग गति लह्या
तेहरे ॥ सि० ॥ ९ ॥ श्री सीमंधर स्वामी
मुखथी, में, सांभलियुं एमरे । शत्रुंजय
सेवी लिये पापी, कंडु राय परे क्षेमरे ॥
स० ॥ १० ॥ सर्व सुरेश्वर वीर नमीने, मुनि
वंदे महाभागरे । लब्धिवंत महंत केइ छे,
ध्यानारुढ निरागरे ॥ सि० ॥ ११ ॥ जप-

१ बेट.

माला मणिगण कोइ गणता, तप तपता अणगारे । मूर्त्तिवंत शमरस सम देख्या, मानु धर्म देह धाररे ॥ सि० ॥ १२ ॥ एहवा मुनिवर वंदि बेठा, सुरवर करी गुणगानरे वीर विभु देशना रस पीवा, जिम चातक पयपाने[1] ॥ सि० ॥ १३ ॥ अनंता तीर्थंकर सिध्या, साधु सिध्या अनंतरे । भावि अनंता मोक्ष साधसे, एम भाषे भगवंतरे ॥ सि० ॥ १४ ॥ सोरठ देश मुगट सम सुंदर शत्रुंजय नगनाथरे । केवली कही न शके जस महिमा, वंदो जोडी बे हाथरे ॥ सि० ॥ १५ ॥ अन्य जगाए पाप करेलां, तीर्थ उपर क्षय थायरे । पण तीर्थे जइ पाप करे ते, वज्रलेप थइजायरे ॥ सि० ॥ १६ ॥ चारित्रयुत जिन ध्यान इहां पर, चंद्रे चंदन तुल्यरे । मुद्रामां जेम मणि सुहावे, पर्वणि दान अमूल्यरे ॥ सि० ॥ १७ ॥ मुक्तिवधू मुख देखन कारण, दर्प्पण सम

---

१ जल.

आकाररे । सूर्यावर्त कुंड इहां शोभे, कोढ अढार संहाररे ॥ सि० ॥ १८ ॥ तस जलथी महिपाल कुंवरनो, रोग गयो तत्कालरे । गिरि सेवाथी बहु सुख पाम्यो, पाप गयां पातालरे ॥ सि० ॥ १९ ॥ संघ चतुर्विध साथ लइने, यात्रा करे निज हेतरे । तीर्थं कर पद पामे प्राणी । जो करे भाव समेतरे सि० ॥ २० ॥ पालणपुरवासी अमूलखभाइ, तरवाने भव पाथ रे । संघ काढी इहां यात्राये आव्या, निज भाइयो संघाथरे ॥ सि० ॥ २१ ॥ संवत ओगणीसबावन ( १९५२ ) केरा, शुक्लपक्ष माघ मासरे । बीज दिने इहां यात्रा करीने, पाप कर्यां केइ नाशरे ॥ सि० ॥ २२ ॥ विजयानंद सूरीश्वर केरा, शिष्योमां शणगाररे । लक्ष्मीविजय पंडित थया तस, हंस कहे अणगाररे ॥ सि० ॥ २३ ॥

## ॥ तालध्वजगिरिमंडन श्री सुमति-नाथस्वामी स्तवन ॥

॥ सुमति जिन स्वामी अबतो उद्धारो मोय चाहिये ॥ ए अंचली ॥ नगर तलाजा निकटे निरख्यों, तालध्वजगिरि नाम। सिद्धाचलकी टुंक कहावे, शोभतहे अभिरामरे ॥ सु० ॥ १ ॥ तिसि शिखरांके शिखरे सुंदर, मंदिरहे जगसार। आप बिराजो स्वामी तुमे वहां, शोभा अपाररे ॥ सु० ॥ २ ॥ सागर सरित् शत्रुंजयी साथे, तालध्वजी इहां आवे । दिल मानु इहां निर्मल होने, कोण पास तुज नावे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जगजन त्राता सुमति दाता, पंचम सुमतिनाथ। सागर कांठे डुबतां देखे, तारो पकडके हाथरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ दीनदयाल दया कर मोंपे, कृपापात्र नहि ओर। मुजकुं तारेसें तुम होगा, यशो हंस अति गौररे ॥ इति० ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री गोघाबंदर मंडन श्री नवखंडा पार्श्वनाथजीनं स्तवन ॥

॥ नाम पार्श्वजिन लीजे, भवियां लीजेरे लीजेरे लीजे, अघछीजे ॥ ए चाल ॥

ध्यान प्रभुजीनुं धारो । भविका धारोरे धारोरे, धारो एज सारो ॥ ए आंकणी ॥ गोघाबंदर सुंदर मंदिर । नवखंडा पार्श्व-प्रभु प्यारोरे प्यारोरे प्यारो एज सारो ॥ ध्यान० ॥ १ ॥ प्रभु गंभीरताथी गभराई । सागर थइ गयो खारोरे खारोरे खारो एज सारो ॥ ध्यान० ॥ २ ॥ धीरजतामां हारी धरणिधर । मेरु दृष्टिथी थयो न्यारोरे न्यारोरे न्यारो । एज सारो ॥ ध्यान० ॥ ३ ॥ दानथी दास थइ [1]देववृक्षोने । नाठा विना नहीं आरोरे आरोरे आरो एज सारो ॥ ध्यान० ॥ ४ ॥ प्रभु चामरथी चकित थइ-ने । चमरो चरे दूरे चारोरे चारोरे चारो

---

१ कल्पवृक्ष.

एज सारो ॥ ध्यान० ॥ ५ ॥ कामितदायक आगे काम कुंभ । लागे जेवो माटी गारोरे गारोरे गारो एज सारो ॥ ६ ॥ अचिंत्य-दाता आगे चिंतामणी ॥ काचजेव लागे यारोरे यारोरे यारो एज सारो ॥ ध्यान० ॥ ७ ॥ प्रभुगुण मुक्ताफळनो सुंदर । हैडे धरो शुभ हारोरे हारोरे हारो एज सारो ॥ ध्यान० ॥ ८ ॥ प्राणायामकृत ध्यान धरी निज । हंसने भवोदधि तारोरे तारोरे तारो एज सारो ॥ ध्यान० ॥ ९ ॥

## ॥ वलभीपुर मंडनश्रीपार्श्वनाथ जिनस्तवन ॥

ध्यानप्रभुनुधारोभवीयां धारोरे धारोरे धारो एज सारो॥ एदेशी ॥

पार्श्वप्रभु दिलधारा सजनो धारारे धारारे धारा हितकारा ॥ ए आंकणी ॥ वलभी-पुर मंडन दुखखंडन जीव जीवाडन हारारे हारारे हारा हितकारा ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥

बालपणामां अद्भुतज्ञानी बलता नागउ-
गारारे गारा गारा ।ितकारा ॥ पार्श्व०
॥ २ ॥ नवकारमंत्र प्रयोगे बनाव्यो नाग-
राज उदारारे ारारे दारा हितकारा ॥ पा-
र्श्व० ॥ ३ ॥ दीक्षा शिक्षाकारी प्रभुए धारी
करण उपगारारे गारारे गारा हितकारा ॥
पार्श्व० ॥ ४ ॥ दिवाकर थइने
मोक्ष गया प्राण प्यारारे प्यारारे प्यारा
हितकारा ॥ पार्श्व० ॥ ५ ॥ वलभीपुर प्र-
भु देवल दीपे– शेहर सकल शणगारारे
गारारे गारा ितकारा ॥ पार्श्व० ॥६॥ गुरु
मंदिरपण सुंदर ति ांवलो गगनमां जश
वे ारारे ारारे स्तारा हितकारा ॥ पार्श्व०
॥ ७ ॥ देवर्धिगणि क्षमाश्रमण प्रभु पु-
स्तकारूढ करनारारे नारारे नारा ितकारा॥
पार्श्व० ॥ ८ ॥ तेमजवली विजयानंद रि
उपगारी हता ारारे ह्मारारे ह्मारा हितका-
रा ॥ पार्श्व० ॥ ९ ॥ एवाएवा महा-
राजानी मूर्त्तियो तिहा मनोहारारे हारारे

हारा हितकारा ॥ पार्श्व० ॥ १० ॥ देवगुरु गुण मुक्ताफलना हंस चाहे नित्य चारो चारारे चार हितकारा ॥ पार्श्व० ॥ ११ ॥

## ॥ गिरनारगिरिमंडन श्रीनेमिनाथ स्वामी विनति ॥

॥ महावीर तोरा समवसरणकी रे ॥ ए देशी ॥

नेमिजिन तोरा समवसरणकी रे । में वर्णवुं क्या छबि न्यारी, गई चक्री शक्र–श्री हारी । एम चिंतवता मुरारि ॥ नेमि० ॥ १ ॥ ए अंचली ॥ समवसरणमें आवे रे । नेमि चरण चित लावे रे । अंतरंग रंग धरी भावे । रोम कंचुक तेह दिखावे । सुंदर जिन स्तवन बनावे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ सिंहासनसम स्वामी रे देहकांति तुम पामी रे । भवि नेत्र होय विश्रामी । कल्याण निधानके कामी । नहि देखनमें तस खामी ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ जेम तेम करी पालो रे । पापपंक दूर टालो रे । निज पदवी मुजको

आलो। जेम थावुं सकल गुणवालो। लक्ष्मी
सें न रहुं ठालो ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ जगमां
जो जो गमीयेरे। अनंत जीव उद्भमीयेरे।
वोह पुद्गल जावे जमीये। टालोनविजावे
खमीये। हम इणविध प्रभु बहु भमीये॥
नेमि० ॥ ५ ॥ लाखचोराशी योनिरे।
मुषामें जैसे सोनीरे। मोहवादिगर एक
मौनी। दुःखताप दिये प्रभु जोनी। मेरा
ए संकट खोनी ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ कर्म
अनल में खमीयोरे। लोह गोलो जेसें
धमीयोरे। तिस्सें अति-ाय कमकमीयो।
तुम वाणी रस उपशमीयो। अब हुकम
आपको गमीयो ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ यौवन
वय ग्रामेरे। दिये दुःख कामेरे। पाद्रि-
सम तेह हरामे। सुण सेवक तुज शिर-
नामे। अब कीस विध एह विरामे ॥
नेमि० ॥ ८ ॥ भवस-द्रक मां-िरे। चर-
णसेंति अवगाहीरे। तें अजब पंथ दिया
ठाही। भवि मोक्ष नगर हे ज्यांहि। पहोचे

सुखसें उच्छाही ॥ नेमि० ॥ ९ ॥ तीन भुवन ठकुराइरे । राज्यऋधि तुम पाइरे । कारागारज्युं दुःखदाइ । संसार सेंति हे-भाइ । व्यो बंदिवान् छोडाई ॥ नेमि० ॥ १० ॥ हे त्रिभुवन रायारे । जिहां तुमें ठायारे । कोइ किसिकुं हणने नपाया । में विषयमार तिहां खाया । तुमने क्युं नहि छोडाया ॥ नेमि० ॥ ११ ॥ विषमा-युध जल तंतुरे । भवसमुद्रसें गंतुरे । नहि देवे मन गजरं तुं । उपदेश तुमारो संतु । जलकांत समो प्रभु नंतुं ॥ नेमि० ॥ १२ ॥ गये तुम दोष अखिलारे । पण मुढ कहे जो मीलारे । वोह कपूरकुं कहे नीला । तस कर्म काष्टमें कीला । होवे कीसविध प्रभु ढीला ॥ नमि० ॥ १३ ॥ स्मर कुंजर जल जातिरे । दुर्धर महाड रातिरे । ए बोधकम[?] उत्खाती । मम मानस सर विख्याती । [?]ण्यहंस रहित करे घाती ॥

१ बडाशत्रु

नेमि०॥१४॥क्रोधादिक बहु चोरेरे । कल्याण धन हरि जोरेरे । नर जन्म पोतसें घोरे । भव दरिये हरामखोरे । डाला शरणा नहि-कोरे ॥ नेमि० ॥ १५ ॥ मोह मतंगज मारेरे । राग रोषदोय धारेरे । ते दंतुश-लसें ताडे । तुं सिंहासन प्रभु धारे । निज सेवक क्युं न उगारे ॥ नेमि० ॥ १६ ॥ गोपद परे तें तरियो रे । संसार रुप दुःख दरियोरे । तस मध्ये हुं रडवडियो । तें बांधव नाहि उद्धरियो । तो बांधवता क्युं वरियो ॥ नेमि० ॥ १७ ॥ एक कुले हुं जायो रे । फोगट जन्म गमायोरे । हुं चंपकदल कहेवायो । तुं पछें फूलसम आयो । पण त्रिभुवन शिर धरायो ॥ नेमि० ॥ १८ ॥ विनति सुण के तारा रे । जिन पदवी दान स्वीकारारे । निज बांध-वको उगारा । हंसाकुं केम विसारा । में शरण तुमारा धारा ॥ नेमि० ॥ १९ ॥ कृष्णपरे ए कीधिरे । विनय विनति सिधिरे ।

दशवैकालिकसें लीधि । तस टीकामांहि प्रसिद्धि । में भी यह पाया ऋद्धि ॥ नेमि ॥ २० ॥ विजयानंद सूरिरायारे । तस शिष्यो मांहि सवायारे । श्रीलक्ष्मीविजय गुरु पाया । तसहंसे स्तवन बनाया। श्रीजेसलमेर गवाया ॥ नेमि० ॥ २१ ॥

## ॥ श्री समवसरण स्तवन ॥

॥ नेमिकी जान बनी भारी ॥ यह चाल ॥

प्रभु तुम समवसरण भारी । देखनको आवे खलक सारी ॥ ए आंकणी ॥ धजा तो फरक फरक थाती ॥ कुमतिकी छाती गभराती। वावडी प्रति द्वार भाति। कनक कमलोंसें उल्लसाती ॥

श्रेणि शोभे सोपानकी, लागीलारलार, निश्रेणी शिवपुरतणी, में मानुं दिलमोदार.

हर्ष धरके अपरंपारी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ तिन घढकेरी उंचाइ । पांचसो धनुष

तणी पाइ । धनुष तेत्रीस तस पहोळाई । हाथ एक आठ अंगुल आइ ॥

धनुष पनसो अंतरा, घढन ग कहा प्रमाण, बार दरवाजा रत्नकावली, लिया कमाड पेछ न.

मानु यह संपदकी बारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
द्रनील तोरण लटकाये, तथा वली लाल तोरण ठाये । तुंबरु प्र ख देव आये । हाथमां छडीयांकुं लाये ॥

अलंकार पहेरी करी, पडो ार ते थाय, दर दरवाजे शोभता ते, प िरेगिर क ्वाय.

संकट सब दूर करे टारी ॥ प्रभु० ॥३॥
लगढ भितर पधरावे । वे िका ंचपणे लावे । धनुष सतावीसकी ठावे । वृक्ष अशोक ऊहां वावे ॥

बत्तीस धनुष महावीरका, वृक्ष तिहां शुभ होय, अन्य प्रभुका देहसें तो, बार गुणा लिया जोय.

छबि क्या वर्णवुं तस प्यारी ॥ प्रभु०॥४॥
बिराजे पूर्व तरफ स्वामी । सिंहासन उपर गुणधामी ॥ व्यंतर तब कल्याणके कामी । प्रभुकी प्रतिमा अभिरामी ॥

तिन दिशी पधरायके, माने हर्ष अपार, पण कुमतिको दृष्टिमां ते, आवे नहि लगार.

जुवो कर्मन्‌की गति न्यारी ॥ प्रभु०॥५॥
प्रथम दुजा घढके अंतर । कूण इशान तणाऽभ्यंतर । देव छंदो करे तदनंतर । दीसे छे कीतना पाठांतर ॥

समवसरण बन्या जाण के, आवे पर्षदा बार, चार निकायके देवी देवता, साधु साधवी सार.

हर्ष धरी आवे नरनारी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥
सेना चतुरंग सहित आवे । राजा और रंक तिहां भावे । दशार्णभद्र सजी जावे । इंद्र बहु आडंबर लावे ॥

बत्तिस बद्ध नाटक तणा, होवे अति घमघोर वीणा वांसरी वाजीत्रो करे, मोर तणी परे सोर.

होवे ताथै थै ध्वनि जारी ॥ प्रभु० ॥७॥
स्वान ओतु आदिक आता । वैर नहि आपसमें लाता । होय सब जीवकुं सुख-साता । वाणी अरंग रहे राता ॥

मच्छ बगलांने मरगडां, घोडसिं शियाल, हाथी उंट घोडा और गाडी, भेक शुक के बाल.

हंसकी लाग रही लारी ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥
ओगणीस एकावन कहे । विक्रमसंवत् कुंवर्त रहे । माघशुदि [illegible] षष्ठी लहे । [illegible] आनंद रंग वहे ।

एहवा समवसरणका, स्थापन करे सुख काम, गाम फलोधिमांहे गुलेछा, फुलचंद धरी हाम.

लोक कहे धन्य माता थारी ॥ प्रभु० ॥९॥

श्रेणिक राजाए हर्ष धरी। स्वस्तिक सोना ज्वलासें करी। मंगल मातीयनसें आठ भरी। हृदय तस नारी अतिही ठरी ॥

विजयानंद सूरीशका, शिष्य सकल शणगार, लक्ष्मीविजय पंडित हुवा, तस हंस कहत हे बाल.

जगतिजिन शासन जयकारी ॥ प्र० ॥ १० ॥

## ॥ श्री समवसरण स्तवन ॥

॥ हजुरीयां ठाडी हजुरीयां ठाडी नेमि तेरी हजुरीयां ठाडी ॥ ए चाल ॥

देखो गुणी ज्ञानी, देखो गुणी ज्ञानी, छबिनीकी देखो गुणी ज्ञानी ॥ ए अंचली ॥ प्रभुका समवसरण बन्या जाणी। विक्रमपुर मानी ( २ ) ॥ छबि० ॥ जाय भांडसर सेठ सखाणी। हर्षथी भराणी (२)॥ छबि० ॥ २ ॥ भृंगपरे चक्षु लोकोकी, देख लपटाणां, देख लपटाणी ॥ छबि० ॥ ३ ॥ नमचंद्र चका। ज्युं प्राणी। होवे प्रभु

ध्यानी ( २ ) ॥ छबि० ॥ ४ ॥ चारदिशि जिन बेठा नाणी । सकल गुण खाणी ( २ ) ॥ छबि० ॥ ५ ॥ चतुर्मुख ब्र ाकां क ाणां । चली नहि छानी ( २ ) ॥ छबि० ॥ ६ ॥ धजा ल कतां सूचवे इयाणी । पवनथी हलाणी ( २ ) ॥ छबि० ॥ ७ ॥ जे मपर नमसे ते प्राणी । लहे शिवराणी ( २ ) ॥ छबि० ॥ ८ ॥ भामंडलकी एहि निशानी ॥ रात्रि लुंटानी ( २ ) ॥ छबि० ॥ ९ ॥ कनक कमल उपर प दां । जीहां केवलज्ञानी ( २ ) ॥ छबि० ॥ १० ॥ समवसरे तीहां नहि तोफानी । इति धूताणी ( २ )॥ छबि० ॥ ११ ॥ स्वपर चक्र ी नाहि चढाणी । रोग धुलधाणी ( २ ) ॥ छबि० ॥ १२ ॥ ओगणीसो पचास मंडानी । साल वंचाणी ( २ ) ॥ छबि० ॥ १३ ॥ आसोज सुदि ( १३ ) तेरस णगानी । तिथी हे मजानी ( २ ) ॥ छबि० ॥ १४ ॥ लक्ष्मीविजय रुकां मे रबानी । हृदयटंकाणी ( २ ) ॥ छबि० ॥ १६ ॥ हंस

कहे प्र जीका वाणी । पीयो ज्युं पाणी (२) ॥ छबि० ॥ १७ ॥ इति ॥

## ॥ श्री समवसरण स्तवनं ॥

॥ राग भैरवी ॥

च ाने चतुर नर दर्शन चलीये, समवसरण मील टोलीरे ॥ च० ॥ ए आंकणी ॥ अजीमगंजमे समवसर्या प्रभु, वंदो बे करजोडीरे ॥ च० ॥ १ ॥ निज निज ऋद्ध विस्तार करीने, मान आपना मोडी रे ॥ च ॥ २ ॥ हाथी घोडा वाजींत्रो० वली, साथ लइ बहु ढोलीरे ॥ च० ॥ ॥ ३ ॥ अक्षत फलके खातर अक्षत, रुपाका बहु खोलीरे ॥ च० ॥ ४ ॥ अष्टमंगल लिखिये प्रभु आगे, मंगल खसं बोली रे ॥ च० ॥ ५ ॥ सोनेका ज्व क्ताफलसं, भर भर सार कचोलीरे ॥ च० ॥ ६ ॥ स्वस्तिक करीये स्वस्ति सूचक, निज परणती भोलीरे ॥ च० ॥ ७ ॥ इत्यादिक

विधिपूर्वक वंदी, कर्म पास निज तोडी रे ॥ च० ॥ ८ ॥ जिनवाणी मानस सर भितर, अपना हंस ‥कोलीरे ॥ च० ॥ ९ ॥ ल‥ये आनंद ईस विधि अनुपम, शिर अपनेसे डोलीरे च० ॥ १० ॥ इति ॥

## ॥ श्री समवसरण स्तवन ॥

॥ आप बीराजो चंदन चोकमें–ए देशी ॥

म‥वीरजी स्वामी समव णे दीये देशना, ए आंकणी ॥ इंद्रादिक देवो मीली हर्षे, समवसरण बनावे ॥ वायु, कुमार सुगंधी वायु, प्रथम आय चलावेरे ॥ म० ॥ १ ॥ मेघकुमार सलिल सुगंधी भाव करी वरसावे ॥ योजन एक भूमिके भितर, पंचवर्णी फुल बीछावेरे ॥ म० ॥ २ ॥ जलथलनां उपन्या ते फुलो, राय-पसेणी बतावे ॥ अधोवृंत उपरसें हसतां, जानु प्रमाण त्यां ढावेरे ॥ म० ॥ ३ ॥ व्यं-तर ना इंद्रे जडी भूमि, फुल सेंति फर-

मावे ॥ काम-वने काम बाणजूं, छोड
दीया शुभ भावे रे ॥ म० ॥ ४॥ योजन
एक भूमिका व्यापी, रुपाका गढ ठावे ॥
कंचन कांगरा मांडी उपर, भुवनपति फल
पावे रे ॥ म० ॥ ५ ॥ ज्योतिषी देवोनो
मध्ये गढ, सोनानो वली थावे ॥ रत्न कां-
गरा बेठा ते पर, लोकके शिर नचावे रे ॥
म० ॥ ६ ॥ रत्नशाल वैमानिक देवो, ती-
सरो जाय अडावे ॥ मणिकांगरा किरणे
व्याप्या, नाना ते रंग दीखावेरे ॥ म० ॥ ७ ॥
मणि पीठिका मध्ये देवो, चैत्य वृक्ष एक
वावे ॥ पादपीठ सिंहासन उपर, छत्र ते
तीन लगावेरे ॥ म० ॥ ८ ॥ पूर्व त फक
दरवाजेसं, समवसरणमें आवे ॥ प्रभुके
आगे रविमंडल सम धर्मचक्र वली धावेरे॥
म० ॥९॥ पूर्व दिशा सन्मुख सिंहासन, उपर
स्वामी सुहावे ॥ व्यंतर विभुके तिनरूप
करी, तिनदिशि पधरावेरे ॥ म० ॥१०॥ वैसा

समवसरणकी रचना, धर्मपताका करावे ॥ राणी मिना कुमारी तिसकी, मोतीसें प्रभुको वधावेरे ॥ म० ॥ ११ ॥ सादाहा जव चांदिके चावल, स्वस्तिक लाय सजावे ॥ प्रभु भक्तिकारक जन पावे, शिव लक्ष्मीको स्वभावेरे ॥ म० ॥ १२ ॥ इति० ॥

## ॥ समवसरण स्तवन ॥

॥ मनरी बातां दाखांजी माहाराराजरे रीषभजी थांने ॥ म० ॥ ए चाल ॥

समवसरण सुहायाजी माहारालाल महावीरजी स्वामी, स० ॥ आंकणी ॥ चिहुं दिशि चामर रत्न जडित झलायाजी माहा-लालरे ॥ कांइ दुंदुभिनादे लोक बहुने बालायाजी मा० ॥ स० ॥ १ ॥ पूर्वद्वारथी आयाजी मा० ॥ कांइ मुनिवर मोटा अग्नि-कुणमां ठायाजी ॥ मा० ॥ स० ॥ २ ॥ सुर-वधू साथे साधवीयोने ध्यायाजी मा० कांइ

तेहकुणमां खडी करी निज कायाजी मा० ॥ स० ॥ ३ ॥ नैऋतकुणमां बेठके शिर नमायाजी मा० कांई भुवन ज्योतिषी व्यंतर वधु गुण गायाजी मा० ॥ स० ॥ ४ ॥ ज्योतिषी भुवन पतिने व्यंतररायाजी मा० कांइ वायुकुणमां बेठे तरुवर छायाजी मा० ॥ स० ॥ ५ ॥ वैमानिक नर नारी हर्ष भरायाजी ॥ मा० ॥ कांइ ईशानकुणमां बेठे थइ बहु डाह्याजी मा० ॥ स० ॥ ६ ॥ मध्य कोटमां मृगपति मन हर्खायाजी मा० कांई मृगलादिकना साथे वैर मीटायाजी मा० ॥ स० ॥ ७ ॥ आप आपणां वाहन जाय अडायांजी मा० कांइ अंत्यकोटमां रथ पालखी बहु लायाजी मा० ॥ स० ॥ ८ ॥ कोडो गमे सुर प्रमुख तीहां समायाजी मा० कांइ प्रभु पसायथी ज्योतिमें ज्योत ज्युं जायाजी मा० ॥ स० ॥ ९ ॥ संवत वीर कहायाजी मा० कांइ चोवी-

सोंकी साथ सतर जुडायाजी मा० ॥ स० ॥ १० ॥ कार्त्तिकसुदी दशमी दिन हर्ष सवायाजी मा० कांई अजीमगंजमां एह स्तवन बनायाजी मा० ॥ स० ॥ ११ ॥ जिन-वाणी काफल आय चुगायाजी मा० कांई हंस कहे ए पुण्यबीज में पाजो मा० ॥ स० ॥ १२ ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीसमवसरण स्तवन ॥

॥ वाणी अमृत रस वरसे ॥ ए चाल ॥

तत्व सुधारस पीज्यो, भविक नर त० ॥ समवसरण विभु वीर प्रकाशित, कर्णामृत तुमे लीज्यो भ० ॥ त० ॥ १ ॥ पेंतीसगुणयुत वाणी सुणीने, दान सुपात्र दीज्यो भ० ॥ त० ॥ २ ॥ जिनभाषित संघपद पामी, काम उत्तम तुमे कीज्यो भ० ॥ त० ॥ ३ ॥ तीर्थभुमि स्पर्श न करके तस, सार उद्धार कीज्यो भ० ॥ त० ॥ ४ ॥

जीर्णोद्धारका आठ गुणाफल, आनंद आणी ग्रहीज्यो भ० ॥ त० ॥ ५ ॥

## ॥ श्री समेतशिखरतीर्थ स्तवन ॥

॥ दुहा ॥

श्री गुरुलक्ष्मीविजय नमि, तासतणे-सुपसाय; समेतशिखर गिरिना घणा, गुण गाउं सुखदाय ॥ १ ॥

### ॥ ढाल पहेली ॥

॥ गुजराति गरबानी देशी ॥

तुमे वहेलागुणी चालो ( २ ) शिखर-गिर वंदवा ॥ अरे कांई वंदीयां पाप पलाय, अरे कांई भेटीयां भवदुःख जाय ॥ तुमे वहेला० ॥ ए आंकणी ॥ अरे० तारक तीर्थ कहाय, अरे० भव भ्रमण मीट जाय, अरे० कर्म्मरज उड जाय, अरे० संपदा बहु थिर थाय ॥ तु० ॥ १ ॥ अरे० ॥ तीर्थ भुमी फरसाय, अरे० अध्यवसाय शुभ थाय,

अरे० जिनजी जहां वसिआय, अरे० अण-
सण दीयो तिहां ठाय ॥ तु० ॥ २ ॥ अरे०
ुनिगण साथ मीलाय, अरे० धर्म शुक्ल
ध्यान ध्याय, अरे० कर्म्मोंकी खाख उडाय,
अरे० सिद्ध शिलामां सधाय ॥ तु० ॥ ३ ॥
अरे० कल्याणक क ाय, अरे० वर्णवुं छुं
सुखदाय, अरे० सुणज्यो ध्यान लगाय,
अरे० संशय ुणीने मिटाय ॥ तु० ॥ ४ ॥
अरे० सद्दहणा चित्तलाय, अरे० गिरिव
वेगे चढाय, अरे० तो शिवराणी राय,
अरे० थावे गिरिने पसाय ॥ तु० ॥ ५ ॥

## ॥ ढाल बीजी ॥

॥ सिद्धाचल शिखरे दीवोरे आदीश्वर अलबेलो छे
॥ ए देशी ॥

भवि समेतशिखरगिरि सेवोरे, विश-
जिनेश्वर सिध्या छे ॥ तुमे मानव भव-
फल लेवोरे वि० श्री अ जेतनाथ जिन
जेवारे वि० नहि जितनार जग तेवारे वि०

भवि ॥ १ ॥ हजार मुनिनी संगेरे वि०
करी अणसण चढते रंगेरे वि० शुद पंचमी
चैतर चंगेरे वि० वरीया शिव उलट अंगेरे
वि० भ० ॥ २ ॥ संभव जिनवर सुखदा-
तारे वि० आव्या इण गिरि जगत्रातारे
वि० मुनिसहस संग विख्यातारे वि०
आसन काउसगनुं लगातारे वि० ॥ भ०
॥ ३ ॥ संलेखना मासनी किधीरे वि०
मधु मासनी तिथि प्रसिद्धिरे वि० उज्वल
पंचमी शिव लिधिरे वि० वरि अनुभव
संपदा रीद्धिरे वि० भ० ॥ ४ ॥ अभिनं-
दनजिनईहां आवेरे वि० साथे मुनि सह-
सने लावेरे वि० अणसण एक मासनुं
ठावेरे वि० आसन काउसगनुं लगावेरे वि०
भ० ॥ ५ ॥ तिथि राधे[2] मासनी सारीरे
वि० सुद आठम छे उजवाली रे वि० वरी
शिव रमणी सुखकारीरे वि० हुं शरणे

---

१ चैत्र. २ वैशाख.

आयो तुमारीरे वि० भ० ॥ ६ ॥ मेघनंदन पंचमा जाणुरे वि० देश शत मुनि साथ वखाणुरे वि० संलेवना मासं ठाणुरे वि० नहि पुण्य विना ए टाणुरे वि० भ० ॥ ७ ॥ चैत्र शुद नवमी प्यारीरे वि० वरीया सुंदर शिव नारीरे वि० प्रभु पद्मप्रभ सुविचारीरे वि० आव्या इण गिरिपरवारीरे वि० भ० ॥ ८ ॥ त्रणसो मुनि आठ सुहावेरे वि० जिन साथे आनंद पावेरे वि० सवी मुक्ति नगरमां जावेरे वि० गिरितारक एह कहावेरे वि० भ० ॥ ९ ॥

## ॥ ढाल त्रिजी ॥

॥ जेम जेम ए गिरि भेटीयेरे, तेम तेम पाप पलाय सलुणा ॥ ए देशी ॥

शिखरगिरि गुण गावतां रे, गुण आवे निज अंग; सुज्ञानी ॥ ए आंकणी ॥ पांचसो मुनि परिवारथीरे, नाथ सुपार्श्व

११०००.

जिणं- सु० ॥ फागणवदि सातम दिनेरे॥ सिद्धि गया सुखकंद सु० शि० ॥ १ ॥ चंद्र प्रभ जिन आठमारे, सहस मुनिवर साथ सु० भाद्रवावद सातमी दिनेरे, चाल्या शिव वधूहाथ सु० ॥ शि० ॥ २ ॥ सुविधि नाथ सुहामणारे, सहस श्रमणनां संग सु० भाद्रवासुद नवमी भलीरे, शिवसुख पाम्या अभंग सु० शि० ॥ ३ ॥ शीतल जिनवर साह्यबोरे, माधव[1] वदि बीज जाण सु० एक हजार मुणींदसुंरे, पाम्या सुख निरवाण सु० शि०॥ ४ ॥ साधु एक सहससुं रे, श्रेयांस जिनवर देव सु० श्रावण-वद त्रितीया दिनेरे लिधि शिव स्वयमेव सु० शि० ॥ ५ ॥ षट्शत[2] मुनि परिवारसुंरे, विमल विमल करनार सु० संलेखणा एक मासनी, कीधी समताधार सु० शि० ॥ ॥ ६ ॥ कृष्णपक्ष अषाढनी, सात-

१ वैशाख. २ ६००.

मीये सुखकार सु० समेतशिखर सिद्धि वर्यारे, पाम्या भवनो पार सु० शि० ॥७॥

## ॥ ढाल चोथी ॥

॥ शितल नहि छायारे आ संसारनी ॥ ए देशी ॥

शितल शुभ छायारे शिखर गिरींदनी ॥ टाली टेक आयारे फोगट फंदनी ॥ रुडी एक मायारे तेह मुणींदनी ॥ श्रेणी जेह पायारे नयनानंदनी ॥ ए आंकणी ॥ अनंत नाथ जिनेश गिरिवर चढीयारे, विकथाने निवारी रे दूर संसारनी ॥ संलेखणा एक मासनी प्रभु जी कीधिरे, करनारी जाणीरे भवनापारनी ॥ शीत० टाली० रु० श्रेणि० ॥ १ ॥ सातसो रुडा वाचंयम[1]नीसाथेरे, केर्णने[2] लगाव्युंरे काउसगनानुं ॥ चैत्र-मासनी शुक्ल पंचमी दिवसेरे, शाश्वत सुख जाम्युंरें सिद्धिधामनु ॥ शीत० टाळी० रु० श्रेणि ॥ २ ॥ मुमुक्षु अष्टोत्तर[3]सोसुं

---

१ साधु. २ आसन. ३ १०८.

ईहां आवीरे, धर्मना धोरीरे, अणसण आदरे ॥ ज्येष्टमासनी उज्वल पंचमी दिवसेरे, सिद्धि वधु वरीया स्वामी सादरे ॥ शीत० टाली० रु० श्रेणी ॥ ३ ॥ पंचमा चक्री शांतिनाथ कहावेरे, ते पण इहां आव्यारे नवसो साथशुं ॥ शुक्र वदि तेरश दिननीं जाउं वारीरे, शिव सुखडुं झाल्युंरे केवल हाथशुं शीत० टा० रु० श्रेणि० ॥४॥ कुंथुनाथजी छठा चक्री जाणुंरे, सिद्धि वर्या एक हजार मुणींदशुं, अरजिनवर पण तेटला साथे सिध्यारे, प्रीतलडी लागीरे चक्री जिणंदशुं ॥ शी० टा० रु० श्रेणि० ॥५॥ मल्लिनाथजी पांचशो साथे सिध्यारे, फागणसुद द्वादशीये भली भातशुं ॥ मुनिसुव्रत जिन दशशात साथ सिधावे रे, जेठवदी नवमीये सुखसातशुं ॥ शीत० टा० रु० श्रेणि० ॥६॥ नमी नाथजी एक विसमा इहां

१ ज्येष्टमास. २ १०००.

आवेरे, परमानंद पावेरे एक हजारशुं ॥ हवे वर्णवुं श्री पार्श्वनाथ निर्वाणरे, सुणज्यो ते सजन जन घणा प्यारशुं ॥ शीत० टा० रु० श्रेणि० ॥ ७ ॥

## ॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नैवेद्य रसाल प्रभुजी आगेरे ॥ ए देशी ॥

समेत शिखरगिरि भेटतां भवि भावेरे, कांई विपदा जावे दूर प्रभुता आवे रे, ॥ तेविसमा प्रभुपार्श्व गिरिए सधावेरे, कांइ साधु शुभ तेत्रिस साथे लावेरे ॥ समेत० ॥ १ ॥ संलेखणा एक मासनी प्रभु कीधिरे, कांई लेवा अतिही उदार अविचल रीद्धिरे॥ काउसग आसन मांहि थिर करी दिधीरे, कांई काया योगिनाथ पदवी लीधीरे ॥ स० ॥ २ ॥ श्रावण सुदनी अष्टमी दिन चंगेरे, कांई शिव सुख पाम्या नाथ चढते रंगेरे ॥ कर्यो सादि अनंत निवास सिद्धनी संगेरे, कांई गाउं तुमगुण आज उलट अंगेरे ॥

स० ॥ ३ ॥ श्यामला पार्श्वनाथ मूर्त्ति ताहरीरे, कांई जोवानी घणी हौंस हैडे हालीरे॥ द्यो दर्शन महाराज करुणाकारीरे, कांइ तारण तरण जहाज पद्वी धारीरे ॥ स० ॥ ४ ॥ इणीपरे जगना ईश ईणगिरि आव्यारे, कांई साथे जिनजी वीश मुनिगण लाव्यारे ॥ ते मुनि संख्या सर्वथी फरमाव्यारे, कांइ जैनतत्त्वादर्शथी परिभाव्यारे ॥ स० ॥ ५ ॥ सहस पन्नर छसो वली भली भातेरे, कांइ उपर ओगणपचास मुनिवर मातेरे ॥ धन्य तेहनो अवतार जे गिरिआतेरे, कांई गायो श्रीगिरिराज परम प्रभातेरे ॥ स० ॥ ६ ॥

## ॥ कलश ॥

॥ इहां पुण्य कारण पाप टारण आत्म ठारण जग खरो, समेतशिखर गिरींद पेख तुं पापरज दूरे परो ॥ १ ॥ संवत[1]

1 ( १९४६ ).

दर्शन वर्ण भक्ति भूमि मास बाहुल वरो, शुभ तिथी त्रितीया शुक्लपक्षे गायो गिरि अलवेसरो ॥ २ ॥ श्रीतपागच्छे प[illegible]मस्वच्छे विजयानंद सूरीश्वरो, आ कालमां महाराज महिमा देखीने दिलमां ठरो ॥ ३ ॥ जसुराय राणा आय नमते पाय पडते नरवरो, तस शिष्य पंडित लक्ष्मी विजयो ज्ञानदायक पद धरो ॥ ४ ॥ तेह तणो [2]अंतेवासी हंसो लश्करे स्तवन करो, श्रीपार्श्वनाथ पसाय सूणीने सकल भविभवजल तरो ॥ ५ ॥ संपूर्णम् ॥

## ॥ अथ श्री समेतशिखर तीर्थाधि-राज स्तवन ॥

॥ अजितुमे सुणीयोजी अजित जिनेश भवोदधि-
पार किज्योजी ॥ ए चाल ॥

॥ अजीतुमे सुणीयोजी शिखर गिरीश, अरजी हमारी तुमे जिनविश ॥ ए आं

१ कार्त्तिक. २ अंतेवासी–शिष्य.

कणी ॥ तुमे प्रभु राजरीद्धि सहु त्यागी, आपही आप हुवे वैरागी, तुम मति ज्ञान ध्यानमें लागी, सेवक सार दिज्योजी ॥ अ० ॥ १ ॥ तुमे प्रभु संयम शुद्ध आराधी, दूर करी निज आत्म उपाधी, सर्वज्ञ पदवी तुमे तो साधी, मुज प्रभु ज्ञान दिज्योजी ॥ अ० ॥ २ ॥ समेत शिखर प्रभु मोक्ष सधाया, गिरिवर महात्म तुमे तो वधाया, इहां आनातव में दिललाया, मुज प्रभु तार लीज्योजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ पालणपूरमें आनंद सूरिकी, आण कराल करवालमें लीनी, निज काया निरभयथीर कीनी, आतमराम रिज्योजी ॥ अ० ॥ ४ ॥ शुभ मूहुर्तें चाली इहां आयो, मार्ग मांहे बहु चैत्यवंदायो, आबु अचल भेटी सुख पायो, आत्मराय भीज्योजी ॥ अ० ॥ ५ ॥ पालीमें नवलखा जुहारी, सहेर अजमेर केसरीया नीहाली, जैपूरके देवल सुखकारी,

देखी पुण्य बिज्योजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ आगरा शहेरके देवल परखी, हीरगुरु उपाश्रय निरखी, अकबरसाहे करावो ःरखो, नयनानंद चिज्योजी ॥ अ० ॥ ७ ॥ लश्कर शेहेर चोमासु रहीयो, पार्श्व प्रभु सेवी सुख लहीयो, ज्ञाताधर्म कथामां कहीयो, वाणी रस पीज्योजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ शेहेर वडोदरावासी जीनको, नाम जगजीवन सुंदर नीको, संघ निकाल्यो भूवनकोटीको, तेहथी काज सिज्योजी ॥ अ० ॥ ९ ॥ संघकी साथ लश्करसें चाली, नही रस्ते कोइ चैत्यने टाली, ते वर्णवुं विकथा दूर डाली, सेवक बांह्य ग्र ज्योजी ॥ अ० ॥१०॥

## ॥ ढाल बीजी ॥

॥ अब तो पार भये हमसाधु ॥ ए चाल ॥

॥ अब तो मनोरथ सघला फलीया, सम्मेतशिखर गिरि मुने मिलीया ॥ अब० ॥ ए आंकणी ॥ शोरीपुरमें दोय

कल्याणक, वंदिने संघ खुश थयोरे ॥ यदुपति नेमि जिनेश्वर केरा, चरणांबुजमां चित्त रह्योरे ॥ अ० ॥ १ ॥ कांपल [illegible]रमें चार कल्याणक, महोछव देवदेवीये कीयोरे ॥ तेह विमलजिनदेवल मांही मंदारु गणधार लीयोरे ॥ अ० ॥ २ ॥ [illegible]रांमताल नगरनी मांही, सर्वज्ञ वृषभ जिणंद ज्योरे ॥ कासीमें प्रभु पार्श्व जिणंदके, चार कल्याणके चित्त गयो रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ तेही नगरीमें चार कल्याणक, धार[illegible] पार्श्वजिणंद मिल्योरे ॥ अन्य बहु दे[illegible] जुहारी, सम्यगूदर्शनशुद्धझिल्योरे ॥ अ० ॥ ४ ॥ सिंहपुरे श्रेयांस जिणंदका, चार कल्याणके चित्त ठर्योरे ॥ चंद्रावतीमां चार कल्याणक, धार चंद्रप्रभ पाय पड्योरे ॥ अ० ॥ ५ ॥ पाडलीपुर नगरके मांही, कोस्यासें चित्त नाहि चल्यो रे ॥ ते थुलिभद्र चरण वंदनसें, कामदेव मनमांही बल्योरे

॥ अ० ॥ ६ ॥ शेठ सुदर्शन मुनिवर मोटो, केवलज्ञानि वांहि बन्योरे ॥ विहरमान विशाल जिणंदका, दर्शनसें भवदुख हण्योरे ॥ अ० ॥ ७ ॥ वैशाला नगरीनी मांही, चोमासां विभुवीर वस्योरे ॥ बीजां देवल चार जुहारी, पाप मैल सब दुर खस्योरे ॥ अ० ॥ ८ ॥ पावापुरीमां वीर जिणंदको, मोक्ष देख मुज पाप नस्योरे ॥ कुंडलपुरमां गौतम गणधर, मुद्रा देख हृदय हुलस्योरे ॥ अ० ॥ ९ ॥ राजगरी नगरीके मांही, चार कल्याणक धार लीयोरे ॥ ते मुनिसुव्रत स्वामी केरा, तीर्थको उद्धार कियो ॥ अ० ॥ १० ॥ विपुलाचलपर निर्मल मूर्त्ति, अतिमुक्तक मुणींद मील्योरे ॥ रत्नागिरिने उदयाचलना, चैत्यवंदनसें हृदय खील्योरे ॥ अ० ॥ ११ ॥ सोनागिरि ओर श्रेणिक नृपका, देखो भंडारह प्रगट्योरे ॥ वैभारगिरि एका-

दश गणधर, धन्य शालीभद्र कर्म कट्यो रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ गुणशील वनमां वीर प्रभुको, मंदर सरोवर बीच चिण्योरे ॥ क्षत्रीकुंडमां तीन कल्याणक, धार सिद्धारथनंद गीण्योरे ॥ अ० ॥ १३ ॥ काकंदीमां चार कल्याणक, धार सुविधिजिणंद जच्योरे ॥ स्वामी सुपार्श्व गरेडी मंडन, देखतहि जयकार मच्योरे ॥ अ० ॥ १४ ॥ रिजुवालीका कांठे ज्ञानी, वीर थइ समोसरणे गज्योरे ॥ मंदर नव मधु वनमां जुहारी, दशमो शुभ गणधार भज्योरे ॥ अ० ॥ १५ ॥

## ॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ जिन दर्शन मोहनगारा ॥ ए चाल ॥

समेतशिखर सुखकारा, मुज लागतहे अति प्यारारे ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ दूर देशसें में इहां आया, महात्म सुणके तुमारा ॥ गाम नगरने परवत झाडी, नदीयां नेहेरांने खाडारे ॥ स० ॥ १ ॥ ए

सघलां संघोने साहिब, आया तुम दरबारा ॥ सफल हुवां सब साहेब मेरां, देखत तुम देदारारे ॥ स० ॥ २ ॥ मार्गमांही गिरि निरखतहीमां, रोम खीडयो अति फारा ॥ पुण्य अंकुर तेहने मानीने, आत्मारामको ठारारे ॥ स० ॥ ३ ॥ कलीकाले ए परवतसेंति, निकसत कनकसु सारा ॥ औषधीयां पण ए तीर्थमां, होवत अतिही उदारारे ॥ स० ॥ ४ ॥ ग्रंथ्रप शीतानालोदक गिरि, स्नान करत धरी धारा ॥ पशुपक्षि पण सेवत अहनिश, वृक्ष नमत असरालारे ॥ स० ॥ ५ ॥ विशे टुंके विश जिनेश्वर, चरण युग्म झुहारा ॥ ऋषभ नेमि वासुपूज्य श्री वरकी, देहरी तीहां शुभ चारारे ॥ स० ॥ ६ ॥ बिचमें श्यामला पार्श्व बिराजे, गिरिमुगट मनोहारा ॥ देखतही आणंद हुवो मुज, मानतहुं भवपारारे ॥ स० ॥ ७ ॥ कालकराल पड्यो मुझ

केडे, हजुअ न छोडतला.रा ॥ अब तुम नाथ पसाय सैंति मुज, बाजसे जीत नगारारे ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥

॥ संवत[1] दर्शन वेद नंदने इंदु माघ उज्वलवरो, शुभ तिथि राका सार दिवसे भेट्यो गिरि अलवेसरो ॥ तपगच्छ नभमां दिनमणि आनंदसूरि आनंद धरो, तसु-शिष्यनायक लक्षिय विजयो हंस तस स्तवन करो ॥ १ ॥ इति ॥

## ॥ श्री शिखरगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ राग होरी ॥

एसी विध तेने पाइरे कछु करणी करज

॥ ए चाल ॥

शिखरगिरि सुखकारीरे, जणी वीश-जिणंदा ॥ शि० ॥ ए आंकणी ॥ साधु समुह सहित इहां आवी, सिध्या अणसण

---

१-संवत १९४३.

पालीरे । टाली भवफंदा ॥ शि० ॥ १ ॥ चक्रिसगर छ खंड सुख छांडी, मुक्ति वर्या इहां प्यारीरे । महामोटा मुणींदा ॥ शि० ॥ २ ॥ शांतिनाथ सूत राज ऋषीश्वर, ते पण राज्यने टालीरे ॥ इहां हुवा योगींदा । शि० ॥ ३ ॥ इत्यादिक बहु मुनिवर मोटा, पाम्या इहा भवपारीरे ॥ हुवा शांत ज्युं चंदा ॥ शि० ॥ ४ ॥ राय धनपतासिंघ बहादुर अंगना, राणी मिना कुमारीरे धारी हर्ष अमंदा ॥ शि० ॥ ५ ॥ संघ सहित श्यामला जिन पूजी, ‥राजडीतसुपारीरे ॥ मानी सुरतरुकंदा ॥ शि० ॥ ६ ॥ मुक्ताफल स्वा‥‥कके उपर, अति उत्तम फल धारीरे तस हंस ठरंदा ॥ शि० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ श्री समेतशिखरगि‥रे स्तवन ॥ ४ ॥

॥ ललीत छ‥नोचाल ॥

॥ ‥शेखर गिरिश इश तुमे ‥जिणं‥

वीश ॥ जाणी जगदिश, टालो मुज रिश ॥ १ ॥ तमे दयाललाल, छो जग तपाल ॥ करीने मुज ख्याल, टालो दुख जाल ॥ २ ॥ हे देवनारे देव, इंद्रचंद्र सेव, करे नित्य मेव, टालो खोटी टेव ॥ ३ ॥ विद्यापाते छति, तुमे करी मति ॥ टालो दुर्गति, मानी मुज नति ॥ ४ ॥ हुं अजाण जाण, तुमे प्रभु ज्युंभाण ॥ द्यो ख्याल नाण, टालो दुख खाण ॥ ५ ॥ अरेरे हुं अनाथ, पडीयो भवपाथ ॥ पकडी मुज हाथ, राखो प्रभु साथ ॥ ६ ॥ ए अर्ज सांभळी, एटले मली ॥ लक्ष्मी भली, आश मुज फली इति ॥ ७ ॥

## ॥ लश्करमंडन श्री पार्श्वनाथ ॥ स्तवन ॥

॥ तुम चिदघनचंद आनंदलाल ॥ एचाल ॥

प्रभु तेवीशमा जिनराज नाथ तोरा दर्शनकी जाउंवारी ॥ नाथ तो० ॥ ए आं

कणी ॥ सहेर लश्करमां मंदिर सोहे, ताफा बजारमें भारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ आरस उपर चित्रकी रचना, कोरी करी हेम ठारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ हेम बीलोर हकीकसें जडीयो, मंडपहै मनोहारी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ आबु अचल सिद्धाचल रैवत, नंदीश्वर छब प्यारी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ अष्टापद समेत शिखरका, पटकी शोभा सारी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ए षट् तीर्थकु वंदि प्राणि, वेगेदीये दुख डारी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मूलनायक श्री प्राश्वंजिनेश्वर, क्या तारीफ तुमारी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ श्यामली मूर्ति भवभय हरती, दीसे छे अविकारी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ हंस तुमारे धरणे बेठो; मागे छे भवपारी ॥ प्र० ॥ ९ ॥

## श्री लश्करमंडन शांतिनाथ स्तवन ॥

॥ राग कालिंगडो ॥

॥ सठ क्युं तेने कुगुरुको सांग धर्यो ॥ ए चाल ॥

॥ मुजे शांत वदन जिन शांति मील्यो ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ शरणागत पारेवो

साहेब, तुम चरणांमां आवी अड्यो ॥ मु० ॥ १ ॥ प्राण साटे प्रभु राख्यो पासे, श्येन थकी ते नांही डर्यो ॥ मु० ॥ २ ॥ इत्यादिक अवदात तुमारा, देखतही सुर पाय पड्यो ॥ मु० ॥ ३ ॥ अभयदान पूर्वे तुमे दीधां, आभवशिव सुख सहेज वर्यो ॥ मु० ॥ ४ ॥ दादावाडीमां देवल जिनको, देखतही मुजपाप टर्यो ॥ मु० ॥ ५ ॥ तिहां दादा जिनदत्तसूरिना, चरणांबुजथी चित्त ठर्यो ॥ मु० ॥ ६ ॥ तपगच्छ गगनमंडलनी मांही, आनंदसूरि आनंद कर्यो ॥ मु० ॥ ७ ॥ तस लघुनंदन हंस कहतहे, व्यो शिव लक्ष्मी काज सर्यो ॥ मु० ॥ ८ ॥ इति ॥

## ॥ मोरारछावणी मंडन श्री ॥ पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ राग वढंस ॥

नाथकेसें गजको बंध छुडायो ॥ ए चाल ॥

चिंतामणि तुम दर्शनकुं में आयो, मुजे

पुण्य उदयसें पायो ॥ चिं० ॥ ए आंकणी ॥
मुद्रा देखके मन लोभायो, गुणगण लेश
में गायो ॥ सब गुणको कोइ पार न पावे,
एही अजब दिखायो ॥ चिं० ॥ १ ॥ मारे
रागद्वेष तुमने प्रभु, महा मोह गभरायो ॥
केवलज्ञान दिवाकर थइ प्रभु, साचो मार्ग
बतायो ॥ चिं० ॥ २ ॥ तुम विना काल
अनादि मुजकु, कुगुरु बहु भरमायो ॥
पूर्णप्रकाशी विण कुण साहिब, अखुट दीये
दरमायो ॥ चिं० ॥३॥ इंद्र चंद्र नागेंद्रो करके,
तुं प्रभु बहुत पूजायो ॥ अजब कीयो उन-
देवोने पण, अपनो मेल मिटायो ॥ चिं०
॥ ४ ॥ छवणो मोरार मंडन स्वामी, पार्श्व-
नाथ कहायो ॥ हंस तुमारो दर्श क ीन,
मनमां बहु हर्षायो ॥ चिं० ॥ ५ ॥

~~~
~~~

## ॥ गवालीयर मंडन श्री पार्श्वनाथ ॥ स्तवन ॥

॥ राग खमाच ॥

॥ मान तुं कायपें करता ॥ ए चाल ॥

चेतन तुं क्या फिरे रुलता, वंद्य सदा प्रभु पार्श्व, चेतन० ॥ ए आंकणी ॥ समकीत शुद्ध करणी प्रभु वरणी, जिन प्रतिमा हृदय धरता ॥ सुरनर किन्नर नृप विद्याधर प्रभु स्नात्र करता ॥ वं० ॥ १ ॥ जंघाचा ण विद्याचा ण, भगवती पाठ हृदय धरता ॥ जाय नंदीश्वर द्वीप मुनीश्वर, भवसायर तरता ॥ वं० ॥ २ ॥ रायपसेणी उवाइ उपाशक, ज्ञाता देख हृदय ठरता ॥ देव द्रोपदी अंबड आनंदजो, महानंद वरता ॥ वं० ॥ ३ ॥ इत्यादिक सूत्रोकी राहपर, में साहेब हरदम चलता ॥ आयाहुं वंदनके काजे, आतम मेरा ठरता ॥ वं० ॥ ४ ॥ सहेर गवालेयर देवल मांही, पाप पडल पूरण

हरता ॥ पार्श्वनाथ गुणगण सरोवरमें, हंस रहे फी ता ॥ वं० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री सौरीपुर मंडन नेमिनाथ ॥ स्तवन ॥

॥ मारा स्वामी मुजने तारोरें वीर जिणंदा ॥
॥ ए देशी ॥

मारां पातीकडां नीवारोरे नेमि जिणंदा, मेंतो शरण लह्यो छे तुमारोरे कटो भव फंदा ॥ ए आंकणी ॥ वालारे मारा शौरीपुर श्रृंगार, तीहां कल्याणक दोय धाररे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ १ ॥ वालारे मारा कृष्णकार्तिक तिथी सारी, चवीया द्वादशीये सुख कारीरे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ २ ॥ वालारे मारा माताजी स्वप्न निहाले, रीष्ठनेमि चक्रसंभालेरे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ ३ ॥ वालारे मारा तेह तणे अनुसार, ठवीयुं नाम तदा उदाररे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ ४ ॥ वालारे

मारा श्रावणमाससुसार, उज्वल पंचमीए निरधाररे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ ५ ॥ वालारे मारा जन्म्या नेमि कुमार, हर्ष्यां त्रिभुवन जन अपाररे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ ६ ॥ वालारे मारा दीक्षा अवसर जाणी, बोल्या लोकांतिक सुर वाणीरे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥ ७ ॥ वालारे मारा तीर्थ प्रभु वरतावो, रुडी संयम श्री दीपावोरे ॥ नेमि० मारां० मेंतो० ॥८॥ इति ॥

## ॥ कंपीलपुर मंडन श्री विमलनाथ ॥ स्तवन ॥

॥ सखी मेंतो वीनय पालजारी ॥ ए देशी ॥

सखी हुंतो बहु सुख पायोरी, वीमल जिन नाथथी, हुंतो ब० ॥ ए आंकणी ॥ कंपीलपुरमां चार कल्याणक, देखी दील हर्षायोरी ॥ स० वी० ॥१॥ वैशाखसुद द्वादशीये चवीया, सुरपति शिर नमायोरी ॥ स० वी० ॥ २ ॥ माघसुदि त्रितीया दिनजन्म्या,

रगिरि स्नात्र करायोरी ॥ स० वी० ॥ ३ ॥ उज्वल माघनी चोथे दीक्षा, मनपर्यव ज्ञान जायोरी ॥ स० वी० ॥ ४ ॥ पोसशुदि छठने दिन केवल, लक्ष्मीवान् कहायोरी ॥ स० वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ छत्रबाग मंडन श्री आदिनाथ ॥ स्तवन ॥

॥ सिद्ध चक्र पद वंदोरे भविका० ॥ ए चाल ॥

॥ गुणी जन छत्र बाग जाई वंदो । मरुदेवाजीको नंदोरे ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ त्रिभुवन तिलक समा प्रभुजीको, पुण्ये मील्यो संयोग ॥ द्रव्य भावसें देखो जिनका । दूर हुवा सब रोगरे ॥ गु० म० ॥ १ ॥ मोक्ष मार्ग देखाडण भविकुं । संयम लियो जिनराज ॥ शरणागत रक्षक हे साहिब ॥ तारण तरण जहाजरे ॥ गु० म० ॥ २ ॥ तीन छत्र शिर ऊपर सोहे । भामंडल मनमोहे ॥ जगबांधव वसीया नही कोहे । पडीया न-

ही दुःख द्रोहे रे ॥ गु० म० ॥ ३ ॥ सूरि श्री जिनदत्त प्रतिष्ठित, मूर्त्ति लागत प्यारी ॥ कर्माष्टक कंथा दूर करके । लेवे सेवक तारी-रे ॥ गु० म० ॥ ४ ॥ रत्नसुवर्ण रजतमय प्र-भुके । बिंब तिहां हे अनेक ॥ त ना चरण कम फरसनसें । लहे सुख हंसज्युं छेकरे ॥ गु० म० ॥ ५ ॥

## ॥ कीर्तबाग मंडन श्री वासुपूज्य पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ जीया चतुरसुजान । नव पदके गुण गायरे ॥
॥ ए चाल ॥

॥ भवी धरो जिन ध्यान । कीर्तबाग बीच जायरे ॥ ए आंकणी ॥ कीर्तबागना देवलमांही मूर्त्ति दोय दील लायरे ॥ भ० ॥ १ ॥ वासुपूज्यने पार्श्व प्रभु तीहां । कस-वटी मय ठायरे ॥ भ० ॥ २ ॥ श्यामली मूर्ति अमी बहु झरती । देखत मन ऊल्लसायरे

---

१ चतुर.

॥ भ० ॥ ३ ॥ धर्म धुरंधर धर्म प्रभुका। धर्मी दिलडे धरायरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ कर्म अनल ॥तल झट कीनो । शमरस जल छटकायरे ॥ भ० ॥ ५ ॥ त्रिभुवन पूज्य वासु॰ज्य देवे । ज्ञानवर्ण मांटाये ॥ भ० ॥ ६ ॥ पार्श्व श्यामला श्यामता फेडे । हंस ऊज्वल बनायरे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ अजीमगंज मंडन श्री ने॰॰ाथ

## ॥ स्तवन ॥

॥ धार तरवारनी सोहिली दोहिली । चौदमा जिन-
तणी चरण सेवा ॥ ए देशी ॥

॥ श्री नेमिजिन नाथनो साथ साचो खरो । दील धरो प्राणीया प्यार लावी ॥ ज्ञान तिथि जाण अज्ञान निवारणी। मास श्रावण तणी सरस ध्यावी ॥ श्री० ॥ १ ॥ शुक्ल पंचमी प्रभु नेमि जन्म्या जस । कांति कमनीय कालीकहाइ ॥ जैसि कस्तु-

रीका कनीनिका नेत्रमें । मीरच भोजन विशे सरस भाई ॥ श्री० ॥ २ ॥ इष्ट अनिष्ट वियोगने योगना । यथा संख्ये करी दुःख हठावे ॥ शोक कुयोगने रोग निवा णी । देखी जसकांति संतोष थावे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ धन्य ते लोकनी दृष्टिने स्पष्टथी । जेहणे जन्म महोच्छव निहाळ्यो ॥ धन्य रसना-जीके गुण गण गाइया । पाइआ जोग पु-ण्येज पाळ्यो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ धन्य ते कर्ण-युग जन्म वर्णन तणा । जेहणे प्यारथी वर्ण धार्या ॥ धन्य ते हृदयने जे ना नामना । मंत्र धरी आपणा आत्म तार्या ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अजिमगंज गंजियो जाय नहि जेहना । शिखरि ज्युं शिखर तणे पसाये ॥ तेह प्रभु वाल ब्र चारी कुमारना । पाय प्रासा - आनंद थाये ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ श्री कलकत्ता मंडन शांतिनाथ स्तवन ॥

॥ फाग ॥

॥ शीतल जिन दरबार जाइ खेलीये होरी ॥ ए आंकणी ॥ संघ सकल मिल दर्शन आयो । सहेर कलकत्ता उद्यान ॥ जा० शी० ॥ १ ॥ कोंयल चिहुंदिशि टहुकतीरे । बेठी करतहे तानरे ॥ जा० शी० ॥ २ ॥ ज्ञान गुलाल उडाय मंडपमें । काम क्रोध तजी मानरे ॥ जा० शी० ॥ ३ ॥ तप जप संयम खपकर श्रृंगी । छांटीये करण कल्याणरे ॥ जा० शी० ॥ ४ ॥ दान अबील रकेबी भरके । शमरस अरगजा कानरे ॥ जा० शी० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत चंदन च चा । राखीने मन ठाणे ॥ जा० शी० ॥ ६ ॥ ताल मृंदग वांसरी वीणा । क्या करूं डफका ब्यानरे ॥ जा० शी ॥ ७ ॥ गीत नृत्यवादीत्र बजावत ।

अनंत फल व्याख्यानरे ॥ जा० शी० ॥ ८ ॥ बौध नैयायिक सांख्य जैमनी। वैसेषिक मतवानरे ॥ जा० शी० ॥ ९ ॥ शितल जिन सेवा विण जाण्यो। नहि शितल तुम ज्ञानरे ॥ जा० शी० ॥ १० ॥ शितल जिन स्याद्वाद दुग्ध रस। हंस ज्युं करो तुम पानरे ॥ जा० शी० ॥ ११ ॥

## ॥ चंद्रावती मंडन श्री चंद्र प्रभ स्तवन ॥

### ॥ राग होरी ॥

॥ सांवरो सुख दाइ, जाकी छब वर्णी न जाई ॥ ए चाल ॥

जाणल्यो तुमे भाइ, वाणी चंद्रप्रभ फ माइ ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ चंद्राव-तीमें चार कल्याणक, नाटकन सुखदाइ ॥ प्रथम चवन तीन ज्ञान सहितहे, गुप्त गर्भधरे माइ ॥ हृदयमें अति उल्लसाइ ॥ सु० ॥ १ ॥ दुसरा जन्म कल्याणक महो-

च्छव, म ्सनराय कराई ॥ चंद्र समा-
प्रभा ेखीन, चंद्रप्रभनाम ठाइ ॥ नग-
रमें बटत बधाई ॥ सु० ॥ २ ॥ तास
दीक्षा कल्याणक म ोच्छव, देव करे ती-
हां आइ ॥ राज छोड प्रभु जाय जंगलमें,
रैयत रोवत धाई ॥ रखो कोइ प्रभुकुं नाइ॥
सु० ॥ ३ ॥ चोथा केवल ज्ञान कल्याणक,
चि दिशि चाम ढुलाइ ॥ समवस ण
बेठे म राजा, ईंद्राणी मंगल गाई ॥ वाणी
गणधरसें गुंथाई ॥ सु० ॥ ४ ॥ समेतशेखर
गिरिव के ऊपर, करी कर्मनूसें लडाइ ॥
कर्म य बल ान भयोहे, देखत प्रभु ठकु-
राइ ॥ तीहां शिव लक्ष्मी पाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥

## ॥ कासंबजार मंडन श्री नेमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग धनाश्री ॥

॥ अब मावडी गिरिजानदे । मेरे नेमजीसें कामहे ॥

॥ ए चाल ॥

मुज तार जिन बावीसमा । पहोचाड

शिवपुर धामरे ॥ ए आंकणी ॥ हुंभम्यो बहु संसारमां । वली नगर गामागामे ॥ विडंबन करनार मुज । वलगी रह्यो छे कामे ॥ मु० ॥ १ ॥ ब्रह्मचारी चक्र चूडामणि । तुं राख मुज मन ठामरे ॥ प्रभु करो एवी कृपा जेथी । लहुं सदा तुम नामरे ॥ मु० ॥ २ ॥ कामबजार विभुषण । प्रभु नेमि आगल ग्रामरे ॥ आलापीने विणा बजावत । अनंतो मले दामर ॥ मु० ॥ ३ ॥ तेणे कारणे गुण गाइने । लहीये सदा विसरामे ॥ जिन चरण कमल हंसनीपरे । राखी शुभ परिणामरे ॥ मु० ॥ ४ ॥

## ॥ अथ चंपापुरी मंडन श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

॥ मरुदेवी माता एमे आखे ॥ ए देशी ॥

॥ अकंपा चंपा पुरीनिवासि । वासु पूज्य जिन तिहां अविनासी ॥ मलीया मुजने

देव जिनेश्वर मलीया० ॥ १ ॥ सती सुभद्रा जिहां थइ खासी । शेठ सुदर्शन गुणनो रासी ॥ शीलवंत शिरदार जिनेश्वर शि० ॥ २ ॥ वर्द्धमान प्रभु तिहां विचरीया । भव्य जिवना मनोरथ फलीया॥ [illegible] गुणीजन लोक जिनेश्वर तरी० ॥ ॥ ३ ॥ तेह नग [illegible]ना हता युवराजा । पंच कल्याणक महोच्छव झाजा ॥ देवे कर्या तिहां आय जिनेश्वर देवे० ॥ ४ ॥ तेह का[illegible]णथी तिर्थ ए तारूं । जाणी आव्यो तरवुं माहरूं ॥ तार तार वासु पूज्य जिनेश्वर तार० ॥ ५ ॥ तुमे प्रभु मुज मनमां वसीया । यात्रा करण भवि जीव ऊल्लसीया ॥ तुं प्रभु तारणहार जिनेश्वर तु० ॥ ६ ॥ बा[illegible]चरथी संघ तुमारी । यात्रा करण आव्यो हित धारी ॥ शिव लक्ष्मी दियो सार जिनेश्वर ॥ शि० ॥ ७ ॥

---

## ॥ अथ जंगीपुर मंड॰ श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ राग चलत ॥

॥ राखुंरे हमारा घटमां । जिनराज नाम तेरारे ॥ ए चाल ॥

॥ आयोरे हुं जंगी॰रमां । सुणी पार्श्वबिंब तेरारे आ० ॥ ए आं॰णी ॥ तुम देवदेव केरा । मिटावा भवोभव फेरा ॥ कीजे । उद्धार मेरारे ॥ आ० ॥ १ ॥ हजार फणसारी । धरणेंद्र देव धारी ॥ सेवा करे तुमारीरे ॥ आ० ॥ २ ॥ संग्राम राज कुलमें । तुम नाम धारे सूलमें ॥ भय जाय बिन ॰लमेंरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अग्नि समुद्र पडिया । गजराजने ॰कडीया ॥ तुम नामे नाहि नडियारे ॥ आ० ॥ ४ ॥ तुम नामे राज्य पावे । पदभ्रष्ट निज पद ठावे ॥ लक्ष्मी अपार आवे रे ॥ आ० ॥ ५ ॥



## ॥ सिंहपुरी मंडन श्री श्रेयांसजिन ॥ स्तवन ॥

॥ तुमे तो भले बिराजोजी । श्री श्यामलीया महाराज शिखरपर भले० ॥ ए चाल ॥

॥ मुने भवपार उतारोजी । श्री श्रेयांस जिनवर देव ॥ मु० ॥ १ ॥ सिंहपुरीमां चार कल्याणक । चवन जन्म व्रत ज्ञान ॥ तेहनो अद्भुत महिमा साहिब । मैं सांभळीयो कान ॥ मु० ॥ २ ॥ बाग बिचमां मंदिर शोभे । जेहवुं देव विमान ॥ देखंतां मन तृप्त थाय छे । जेम करी अमृत पान ॥ मु० ॥ ३ ॥ मूलनायक श्री चंद्रप्रभुना । चरण कमलमां ध्यान ॥ हंस तणि परें झीलत्या साहिब । जेम आवे शुभ स्यान ॥ मु० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ अयोध्याजी मंडन श्री पंचपरमेष्टि स्तवन ॥

॥ खलक एक रेनका सुपना । समज नर को नहि अपना ॥ ए चाल ॥

॥ विनीतानगरी हे सारी, वेनीत जन

वास थिरकारी ॥ ए आंकणी ॥ तिहां हुवा पंच महाराजा । तेणे ए तिर्थ हे ताजा ॥ वि० ॥ १ ॥ आदि जिन अजित अभिनंदन । सुमति अनंत जगमंडन ॥ इनोका ओगणीस जाणो । कल्याणक भाई तुमे मानो ॥ वि० ॥ २ ॥ पंच प्रभु पंचमी देवे । गतिगुणी लोक जेम सेवे ॥ दयालु विश्वनाछेजी । शरिरीने शरण देजी ॥ वि० ॥ ३ ॥ करूं क्या प्रार्थना आजे । पोते प्रभु तारवा काजे ॥ ऱ्वर्त्या छे विभु मेरा । जीनोंने कर्म घढ घेरा ॥ वि० ॥ ४ ॥ राय बुधसिंघका नंदन । आया इहां संघ लेइ वंदन ॥ सुधासें घोलके मंदर । कराया हंस ज्युं सुंदर ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ अथ रत्नपुरी मंडन श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग इंद्रसभा ॥

॥ राजा हुं में कोमका । और इंद्र हे मेरा नाम ॥ ए चाल ॥

॥ धर्मनाथ जिन में तुमरा । सदा

धरूं दिल ध्यान ॥ अर्ज ुणक माहरी । प्रभु दिज्यो अविचल ज्ञान ॥ धर्म० ॥ १ ॥ च्चवन जन्म दिक्षा उर केवल । चार कल्याणक सार ॥ रत्नपुरीमें धा ।यां । प्रभु जगत् जंतु हितकार ॥ ध० ॥ २ ॥ दो प माण परुपिये । तुमे प्रत्यक्ष उर परोक्ष ॥ तेम वली · वतत्वकां प्रभु । श्रद्धासं कह्यो मोक्ष ॥ ध० ॥ ३ ॥ तुम · शंनका सार ए में । पाया हे म ।राज ॥ अब एसी कृपा करो । प्रभु शिव श्री पामुं आज ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ अथ बनारस मंडन श्री सुपार्श्व पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ आज जिनराजसें प्रित लगाइरे आ० ॥ ए चाल ॥

॥ पार्श्व सुपार्श्व दोय लागे प्रभु प्यारारे ॥ अन्य देव सब लागे मोय खा ।रे ॥ पा० ए आंकणी ॥ बनारसी नग ।में आनं· कारां । कल्याणक चार चार धारारे ॥

पा० ॥ १ ॥ चवन जन्म दिक्षा केवलका । म ..च्छव हुवा उदाररे ॥ पा० ॥ २ ॥ अद्भुत ज्ञानि पार्श्व प्रभुने । जलता नाग उगारारे॥ पा० ॥ ३ ॥ सातमा सुपार्श्वनाथ स्वस्तिक लंछन धर । गंगा कांठे ..हाररे ॥ पा० ॥ ४ ॥ समेतशिखर गि वरके उपर । कर्यों शिव-लक्ष्मि स्विकारारे ॥ पा० ॥ ५ ॥

## ॥ ..खनो मंडन श्री सुबाहु जिन स्तवन ॥

थोडासा जिवणा थोडी जींद्गानी कीसपर करत गुमानारे ॥ ए चाल ॥

॥ ल वनौमंडन स्वामी सुबाहु । दर्शन भाग्यसें पायारे ॥ अढाइसों अभिषेक तिहां मीली। इंद्रादिके करायारे ॥ ल० ॥१॥ ते वर्णवुं न्यारा न्यारा करी । शुभ फल काज सवायारे ॥ बौंसठ इंद्रोना बासठ वली । सूर्य चंद्रना कहायारे ॥ ल० ॥ २ ॥ छासठ छासठ साथ वली चौ । लोकेंपा-

लना गीणायारे ॥ गुरू थानीया सामान क
वली । ्टकपंती सुख पायारे ॥ ल० ॥
॥ ३ ॥ अंगरक्षक पर्षद्रण देवो । परखद्
त्रण इहायारे एक एक अभिषेक करीने ।
कर्ममेलने मिटायारे ॥ ल० ॥ ४॥ सोर्हम
इसार्न इंद्राणीये । आठ आठ करवायारे ॥
अंसुर नींगनी ईंद्राणीना । दश द्वादश
फरमायारे ॥ ल० ॥ ५ ॥ व्यंतर जोतर्स
ई्द्राणीरे । चार चार करी ध्यायारे ॥ इण-
विधसें अभिषेक करी नीज । निरमल
हंस बनायारे ॥ ल० ॥ ६ ॥

## ॥ श्री हीरविजय सूरि महाराजकी लावणी ॥

॥ विजय हीर सूरीश्वरका बहु । चम-
त्कार सुणके चमका ॥ जगत गुरूकां
वाणी सुणके । दयाधरमी अकबर बंका ॥
ए आंकणी ॥ सभा बीच बुलवाय आप-
की । दुर करी दिलकी शंका ॥ दयाध-

मैका बादसा.ने । दीलवाया सगले डंका ॥ वि० ॥ १ ॥ पर्युषणके आठ दिन और । चार दिन दुसरे मिलके ॥ बारा दिनमें जीव न मारे । मेरे राज्यमें कोइ फीरके ॥ वि० ॥ २ ॥ सोनाका .रफोंसं उनका । .रमाना लिखवाय दिया ॥ गुरू पाससें ऊठ सांइने । बंदि बंधन मोक्ष कीया ॥ वि० ॥ ३ ॥ नाना देशके नाना जाती । रखे हुवेथे बहु जंतु ॥ घणे कोसके तलाव सेती ॥ छोड दीये सगले गंतुं ॥ वि० ॥ ४ ॥ तुष्टमान होके अकबरने । कहा गुरू तुम महा त्यागी ॥ लेते नही तृण मात्र हमारा । कुछ तो ल्यो मुजसें मागी ॥ वि० ॥ ५ ॥ आग्रह उसका देख गुरूने। शहेर आगरा मांहि बडा॥ पुस्तकका भंडार कराया । हजु तक बी वांही खडा ॥ वि० ॥ ६ ॥ लुंपक गच्छके मेघजी रीखने । आचार्य पदकु छोडा ॥ पचीस यतिकी साथ आयके । हीरसूरिकुं

कर जोडा ॥ वि० ॥ ७ ॥ दीक्षा महो-
च्छव हुवा उनोका । बादसाही बाजां
बजते ॥ धन्य जीव जो होवे सोहि । ऐसे
गुरूकुं नहि त्यजते ॥ वि० ॥ ८ ॥ एक
समे बादशाहकी अरजसें । शांतिचंद्रकुं
वहां छोडा ॥ उसनेभी बहु चमत्कारसें ।
दया धर्मके बीच जोडा ॥ वि० ॥ ९ ॥
हजारीमल सुबेकी ओरत । छोड मोती
परलोक गई ॥ उपाध्यायके पसायसें ।
ओरत तो फेर सजीव भई ॥ वि० ॥१०॥
बादशाहके मोती देके । फेर बी ओरत
लोप हुई ॥ हजारीमलने कही बात ए ।
बादशाहके पास जई ॥ वि० ॥ ११ ॥
बादशाह जब बोला उनकुं । अदबी खुदा
एह सही ॥ दुसरे दीन गुरू पास जाय-
के । बादशाहने बात कही ॥ वि० ॥ १२ ॥
हमकुं बी दीखलावो गुरू कुच्छ । चम-
त्कार मुज पास रही ॥ गुलाब बागमें

दिखलावेंगे। कल्ल बादशाह तुजकुं तहीं ॥ वि० ॥ १३ ॥ गुरू बेठेहे जाय बागमें । बादशाह पण जाय मिला ॥ तनेमें हु मायु पिताकी । देखलई उसने लीला ॥ वि० ॥ १४ ॥ मेवा मीठाई देके मिलके। सैन्य सहित प्रलोप हुवा। बोला बादशाह गुरू कृपा विना । मिले पिता कहो केसे मुवा ॥ वि० ॥ १५ ॥ अटक देश पर चढा बादशाह । बारा बरस तक युद्ध करा ॥ तोबी किल्ला नहि तूटता । मलाणीयाने कलंक धरा ॥ वि० ॥ १६ ॥ शांतिचंद्र सेवडेकुं बादशाह। कदंब पोसीयां करताहे ॥ उससे ए घढ नहि तुटता । अकबर कान न धरता हे ॥ वि० ॥ १७ ॥ शांतिचंद्रने कहा अकबरकुं। जो तुं किल्ला चाहता हे ॥ चल मेरी संग तुंहि एकीला । केसे घढ नहि आता हे ॥ वि० ॥ १८ ॥ एक फुंकसें खाई पूरके । दुसरीसें सब स्तंभ

धरे ॥ तीसरी फुंकसें गोपुर तोडी । राजाकुं स्वाधीन करे ॥ वि० ॥ १९ ॥ अकबरने फेर कहा गुरूकुं । कुछ मेरी पर हुकम करो ॥ बादशाहकुं कहा गुरूने । मेरी बातपर ख्याल धरो ॥ वि० ॥ २० ॥ गुरूकी वाणी सुणी सांइने । चौदाकोटिका कर छोडा ॥ चिडियांकी जिव्हाकुं छोडके । मान तुरकडेका तोडा ॥ वि० ॥२१॥ वर्ष वर्षमां षट् षट् महिना । अमारीका फुरमान दीया ॥ दिल्ली जाय के शांतिचंद्रने । हीरसूरिकुं भेट कीया ॥ वि० ॥ ॥ २२ ॥ इत्यादिक बहु तीर्थोंका बी । फुरमाना गुरू पास रहा ॥ अठावनमे पाट प्रभुके । तपागच्छ अलंकार कहा ॥ वि० ॥ २३ ॥ इनकी चरण पादुका सोहे। अजीमगंज नगर महीं ॥ चिंतामणि स्वामीके मंदिर । महीमाका कुछ पार नहिं॥ वि० ॥ २४ ॥ जो भवी भाव धरीने सेवे।

तीसका दारिद्र जाय वहीं ॥ सुख संपत्ति सौभाग्य वधे वली । पामे लक्ष्मी अखुट ग्रही ॥ वि० ॥ २५ ॥ न्यायांभोधि आनंदसूरिना । लक्ष्मीविजय पंडित भया ॥ तस चरणांबुज हंस चाहतहे । ऐसे गुरूकी पूर्ण दया ॥ वि० ॥ २६ ॥

## ॥ श्री पावापुरी मंडन वीर जिन स्तवन ॥

॥ राग केरबो ॥

॥ भलाजी मेरो नेम चल्यो गिरनार ॥ ए चाल ॥

भलाजी मेरा वीर गया निरवाण । एकेला होय के ॥ मेरा वीर गया निर्वाण ॥ ए आंकणी ॥ गौतम गणधर सोच करते । भलाजी मेरा कोण होसे आधार ॥ ए० ॥ १ ॥ ईंद्रभूति नामे करी मुजने । भलाजी कोण बोलावसे धरी प्यार ॥ ए० ॥ २ ॥ विनय करी तुम विन कीस आगे । भलाजी प्रश्न करूं जाइने

उदार ॥ ए० ॥ ३ ॥ वीरवीर करतो इम गौतम । भलाजी वितराग थइ गयो लार॥ ए० ॥ ४ ॥ पावापुरीमां विर प्रभुनुं । भलाजी सरोवर बीच देवलसार ॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ जेम मानससर राजहंसलो । भलाजी तेम देवल शोभे श्रीकार ॥ ए० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ श्री हथनापुर तीर्थ स्तवन ॥

॥ न्हानी वहुने परघर रमवानो ढाल ॥ ए चाल ॥

॥ हथणापुर तीर्थ अति मनोहार । सेवो भवि भाव धरीने उदार ॥ ह० ॥ ए आंकणी ॥ शांति कुंथु अरनाथ तिर्थंकर। चक्रवर्त्ती पद धार ॥ ह० ॥ १ ॥ कल्याणक चार चारना धारी । थया इहां हितकार ॥ ह० ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यानना तान थकी जेणे । तार्या नरने नार ॥ ह० ॥ ३ ॥ देश देशना संघ तेमनी । यात्रा करे धरी प्यार ॥ ह० ॥ ४ ॥ एह तीर्थ सेवे जेअ-

र्निश । तस घेर लक्ष्मी अपार ॥ह०॥५॥

## ॥ हस्तिनापुर मंडन श्री शांति कुंथु अरनाथ जिन स्तवन ॥

॥ चलि बरात साथ सब राजे । राजुलको व्याहन आये ॥ चाल लावणीकी ॥

॥ चलि दिल्लीसें साधु श्रावको हस्तिनागपुरमें आये । चक्रवर्त्ती श्री शांति कुंथुअर जिनवरका दर्शन पाये ॥ ए अंचली ॥ गंगा सिंधु मध्य खंडादिक । षट् खंड राज्य छोडि जाये । दिक्षा शिक्षा दायक जनको । लेनेका प्रभु मन लाये ॥ चलि० ॥ १ ॥ हीरा पन्ना माणक मोती । त्याग देखके गभराये । अंतेउर सब मिलके इनका रोवत रोवत गश खाये ॥ चलि० ॥ २ ॥ हमकु तुम मत छोडो पियाजी । बेर बेर इम मनवाये ॥ हाथ जोडके अरज करतहे । प्रभु मेहेलनमें क्युं नाये ॥ चलि० ॥ ३ ॥ देइ उपदेश राणी

रैयतको । शेहेर बहारसें उलटाये ॥ निकट भवीने जाण लिया तब । कोइ नहि अपना थाये ॥ चलि० ॥ ४ ॥ इम चिंतवी एक एक प्रभु संग । सहस जन हारे धाये । संयम श्री पाइ प्रभु साथे । देख जगत् जन हर्षाये ॥ चलि० ॥ ५ ॥ इत्यादिक इहां बार कल्याणक । तिन जिनेश्वरके गावे ॥ हंस कहे पारस सम भूमि । स्पर्शनसें हम उल्लसाये ॥ चलि० ॥६॥इति॥

## ॥ अंबाला मंडन श्री चंद्रप्रभ शांतिनाथ स्तवन ॥

॥ गजल ॥

॥ दिल मेरा डेल गया रथका फीराना सुणके ॥

॥ यह चाल ॥

दिल मेरा मोद रहा दो मूर्त्ति अंबाले सुणके ॥ छेणे छमछम बजें भक्तोंके बजाए उनके ए आंकणी ॥ उसमें एकही हे स्फटिकमय मूर्त्ति सारी । मानु दिल चंद्रप्रभासें निकाली चूनके ॥ दिल० ॥ १ ॥

प्रतिमा शोभे श्रीचंद्रप्रभजिन केरी। सु-
रगुरू पण गुणका पार न पावे गुणके ॥
दि० ॥ २ ॥ दुसरी रूपामय मूर्त्ति हे शां-
तिकारी ! मानुं ए बनी हे ज्योतीयनका
पाणी पुनके ॥ दि० ॥ ३ ॥ अ [illegible] । नंद-
नकी प्रतिमा देखनसे बुझा । सय्यंभव
सूरि हुवा यज्ञ छोड ए फल पुण्यके ॥
दि० ॥ ४ ॥ दश वैकालिक नामा सूत्र
इनोने बनाया ॥ मानुं ए बनाहे सिद्धां-
तसारको वुणके ॥ दि० ॥ ५ ॥ ऐसे जि-
नराज चरण कमलोमें वासा । लक्ष्मी ज्युं
हंस चाहत हे प्रभुको थुणके ॥ दि० ॥ ६ ॥

## ॥ अंबाला मंडन श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग गजल ॥

॥ शोभे सुपार्श्वनाथ अंबाले मेरे ।
गुणगण गाऊं हुं शरण आके प्रभु तेरे ॥
ए अंचली ॥ समता देखके प्रभु क्रोध न

आया तुज नेडे । मानने माया ऋजुतासें कहि नहि तुज छेडे ॥ शोभे० ॥ १ ॥ निर्लोभता नावा उपर चढके शोभतेरे । तरीया प्रभु तुरतज लोभ समुद्रनेरे ॥ शो० ॥ २ ॥ मोक्ष संसार रूप दुग्ध जलसेंरे । हंस सम स्वामी जरूर मोक्षने लेरे ॥ शो० ॥ ३ ॥

## ॥ जालंधर मंडन श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

॥ मेरा लक्ष्मण बेटा तुं भाइके संग जाई ॥ए चाल॥

जीया भजले प्यारे पार्श्वनाथ थीर थाई । शेहेर जालंधर बीच जीनोका, मंदिरकी छब आई प्यारे, पार्श्व० ॥ ए अंचली ॥ बालपणेमें बनारसके बहार प्रभुने जाई । पंचाग्नि तप धारी तापस । कमठको लिया बुलाइ प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ १ ॥ सुण जोगी यह कष्ट तुजकुं किसने दिया दिखाइ ॥ दया विना कछु काम न आवे ॥

फोगट जन्म गमाइ प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ २ ॥ कमठ कहे सुण राजकुंवर तुं । हमको मती डराइ ॥ गुरू हमारे वनवासि हे । पास न जीसके पाइ प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ ३ ॥ कुंवर कहे सुण जोगी भोला, वनमें फल फूल खाइ । धर्म होय तो हरिण रोझकुं । क्युं नहि होवत भाई प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ ४ ॥ निरूत्तर कर अग्निसेंति लकडा लिया निकलाइ । नाग निकाला जलता बिचसें, काष्ट लइ फडवाइ प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ ५ ॥ सेवकसें नवकार सुणाके, धरणेंद्र पददाइ । पार्श्वकुंवरकी देंख महिमा । लोक गये गुण गाइ प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ ६ ॥ दानेश्वर हुइ दिक्षा पाइ, केवल लही ठकुराई । सम्मेतशिखरपर मोक्ष सधाये । हंस नमे इहां आइ प्यारे पार्श्व० ॥ जीया० ॥ ७ ॥ इति ॥



## ॥ अ-तसर -ंडन श्री अरनाथ जिन स्तवन ॥

॥ महबुब जानी मेरा यह चाल ॥

॥ प्रभु अर जिनव  महेरबानी । मुजसें जरूर करनाजी । मु० । तुम नाथ सदा बहु बलीया । भवसंकट दुर हरना ॥ प्र० ॥ १ ॥ संवत ओगणीस अडताळी । ‍रैाध मास अनुसरनाजी ॥ सुदि षष्टी प्रतिष्ठा कीनी । तिसका करूं वरणा ॥ प्र० ॥ २ ॥ बिच अमृतसर देसांइ । महोच्छवका फीरनाजी ॥ जयकार हुवा बहु तांहि । बलि बाकुलका गि ना ॥ प्र० ॥ ३ ॥ आनंदसूरि इहां आये । उनसें सदा डरनाजी । इस विध ढुंढक जन बोले । नहि तो लियो शरणा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जिनधर्म उद्योत करीमें चाहुं सदा ठरनाजी ॥ निज हंस उज्वल बनाके, शुभ मानस तरना ॥ प्र० ॥ ५ ॥

---

·१ वैशाख सुदि ६.

## ॥ जीरा॰डन श्री चिंतामणि पार्श्व-नाथ स्तवन ॥

॥ चाल कंगणेकी ॥

॥ सबमें ज्ञानवंत वडवीर ॥ ए राह ॥

चिंतामणि ढुंढतहो क्युं भाइ ( २ ) चिंतामणी पार्श्वजीरे में पाइ ॥ चिंता० ॥ ए आंकणी ॥ अपूर्व ए चिंतामणि तुम जाणो । एहमें संशय लेश न आणो । चिंतनसें अधिक फल ल्यो ध्याइ ॥ चिं० ॥ १ ॥ देवाधिदेव प्रभु ए कहावे । और नहि देव यह पद पावे । कामेषु सेवे प्रभु पद जाइ ॥ चिं० ॥ २ ॥ प्रकाम काम प्रमुख जोइनके । शत्रु सब सबळ प्रभुको गिणके । गये वोह हृदय कमल गभराइ ॥ चिं० ॥ ३ ॥ उनोका प्रभु आगे नहि चाले । लगे तब हम भक्तोंके ल्हारे । दिजो कोइ सार उपाय ।दे[illegible]इ ॥ चिं० ॥ ४ ॥ पुण्य कारुण्यवंत [illegible]खकारां।

प्रभुका लीना शरण में धारी । चोमास रहा चरण बिच जाइ ॥ चिं० ॥ ५ ॥ हंस सम उदय हुवे जब स्वामी । ढुंढक जन घूक गये भय पामी । शरणागतने लीये गुण गाइ ॥ चिं० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ जैपुर निकटवर्त्ति आमेर मंडन श्री चंद्रप्रभस्वामी स्तवन ॥

॥ राग जंगलो ॥

॥ जीया तुंभि करले अरजी साचे दरबार ॥ ए चाल ॥

॥ तारो प्रभु तारो मेरे दिनदयाळ ॥ दि० ॥ ए आंकणी ॥ आमेर शेहेर शोभे देवल उदार । चंद्रप्रभनाथ तेरा अति मनोहार । अति० ॥ ता० ॥ १ ॥ जीत्यो मोहराय प्रभु लेइ व्रतसार । अति अनुरागी हुइ सर्व विरति नार । स० ॥ ता० ॥ २ ॥ सद्बोध रहे सदा प्रभु तुम ल्हार । अंग अंगी भावे सम्यक् दर्शन प्रचार ॥

१ सूर्य.

द० ॥ ता० ॥ ३ ॥ प्रशम कवच लिया गले ।बेचडा । ंताष ।शेरस्त्राण लिया प्रभु धार ॥ लि० ॥ ता० ॥ ४ ॥ अप्रमाद सिंधुर उपर चढी हुवे त्यार । शुभ अध्यवसाय रूपी पदाति परिवार ॥ प० ॥ ता० ॥ ५ ॥ इत्यादिक फोज केरा करी विस्तार, अमूढता कुंताग्रेथी मारा मोह ठार ॥ मा० ॥ ता० ॥ ६ ॥ धर्मराय सैन्ये हुवो ज ज जयकार । हंस कहे मेरा प्रभु मोह दुर ठार ॥ मो० ॥ ता० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ श्री मेडता मंडन सर्वजिनभुवन स्तवन ॥

### ॥ देशी पाणीहारिनी ॥

॥ चौद जिनालय वंदिया सुखकारी हो लोल । मेडतामें जयकार वा ल .ाजो ॥ मनो .र बिंब शोहामणा सुख० । गुण गणका नहि पार ॥ वाल .ाजो ॥ चौ० ॥ १ ॥ प्रभुजी ूजाये केसरे सुख० । अन्यने न

चढे लगार वा० ॥ चंपक चढे प्रभु पाय-मां सुख० । आकसुं धरे अन्य प्यार ॥ वा० ॥ २ ॥ शांत आकार प्रभु तणा सु० । अ[illegible]नो क्रुर आकार वा० ॥ संप्रति राये [illegible] छे सु० । प्रतिमा घणी मनोहार ॥ वा० ॥ ३ ॥ विजयहीर[illegible]रीशनी सु० । मूर्त्ति शोभे उदार वा० ॥ तपागच्छने उ-पासरे सु० । वंदिये भवि नरनार ॥ वा० ॥ ४ ॥ एह मेदनीपुरमां थया सु० । ल-क्ष्मीविजय गुरू सार वा० ॥ तस किंकर कहे चैत्यना सु० ॥ गुणीजन क[illegible]ये उ-द्धार ॥ वा० ॥ चौ० ॥ ५ ॥

## ॥ श्रीफलोधि पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ श्री अर्हन् स्वामी मेरा ॥ ए चाल ॥

॥ श्रीफ[illegible]ोधि पार्श्व स्वामी ( २ ) दुः-खको मिटानारे ॥ श्रीफ० ॥ १ ॥ प्रभु मारवाड[illegible] बिराजो ॥ २ ॥ जेसे जग[illegible]-णारे ॥ तुम मंदीर मेड[illegible] निकटे । ज्युं

देव विमाना ॥ श्रीफ० ॥ २ ॥ एसे प्रभुके शीरं होयां ॥ २ ॥ नहि कोइ दुःखाना । पारसके फरसे लोहा । होय कंचनवाना ॥ श्रीफ० ॥ ३ ॥ क्युं आप निकटमें होतां ॥ २ ॥ हम होत हेरानारे । क्या भाग्य हमारे खोटे । जो हुवा ब ाना ॥ श्रीफ० ॥ ४ ॥ यह अचरजका कोइ स्वामी ॥ २ ॥ होगा निदानारे । पण मुजकुं यह नहि दिशे । छारहा अज्ञाना ॥ श्रीफ० ॥ ५ ॥ अज्ञान प्रभु मुज मेटो ॥ २ ॥ क्या कहुं सुजानारे ॥ श्रीकलपवृक्षकी आगे । मन वांछित माना ॥ श्रीफ० ॥ ६ ॥ मेडता मंडन गुरूराया ॥ २ ॥ लक्ष्मी सुहानारे ॥ तस हंस चाहत प्रभु तेरा । गुण सदा गाना ॥ श्रीफ० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ श्री नाक डा पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ राग कल्याण, एक ताल ॥

॥ नाचत सुर वृंद छंद मंगल गुणगारी ॥ ए चाल ॥

॥ नाचत धरणेंद्र संग पद्मावती प्यारी

॥ देवी० ॥ अंचली ॥ कमठासुर उपसर्ग दूर । करी परे मेघमाली क्रुर । धरी पगे घुंघरू नूपुर । गावत ध्वनिधारि ॥ नाच० ॥ १ ॥ श्री रागने वसंत राग । गांधारादिक गावे फाग । षड्ज दीपक करी विभाग । नैषध मनोहारी ॥ नाच० ॥ २ ॥ वीणा सारंगी सतार सार । वाजत हे दुकडा करताल । गावतहे गुणगण अपार । ता-थेइ थेइकारी ॥ नाच० ॥ ३ ॥ श्रीनाको-डाजी पार्श्वनाथ । आगे बहु साज साथ। गावतहे करी छंद गाथ। भक्ति धरी सारी ॥ नाच० ॥ ४ ॥ इम जाणी नरनारी संग । जेसलमेरथी धारी रंग । यात्रा कीनी अति उमंग । हंसे पदचारी ॥ नाच० ॥ ५ ॥

## ओसीया मंडन श्री वीर जिन स्तवन ॥

॥ होरी ॥

॥ कुगुरूने केसे धुम मचाई । निंद्या करत शरम नहि आइ ॥ यह चाल ॥

॥ ओसीयामें देवल जुवो भाइ । वीर

प्रभुका अति सुखदा ॥ ए अंचल ॥
कारणी की धोरणा त देखो । न
बहु रचना बनाइ ॥ ओ० ॥ १ ॥ शिखरकी
शोभा अपूर्वहि भाली । गमंडप रंग दिये
हर्षाई ॥ ओ० ॥ २ ॥ वीर प्रभु पछे सीतेर
( ७० ) वर्षे । ओशवाल वंस दिया इहां
ठाई ॥ ओ० ॥ ३ ॥ एहवा सूरीश्वर रत्न-
प्रभ हुवा । तेहने प्रभुकी प्रतिष्ठा कराइ ॥
ओ० ॥ ४ ॥ जीर्ण उद्धार प्राचीन मंदि-
रका । श्रीसंघने इहां दीया बनवा ॥
ओ० ॥ ५ ॥ ओगणीसें एकावन वर्षे ।
धजा फागण सुदि त्रीज चढाइ ॥ ओ०
॥ ६ ॥ सागरवर गंभीर प्रभुका । हंस हर्षे
गुण मुक्ता पाइ ॥ ओ० ॥ ७ ॥

॥ नागोर मंडन श्रीऋषभदेव ामो
स्तवन ॥

॥ चलोजी महाराज आये ॥ ए देशी ॥

मूर्त्ति श्री ऋषभ प्यारी । में तो ना-

गोर बीच झुहारी ॥ मू० ॥ ए अंचली ॥ कांचन वर्ण बिराजे हे जस । मा मा अ-परंपारी ॥ तिन काल गुण गावत जीसके । भाव धरी नरनारी ॥ मू० ॥ १ ॥ रोग शोक सब दूर करे जस । स्नानोदक सुखकारी ॥ दारिद्र न रहे पासे तिसके । जो सेवे दिलधारी ॥ मू० ॥ २ ॥ शिव पुरमें पहोचावे जलदी । ज्युं इहांपर रेल गाडी ॥ जो नवी निरखे इनकुं तिसके । शिर पडे कर्म छारी ॥ मू० ॥ ३ ॥ नव पदमाहे प्रथम पदमय । वर्णवुं क्या छब न्यारी ॥ जंबुद्विपमें मेरुकेसम । शोभतहे उपकारी ॥ मू० ॥ ४ ॥ राय श्रीपाल राणी मयणाको । आगबोट परे तारी ॥ संसार समुद्र तणे काठेपर । लिये प्रभु जीने ठारी ॥ मू० ॥५॥ ए वृत्तांत सुणके इहांपर । में लागा प्रभु लहारी ॥ हंससम ऊज्वल होनेकु । अरज करूं वारंवारी ॥ मू० ॥ ६ ॥

---

## ॥ वीकानेर मंडन श्री आदिनाथ स्वामी स्तवन ॥

॥ राग सोरठ ॥

॥ आदि जिन पाये रुडी सिद्धिगाते ॥ अक्षय सुख अनंतु विलसे । जाणे कोण यति ॥ आदि० ॥ ए अंचली ॥ घृतस्वाद ज्युं अलख गति हे । पद्वी परम छती ॥ अनंत ज्ञान दर्शनमय प्रभूको । क्युं कर जाणे मति ॥ आ० ॥ १ ॥ अचल अकल अमल प्रभूजीकी शोभा करे सुरपति ॥ तुंहि[1] अवेदी अछेदी अवेदो । गुण कहुं तेरा कति ॥ आ० ॥ २ ॥ निराकार निरालंब निरागी । तुम दशा शोभति ॥ वर्ण गंध रस स्पर्श रहित हे । हास्य न रति अरति ॥ आ० ॥ ३ ॥ भव्य जीव मन वांछित पुरो । जैसे कल्पलति ॥ मेंभि चाहत हुं साहेबजी । तुमसमो सोबते ॥

---

१ सुरपतिकृतस्तुति.

आ० ॥ ४ ॥ विक्रमपुरनाहटाकी गवाडे जिन भूवने राजति । प्रभु मूर्त्ति देखत तनमनसें । हंस करत हे नति ॥ आ० ॥ ५ ॥

## ॥ विक्रमपुर मंडन श्री अजितनाथ स्तवन ॥

॥ हे नाथ हमारा। वितराग तोरे गुण गावुंरे ॥ ए अंचली ॥ अजितनाथ प्रभु मुज मन वसीया । मनवांछित दातार ॥ तुम गुणका कछु पार नहि हे । किम पामुं प्रभु पार । में आश धरावुं ॥ वित० ॥ १ ॥ श्रेय रूप बलवंत तुंहि हे । भव-दुःख भंजनहार ॥ आल जाल सब दुर करे तुंहि । आनंद दिये हितकार । में शिर नमावुं ॥ वि० ॥ २ ॥ तम स्तोम फेटन रवि सम तुंहि। कर्म काष्ट अंगार ॥ शिव अंगनाका पति तुंहि हे । पाप पडल हरनार, में ध्यान लगावुं ॥ वि० ॥ ३ ॥ शशांक सम उज्वल तुम कीर्त्ति । नयगम

भंग उदार । चार निखेपा तुमने भाष्या, मानत नाहि गुमार । में सत्य सुणावुं ॥ वि० ॥ ४ ॥ विक्रम पुरमां चैत्य तुमारा । काच केरी गवाड ॥ जगत्गुरू श्री हीरविजयकी । मूर्त्ति कुमति नसाड । में आनंद पावुं ॥ वि० ॥ ५ ॥ सुन्य बाण निधि केवल वर्षे १९५० । जेष्ट शुक्ल सोमवार । सप्तमीके दिन प्रभु गुण गाया । हंसविजय धरी प्यार । में तुम गुण चहावुं ॥ वित० ॥ ६ ॥

## ॥ नालगाम मंडन श्री पद्मप्रभ स्वामि तथा नेमिनाथ स्वामी स्तवन ॥

॥ फलोधि वालोरे ॥ ए चाल ॥

॥ देव झुहारो सब जग सारो । नाल तुमे चालोरे ॥ जिनवर देव झुहारो ॥ ए अंचली ॥ देवल दिशे दीपतां, कांइ दोय संभालोरे ॥ जि० ॥ १ ॥ शिखर शोभे सुहामणां, कां ध्वज शणगारोरे ॥

जि० ॥ २ ॥ प्रथम देवलमां नाथका । कांइ चरण पखालोरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ पद्म-प्रभु पूजि तुमें। कांइ निज मल टालोरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मंदिर दुजे [illegible] । कांइ नाथसुकालोरे ॥ जि० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी चूडामणि । कांइ दिशत बालोरे ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेमिनाथ निर्खि करी, कांइ ब्रह्म व्रत पालोरे जि० ॥ ७ ॥ स्वच्छ जगामें शोभति, कांइ मंदिर मालोरे ॥ जि० ॥ ८ ॥ राजहंस परे आतमा । कांइ तुमे उजवालोरे ॥ ९ ॥

## ॥ उदासर मंडन श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ सेव सुपार्श्व देव प्राणी २ जाणी ॥ ए अंचली ॥ समकीतकी क[illegible] हे सेवा ॥ २ ॥ गुण[illegible] करनाररे ॥ सेव० ॥१॥ वीर पिताने सेवा किनी ॥ २ ॥ दशाश्रुत निरधाररे ॥ सेव० ॥ २ ॥ जो सेवाका -

कर्कुं रोके ॥ २ ॥ सो रूलते संसाररे ॥ सेव० ॥ ३ ॥ देख देव सेवाका कर्कुं ॥२॥ वीर रोके न [illegible]गाररे ॥ सेव० ॥ ४ ॥ रायपसेणी सूत्रमां देखो ॥ २ ॥ नाटकके अधिकाररे ॥ सेव० ॥ ५ ॥ समकितधारी चोसठ ईंद्रे ॥ २ ॥ स्नात्रकिया धरी प्यारे ॥ सेव० ॥ ६ ॥ अनंता निर्थंकर वचने ॥ २ ॥ नहि निषेध विचाररे ॥ सेव० ॥ ७ ॥ तेणे कारण [illegible] छोडी ॥ २ ॥ [illegible]जतहे नरनाररे ॥ सेव० ॥ ८ ॥ गाम उ[illegible]सरके शिर सुंदर ॥ २ ॥ मुगट सम मनोहाररे ॥ सेव० ॥ ९ ॥ श्री सुपार्श्वजिनेश्वरकेरा ॥ २ ॥ देवल दीपे अपाररे ॥ सेव० ॥ १० ॥ मान सरोवरके कांठेपर ॥ २ ॥ ज्युं शोभतहे मरालरे ॥ सेव० ॥ ११ ॥

## ॥ गाम भिन्नासर मंड- श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ सहस फणा मोरा साहेबा तोरी ॥ श मल। सुरत परवारी जावुं रे ॥ ए चाल ॥

॥ चिंतामणी प्रभु पार्श्वनाथ । तुम मूर्त्ति मेरे मन ठावुं रे ॥ तु० चिं० ॥ ए अंचली ॥ पि षमाये के पारसमयि । कर्पूरंमयि दिल लावुं रे ॥ चिंता० ॥ १ ॥ आनं माये वा म यमाये । तत्व ज्ञानमयि ध्यावुंरे ॥ चिंता० ॥ २ ॥ विविध भाव उत्पादक मूर्त्ति । देख देख उल्लसावुं रे ॥ चिंता० ॥ ३ ॥ अद्भुत एह अ पम देखी । दिल पधरा रे ॥ चिंता० ॥ ४ ॥ भिन्नासरके जिन भुवनमां। जाय प्रभु गुण गावुंरे ॥ चिंता० ॥ ५ ॥ भाव स्नान करके इण विधसें । उज्व हंस बनावुंरे ॥ चिंता० ॥ ६ ॥

## ॥ श्री जेसलमेर चैत्य स्तवन ॥

॥ देखादे डगरीयां ॥ ए चाल ॥

॥ मारू देखादे डगरीयां ॥ २ ॥ मेंतो जावुं श्री जेसलमेर ॥ मारू० ॥ ए अंचली ॥ रस्तेमें बहु कांटा भाठा ॥ २ ॥ अटवी दिशे चिहुं फेर ॥ मारू० ॥ १ ॥ भुरठ कांकरा रेतका ढेरा ॥ २ ॥ पगधरूं खंखेर ॥ मारू० ॥ २ ॥ उत्तम वृक्षकी छाया न दिसे ॥ २ ॥ छोटी खडी हे बेर ॥ मारू० ॥ ३ ॥ भुले भटकते तुं नजरे आयो ॥ २ ॥ अब मति कीजे देर ॥ मारू० ॥ ४ ॥ जेसलमेरमां जाइने पूजुं ॥ २ ॥ जिन चैत्यो भली पेर ॥ मारू० ॥ ५ ॥ जगत् गुरू श्री हीर विजयकी ॥ २ ॥ मूर्ति देखुं बेरबेर ॥ मारू० ॥ ६ ॥ भंडारमां जइ वंदसुं भावे ॥ २ ॥ जैन पुस्तकके ढेर ॥ मारू० ॥ ७ ॥ लोद्रवे पार्श्वप्रभुजी सेवुं ॥ २ ॥ काठीया करी दुर

तेर ॥ मारू० ॥ ८ ॥ हंस कहे में इतना चाहुं ॥ २ ॥ जिन गुण गावुं सवेर ॥ मारू० ॥ ९ ॥

## ॥ लोद्रवपुर मंडन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ राग झिंद काफी ॥

॥ मुनिजन अर्चन शुद्ध मन कररे ॥ ए चाल ॥

चिंतामणि पास पूजन कररे । कररे कररे कररे कररे ॥ चिंता० ॥ ए अंचली॥ लोद्रवपुर भाल तिलक समान । चैत्य ज्युं मेरुशेखररे । अनुत्तर पंच विमान आकारे । देखत दिल जाय ठररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ १ ॥ मूल मंदिरमें श्री पार्श्वचिंतामणि । चिंता सकलका हररे । सहस फणा शोभे शिर जिनके । दिन दिन रूप त्रिधररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ २ ॥ श्यामली सूरत शोभत निकी । कस्तुरीका मानुं धररे । श्वेत सर्प सेवक हे साचो । नहि

…रने तस डररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ३ ॥ आंध…यक जेम सघले फ… ता। विघ्न सकलको विखररे। प्रभु सेवक मनवांछित पूरक। मानुं दिये शुभ वररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ४ ॥ अंगी सुणी पचास हजारकी। संघे करी अंग भररे । हीरादिक झवेरात भरेली । यश होय तस धर धररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ५ ॥ राजा गजसिंहजीये चढाव्यों। हीरो जुवो तुमे नररे। रूपातणा तेणे कीधां कमाडो। चोर हरि गया तररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ६ ॥ अंध…मान थई ते आव्या। जेसलमेर नगररे। जिन…ासन जयकार थयो बहु। चमत्का… बरोबररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ७ ॥ तिन गढ संयुत अष्टापदकी। रचनाके उपररे। पंचस…स्त्र द्रव्य खर्चें निपन्यो । कल्प…क्ष दियो धररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ८ ॥ विक्र…-…रका संघकी साथे। पेदल रस्ते चलरे।

दर्शन करी प्रसन्न मन कीनो । पाप भं गयो जररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ ९ ॥ संवत् सुन्य बाण निधि शशधर ( १९५० ) । मास रूडो मागशररे । उज्वल अष्टमी दिन दर्शनसें । हंस तुं भवजल तररे ॥ ४ ॥ चिंता० ॥ १० ॥

## ॥ जेसलमेर मंडन श्री विमलनाथ जिन स्तवन ॥

॥ माता मरूदेवानो नंद देखी तारी मूर्ति ह्मारूं मन लोभाणुंजी ॥ ए देशी ॥

श्री विमलनाथ भगवान् देखी । हर्षी वंदे तुमको नर नारीका वृंद ॥ ए अंचली ॥ त्रिदशपतिसें अधिक रूप हे । शोभा अपरंपार । सोमपणा शशधरथी सुंदर । वर्णवुं वारंवार ॥ श्री वि० ॥ १ ॥ तिमिर रहित तरणिसे जादा । तेज तपे सुखदाय । स्वस्तिक चक्र धजादिक लक्षण । सूचवे त्रिभुवनराय ॥ श्री वि०

॥ २ ॥ दोष लेशसें दुष्ट नहिहे । ब लपण तुम टेव । तेणे कारण ईंद्रादिक देवो । बाल थइ करे सेव ॥ श्री वि० ॥ ३ ॥ घर बेठे पण कर्म निर्ज । । करता अ निश नाथ । तोपण दिक्षा जगजन शिक्षा । कारण ले मुनिसाथ ॥ श्री वि० ॥ ४ ॥ आचा गच्छके उपासरे में । मास रहि शुभ चार । विमलनाथजीके गुण गाये । हंसविजय धरी प्यार ॥ श्री वि० ॥ ५ ॥

## ॥ देवीकोट ंडन श्री ऋषभ देव स्तवन ॥

॥ राग रामकली ॥

॥ आंगणे कल्प फल्योरी हमारे मायी ॥ ए चाल ॥

आज आनंद भयोरी, हमारे दिल आज आनंद भयोरी ॥ ए अंचली ॥ देवीकोटमें देवल देखी । जयजयका थयोरी ॥ हमारे० ॥ १ ॥ रविसम ऋषभप्रभुकी प्रतिमा । देखत तिमिर गयोरी ॥

हमारे० ॥ २ ॥ त्रिदशपति अति हर्षीत थावे । निर्खीत रूप चयोरी ॥ हमारे० ॥ ३ ॥ अनेकांत प्रभु वाणी प्रकाशी । गर्भीत सप्त नयोरी ॥ हमारे० ॥ ४ ॥ लक्ष्मी विजय महाराज पसाये । होवे जगत् जयोरी ॥ हमारे० ॥ ५ ॥

## ॥ वरमसर मंडन श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ महावीर प्रभु घर आये । चंदनबाला हर्षाणी ॥ ए चाल ॥

हम वरमसर चल आये । वामासुत दर्शन पाये ॥ ए अंचली ॥ प्रभु नील पद्म तनु छाया। एतो पूर्व पुण्यसें पाया ॥ हम० ॥ १ ॥ कदलीसम कोमल काया । लक्षणसें अंग भराया ॥ हम० ॥ २ ॥ प्रभु अधर ओठ सुहाया। बिंबफल लाल दिखाया ॥ हम० ॥ ३ ॥ मुख कांतसें शशी हठाया । इंद्राणी मिली गुण गाया ॥

हम० ॥ ४ ॥ देवल श्रावकन बनाया । लक्ष्मीका फल निपजाया ॥ हम० ॥ ५ ॥

## ॥ अमरसागर मंडन श्री आदिनाथ स्तवन ॥

॥ आइ इंद्रनार करकर श्रृंगार ॥ यह चाल ॥

॥ अमरसागर जाइ भविक संग । तिन देवलमें प्रभु ऋषभ चंग । आनंद अंगधरी पूजन कीनो ॥ अ० ॥ ए अंचली ॥ तिन भुवनमांहे तिन वस्तु सार । ज्ञान दर्शन चरण तुं चितमें धार । इम सुचवतां मंदिर उदार । जग के श्रृंगार मानु मुगट नगीना ॥ अमर० ॥ १ ॥ आसपास बगीचा बिच आनंद । करे आवी इहां नरनारी वृंद । गुण गाय प्रभुका सुखका कंद । जीम शरदचंद थकी आनंद लीनो ॥ अमर० ॥ २ ॥ सरोवरकी पाल देवलनी भाल । धरी प्यार मानुं बेठे हंसबाल । वावडीथी सार भरी कल-

स गाल । पूजक जनोए आनंद प्यालो पीनो ॥ अमर० ॥ ३ ॥

## ॥ पालो॰ंडन श्री नवलखा पार्श्वनाथ ॥ तवन ॥

॥ राग माढ ॥

॥ नवलखा पार्श्वप्रभुजी आज मोय तारो तो सही ॥ तारो तो सही मेरा स्वामी तारो तो सही ॥ नव० ॥ ए अंचली ॥ पाली नगरमें देवल सोहे थारो तो सही । तस आसपास देहरीकी सुंदर लारो तो सही ॥ लारो० ॥ नव० ॥ १ ॥ पुरुषादानीय पार्श्वनाथ तुं प्यारो तो सही ॥ मुज आवागमन कृपाल प्रभुजी निवारो तो सही ॥ निवा० ॥ नव० ॥ २ ॥ हुं अनाथ शरणे तुज आयो निहालो तो सही ॥ प्रभु तात मात अरू भ्रात परे दुख टारो तो सही ॥ टारो० ॥ नव० ॥ ३ ॥ मेघमालीने मुसल सम जल धारो तो

सही ॥ प्रभु वर्षावी तुज ध्यान निवा ण हारो तो सही ॥ हारो० ॥ नव० ॥ ४ ॥ तो पण ध्यान सहित जल भितर सारो तो सही । तुं राजहंस परे शोभ रह्यो । हितकारो तो सही ॥ कारो० ॥ नव०॥५॥

## ॥ श्री वरकाणा पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ सद्गुरूने मोय भांग पिलाई ॥ ए चाल ॥

॥ वरकाणा प्रभु पार्श्वजिनेश्वर । क्या तारीफ तुमारी ॥ ए अंचली ॥ सुरगण चूडामणि रूचिरंगीत । चरण कमल छबि सारी ॥ वर० ॥ १ ॥ दुरित करी केशरी सम स्वामी । जन्म जन्म सुखकारी ॥ वर० ॥ २ ॥ तुम दर्शनसं पाप गलत हे । अंजलीसें जिम वारि ॥ वर० ॥ ३ ॥ बावन जिन घर संयुत सुंदर । देवलहे मनोहारी ॥ वर० ॥ ४ ॥ तुम सेवक कर कमले लक्ष्मी । वसनेकी करे त्यारी ॥ वर० ॥ ५ ॥

## ॥ राणकपुर मंडन श्री आदीश्वर भगवान् स्तवन ॥

॥ गिरनारिकी पहाडीपर केसे गुजरी ॥ ए चाल ॥

राणकपुरका देवल जन मनहारी ॥ मन० ॥ राण० ए आंकणी ॥ सहस अधिक थंभेकी सुंदर । क्या वर्णवुं शोभा प्यारी ॥ राण० ॥ १ ॥ अनादि मोक्ष महेल प्राचीनका । टेका दीया मानुं शणगारी ॥ राण० ॥ २ ॥ रंग मंडपकी कोरणी निकी । तोरणकी कारीगरी सारी ॥ राण० ॥ ३ ॥ भव समुद्रमां झाज तरीके । देवल दे झटपट तारी ॥ राण० ॥ ४ ॥ बिचमें नाविकसम नाथ बिराजे । पहोचावे भव जल पारी ॥ राण० ॥ ५ ॥ लक्ष्मीविजय महाराज पसाये, देवल देखा सुखकारी ॥ राण० ॥ ६ ॥

## ॥ कोरटामंडन श्रीप्रथम चरम जिन स्तवन ॥

॥ राग पीलु ॥

मेरे जिनंदकी धूपसे पूजा, कुमति कुगंधी दुर हरीरे ॥ यह चाल ॥

॥ कोरटामें दर्शन करो भाइ । प्रथम चरम जिनका सुखदाइ ॥ ए अंचली ॥ अद्भुत प्रतिमा प्रथम जिन केरी । काउसगीया दोय साथ भलेरी । प्रगट होत नही लागी देरी । लाये जमीनसे काढ खोदके खाडके । श्रावक गुण गाइरे ॥ कोर० ॥ १ ॥ देशदेशांतरमें नहि देखी । ऐसी मूर्त्ति इहांपर पेखी । अन्य कुदेव दिये उवेखी । एहि देवाधिदेव करो तस सेव । हृदयमें पधराइरे ॥ कोर० ॥ २ ॥ दुसरा देवल एहि नगरमें । शिखरबंध देखा शुभ कर्मे । वीरप्रभु बेठे पदमासन । हुइ प्रतिष्टा सार सकल सुखकार । जगति

आनंद ाइरे ॥ कोर० ॥ ३ ॥ वीरसें सितेर ( ७० ) वर्ष मार । रत्नप्रभ सूरि दोय रूपधारे । कीनी प्रतिष्टा धरी बहु प्यारे । जिन ासन शणगार । गुरू हितकार । संत दिया फरमाइरे ॥ कोर० ॥ ४ ॥ में भी यात्रा इहांकी कीनी । ऋद्धि एह अपूर्वहि लीनी । मानुं सुधा में घट घट पिनी । लक्ष्मीविजय म ाराय । सुगुरूके पसाय । बात यह बन आइरे ॥ कोर० ॥ ५ ॥

## ॥ श्रीआबुगिरि स्तवन ॥

॥ डोसी तारो दीकरो द्वारिकां जाय छे ॥ ए देशी ॥

॥ आबुगिरि राजनां देवल वखणाय छे, मने देखी लवुं देखी लवुं थाय छे । आबु० ए आंकणी ॥ संसारी उपाधि मने गमती रे नथी । देवलमां दिल तणाय छे ॥ आबु० ॥ १ ॥ देराणी जेठाणीना गोखलादिकनी । कोरणी अजब गणाय

---

१ यद्यपि देराणी जेठाणीना गोखलानो प्रघोष प्रचलित छे तथापि

छे ॥ आबु० ॥ २ ॥ आदिनाथ नेमिनाथ तणां बे । दुनियामां देहरां पंकाय छे ॥ आबु० ॥ ३ ॥ एहवां मंदिरनां दर्शन करतां । पाप पाताले जाय छे ॥ आबु० ॥ ४ ॥ त्रिजीरे वार इहां यात्रा करीने । हंस आनंद अति पाय छे ॥ आबु० ॥५॥

## ॥ श्रीभिल्लडीया पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो ॥
॥ ए देशी ॥

॥ सुण प्राणी रे, भिल्लडीया प्रभु पार्श्व जिनेश्वर भेटले । जेम जन्मजरा मरण तणी विपदा छे सगली ते टले ॥ ए आंकणी ॥ जस सेवा हेवा बहु धरता । नर-

---

आ बंने गोखला उपर नीचे मुजब सुहडदेवीना नामनो लेख कोतरेलो छे.

संवत १२९७ वैशाख वद १४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीयचंउ प्रचंड प्रसादमहं श्रीसोभान्वयेमहं । श्रीआसराज सतमहं । श्रीतेजःपालेन श्रीमत्पत्तन वास्तव्यमोढ ज्ञातीयकाजाल्हण सुतक । आसासुतायाः ठकुराज्ञी संतोषाकुक्षिसंभूतायामहं । श्रीतेजपाल द्वितीयभार्यामहं । श्री सुहडादेव्याः ( श्रेयोर्थं ॥

नारी इहां आनंद करता । प्रभु दर्शनथी दिलमां ठरता ॥ सु० ॥ १ ॥ प्रभु मंगलना घर छे प्यारा । नेम राजुल चित्र अतिसारा । देखी उत्तम संयमधारा ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभु परमानंदतणा कंदा । जेने छोड दिया जगका फंदा । लिया केवल ज्ञान महा नंदा ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रभु बोध करी संयम आपे । ते कर्म कठनने पण कापे । सुखसंपदा होय जेहना जापे ॥ सु० ॥ ४ ॥ त्रण शिखर सहित देहरूं दीपे । शोभाथी मेरू शिखर जीपे । तस तेजथी चंद्रादिक छीपे ॥ सु० ॥ ५ ॥ तेह मंदिरमें प्रतिमा सारी । मनवांछित पुरण करनारी । ज्ञान लक्ष्मी दिये अपरंपारी ॥ सु० ॥ ६ ॥

## ॥ पालनपुर मंडन श्रीपार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ हवे शक्र सुघोषा बजावे ॥ ए देशी ॥

पल्हाद्न नाम विहार । शोभे देव

विमान आकार तस मध्ये प्रल्हादने कर-
ता, तेथी नाम अन्वर्थने धरता श्री० ॥ १ ॥
श्री प्रल्हादन प्रभु पास । पालणपुरमाहे
खास । तस मूर्त्ति प्रथम निपजावी । राणा
प्रल्हादने पधरावी ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रभु
स्नात्र जले तस रोग । गयोने थयो सुख
संयोग । प्रतिदिन चोखा इहां आता ।
मूढक प्रमाण सुहाता ॥ श्री० ॥ ३ ॥ प्रभु
चोखाइथी जीताणा । मानुं शरणे आव्या
एम जाण्या ॥ सोल मण सोपारी आति ।
दिन दिन एहवी छे ख्याति ॥ श्री० ॥ ४ ॥
सुखपाल चढी इहां आते ॥ चोरासी (८४)
सेठ भली भाते ॥ विमान चढी जेम देव ।
चैत्य वंदे आवी नित्य[illegible]व ॥ श्री० ॥ ५ ॥
जिनवाणी सुणे गुरू पासे । वं[illegible] चरण
कम[illegible] उल्लासे । ते चैत्य नवुं निपजावे ।
संघ लोक मली सुभ भावे ॥ श्री० ॥ ६ ॥
चार मास रहि प्रभु शर्णे । रजा लउं छुं

हवे विचरणे । संघ साथे इहांथी सधासुं ।
कहे हंस [illegible] जासुं ॥ श्री० ॥ ७ ॥

## ॥ पालनपुरमंडन श्री शांतिनाथ स्तवन ॥

॥ कृपा करोने गोडी पासजिनेश्वर तुम साहेब अंतरजामी ॥ ए देशी ॥

पालणपुरमां शांतिनाथ जिन, तारक हे भवीजन केरा ॥ ए अंचली ॥ मोह महा मक[illegible]कार [illegible]ज्जन, दूर करी टाले फेरा ॥ पाल० ॥ १ ॥ दिनानाथ दयाल विना कहो । कोण टाले संकट डेरा ॥ पाल० ॥ २ ॥ वीर मानी कोइ हे जग-दुजा । जिसने यह संकट खेरा ॥ पाल० ॥ ३ ॥ दुःखीत दुःख दूर करवामां । समर्थ छे साहेब मेरा ॥ पाल० ॥ ४ ॥ हंस कहे में इतना चाहुं । नित्य दर्शन प्रभुजी केरा ॥ पाल० ॥ ५ ॥

## ॥ अथ मैंत्राणा मंडन श्री आदि-नाथ लावणी ॥

॥ ऋषभ जीणंद विमलगिरि मंडण, मंडण धर्मधुरा कहियें ॥ ए चाल ॥

॥ आदिनाथ सेवा कारण भवि, केसर खुब घसना चाहियें ॥ मांहे बरास मिलावी पूज्यकी पूजामें वसना चाहियें ॥ आदि० ॥ १ ॥ शंकादिक दूषणसेंती जन। जलदीथी खसना चाहियें ॥ जिन फुलसें पूजी हृदयमें। खूब तरे हसना चाहियें ॥ आदि० ॥ २ ॥ रथयात्रादिक कार्य करणमें, कम्मरकुं कसना चाहियें ॥ भवभ्रमण मिटावे फंदमें, और नहि फसना चाहियें ॥ आदि० ॥ ३ ॥ गाम मैंत्राणा मांहि नाथका, दर्शनकुं धसना चाहियें ॥ हंसा सुण मेरा तेरे नहि, ओर जगे नसना चाहियें ॥ आदि० ॥ ४ ॥ इति ॥

# ॥ अथ श्रीपाटण मंडन श्री शाति-नाथ स्तवन ॥

॥ अपने पदकुं तजकर चेतन, परमें फसना ना चाहियें ॥ ए चाल ॥

॥ शांतिनाथ महाराजकुं प्राणी, हृदय कमल रखना चाहियें ॥ ए तरण तारण हे वचनरस, जिनजीका चखना चाहियें ॥ शांति० ॥ १ ॥ अन्यदेव कामी क्रोधीकुं, त्यागकें दुर नखना चाहियें ॥ कुण शांत वदन हे उसिको, आप जरूर लखना चाहियें ॥ शांति० ॥ २ ॥ पांचमा चक्री सोलमा स्वामी, देख हर्ष लेना चाहियें ॥ ए षट् खंड छंडी बने महा, योगी निरख लेना चाहियें ॥ शांति० ॥ ३ ॥ पाटण शहेर फोफलीया वाडे, नाथ ओलख लेना चाहियें ॥ ए परम प्रभु हे इसीको, पर-मात्मा कहेना चाहियें ॥ शांति० ॥ ४ ॥ शुभ भाव समतासें जिनका, रूप हृदय

लेना चाहियें ॥ हंसा तेरेकुं एसे जिनजीका गुण शिखना चाहियें ॥ शांति० ॥५॥

## ॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन लावणी ॥

॥ अपने पदकुं तजकर चेतन, परमें फसना ना चाहियें ॥ ए चाल ॥

॥ श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथ चेतन, दिलमे रहेना चाहियें ॥ ए अद्भुत ध्यानी सरण इस, जिनजीका लेना चाहियें ॥ श्री० ॥ १ ॥ कमठ धरणपति उपर जिनकुं, तुल्यदशा जोना चाहियें ॥ एक दुखदायी है दुजाकूं, सुखदायी होना चाहियें ॥ श्री० ॥ २ ॥ यादवजनकी जरा निवारी, सोबी कहदेना चाहियें ॥ ए चमत्कारी है खरेखर, खूब समझ लेना चाहियें ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चार वार चेतनचलआया, अबतो अरज करना चाहियें ॥ हंसाकूं साहेब तुमारा, चरणांबुज शरणा चाहियें ॥ श्री० ॥ ४ ॥

## । भोयणी मंडन श्रीमल्लिनाथ स्तवन ।

॥ मीलपयोबेद दुःख काटणहारा मी० ॥ ए देशी ॥

प्रभु तुसी बेद मल्लिनाथ उदारा ॥ प्रभु तुसी० ॥ ए अंचली ॥ तुज सरीखो धनवंती दुजो । कोइ न जगमें सारा ॥ कर्म रोग दे काटण खातर। जाण सकल उपचारा ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ जीस बुटीसें तुसी प्रभुजी । कर्मरोग करी न्यारा ॥ सिद्धि सौधमें जाकर बेठे । सुख अनंत तिहां धारा ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ तैसी बुटी दिज्यो असानु । रोग सकल क्षयकारा ॥ द्रव्य भाव दोय रोग विनासी । मीलु तुम संग विभु प्यारा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ भोयणी मंडन साहिब सच्चा । प्रत्यक्ष सुख करनारा ॥ थोंडा सेवक हंस कहते । मुज प्रभु कीज्यो उद्धारा ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति० ॥

## ॥ भोयणी मंडन श्रीमल्लिनाथ स्तवन ॥

॥ प्राणी मारूं मारूं तुं शुं करेरे ॥ ए चाल ॥

जीव सारूं नठारूं तुं सुं करेरे । धरी रागने रोष अपार कांइ प्राणीया । पूजी लेने मल्लिजिननाथरे । तारो सुधरशे संसार कांइ प्राणीया ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

भोयणि मंडन नाथनो । महिमा अपरंपार ॥ दुनियामां पसरी रह्यो । जले तेल बिंदु ज्युं लगाथी रे ॥ तारो सुधरसे संसार कांइ प्राणीया ॥ जी०

॥ साखी ॥

चार कषाय प्रतिमल्ल छे । मदन बाण चूरनार ॥ गजगामी वांछित दिये । कामकुंभ परे प्रभु प्यारथी रे ॥ तारो सुधरसे संसार कांइ प्राणीया ॥ जी०

॥ साखी ॥

सरसाप्रेयंग वर्ण छे । देण तणो देदार ॥ वैरूट्या नाटक करे । यक्ष कुबेरना थेई-कारथीरे ॥ तारो सुधरसे संसार कांइ प्राणीया ॥ जी०

॥ साखी ॥

हृदय कमलमां हंस ज्युं । प्रभुजी परम कृपाल ॥ राखीने सुखीयो थजे । जेम भवसमुद्रना पारथीरे ॥ तारो सुधरसे संसार कांइ प्राणीया ॥ जी०

## ॥ श्रीइटादरा मंडन संभवजिन स्तवन ॥

॥ सांभल जो तुमे संजमरागी ॥ ए चाल ॥

संभव जिनवर संपदा सारी आपो अविहड नारी रे । हाथ जोडीने अरज करु छुं ललिललि वार हजारीरे ॥ संभव० ॥ १ ॥ लोकिक संपदा हुं नवि मागु ते तो विघटण शरीर । माटे लोकोत्तर

संपदा मने लागे छे बहु प्यारीरे ॥ संभव० ॥ २ ॥ पुद्गल लिला ललित संपदा पाम्यो वारंवारीरे ॥ पण आत्मिक संपदा कोइ वारे पाम्यो नही हितकारीरे ॥ संभव० ॥ ३ ॥ जल कल्लोलने विजली जेवी संपदा अन्य छे न्यारीरे ॥ ज्ञानदर्शनने चारित्र रूपी संपदानि बलिहारीरे ॥ संभव० ॥ ४ ॥ ते संपदा अभिलाषि हंस कहे विनतिने स्वीकारीरे ॥ इटाद्रा मंडन संभव जिन सफल आशाकरा मारीरे ॥ संभव० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ पानसर मंडन श्रीमहावीर स्वामि स्तवन ॥

॥ चेत तो चेतावुं तनेरे पामर प्राणी ॥ ए देशी ॥

पानसरमां पूजो भावे रे श्रीवीरजिनने पानसर ॥ ए अंचली ॥ पूजतां पाप पलाय उपसर्गो क्षय थाय ॥ विघ्नतो विलय जाय रे श्रीवीरजिनने ॥ पान० ॥ १ ॥

पूजाथी पूज्य थवाय गुण ग ं रवाण गाय ॥ सि ि मां सिद्धा सधायरे श्रीवी जिनने ॥ पान० ॥ २ ॥ जगगुरु  ू जवाथी संप ा सदैव साथी ॥ आंगणामां झुले हाथीरे श्री वीर जिनने ॥ पान० ॥ ३ ॥ जे जिनेंद्र  ू जाकरे केवल कमलाव ॥ ते तो हंस परेतरेरे श्रीवीर जिनने ॥ पान० ॥ ४ ॥ विजयानंद सूरीश्वर लक्ष्मीविजय मुनीश्वर ॥ हंस नमे जगदीश्वररे श्रीवीर जिनने ॥ पान० ॥ ५ ॥

## ॥ श्रीप्रांतेज मंडन धर्म्मनाथ जिन स्तवन ॥

॥ ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने ॥ ए देशी ॥

धर्म जिनेश्वर ध तणा दातार छे प्रांतेजमां प्रति प्राणी प्राण आधार जो ॥ मूल नायक पणे मुख्य द्वल ं मना ं हाथ जो ने वंदु वार हजार जो ॥ धर्म्म० ॥ १ ॥ बीजे गभारे आदीश्वर अवलोकी-

ये आ अवसरपिंणीये आ भरतनी मांही जो । धर्मतणी आदिना ए करनार छे पूजोए प्रेम धरीने पूर्ण उछाही जो ॥ धर्म्म० ॥ २ ॥ त्रिजा शिखरतले सुमति नाथ सुहामण। सुमातितणा ए तो छे अर्पण हार जो ॥ शांत मुद्रा शोभे छे सुंदर ।शिसमी चित्त चकोर चाहे दर्शन वारंवार जो ॥ धर्म्म० ॥ ३ ॥ त्रण प्रभु त्रण तत्व आपे छे लोकने जेहथी शोक सकल थाय सिघ्रज फोक जो । त्रण सल्यना ते तो टालण हार छे एवा तो विरला जगमांही कोक जो ॥ धर्म्म० ॥ ४ ॥ संवत उगणीसें त्रीतरनो शालमां मागसर सुदि पुनम दिनने शनिवार जो । हंसादिक छो मुनिवर दर्शन आवीया वर्त्यो प्रभु पूजादिकथी जयकार जो ॥ धर्म्म० ॥ ५ ॥ इति ॥



## ॥ इडर जिन भुवन स्तवन ॥

॥ इडर आंबा आंबलीरे मीठी साकर द्राख ॥ ए देशी ॥

इडर चैत्य व्हारोयेरे श्रीजिनव नां सार पार्श्वनाथना त्रण छेरे । देवल इहां श्रीकार सुगुण नर वंदो वारंवार ॥ १ ॥ एक ऋषभ देव स्वामीनुरे भव दुख भंजन हार । श्वेतांब हुंमड तणुरे देवल एक विशाल सुगुण नर वंदो वारंवार ॥ २ ॥ तेमां शीतलनाथनीरे मुर्त्तिजन मनोहार । कंचनसम अति शोभतीरे पापक्षलय करनार सुगुणनर वंदो वारंवा ॥ ३ ॥ इडरीया गढमां भलुंरे देवल दिये अपार । डुंगर उपर सोलमारे शांतिनाथनु उदार सुगुणनर वंदो वारंवार ॥ ४ ॥ बावन जिनालयनु बहुरे चैत्य चमत्का कार हंसपरे दर्शन थकीरे उतरीये भवपार सुगुणनर वंदो वारंवार ॥ ५ ॥ इति ॥

———→○←———

## ॥ श्रीपोसीना पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ अरजी तो कर रहा हुं चाहे ·ानोयानमाना
॥ यहराह ॥

विनति तो कर रहा हुं चाहे धारो यान धारो विन० ॥ ए ऊंचली ॥ पोसी- ना पार्श्वनाथमां वंदु में गिरनामां । शरणे तो अ खडा हुं चाहे धारो ॥ विनति० ॥ १ ॥ नागेंद्र ध्वजधारी नागनाथ तिकारी । संसारसं डराहुं चाहे धारो ॥ विनति० ॥ २ ॥ भव अटवी दुखदाइ वहां लोभ रुपखाइ । उस बिच जा पडाहुं चाहे धा- रो ॥ विनति० ॥ ३ ॥ अभीमान पहाड मोटा दुःखका नही हे तोटा । वहां पर जा चढाहुं चाहे धारो ॥ विनति० ॥ ४ ॥ ·ायानदी नठारी वे यासमो ठगारी । विश्वा ·ावस पडाहुं चाहे धारो ॥ विनति० ॥ ५ ॥ ·ायभीलभारी ·लाउल अपारी । ·ोकटाकसें खडा हुं चाहे धारो ॥ विनति०

॥ ६ ॥ कहे हंस कर जोडी भव वास पास तोडी । मुक्तिके काज अडा हुं चाहे धारो॥ विनति० ॥ ३ ॥ इति ॥

## ॥ अमदावाद मंडन श्रीसंभवनाथ स्तवन ॥

॥ राग फाग ॥

॥ जितारि राय सुख पावेहे । जि० ॥ ए अंचली ॥ संभव जिनरुप पुत्रने निरखी । गोद बिच पधरावे. ॥ जिता० ॥ १ ॥ कबहीक शिरपर कबहीक हृदयमं॥ माणेक्य भीतर लावे हे ॥ जिता० ॥ २॥ ज्ञानवान पण बाल चालपणु । लोकने प्रभुजी दिखावे हे ॥ जिता० ॥ ३ ॥ रत्नजडित घरमें प्रतिबिंबित । चंदको गाडी चलावे हे ॥ जिता० ॥ ४ ॥ साट मार सम देवो पाछल । हाथी परे प्रभु धावे हे ॥ जिता० ॥५॥ मित्र रुप देवाने गेरी।

रक्ष रक्ष उचरावे हे ॥ जिता० ॥ ६ ॥ कृपावान् प्रभुजी निज हाथे । हेत करीन उठावे हे ॥ जिता० ॥ ७ ॥ हाथ जोड सुरबालक रूपे। प्रभुजी तणा गुण गावे हे ॥ जिता० ॥ ८ ॥ क्रिडा [illegible]डपर जाय प्रभुजी । [illegible]सबाल परे न्हावे हे ॥ जिता०॥९॥

## ॥ मातर मंडन श्री सुमति जिन स्तवन ॥

॥ साचारे म्हारा शांतिजिनेश्वर शांतिजिनेश्वर ॥ ए चाल ॥

॥ साचारे ह्मारा सुमतिजिनेश्वर, सुमति जिनेश्वर, तुमे प्रभु सुमतितणा छो दातार ॥ ए आंकणी ॥ मातरमां तुम मंदिर बिराजे मंदिर बिराजे ॥ शिखरबंध जगजन मनोहार ॥ साचारे० ॥ १ ॥ सज्जन चित्त समान सुहावे समान सुहावे ॥ उंचपणे तुम देवल श्रीकार ॥ साचारे० ॥ २ ॥ थंभ स्थित पुतलीया शोभे

तलीय। शोभे ॥ जेम सुर सुंदरी धरी
णगार ॥ साचारे० ॥ ३ ॥ धजा लहक-
ती लागे नीकी लागे नीकी जेम गंगा-
जल लहेर पसार ॥ साचारे० ॥ ४ ॥ चै-
तर सुदि एकमने दिवसे एकमने दिवसे॥
ओगणीसो बेतालीस साल ॥ साचारे०
॥ ५ ॥ संपत वेजय शरण तुम आवी
शरण तुम आवी ॥ साधुवेश लीये अति
उदार ॥ साचारे० ॥ ६ ॥ हंस कहे सुणो
स्वामी मातिजिन स्वामी माते जिन ॥
भवोभव द्यो मुज माते अपार ॥ सा-
चारे० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ खंभात डन श्री चिं ामणी पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ मेरी करो बुद्धि प्रकास । नाथ तेरे चरणोका चेरा ॥ ए चाल ॥

॥ मुज करो ज्ञान प्रकाश। चिंतामणि
चरणे तुज आया ॥ मु० ॥ ए अंचली ॥

प्रभु ·ानक ·····ार । तुमे तो छो त्रि-
भुवन राया (२) में घट परे तोरे पास ।
जल सम लेनेकुं धाया० (२) में० ॥ दि-
ज्यो ?टका भरी । जावुं हुं ठरी । बात
कहुं खरी । एहमें :सकल नहि चाह्या
(२) मुज० ॥ १ प्रभु दानेश्वर सरदार ।
इंद्र पण ·ागण तुज आवे (२) तेम हुं
पण आयो नाथ । कोण तुज आगे ना
आवे (२) तुम अखय ·जाना नाथ ।
जोडी बे हाथ । मागुं जेम गाथ । त्रिप-
दिने गणधर पददाया (२) मुज० ॥ २ ॥
तम तिमिर पडल वि··कार तुं त ाणे
सम राजे (२) वाणी गुण प·तरांश साथ ।
मेघ जेम ·ंबरमां गाजे (२) भवि मोर ।
सुणी ?मधार । करे छे सोर । खुसीथी
हंसे ·णगाया ( २ ) मुज० ॥ ३ ॥

## ॥ पा.रा.ंडन श्री ाांतिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ चालो चालो च.रनर आज जिनमुख जोवाने ॥ ए चाल ॥

॥ सेवो सेवो सुगुण नर आज । शांति करवा । प्रभु शांतिनाथ म.ाराज । दुख सहु दलवाने । नमी पायकमल दिन रात । कर्म उद्धरवाने ॥ धरो ध्यान सदा ि.लमांह्य ॥ ुमाति .रवान ॥ १ ॥ चाल बीजी—सार्थपति छे ाशिव.ुर तणा । मागां.ग एटलुं जई आजरे । हमने संसार अटविथी ाालीय ॥ २ ॥ उद्द्आयण उप.शनी सुणी । ाह्मरे जइनें महाराजरे। हमने संसार अटविथी ाढांयें॥ ३ ॥ चाल बीजी—॥ तेह अटवि बहु ु.खदाइ छे । तिहां वलि लोभरूप खाई छे । क्रोध दावानल भाइ छे । सावधान थज्यो सहु ॥ ४ ॥ एह अटवि उतारण.ारा ।

पादरा मंडन छे जिन प्यारा ॥ हंस वि-
जय सुख कार ॥ साव० ॥ सेवो०
॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ वडोदरा मंडन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ अनुभव प्रीतम केसे मनासी ॥ ए चाल ॥

॥ चिंतामणि पार्श्व अविकारी ॥ ए आंकणी ॥ सेहेर वडोदरा मंडनस्वामी । पीपला सेरी निवासी ॥ चिंतामणि० ॥ १ ॥ चिंतित फलदायक प्रभु मुकी। अन्य देव कुण ध्यासी ॥ चिंतामणि० ॥ २ ॥ हीरा जडित मुगट कुंडलना । तेजथी तरणि उजासि ॥ चिंतामणि० ॥ ३ ॥ क्षीर समुद्रनी लेहेर तजीने । कोण पीये जइ छासी ॥ चिंतामणि० ॥ ४ ॥ तेम प्रभु गुण गायन सुणी काने । अन्य गुण कोण गासी ॥ चिंतामणि० ॥ ५ ॥ एहवा जिन भज-

वाथी प्राणी । तुटे कर्मनी फांसी चिंतामणि० ॥ ६ ॥ प्रभु गुण गण गंगा जलमांहे । हंस तमारा ह्यसी ॥ चिंतामणि० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ गंधारमंडन श्री पार्श्वनाथ महावीरजिन स्तवन ॥

॥ भवी चालो सुभावथी वीरजिनंदने वंदिये ॥
॥ ए राह ॥

॥ भवी चालो गंधारमां जिनेंद्र चंद्रने वंदीये । वंदीये वंदीये हो ॥ भवी० ॥ ए आंचली ॥ अमोहरा प्रभु पार्श्वनाथने । राचीये चित्त कंडीये ॥ भवी० ॥ १ ॥ बीजा देवलमां वीर प्रभुना । दर्शनथी दुःख छंडिये ॥ भवी० ॥ २ ॥ अपूर्व चंद्रमुख देखी प्रभुनुं । अज्ञान तिमिर निकंदीये ॥ भवी० ॥ ३ ॥ कलंक मुक्त अमुक गुणता । राहु रहित न छंडिये ॥ भवी०

॥ ४ ॥ बुधजन वंदित जिन चंद्र वंदि । हंस कहे छे आनंदिये ॥ भवि० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ डभोई मंडन श्रीलोढण पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ घनघटा भुवन रंग छाया, नवखंडा पासजी पाया ॥ ए देशी ॥

॥ फणी फटाटोप करे छाया । लोढण पार्श्वप्रभु पाया ॥ ए अंचली ॥ दर्भावती आगे आया । वणजारा बिच सवाया । सागरदत्त नाम कहाया । पूजन प्रतिमा विसराया । तिसने भोजन नहि खाया ॥ लोढण० ॥ १ ॥ वेलुमय बिंब भराया, पूजन करी भोजन पाया ॥ फेर कुवा बिच पधराया पण अखंड रही जिन काया । प्रभु अजब रूप दिखलाया ॥ लोढण० ॥ २ ॥ वणजारा फेर उहां ठाया । तिसकों स्वप्ने समजाया । उसने सूतर मंगवाया । प्रभु काढी लोक हसाया ।

जिन शासन डंका बजाया ॥ लोढण० ॥ ३ ॥ सब संघ मिली गुण गाया । दिनरात हृदयमें ध्याया । कर्मनका मेल मीटाया । प्रभु गुण गंग जल न्हाया । निज हंस उज्वल बनाया ॥ लोढण० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ सीनोर मंडन श्री आदिनाथ सुमतिनाथ स्तवन ॥

॥ प्यारे आवो गुण गावो बजावो छननननन छुम छुम छुम ॥ ए चाल ॥

॥ आवो आवो गुण गावा बजावा तननन तुम तुम तुम ॥ ए आंकणी ॥ शीनोरना सुंदर मंदिरमां पाप करवा चकचुर प्रभु प्यारा, हितकारा, जगसारा । आदिनाथने सुमतिनाथ छे तिहां सर्व सज्जन आवो ॥ आवो० ॥ १ ॥ मत्तमतंगज तरल तुरंगम सुभट घणा बहादुर दुरवारी, परवारी, शणगारी, । राज्यकाज

तजी दीक्षा लीधी तस भावना भावो ॥ आवो० ॥ २ ॥ देशना अमृत जलधर समजिन वर्षावे भरपुर प्रभु वाणी, हित-जाणी । पीये प्राणी, तेहनी तृष्णा सघ-ली नासे ते दिलमां लावो ॥ आवो० ॥ ३ ॥ शांताकार जगत स्वामीनुं, अति उत्तम छे नुर, सुखकारी, दिलधारी । नरनारी, एवा प्रभुनी आकृति मनमन साथे लपटावो ॥ आवो० ॥ ४ ॥ जो होय सारू भाग्य तमारूं, तो सेवो थइ-सूर, प्रभु सेवा, सुख लेवा । करो हेवा, जेहथी सुंदर निर्मळ उज्वल हंस समा थावो ॥ आवो० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ सीनोर मंडन श्री वासुपूज्य स्वामी स्तवन ॥

॥ अशरण शरण करण सुख संपत विपत हरण जग वहाला वहाला प्रभुवहाला ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिभुवन पूज्य वासुपूज्य स्वामी

ीनारमां दुःखकारा, कारा, प्रभुकारा । दुख दुर्गति दूर वारण तारण भवसागर-थी प्यारा । प्यारा, प्रभु प्यारा ॥ त्रिभुवन० ॥ ए आंकणी ॥ रमणी रमणरंगने त्यागी लीधो संयम भारा, भारा । प्रभु भारा । चंपापुरी चंपक तरू नीचे, छसों मुनि संगसारा, सारा, प्रभु सारा ॥ त्रि-भुवन० ॥ १ ॥ चंचल चक्षु युगल योगी-श्वर थइने, स्थिर करी दीधु, दीधु, प्रभु दीधु । क्लेशकारी शत्रु उपर पण, क्रोध अरूण नही कीधु, कीधु, प्रभु कीधु ॥ त्रिभुवन० ॥ २ ॥ करुणारस सागर गुण आगर छो, पण स्नेह न धरता, धरता, प्रभु धरता । स्नेही जनपर स्नेह लेशथी, लंपट नेत्र न करता, करता, प्रभु करता॥ त्रिभुवन० ॥ ३ ॥ ध्यानारूढ थइ जग जोयुं, केवलालोकथी सारू, सारू, प्रभु सारू । पर परणती परिहरीने रम्या,

परमात्माप - चारू, चारू, प्रभु चारू ॥ त्रिभुवन० ॥ ४ ॥ तृष्णा मृग तृष्णा वश पडीयो, स्वामी सेवक ऱ्हारो, ऱ्हारो, प्रभु ऱ्हारो । हंस कहे क ्णारस सागर, तृष्णा दूर [illegible]ो, वारो, प्रभु वारो ॥ त्रिभुवन० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ भरूच मंडन श्रीमुनि[illegible]व्रत स्वामी स्तवन ॥

॥ उभो रहेने हो जीवडा तुंतो सांभल आगम वेण ॥ ए चाल ॥

॥ भजी लेने भविक तुं श्री[illegible]निसुव्रत भगवान् ॥ ए अंचली ॥ भरूच शे[illegible]रमां आव[illegible]। करवा पर उपगार । तुरंग तुरत प[illegible]ोचाडोयो । प्रभु [illegible]वलोक सह-स्रार ॥ भजी० ॥ १ ॥ तुजने पण ए तारसे । करुणारस भंडार । ज्ञान महोदय आपसे । वलि कापसे पाप अपार ॥

---

१ अष्टम देवलोके.

भजी० ॥ २ ॥ आ संसा असा मां ॥ भमियो वारंवार । नाथ ने जन नवि मल्या । तुज एले गयो अवता ॥ भजी० ॥ ३ ॥ जल बुद्बुद् सम जान जनोना । जाय झपाटा मार । झट जन्मांतर जाता जनने । कोइ न जालवनार ॥ भजी० ॥ ४ ॥ वटादिक सनोथी पडीया । नरका क रूप चार । हंस कहे सुव्रत स्वामी विना । कोण हवे आधार ॥ भजी० ॥ ५ ॥

## भरूच वेजल र मंडन श्रीआदिनाथ वन ॥

( दींडी छंद )

ऋषभदेव जीन मूर्ति अविकारी । भरूच शहेर वेजल रमां हारो ॥ आंकणी ॥ शशि सम विशुद्ध शांत मुद्राधारी । निर्विकारी नयन युगल जाउं वारी ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ नथी गोदमां

कोइ मूर्तिमद नारी । तेज सूचवे छे कामन संहारी ॥ क० ॥ २ ॥ जेणे जापकाज धारी न जपमाली । एथी जाणिये त्रिकालज्ञानशाली ॥ क० ॥ ३ ॥ नथी हाथमां हथीयार के कटारी । एज अजब गमक द्वेष परिहारी ॥ क० ॥ ४ ॥ एवी मूर्ति शुद्ध जे पूजे संसारी । तेह हंसपरे उतरे भवपारी ॥ क० ॥ ५ ॥

## ॥ भरूच कबीर पुरामंडन श्रीअजितनाथ स्तवन ॥

॥ खरेखर स्वाद छे खारोरे, सट्टामां सुख न धारोरे॥
॥ ए देशी॥

॥ आव्यो आ अवसर मजारोरे—अजितजिन पूजवा सारोरे ॥ ए आंकणी ॥ मनुष्य जन्म वृक्षनु पहेलु, भाषे छे भगवान् । फल प्रथम ए पूजा प्रभुनी, करवी धरीने ध्यान । आवे भवसागर आरोरे ॥ अजित० ॥ १ ॥ पूजा करतां प्रा-

णीयो पोते, होय खरे [illegible]जनांक । एवां अ[illegible]लख फल लेवाने, चुके केम वणीक। धरे दील हर्ष अपारोरे ॥ अजित० ॥ २ ॥ दुःख दारिद्र जाय छे एहथी, थाय छे जश जरूर । स्वर्गनां सुखो पाय छे प्राणी, थाय कदि नहिंकुर । [illegible]करर मुक्ति वरनारोरे ॥ अजित० ॥ ३ ॥ भरूच शहेरना कबीर [illegible]रामां, जिनमं[illegible]र जयकार । अजितजिनेश्वर पूजतां त्यां जइ, थाय सफळ अवतार । करे एवा हंस विचारोरे ॥ अजित० ॥ ४ ॥

## ॥ झ[illegible]डीया मंडन श्री आदिजिन स्तवन ॥

॥साचारे महारा शांति जिनेश्वर ॥ शांति० ए राह ॥

॥ [illegible]घांडया मंडन आदि जिनेश्वर । प्रथम जिनेश्वर । हुं तो तुम दर्शन आवियो छुं आज ॥ ए अंचलि ॥ भरूच

वेजलपुर संघनी साथे (२) में तो करी यात्रा गरीब नवाज ॥ झघडिया० ॥ १ ॥ प्रभु मूर्त्ति मन तनु उल्लसावे । तनु० चंद्रमा जेम चकोर सुखकाज ॥ झघडि० ॥ २ ॥ जेम शशधर शशिकांतने द्रहाव । शशि० मोर समुदाय मन मेघनी ज्युं गाज ॥ झघडि० ॥ ३ ॥ नवपल्लव वन वसंत बनावे । वन० कोकिल कंठ कल गावे राग राज ॥ झघडि० ॥ ४ ॥ कुंमुद[1] बांधव जेम जलनिधि जलने ॥ जल० मान सरोवर मेरालने[2] महाराज ॥ झघडि० ॥ ५ इति ॥

## झघडीआ मंडन श्री आदि जिन स्तवन ॥

॥ महेताजीरे शुं महिनुं मुल बताबुं ॥ ए राग ॥

झघडीयारे गाममां जुगते जावुं । यात्रा करी पावन थावुं । श्री ऋषभनीरे मूर्त्तिथी

---

१ चंद्र. २ हंस.

ललचावुं । गुणगान प्रभुनु गावुं । दुर्गतिथी दुरे थावुंरे । भवमां पछी नही भटकावुंरे । सुख थासे रे नही गमसे पछी खावुं । गुणगान प्रभुनु गावुं ॥ झघडी० ॥ १ ॥ मूर्त्ति छेरे मन मोहित करनारी । छे तेज तणी धरनारी । नेत्रोथीरे भव्य तणा हितकारी । अमृत तणी झरनारी ॥ प्रताप अति भरनारी । विद्वान जनोए स्वीकारीरे । प्रमाणथीरे श्री सिद्धांत विचारी । अमृत तणी झरनारी ॥ झघडी० ॥ २ ॥ शीनोरथी रे संघ लेइ इहां आवे । झीणी बाइ निज शुभ भावे । ओगणीशेंरे छासठ संवत सुहावे । शुभ स्तवन हंस बनावे, फागण वदि तेरस कहावेरे । गुरूवारे परम सुख थावेरे । संघ सघलोरे प्रभुजी तणा गुण गावे शुभ स्तवन हंस बनावे ॥ झघडी० ॥ ३ ॥ इति ॥

## ॥ कठोर गाम मंडन श्री आदि ांति- नाथ स्तवन ॥

॥ मैं एकली वनमें तडफूं जाया मेरा बोल बोल बोल ॥ ए राग ॥

में अरज करू िरनामां । प्रभु कर-जोड जोड जोड ॥ अंचळं ॥ में भवव-नमें जा फसिया । वहां काल करि धस-म सेया ॥ मुझ लोभ सर्प आडासेग । अखियां खोल खोल खोल ॥ में० ॥ १ ॥ क्रोधानल ने अतिबाला । मेरा अंग पड गया काला॥ मुझे प्यादे प्रेमका प्याला । अमृत ढोल ढोल ढोल ॥ में० ॥ २ ॥ मद अजग ्झको खावे । मेरे प्राण पल ़में जावे ॥ जडी जीवन कोण पि-लावे । वनमे घोल घोल घोल ॥ में० ॥ ३ ॥ तुम नाम मंत्रसें साजा । कुछ हो गया प्रभु ताजा ॥ तो कठा गाम महा-राजा । आया टोल टोल टोल ॥ में०

॥ ४ ॥ श्री आदि शांतिजीन स्वामी । हंसो मागे [illegible]रनामी ॥ गुण [illegible]क्ताफल द्यो धामी । प्रभु विन मोल मोल मोल॥ में० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ कतार गाम मंडन श्री आ[illegible] जिन स्तवन ॥

॥ ना छेडो गालि दुगीरे, भरनेदे जलनीर॥ ए चाल॥

आदिनाथ अनादि कालेरे । मिल गया मुजे मंदिर ॥ ए आंकणी ॥ में ढुंढ फिरा जग सारा । तूं ना मिला प्रभु प्यारा । तब कतार गाम दिलधारारे ॥ मिल० ॥ १ ॥ तुं कहांसे चल कर आया । इतने दिन क्युं न दिखाया । तुजकुं कीसने भरमायारे ॥ मिल० ॥ २ ॥ में नरकनिगोदसें आया । वहां काल अनंत गमाया । कर्मोने मुज भरमाया[illegible] ॥ मिल० ॥ ३ ॥ कर्मोकुं क्युं न हठाया । तपजप संयम सुखदाया । उसका है एह उपा-

यारे ॥ मिल० ॥ ४ ॥ में क्या करू सुण स्वामी । तुं तो है अंतरजामी । मो ने न रखी कुछ खामीरे ॥ मिल० ॥ ५ ॥ सुण हंस हम पाडोशी । मिल पडा तुजे में जोशी। तेरीभी मुक्ति ेशीरे ॥ मिल०॥६॥

## ॥ सुरत शहेर मंडन श्रीसीमंधर स्वामी स्तवन ॥

॥ राग–काफी–होरी ॥

॥ नेमिनिरंजन ध्यावोरे । वनमें तप ीना ॥ ए चाल ॥

॥ श्रीसीमंधर स्वामी रे । केवलज्ञान लीनो ॥ श्रीसी० ॥ ए आंकणी ॥ गुण-मणि रोहण सम हे स्वामी ॥ देखत कोइ न दिनोर ॥ केवल० ॥ १ ॥ संसार पंक निमग्न उद्धारण ॥ धोरी एह नवी-नोरे ॥ केवल० ॥ २ ॥ मन मंदिरमें ज्योति परे रही ॥ दाह जरा नही की-नोरे ॥ केवल० ॥ ३ ॥ समवस णमें चतुर चातकने॥ वचन सुधारस पीना े ॥

केवल० ॥ ४ ॥ सुरत शेहरका देवल मांहे ॥ देख्यो देव नगीनोरे ॥ केवल० ॥ ५ ॥ हंस चाहे प्रभु आणा मांहे ॥ रहुं सदा आधिनोरे ॥ केवल० ॥ ६ ॥

## ॥ सुरत मंडन श्री गोडी पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ राग कल्याण ॥

॥ रक्षभूप ज्योर्जने तुं हे जगत्पति ॥
॥ ए चाल ॥

गोडीपार्श्वनाथको पूजेशचीपति, जन्मस्नात्र करण कारण हे आति ति ॥ गोडी० ॥ १ ॥ मेरूमस्तके पखाल अंगको अति, पापताप आपणा मिटा दिया कति ॥ गोडी० ॥ २ ॥ अरति को उतारणे उतारे आरति । हाथ जोड मान मोड करत .-नति ॥ गोडी० ॥ ३ ॥ ऐसे प्रभु पार्श्वकी प्रतापी मूर्त्ति । सुरत शेहेरके भीतर पूजत सुरति ॥ गोडी० ॥ ४ ॥ और एक

मूर्त्ति वहांपर बिराजति । विजयानंद सुरीश्वर केरी छाजति ॥ गोडी० ॥ ५ ॥ गुरूवर्य लक्ष्मीविजयजी यतिपति। तास शिष्य हंसकी हे स्तवना कृति ॥ गोडी० ॥६॥

## ॥ श्री नवसारी पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ अहो अहो पासजी मने मलीयारे ॥ ए देशी ॥

नमोरे नमो नवसारी पार्श्वनाथरे । उत्तम अंगे लगावी बे हाथ ॥ नमोरे नमो० ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु प्रतिमा प्राण आधाररे-सेवकनो [illegible] सुखकाररे, मानुं हैडा तणो ए हार ॥ नमोरे० ॥ १ ॥ ते मूर्त्तिवंत म[illegible]राजरे—का[illegible] थया शिरताजरे । दिक्षा लइ थया मुनिराज ॥ नमोरे० ॥ २ ॥ आश्रम पद नामे उद्या-नेरे—रह्या स्वामी काउसग ध्यानेरे—कर्युं आत्म ध्यान एकताने ॥ नमोरे० ॥ ३ ॥ मेघ मालीस्तनीत कुमारेरे—धरी वैर आ-व्यो त्यां गुमारेरे—मुक्या सिंह तेणे बे

कुमार ॥ नमोरे० ॥ ४ ॥ आवी—शक्या न ते प्रभु पासेरे—ऊंचुं पुंछडुं लेइने नाशेरे । थया निष्फल मनोरथ तास ॥ नमोरे० ॥ ५ ॥ प्रचंड शुंडादंड धारीरे—मद झरता मतंगज भारीरे विकुर्व्या तेने दुर्विकारी ॥ नमोरे० ॥ ६ ॥ तमोनाशक तेजस्वी सामेरे—मंद तेज न आववा पामेरे । दीवानी परे ते विरामे ॥ नमोरे० ॥ ७ ॥ गर्जारव साथ विजलीयोरे । कडकावी करी वादलीयोरे । वर्षावी बाण जेवी झडीया ॥ नमोरे० ॥ ८ ॥ जल कंठे आवे जेम जेमरे । ध्यान वन्हि वधे तेम तेमरे । प्रभुने तो सदा कुशल क्षेम ॥ नमोरे० ॥ ९ ॥ काला केश रूपी भमरालुरे । नेत्र[1]दल ग्रिवा[2]नाल वालुरे । मुखकमल बन्युं त्यां रूपालुं ॥ नमोरे० ॥ १० ॥ धरणेंद्र हंसपरे आ-

---

१ पत्र. २ कंठ.

वेरे । उपसर्ग हरी शुभ भावेरे । कमठासुरने ते नमावे ॥ नमोरे० ॥ ११ ॥ इति ॥

## ॥ गणदेवी मंडन श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ मोरी बइयां तु पकड शंखेश शाम ॥ ए चाल ॥

॥ सारी चिंता के चुरक चिंतामणि नाम । गणदेवी गाममें पार्श्व श्याम ॥ ए अंचली ॥ चिंतित फलदायक चिंतामणि । प्रभु तो अचिंत्य गुणो के धाम ॥ सारी० ॥ १ ॥ लौकिक सुखदायक चिंतामणि । विभूतो अलौकिक सुख के ठाम ॥ सारी० ॥ २ ॥ पूजक जन फल दाता चिंतामणि । पूज्य तो निंदकके भी करत काम ॥ सारी० ॥ ३ ॥ चिंतामणि जडरूप धरतहे । जिनतो चिंदानंद आत्माराम ॥ सारी० ॥ ४ ॥ कमठासुरपर करुणाकारी । प्रभुका प्रभाते लीये हंसनाम ॥ सारी० ॥ ५ ॥

## ॥ बीलीमोरा मंडन श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ वारी जाउंजी सांवरीया तोपे वारनाजी ॥
॥ ए चाल ॥

श्रीयुत शांतीनाथ जिन शांति के करनारहेरे—करनारहेरे ॥ अंचली ॥ सो पणा प्रभुजीका सुहावे । शरद् शशि कब-हीन पावे । तेजसें नही तरणि लना करनार रे. (२) ॥ श्री० ॥ १ ॥ त्रिदश-पति आवे नही तोले । रूप गुणे जीनवरके जोडे । धरणिधर नही सार गुणे मलनारहेरे. (२) ॥ श्री० ॥ २ ॥ सर्व दुख शांति करनारे । सर्व पापको परिहरनारे । आ संसार समुद्र सकल तरनारहेरे. (२)॥ श्री० ॥ ३ ॥ शांति सुख संपादक सारे । अचिरा नंदन लागत प्यारे । कुरूजन पदमें निवासके करनारहेरे. (२) ॥ श्री० ॥ ४ ॥ बिलीमोरा नगर बीराजे । मूर्त्ति-

वंत प्रभुजी वहां छाजे ॥ हंस प्रभु गुण गण सरोवर तरनारहेरे. ( २ ) ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ उंटडी गाम मंडन श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ हांरे कांइ आसो मासे शरद पुनमनी रातजो ॥
॥ ए देशी ॥

॥ हांरे कांइ शांतिना करनारा शांतिनाथजो । उंटडी गाममां मूर्त्तिरूपे मनोहरूजो । हांरे कांइ निर्मल कीर्ति धारण धोरी धीरजो । सूरवीर प्रभु हाथ जोडी वंदन करूंजो ॥ १ ॥ हांरे कांइ मोह धराधिपनो जय मेलवनारजो । शांत सुधारसमां मज्जन करनार छो जो । हांरे कांइ दुर्जय दोष सर्वना वर्जनहार जो । परम पुण्यशाली पावन करनार छो जो ॥ २ ॥ हांरे कांइ अनंत गुणे शोभित छो स्वामी नाथजो । भविक कमल बो-

धन कारण दिनेशरूजो । हांरे कांइ हंस समान धवल गुणना धरना जा । मा ेमा धाम जगतना छो ५ मेशरूजा ॥ ३ ॥

## ॥ वलसाड बंदर मंडन श्री महावीर ाामी स्तवन ॥

॥ रघुपति राम हृदयमां रेहेजोरे. ॥ ए देशी ॥

महावीर जगतना त्रातारे । सहु जीवने करे सुख शातारे । एतो शांत सुधारस नहाता । गुणवंता वीरविभु नित्य वंदोरे ॥ १ ॥ अज्ञान तिमिर निकासेरे । निज आत्म तेजथी विभासेरे । एतो दीपकपरे प्रकाशे । गुणवंता वीर विभु नित्य वंदोरे ॥ २ ॥ शंका पर्वतने तोडेरे । प्रभु वचन वज्र हथोडेरे । अधर्मीने धर्ममां जोडे । गुणवंता वीर विभु नित्य वंदोरे ॥ ३ ॥ आराधकने आराध्यरे साधक जनने वलि साध्यरे । एवुं सुख छे प्रभुनुं अबाध्य । गुणवंता वीर विभु नित्य वंदोरे ॥ ४ ॥

प्रभु मूर्त्ति छे निर्विकारीरे । न माने ते होय धिक्कारीरे। वलसाडमां हंसे स्वीका । । गुणवंता वीर विभु नित्य वंदोरे ॥ ५ ॥

## ॥ पारडी मंडन श्री चंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

॥माजी तुं पावानी पटराणी के काली कालकारे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ चंद्र प्रभ मुख चंद्र चकोर ज्युं नयणे निरखीयेरे लोल । प्रभु दर्शन नित्य नित्य करी ने हैडे हरखीयेरे लोल वितराग पुन्य पाप रहित प्रभु समता सागरूरे लोल । लोकालोक विलोकनहारा गुणना आगरूरे लोल ॥ चंद्र० ॥ १ ॥ रागने द्वेष मोह ममता परीसहने परिहरीरे लोल । प्रभुए प्रेम धरी पटराणी शिव सुंदरी वरीरे लोल । भव बीजांकुरना जणनारा रागादिक हणीरे लोल । सुरपति नरपति गणपतिना थया प्रभु मस्तक

मणिरे लोल ॥ चंद्र० ॥ २ ॥ कर्मरूप कचवर दुर करवा वापी ज्ञाननीरे लोल। आपी प्रभुजी गया लोकांते सुखना खा- ननीरे लोल। पण मूर्त्तिरूपे प्रभुजी पा- रडी बंदरे रह्यारे लोल । भव्य जनोए हृदय कमलमां हंसपरे वह्यारे लोल ॥ चंद्र० ॥ ३ ॥ इति० ॥

## ॥ बगवाडा मंडन श्री अजितजिन स्तवन ॥

॥ नाल तुमे चालोरे जिनवर देव जुहारो ॥ ए देशी ॥

अजितजीन सेवोरे के जगमां देव न तेवो। हांके जगमां देव न तेवो । देव न तेवो दीठो एहवो अजित० ॥ ए आं- कणी ॥ सेवाना फल संसारमां कांइ सं- पदा लेवोरे । के जगमां० ॥ १ ॥ ऋद्धि सिद्धि सघली मीले कांइ मोक्षनो मेवोरे। के जगमां० ॥ २ ॥ पाप गंध दुर कारणे कांइ धूप उखेवोरे । के जगमां० ॥ ३ ॥

चंदनचरचकनी होवे कांइ अर्चा अजब ए केवोरे । के जगमां० ॥ ४ ॥ मोक्ष गया पण बगवाडे कांइ रह्या देवाधिदेवोरे । के जगमां० ॥ ५ ॥ हृदय कमलमां हंस परे कांइ । प्रभुजी ठेवोरे । के जगमां० ॥ ६ ॥

## ॥ वापी मंडन श्री अजितनाथ जिन स्तवन ॥

॥ माता मरू देवानो नंद देखी तारी मूर्ति मारू मन लोभाणुंजी ॥ ए देशी ॥

श्री श्री अजितनाथ महाराज । वापी गाममां तुम । मूर्ति प्रभु छे त्रिभुवन शिरताज ॥ ए आंकणी ॥ जयवंता वर्तो जगमांही । जगजीवन जयकार । तमनें आ दुनीयानी मांही कोइन जीतनार ॥ श्री श्री० ॥ १ ॥ कर्म कटकपर जय मेलवी, जीताव्या बहु लोक । ते कारण तुम सेवक जनना, जाय झपाटे शोक ॥

श्री श्री० ॥ २ ॥ मोटो जय जगमां वर्ते छे, आप तणो महाराज । तेथी जय लक्ष्मी बीजे, जावामां छे नाराज ॥ श्री श्री० ॥ ३ ॥ सत्य तमारूं जय मेलवे छे सगले संसार । तेज सबबथी जीतना जन, खाय खरे कंसार ॥ श्री श्री० ॥ ४ ॥ हंस कहे श्री अजित जिनेश्वर, महारी करो संभाल। आप पसाये सघली टलसे, जगनी आ जंजाल ॥ श्री श्री० ॥ ५ ॥

## ॥ दमण मंडन श्री आदिनाथजिन स्तवन ॥

॥ ओ चतुर सुजान नवपद के गुणगायरे ॥ ए चाल ॥

जैनो जपो जिन जाप । दमणबंदरमां जायरे ॥ ए आंकणी ॥ दमण दरिया कांठे देवल झाज जेवुं प्हंकायरे ॥ जैनो० ॥ १ ॥ अपछरा वृंद समेत थंभ छो । कूप थंभपरे ठायरे ॥ जैनो० ॥ २ ॥ सुंदर सढ समान शुभंकर । धर्म धजा फ का-

यरे ॥ जैनो० ॥ ३ ॥ अपूर्व झाज पामीने प्राणी । कोण हवे शंकायरे ॥ जैनो० ॥ ४ ॥ आगबोट बंदर बोटवाला । ते पण इहां ललचायरे ॥ जैनो० ॥ ५ ॥ सुकानी सम आदिनाथजिन । तारण तरण कहायरे ॥ जैनो० ॥ ६ ॥ संकट सघला दुर कारक देवी । चक्केसरी करे सहायरे ॥ जैनो० ॥ ७ ॥ रोग शोकरूप मच्छ कच्छपथी । कोइ नहि गभरायरे ॥ जैनो० ॥ ८ ॥ संकल्प वेलाथी संकटना । खडकमां नही अथडायरे ॥ जैनो० ॥ ९ ॥ वहाणवटीया भव्य जीव घणेरा । तेहमां बहु हर्षायरे ॥ जैनो० ॥ १० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्न भरी । मोक्षपुरीमां सधायरे ॥ जैनो० ॥ ११ ॥ हंसपरे एवा झाजथी जैनो । भव समुद्र त ायरे ॥ जैनो० ॥ १२ ॥ इति० ॥



# ॥ श्री अंतरिक्षपार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ भाषा मराठी ॥

॥ भज भज गुरूचे पाय शिष्या भज भज गुरूचे पाय ॥ ही चाल ॥

॥ सेवा करावी सार प्रभुची । सेवा करावी सार ॥ श्री अंतरिक्ष पासप्रभुजीचे । देऊल पहा सुखकार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ तिकडे जाउनी दर्शन घ्यावें । पाया पडुनी वारंवार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ केसर चंदन च[illegible]नी आंगी । चढवा चंपकहार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ [illegible]यपसेणी ज्ञाता अंगहे । ऐकुनी करा सुविचार ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ पूजेचें फल आहे सांगितलें । हित सुख मोक्ष उदार ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ रोग शोक भय त्रास न त्याला । उतरावें भवपा[illegible] ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ हंस सांगतो सेवे वां[illegible]नो । कोण तुह्मां आधार ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥



## ॥ श्री अंतरिक्षपार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ म्हारी ससेलडो ऋषभजिनेश्वर कीयो पारणो
॥ ए देशी ॥

॥ म्हारी कल्पवेलडी मूर्त्ति श्री अंतरिक्ष पासनी ॥ एक समय लंकापति रावण हुकम आप फरमावे । माली सुमाली विद्याधर बे कार्य करण तस जावेरे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जाय विमान झडपथी तेहनुं, जेम गगने गुब्बारा । मध्याह्ने भोजन वेलाये, विमान हेठे उतारारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ तव सेवक मन संशय उपज्यो प्रतिमा घेर विसारी । प्रभु पूजन विना भोजन न करे मुज स्वामी भाग्यशालीर ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ वेलुमय मूर्त्ति निपजावी करी पूजन तैयारी । स्वामीये पूजन करी भोजन लीया शरीर सुखकारीर ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ जातां मूर्त्तिने पधरावी सरोवरमां उछरंगे । अधिष्टायक देवे अखंडित राखी तिहां उ-

मंगेरे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ एकदिन बंगला रनो राजा श्रीपाल कुष्टि आवे। हाथमुख प्र ख अंगोने पखालं निजघर जावेरे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ खडुं निरोग देखी राणी फरी त्यां जइ नवरावे। कंचन सम काया राजानी जोइ जोइ अच ज पावेरे ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ बलि बाकुल नाखी पटराणी बोली मधुरी वाणी। देवी देव जे कोइ होय ते द्यो दर्शन हित आणीरे ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ एम करी घर जइने सुती स्वप्ने देवी दिठी। पार्श्वप्रभुनी प्रतिमा इहां छे एम वाणी सुणी मिठीरे ॥ म्हा० ॥ ९ ॥ रोगी राजा निरोग थयो ते जिनजी तणो पसाय। ते कारण प्रतिमा काढी न गाडेदीयो पधरायरे ॥ म्हा० ॥ १० ॥ काचे त तण गाड बाधी राजाये थवुं धुरमां। पण पाछु वालि जोया विना जवुं जरूर निज रमार ॥ म्हा० ॥ ११ ॥ जो पाछुं वालिने जोसे तो

प्रतिमा तिहां रहेसे । भुल्यो बाजांग जेम सोचे तेम चिंता दुःख सहेसेरे ॥ म्हा० ॥ १२ ॥ एहवुं स्वप्न देखीने राणी निद्रामांथी जागी । प्रेम धरीने देवगुरूनुं स्मरण करवा लागीरे ॥ म्हा० ॥ १३ ॥ तेमज करी पृथ्वीपति चाल्यो बोजथी हाथ न हाल्यो । शंका उपनी प्रतिमा केरी मुखवाली तिहां भाल्योरे ॥ म्हा० ॥ १४ ॥ प्रतिमा अधर रहि त्यां आगल गाडुं निकली चाल्युं। विना विचारी कीधुं ते राजाना दिलमां साल्युं रे ॥ म्हा० ॥ १५ ॥ पण प्रतिमा उपर प्रीतिथी श्रीपुर नगर वसावी । रहेवा लाग्यो त्यां पर-राजा नगर लोकने हसावीरे ॥ म्हा० ॥ १६ ॥ चैत्य प्रतिष्ठा महोच्छव कीधो जगमां यश बहु लिधो । प्रतिदिन त्रि-काल पूजा करीने निजभव सफलो कीधोरे ॥ म्हा० ॥ १७ ॥ ते काले पाणी-

हारी बेहडुं लइ नीचे जइ शक्ति । हवणे तो अंगलाहण निकले दीप शिखा जुवो जगती ॥ म्हा० ॥ १८ ॥ दुखम काले एम प्रभुनी मूर्त्ति अधर बिराजे । ते कारण अंतरिक्षपासजी नाम जगतमें गाजेरे ॥ म्हा० ॥ १९ ॥ ते प्रभुनी यात्रा करवाने अमलनेरथी आवे । रूपचंद मोहनचंद पोते संघ लइ शुभ भावेरे ॥ म्हा० ॥ २० ॥ संवत ओगणीसें छप्पनना महा सुदि दशमी सारी । लक्ष्मीविजय गुरूराज पसाये हंस नमे वारंवारीरे ॥ म्हा० ॥ २१ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ प्रभु मुखचंद्रे लाग्यो मने प्यार (२) चंद्रे लाग्यो (३) ॥ ए अंचली ॥ हुं पापी बहु पाप करीने । आव्यो तुमार दरबार ॥ प्र० ॥ १ ॥ लाख चोरासी योनि रफामं । दुःख सह्यां म्हें ...पाल ॥ प्र०

॥ २ ॥ क्रोधादिक चोरे हरि लीधी । लत्रयी बहु वार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ राग द्वेष रूप मल्ल हरावे । तेहनो करो संहार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्री अंतरिक्ष प्रभु पार्श्व जिनेश्वर । आभव दुःख निवार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ मुजने पण अंतरिक्षे धरीने । लोकांते राखो आवार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ विजयानंदसूरीश्वर केरा । लक्ष्मीविजयजी अणगार ॥ प्र० ॥ ७ ॥ तस चरणांबुज हंस नमे छे । संपत्ति द्योने अपार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥

## ॥ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन ॥

प्रभु हुं प्रेमे आव्योरे, मारूं आयुष्य एले जाय,
प्रभु हुं प्रेमे आव्योरे ॥ ए चाल ॥

॥ राग माढ ॥

॥ प्रभु हुं भावे आव्योरें । मने संसारमां न सुहाय । प्रभु हुं भावे आव्यो ॥ ए अंचली ॥ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथस्वामी अरज करूं वारंवार ॥ आ संसारसमुद्रथी

तारो । तारक बिरुदना धार ॥ प्रभु हुं० ॥ १ ॥ अज्ञानता रूप तलाउं जेहनुं । उंडु जेह अगाध ॥ व्यसन शैल समुह छे जेमां । कषाय कलश उपाध ॥ प्रभु हुं० ॥ २ ॥ तृष्णा पवनथकी ते भरीया । संकल्प वेला वधार ॥ वडवानल काम्मद रूपी छे । स्नेह इंधन अपार ॥ प्रभु हुं० ॥ ३ ॥ रोग शोकादिक मच्छ बहुला । द्रोह गर्जना थाय ॥ सांयात्रीक भव्य जीव घणेरा, संकटथी गभराय ॥ प्रभु हुं० ॥४॥ एहथकी हुं अति उभग्यो छुं । साहेब सुण दयाल ॥ हंस कहे मुज जलदी तारो । जाणी पताना बाल ॥ प्रभु हुं० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ खामगाम मंडन श्री ऋषभदेव स्तवन ॥

श्री शांति तुमारी छे बलीहारी जग विषे जिनराज ॥ ए देशी ॥

॥ नाभिनंदन प्यारा—सबजग सारा—

ऋषभदेव भगवा- —तमे जग णगारा— दुःख हरनारा— सुख करनारा ॥ ऋषभ० ॥ ए आंकणी ॥ हुं ने म्हारु सारु नठा ॥ ए मो नो छे मंत्र ॥ जगमां ते अंधकार फेलावे । द्यो तेनो प्रतिमंत्र ॥ प्रभु व्हाला हमारा— डाना हारा—परम आधारा ॥ ऋषभ० ॥ तमे ज० ॥ दुःख ह० ॥ सुख क० ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ आत्मविलासी ज्ञान प्रकाशी । छो मा ना प्रतिमल्ल ॥ हमने तो अति मोह झाव । काढो हमारु सल्य ॥ पापपंकथी न्यारा—आकाश ज्युं सारा, न लेप लगारा ॥ ऋषभ० ॥ तमे ज० ॥ दुख ह० ॥ सुख क० ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ परद्रव्य नाटक नित्य प्रति पाटक । देखो दिनदयाल ॥ भवनाटक हवे नाथ निवारो । हंस कहे तुम बाल ॥ खामगाम तुमारा—देवल उदारा—हित क नारा ॥ ऋषभ० ॥ तमे ज० ॥ दुःख ह० ॥ सुख क० ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ इति० ॥

## ॥ बालापुर मंडन श्री पार्श्वजिन स्तवन ॥

### ॥ राग काफी ॥

॥ खतरा दूरकरना दूरकरना ॥ ए चाल ॥

॥ मुजरा नित्य करना नित्य करना, श्रीपार्श्वप्रभु दिल धरना । मुजरा नित्य करना ॥ नित्य० ॥ ए अंचली ॥ त्रिभुवन पूज्य सुजनसंतिजन । हृदय कमलमें ठरना० ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ प्रभु सेवासें योग्यता प्रगटे । दूर होय जरमरणा० ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ रोग शोक जलजलण चोरका। भय सगला दूर हरणा० ॥ मुजरा० ॥ ३ ॥ भुत पिशाच राज भयसेंति । कबु नहि दिल डरना० ॥ मुजरा० ॥ ४ ॥ बालापुरके दो ेवलमें । पार्श्वप्रभु अनुसरना० ॥ मुजरा० ॥ ५ ॥ हंस कहे अहनिश रटनासें ॥ झटपट शिववधु वरना० ॥ मुजरा० ॥ ६ ॥

## ॥ आ॰॰॰ ॰ंडन श्री गोडी पार्श्वनाथ ॰वन ॥

॥ गोकळ मथुरांरे वाहाला ॥ ए देशी ॥

वामानंदनर ॰॰॰ । शोभे तुम काया गजगामी ॥ पंकिल चित्तेरे वसिया । पण पंकिल थया नहि रसीया ॥ पार्श्वजिनेश्वररे प्यारा ॥ प्रभावती त्यागी सुरसाला ॥ पार्श्वजि० ॥ १ ॥ निरागार छोरे स्वामी । पण मुज मन मंदिर विसरामी ॥ वितरागता धारी । पण मुक्ति रमणी न विसारी ॥ पार्श्वजि० ॥ २ ॥ रत्ना त्यागीरे थइने । ॰॰॰ आपो छो केइने ॥ अचरिज एतोरे दिठुं । जगमां सहुने लाग्युं मीठुं ॥ पार्श्वजि० ॥ ३ ॥ चंद्र न आवेरे तोले । पूर्ण कलाधरने जन बोले ॥ ते उगतो नविरे पूरो ॥ तुं कदी कलाथकी न अधुरो ॥ पार्श्वजि० ॥ ४ ॥ श्री अ॰॰॰ मूर्त्ति । तुम तणी । दिठी प्रभु

दुःख चूर्ति ॥ जे नित्य सेवारे करसे । हंस परे ते भवजल तरसे ॥ पार्श्वजि० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ अमरावती मंडन श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ राग होरी ॥

॥ बाजत रंग बधाइ नगरमां बाजत रंग बधाइ ॥ ए चाल ॥

॥ होवत मंगल चार, नगरीमें होवत मंगल चार ॥ श्रीमत् पार्श्वजिनेश पसाये। अमरावतीमां सार ॥ नगरी० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधु शुद्ध धर्मए । मंगल चार प्रकार ॥ न० ॥ २ ॥ इंद्रभुवन सम देवल मांहि । फाग गावे नरना ॥ न० ॥ ३ ॥ रंगमंडपमें रंग उडते । केसर केरा अपार ॥ न० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग सारंगी साथे । होय संगीत रसाल ॥ न० ॥ ५ ॥ इण विध प्रभुभक्तिका होवे ।

अनंत फल विस्तार ॥ न० ॥ ६ ॥ सामत मालसी सुत संघ लावे । आकोलासें आवार ॥ न० ॥ ७ ॥ संवत ओगणीस छप्पन केरी । श्री वेक्रमकी साल ॥ न० ॥ ८ ॥ फागण सुदि तेरश बुधवारे । ह्रदये धरी बहु प्यार ॥ न० ॥ ९ ॥ तेविशमा प्रभु पासजी केरा । दर्शन कीया मनोहर ॥ न ० ॥ १० ॥ हंस कहे यह मंगल गावे । तस घर मंगलमाल ॥ न० ॥ ११ ॥ इति० ॥

## ॥ नागपुर मंडन श्री श्रेयांसनाथ स्तवन ॥

॥ मनहर महावीर गुणमणिमाल मुर्ति मोहनवेली ॥ ए चाल ॥

॥ दिलधरो श्री श्रेयांसजिनेशर गुणमणी मोहनमाला । जेशे मुक्ताफलमाला । अहो सुरसाला । ए मुक्ति वरमाला ॥ दि० ॥ ए अंचली ॥

॥ साखी ॥

नगर नागपुरमें बडा। देवल हे प्रख्यात ॥ श्री श्रेयांस म .राजका। ज्युं विमान साक्षात ॥ देखो दु की चाला। बाल अ .ाल ॥ ए मुक्ति व माला ॥ दि० ॥१॥

॥ साखी ॥

॥ दुसरा मंदिर हे तिहां, श्री आदित्य बजार ॥ आदिनाथ महाराजका। वंदु वार हजार ॥ ि मुकिने ला। गालम गाला ॥ ए मुक्ति व माला ॥ दि० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ दर्शनथी दुरीत टले। वंदनथी वांछित ॥ पूजनथी लक्ष्मी मिले। ए जिन- ासन रीत ॥ करो निज हंसने णवाला। चाल चाला ॥ ए मुक्ति व माला ॥ दि० ॥ ३ ॥



## ॥पारडी मंडन श्री पार्श्वजिनस्तवन॥

॥ श्रीमुनिसुव्रत भगवान् हो मारा मुनिसुव्रत भगवान् ॥ ए चाल ॥

श्रीपार्श्वनाथ भगवान् हमारा पार्श्वनाथ भगवान् । तुम त्रिभुवनमां बहुमान प्रभु० ॥ सुर सुंदर सुख भोगवि आये (बेवार) श्री अश्वसेन वामादेवी माया । पासवदी दसमी दिन जाया ॥ निलवर्ण शोभे तनु छाया ईंद्राणी मीलीने हुलराया—

( इस जगमें तुमारा जैसा कोण )

नही तुम सम अवरमें ज्ञान० प्रभु० श्री० ॥ १ ॥ मनुष्य जन्म लहीन तुमेरा ( बेवार ) दर्शन आज अपूर्वही पाया । निर्मल नेत्र उसीसें बनाया ॥ सफल हुइ प्रभुजी हम काया । रसना सफल करण गुण गाया—

( भवो भव जिनगुण गावुं )

यह द्यो मुजकुं दरसन० प्रभु० श्री०

॥ २ ॥ पा डांमें मंदिर तुम जाणी (बेवार) वंदु इहां आके शिर नामी । हरदम सेवा करणका कामी ॥ तुम पद पद्मसरोवरे स्वामी । हंस परे होय जन विसरामी—

(जन्म जन्म जिनधर्म पावुं)

यह भवअर्णव अवसान० प्रभु० श्री० ॥३॥

## ॥ वरधा मंडन श्री चं प्रभजिन स्तवन ॥

॥ कीजे मंगलचा आज घर नाथ पधार्या ॥ एदेशी ॥

॥ राग सामेरी ॥

चंद्रप्रभ खचंद सबि देखले सुखदायी ॥ चंद्र० ॥ ए आंकणी ॥ चंद्रमा काला कलंक सहीत है, न कलंकी जिनचंद० ॥ सखि० ॥ चंद्र० ॥ १ ॥ चंद्रमा हीनकला होइ जावे । प्रभुतो सदा कलाकंद ॥ सखि० ॥ चंद्र० ॥ २ ॥ पांडु पलास समान प्रभाते । चंद्र होवे न जि-

नंद् ॥ सखि० ॥ चंद्र० ॥ ३ ॥ पाप ति-
मिर पलाय पलकमें । कटत कुमतिका
फंद् ॥ सखि० ॥ चंद्र० ॥ ४ ॥ समता
समुद्र तरंगीत होवे। उछले गुण मकरंद ॥
सखि० ॥ चंद्र० ॥ ५॥ भव्य चकोर चित
हरखाय । देख अपूर्व ए चंद् ॥ सखि० ॥
चंद्र० ॥ ६ ॥ वर्धा नगरमें नाथ निरंजन।
है जिन दिलपसंद् ॥ सखि० ॥ चंद्र०
॥७॥ हंस कहे नित्य दर्शन सेंति । होवत
हर्ष अमंद् ॥ सखि० ॥ चंद्र० ॥ ८ ॥

## ॥ एलचपुर मंडन श्रीवासुपूज्य स्वामी स्तवन ॥

॥ भाषा मराठी ॥

॥ हमपर कृपा भइ नेमीश्वरकी ॥ ए चाल ॥
अथवा राग पीलु—मेरे जिनंदकी धूपसें पूजा ए चाल॥

कृपा वासुपूज्याची झाली । पापकर्म
गेलें पाताळी ॥ कृपा० ॥ १ ॥ दर्शन एल-
चपुरीं घेतलें । धन्य मनी मज फार वा-

टलें ॥ कृपा० ॥ २॥ [illegible] अशी कार्णी नच केली । दुःख दारीद्रे पळ[illegible]ने नेलीं ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ प्रभु कृपेनें [illegible]माते मीळाली । तृष्णा माझी [illegible] गळाली ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ हंस ह्मणे तव मूर्त्ति पाहिली । चरणां[illegible]जेची आशा रा[illegible]ली ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ तेल्हारा मंडन श्री पद्मप्रभस्वामी स्तवन ॥

॥ शिखरमें शिखरी कोण जगत[illegible] मोहनीरे । दादा ऋषभजिनंदकी पडिमा जगतकी मोहनीरे ॥
॥ ए देशी ॥

देवोमें देव [illegible]याल कोण जग हे बडारे. श्रीपद्मप्रभ महाराज जाण जग हे बडारे, हांहांरे० । प्यारे लाल जाण० ॥ श्री पद्मप्रभ० ॥ ए आंकणी ॥ पद्मद्युति तनु तेज प्रकाशे हे घणारे । मोह मल्ल जितनसें होय उसीमें क्या मणारे । हां-

हांरे उसीमें० ॥ प्यारे लाल उसीमें० ॥ अंतरंग अरि मथनेकुं गोपाटापसेंरे । अरूणाभ हुवा प्रभुदेह मानु इम मानसेरे ॥ हांहांरे ॥ मानु० ॥ प्यारे लाल मानु० ॥ श्रीपद्मप्रभ० देवोमें ॥ १ ॥ पद्मासन बेठे प्रभूजी प्राण आधार हेरे । पद्मदल सम नेत्रोका शुभ आकार हेरे ॥ हांहांरे शुभ० ॥ प्यारे लाल शुभ० ॥ पद्मलंछन प्रभु शोभे सुंदर पायमेंरे । दुसरे लक्षणका पार न दिसे कायमेंरे ॥ हांहांरे न दिसे० ॥ प्यारे लाल न दिसे० ॥ श्री पद्मप्रभ० देवोमें० ॥ २ ॥ पद्माका दान करणमें उद्यमवान हेरे । पाणि पद्मप्रभुजीका अति बलवान् हेरे ॥ हांहांरे अति० ॥ प्यारे लाल अति० ॥ वर्षी दान दिया जनने निज हाथसेंरे । एक क्रोड और आठ लाख परम परमातसेंरे ॥ हांहांरे परम० ॥ प्यारे लाल परम० ॥ श्री

पद्मप्रभ० ॥ देवोमें० ॥ ३ ॥ इणविध प्रतिदिन दइ दान प्रभुदिक्षा वेररे। शिक्षा ग्राहक हजार संगव्रत आदरेरे ॥ हांहांरे संग० ॥ प्यारे लाल संग० ॥ कर्म खपावी केवळ वरज्ञानी थयारे। श्री समेतशिखर गिरि तीर्थे प्रभु मोक्षे गयारे ॥ हांहांरे प्रभु० ॥ प्यारे लाल प्रभु० ॥ श्री पद्मप्रभ० ॥ देवोमें० ॥ ४ ॥ श्री तेलंगारा मांहे बिराजे दिपतीरे, प्रभुप्रतीमा अति मनोहर भविकमन चीपतीरे ॥ हांहांरे भवि० ॥ प्यारे लाल भवि० ॥ शेठ हर्षचंद निज कारित जिन मंदिर ठवेरे, धन्य जन्म हुवो हे तास सज्जन बोले सवेरे ॥ हांहांरे सज्जन० ॥ प्यारे लाल सज्जन० ॥ श्री पद्मप्रभ० ॥ देवोमें० ॥५॥ उसीने प्रतिष्ठा महोत्सव बडा मंडावियारे, तेह कारण गोकलभाइ शेठ तेडावियारे, ॥ हांहांरे शेठ० ॥ प्यारे लाल

शेठ० ॥ विजयानंद सूरीश्वर केरी मूर्त्ति नवीरे ॥ गुरू लक्ष्मीविजय महाराज चरण पादुका ठविरे ॥ हांहांर चरण० ॥ प्यारे लाल चरण० ॥ श्री पद्मप्रभ० ॥ देवोमें० ॥ ६ ॥ संवत ओगणीसों सत्तावनकी सालमेर । हुइ प्रतिष्ठा महाशुदी एकम सोमवारमेंरे ॥ हांहांर एक० ॥ प्यारे लाल एक० ॥ भवि जीव उत्तम कामोसें आत्मदशा वरेरे । झठ हंस परे भवजल तरी पार उतरेरे ॥ हांहांरे तरी० ॥ प्यारे लाल तरी० ॥ श्री पद्मप्रभ० ॥ देवोमें० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ जलगाम मंडन श्रीवासुपूज्य स्वामी स्तवन ॥

॥ राग होरी ॥

॥ सिद्धगिरिजीको दर्शन करले ॥ ए चाल ॥

॥ वासु पूज्यजिनेंद्र समरले । जलगामे (२) देवल देख सरस ॥ वासु० ॥

ए आंकणी ॥ अकामी अधामी सदा-
शुद्ध स्वामी । ताको दर्शन करले॥ जल०
॥ १ ॥ अरोगी अशोगी सदासुख भोगी ॥
प्रदक्षिणा ताकु फरले ॥ जल० ॥ २ ॥
महामोह छेदी महा कर्म भेदी । अखेदी
हृदयमां धरले ॥ जल० ॥ ३ ॥ अहंकार
नाशी [illegible]मागं प्रका[illegible] । शुभ ज्ञान
वासीसें ठरले ॥ जल० ॥ ४ ॥ हंस
हमारा प्रभुके पसायसें॥ सीवरमणी झट
वरले ॥ जल० ॥ ५ ॥

## ॥ अमलनेर मंडन श्रीगिरूआ पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ देशी [illegible] ॥

॥ नगर अमलनेर शोभतारे । श्री गि-
रूआ पासजी देव । भाव सहित नित्य
राखीयेरे । प्रभु सेवा करवा टेवरे ॥ प्रभु०
॥ १ ॥ श्यामसुंदर छबि दीपतीरे । जाणे
रिष्ट रत्न झलकार । दर्शनथी दुर्गति

टलेरे । वंदनथी होय भव पाररे ॥ वंद० ॥ २ ॥ लोह समा जड जीवनेरे । प्रभु पारसमणि सम थाय । जडता दूर निवारी-नेरे । कंचन सम दिये बनायरे ॥ कंच० ॥ ३ ॥ रूपाना मांडवा विषे रे ॥ तखते बेठा महाराज ॥ धर्मचक्रीपणुं भावेरे । जाणे बेठो चक्री समाजरे ॥ जाणे० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथना नामथीरे । संकट सघला मटी जाय ॥ मन शुद्धे सेवा थकीरे । हंस सम उज्वल बनी जायरे ॥ हंस० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ सिरसालामंडन श्रीसूर्यमंडल पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ समेतशिखरजिन वंदिये ॥ ए देशी ॥

॥ सूर्यमंडल प्रभुपासजी । गाम शिरसाले विराजेरे । पांत्रिश वाणी गुणे करी । मेघध्वनि परे गाजेरे ॥ सू० ॥ १ ॥ सूर्य समान भामंडले । पाप तिमिर न-

सावेरे ॥ भव्य जीवरूप कमलने । प्रभुजी आप हसावेरे ॥ सू० ॥ २ ॥ सूर्य रेखा जस हस्तमां । चक्र रत्न परे शोभेरे । ते देखी भयभ्रांत ज्युं । कर्मशत्रु सर्व थोभेरे सू० ॥ ३ ॥ सूर्यपरे अति झलकता । भवोदधि आप सुकावेरे । तेह जोइ लाज्यो थको । अगस्ति दिल दुखावेरे ॥ सू० ॥ ४ ॥ सूर्य जेवा जिन जोइने । चक्रांग चित्त चमकावेरे । आशा फली एम जानता । प्रभुजी तणा गुण गावेरे ॥ सू० ॥ ५ ॥

## ॥ धूलीयामंडन श्रीचंद्रप्रभ जिन स्तवन

॥ वीरजिनेश्वर वदन विधु भवि कुमुद निहाली ॥ ए चाल ॥

॥ चंद्रप्रभ मुखचंद्र चकोर ज्युं चित्तमें धारी । धूलिया नगरना लोक अशोक ज्युं शोक निवारी ॥ ए अंचली ॥

---

१ हंस.

ध्याने विधाने बोधने रे लोल । उद्यम करे सुख शोधने रे लोल । गाने बजाने नचाने रे लोल । जिन आगे धन्य माने रे लोल ॥

बोधन शोधन करे नित्यमेव के । शिव-सुख पामवा रे लोल ॥ पाठन पठन करे उद्योग के । दुखडां वामवा रे लोल ॥

॥ साखी ॥

॥ दान निदान सदनना । करे विवेकज खास ॥ वदन अदन ने सदनमां । तेमज करे विलास ॥

आसन शयन ने यानमां रे लोल ॥ यत्न करे आदानमां रे लोल ॥ ज्ञान विज्ञान सुणे कानमां रे लोल । समज करे शुभ सानमां रे लोल ॥

॥ साखी ॥

॥ इत्यादिक गुणगण घणा । देखी प्रभु देदार ॥ आवे उत्तम अंगमां । जिम शशिकांते वार ॥

प्रभु मूर्ति एहवी मनोहार के। मोह संरिणी रे लोल ॥ भव अर्णव ता ण तरणी वली। श्रेयस् सारिणीरे लोल ॥ घटित कुकर्मने विघटन करन वली। हंस नमे बन्ने क जाडीने लळी लळी ॥ चं० ॥

## ॥ पारोला मंडन श्रीशांातेन थ स्तवन ॥

राग प्रभाति ॥

॥ जाग जाग रयण गइ भोर भयो प्यारे ॥ए देशी ॥

पारोलामें शांतिनाथ देव देख प्यारे। दुष्ट मोहमतंगज केसरी समारे॥ पारोला में शांतिनाथ देव देख प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणं ॥ विघ्नव्याधी वैद्यस॰ मोद कर-नांरे। मनोरथ तरूने वसंत सम सारे ॥ पा० ॥ २ ॥ आनंदकंद अंकुरमें मेघ ज्युं उदारे ॥ आगमसुधा सारणीका, की-याहे प्रचारे० ॥ पा० ॥ ३ ॥ संसार ताप तप्त प्राणि शांति सुधागारे। भव समुद्र-

मांहे डुबते कुंदियेतारे ॥ पा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मी लं लायतन रूप चरण कमलमारे। भव्य जीव हंस चाहे वास हितकारे ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ मांडवघढ ं डन श्री सुपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ पालणपुरमें पासजिनंद प्यारो ॥ पालण० ॥
॥ ए चाल ॥
॥ राग फाग ॥

॥ ांडवघढमें सुपार्श्व प्रभुजी प्यारा, मांडव० ॥ ए अंचली ॥ वनवासमें लक्ष्मणजीने ए। निपजाया जिन बिंबसारा ॥ मांडव० ॥ १ ॥ सीतासतीको पूजन खातरा। जगजन मन मोहनगारा ॥ मांडव० ॥ २ ॥ शीलप्रभावे वज्रमय मूर्त्ति। होगइ तेजे जीसा तारा ॥ मांडव० ॥ ३ ॥ अद्भुत महिमा अखंड प्रभुका। संकट सब फेटणहारा ॥ मांडव० ॥ ४ ॥ हंस[1]वा-

---

१ सरस्वती.

हना हिंदोले जीव्हापर । जो जिनगुण गायनकारा ॥ मांडव० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री इंदोर मंडन सर्व जिनचैत्य स्तवन ॥

॥ अरिहंतनमो वली सिद्धनमो ॥ ए चाल ॥

शहेर ईंदोरना त्रण देवलमां । आदीश्वर अरिहंत नमो ॥ नवा मंदिरना उपर चारू । चंद्रप्रभ शिवकंत नमो ॥ १ ॥ तिहां वली वितराग वीरविभु । विनयवंत वारंवार नमो ॥ चोथा चोमुख चैत्ये चारे । देशिग वार हजार नमो ॥ २ ॥ पार्श्वनाथ पूजीने त्यांथी । पांचमें देवल जाई नमो ॥ अजीतनाथ महाराज जिनेश्वर । गुणगण सुंदर गाइ नमो ॥ ३ ॥ ते देवल उपर बाविशमा । बालब्रह्मचारि देव नमो ॥ शिवागंजमां हंस समोज्वल । पार्श्वनाथ नित्यमेव नमो ॥ ४ ॥ इति० ॥



## ॥ श्रीअवंती पार्श्वनाथजीनु स्तवन ॥

श्रीस्थूलिभद्र मुनिगणमां शिरदार जो ॥ ए देशी ॥

जोने प्राणी अवंती पारसनाथ जो ।
शिवपुर जावा सुंदर छे संघाथ जो । ज-
गमां जोता एहवो साथी नही मले जो
॥ १ ॥ नही मले तो होसे बुराहाल जो।
ते माटे कहु छुं आणी बहु व्हाल जो ।
उत्पत्ति कहु तेहनी ते हवे सांभलो जो
॥ २ ॥ सांभलवाथी थासे सुंदर ख्याल जो ।
अवंतिमां थया अवंती सुकमाल जो ।
अणसण करी गया नलिनी गुल्म विमा-
नमां जो ॥ ३ ॥ विमान जेवुं कर्युं देवल
तस बाले जो । पार्श्वनाथ भगवान् तणु
महाकाले जो । बापने नामे तीर्थ तिहां
प्रगट थयुं जो ॥ ४ ॥ प्रगट थयो ब्राह्म-
णमां तव अन्याय जो । मूर्त्ति दबावी
महादेव दिया ठाय जो । सिद्धसेन दि-
वाकर तिहां आवी चढ्या जो ॥ ५ ॥

आवी चढ्यो देवलमां तव भूपाल जो । विक्रमनामे प्रजातणो प्रतिपाल जो । सर्वज्ञ पुत्र बिरुदधारी सूरि देखीया जो ॥ ६ ॥ देखीयाके उपन्यो एह सवाल जो । नमता नथी केम महादेव म ाकाल जो । तव अवधूत रूपधारी एम मनुचरे जो ॥ ७ ॥ उचरवाथी नमस्कार तुज देव जो । फाटी पडसे खेद थसे तत्खेव जो । तो राजा कहे फाटवा द्यो करो वंदना जो ॥ ८ ॥ वंदन करु छुं राजा था सावधान जो । एम कहीने बत्रीसीनु विधान जो । तथा कल्याण मंदिर प्रभु ुवना करी जो ॥ ९ ॥ स्तवना करी के निकल्युं तेज अपार जो । पार्श्वनाथनी प्रतिमा प्रगट थइ सार जो । ते देखी राजा कहे कोण ए देव छे जो ॥ १० ॥ देवनी कही गुरु ए वात तमाम जो । ते सांभली पूजा माटे सो (१००) गांम जो । आपी राजा

बार व्रतधारी थयो जो ॥ ११ ॥ व्रतधारी श्रावक थइने बहुमान जो । देव गुरुनु अति कर्युं गुणगान जो । संघवी थयो मोटो श्री सिद्धाचल तणो जो ॥ १२ ॥ सिद्धाचलमां सूरिपदना धार जो आत्मारामजी शिष्य सकल शणगार जो। लक्ष्मीविजयजी शिष्य हंस प्रणमे मुदा जो ॥ १३ ॥ इति० ॥

## ॥ मालवादेश मंडन श्री मक्षिपार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ यात्रिडा यात्रा न वाणु करीयेरे ॥ ए देशी ॥

यात्रालु यात्रा मक्षिजीनी करीयेरे । करीये तो भवोदधि तरीये ॥ यात्रालु० ॥ ए आंकणी ॥ तरीये तो पार उतर्येरे । पार उतरी भवमां न फरीयेरे । फरी जन्म मरण नवी करीये ॥ यात्रालु० ॥ १॥ मक्षिपासनी मूर्त्ति सारीरे । सारी रीते हृदयमां धारीरे । धारी तो लागी मने

प्यारी ॥ यात्रालु० ॥ २ ॥ प्रभु मूर्त्ति प्राण आधाररे । आधार बीजो न संसाररे ॥ संसार सुधारण हार ॥ यात्रालु० ॥ ३ ॥ गणोपासना नामनी मालारे । माला उपधानवहि विशालारे । विशाल हृदय धरो वाहला ॥ यात्रालु० ॥ ४ ॥ वामादेवी उदर सर हंसरे । हंस समोपास जीनो वंशरे । वंश जेवा थया ते उत्तंशरे ॥ यात्रालु० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ सेंलाणा मंडन श्री मुनि सुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ धन धन वो जगमे नरनार विमला चलके जानेवाले ॥ यह चाल ॥

भजभज मुनि सुव्रत भगवान् भवोदधि पार लंघानेवाले ॥ ए अंचली ॥ हुवा चवन कल्याणक सार । मुनिसम सुंदर व्रतधार । माता हुइ तेणे सुखकार । नाम मुनि सुव्रत पाने वाले ॥ भज० २

॥ १ ॥ जिन जन्म कल्याणक जाण। सबी आये इंद्र गुणखान । करी स्नात्र अर्ज प्रमाण । मेरु परवतपर जानवाले॥ भज० २ ॥ २ ॥ दीक्षाका समय पिछान । प्रति प्रभातमें भगवान् । एक क्रोड आठ लाख मान । दान सोनैया देनेवाले ॥ भज० २ ॥ ३ ॥ केवल कल्याणक थाय । सुरसमवसरण बनाय । वहां कनक कमलपर जाय । वचन अमृत वरसानेवाले ॥ भज०२ ॥ ४ ॥ तरके भवसागर पाथ । हजार मुनि संगाथ । गये समेत शिखरपर नाथ । श्रेष्ठ मुक्तिमे जानेवाले ॥ भज० २ ॥ ५ ॥ मूर्त्ति रूपे जिनराज । सलाणा शेहेर शिरताज । हे हंस[1] सम महाराज । तमः तिमिर मिटानेवाले ॥ भज० २ ॥ ६ ॥ इति० ॥



---

१ सूर्यसमान.

## ॥ धामनोद् मंडन श्री सुपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग रेखता ॥

॥ विनिता नगरी हे सारी विनीत जनवास थीरकारी ॥

॥ यह राह ॥

धामनोद् गाममे सारा देवल जिन-राजका प्यारा । तिहां सुपार्श्वजिन राजे जिनोका जस जगत छाजे ॥ धाम० ॥१॥ भविक अंभोजका बोधन । तरणी परे प्रभु-करे सोधन । कर्म शत्रु सकल जीती । मीटावि कर्मकी भीती ॥ धाम० ॥ २ ॥ सुर वधु नित्य गुण गावे । पाप संताप न पावे । मदन मद् मायाकुं मीटावे । मन संकल्प ना आवे ॥ धाम० ॥ ३ ॥ साथ-लमे साथीया शोभे । चारगति दुखडा थोभे । नमन पूजन करे भावे । रोग तस पास ना आवे ॥ धाम० ॥ ४ ॥ सकल संतापके हर्ता । मोक्ष सुखके प्रभुकर्त्ता । हंस नमे दोनु कर जोडी । मान दुःख खानके मोडी ॥ धाम० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ कर्मदी मंडन श्री आदिनाथ स्तवन ॥

॥ राग धनाश्री ॥

॥ विनति धर जो ध्यान सज्ञनो विनति ॥ ए चाल ॥

जिनवरका जपो जाप जैनो जिनवरका जपो जाप ॥ ए अंचली ॥ कर्मदीमें कर जोडी प्रभुको नमी खपावो पाप जैनो ॥ जिन० ॥ १ ॥ दोनु देवलमें आदि देव-को पूजे मिटे संताप जैनो ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्याम सुंदर दोनु मूल नायक है धर्म कसो-टीकी छाय जैनो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ प्रभु-विना कोइ तारक नही हे पुत्र पुत्री मा बाप जैनो ॥ जिन० ॥ ४ ॥ तीस का ण प्रभु भक्ति निमित्ते करो संगीत आलाप जैनो ॥ जिन० ॥ ५ ॥ इस विध भवसा-गरसें जैनो हंस परे तरो आप जैनो ॥ जिन० ॥ ६ ॥ इति० ॥



## ॥ विपडोद मंडन श्री आदिजिन स्तवन ॥

॥ मनवा नाही विचारीरे थारी मारीकतां उमर विती सारी रे ॥ यह चाल ॥

विपडोदमांही झुहारीरे आदिनाथनी मूर्त्ति मने लागे प्यारीरे ॥ विपडोद० ॥ ए अंचली ॥ राय रंकने ? जाकीनी सब सुखकारीरे । तरणेको भव पाथ पूजत हे नरनारीरे ॥ विपडोद० ॥ १ ॥ बालपणामे लाड लडायो इंद्र इंद्राणीरे। राज्य समय अंगुठो पखाले युगल युगलाणीरे ॥ विपडोद० ॥ २ ॥ दीक्षा लिधी राज्य रिधि तीरीया त्यागीरे । बारमास निराहार रहे प्रभु बहोत विरागी रे ॥ विपडोद० ॥ ३ ॥ खडे खडे केवल ज्ञान पाके माता तारीरे । पुंडरीक गिरिनामकारकतस पुंडरीकगण धारीरे ॥ विपडोद० ॥ ४ ॥ अष्टापद पर मोक्ष सधाये कर्म कापीरे । भरत नरप

पण मोक्ष गये वहां तीर्थ थापारे ॥ वि-पडो-० ॥ ५ ॥ मूर्त्तिरुपे रह्या प्रभुजी विपडोदमांहीरे । हंस कहे मे देव देखा ऐसा नाही रे ॥ विपडोद० ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ रतलाम मंडन श्री सुमति जिन स्तवन ॥

॥ चाली भजनीयानी ॥

सुमतिने धारीरे कुमति निवारीरे सु-मति जिन सेवीये होजी । नहि सेवो तो होसे तुमारा बे हाल ऋद्धि सिद्धि होय सवी पायमाल सुमति कुमति सुमति० ॥ ए आंकणी ॥

॥ साखी ॥

हाथ जोडी अर्जी करो नमन करो धरी ख्याल ॥ भक्ति निर्भर अंगसे सेवो होइ उजमाल ॥

प्यारा मारा प्रभु हे परम दयाल ।
प्यारा मारा प्रभु जगतप्रतपाल ॥

प्यारा मारा प्रभु हंस [illegible]चाल ।
प्यारा मारा प्रभु कनककांति भाल ॥
[illegible]माते ॥ कुमति ॥ सुमति० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

मदन दहनमे नीर हे जलधि सम गंभीर ॥ दंभ भू भेदनसीरहे मेरू परे प्रभु धीर ॥

प्यारा मारा नाथ निरंजन देव ।
प्यारा मारा नाथकी करी नित्य सेव ॥
प्यारा मारा नाथ नमन धर टेव ।
प्यारा मारा नाथ हृदयमें ठेव ॥
सुमति ॥ कुमति ॥ सुमति० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

विषयविकार निवारक कर्मवल्ली कुठार ॥
नमन करे [illegible]रनर पति प्रभुको वारंवा[illegible] ॥

प्यारा मारा देव नहि दुःखदाय ।
प्यारा मारा देवसें सदा सुख थाय ॥
प्यारा मारा [illegible]वकरे हंस[illegible]ाय ।

प्यारा मारा देव जिनेंद्र कहाय ॥
सुमति ॥ कुमति ॥ सुमति० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

सुख अतुल उदार हे जिसका अपार ॥
भवसमुद्रसें जीवको ए प्रभु तारण हार ॥
प्यारामारा जिनव जग जयकार ।
प्यारामारा जिनवर करे उपगार ॥
प्यारा मारा जिनवर जीवन आधार ।
प्यारा मारा जिनवर जगतमें सार ॥
सुमति ॥ कुमति ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

॥ साखी ॥

भरत क्षेत्रकी भुमिमें बोधि बिजबोनार ॥
मुनिगणको मुक्तितणा मार्ग देखाडनार ॥
प्यारा मारा रतलाम सेहेर सुहाय ।
प्यारा मारा चोमासुरही जाय ॥
प्यारा मारा हंस विजय सुखदाय ।
प्यारा मारा सुमति जिनंद गुणगाय ॥
सुमति ॥ कुमति ॥ सुमति० ॥५॥ इति० ॥



## ॥ सेमरिया मंडन श्री शांतिनाथ स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥

॥ मन मगन प्रमेष्ठि ध्यानमें ध्यानमें गुणगण गानमें ॥ यह चाल ॥

सेमरिया शुभ स्थानमें रहो रहो शांतिनाथ ध्यानमें ॥ यह अंचली ॥ ध्यानानलकी धमनसें प्यारे कर्मकाष्ठ द्वदानमें ॥ रहो रहो० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येय अरु ध्यान स्वरूपे लय लावो एक तानमें॥ रहो रहो० ॥ २ ॥ प्राणायाम प्रत्याहारसेति हो जाउं प्रभुके स[illegible]ानमें ॥ रहो रहो० ॥ ३ ॥ गगन गमन करते चार थंभे जैन यतिके स्थानमे ॥ रहो रहो० ॥ ४ ॥ उतरे हूवे देवलमें दीपे घोष सुणाए साकानमें ॥ रहो रहो० ॥ ५ ॥ चार थंभ चोरी परे शोभे मुक्तिकनी कन्या दानमें ॥ रहो रहो० ॥ ६ ॥ दुध

वलमें झरताथा बहु वीर जन्म व्याख्यानमें ॥ रहो रहो० ॥ ७ ॥ कलिकाले अवर्षतहे वहां शंका न प्रत्यक्ष प्रमाणमें ॥ रहो रहो० ॥ ८ ॥ प्रभु पूजी ध्यानमें नित्य रहेना ईसपरे पयःपानमें ॥ रहो रहो० ॥ ९ ॥ इति० ॥

## ॥ जावरा मंडन श्री आदिनाथ स्तवन ॥

॥ दीक्षा प्रभुकी जोवे जग पुण्यवंत प्राणी ॥ यह चाल ॥

दर्शनसें पाप धोवे जावरा निवासी प्राणी ॥ यह अंचली ॥ श्रीनाभीरायनन्दा मुख शोभे पूर्ण चंदा वर्षे अमृतवाणी ॥ जावरा० ॥ दर्शन० ॥ १ ॥ मरु देवी माततारी सुपूतता स्वीकारी बनाइ बहु ज्ञाणी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥ २ ॥ तप जप खप करके निराहार वर्ष फरके किधिथी जो कमाणी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ माता को भेट किनी दिव्य चक्षु तास दिनी

हाथी पे ्इनाणी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥४॥ माता नउर ऐसी मरु देवा मात जैसी ्त्रकी प्रिति पिछाणी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥५॥ शिवपुर प ोची प ेलां निज पुत्र काज व ली देखनमुक्ति पट णी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥ ६ ॥ ्क्तिमें दोनु विराजे सरखी सकल समाजे क्या कहुं में तस कहाणी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥ ७ ॥ जावरामें देवल दीपे तस तेजे तरणी छीपे आयामें ऐसा जाणी ॥ जावरा ॥ दर्शन० ॥८॥ दर्शन प्रभुका पाया वहां हंसे पाप खपाया मूर्त्ति बडी गुणखाणी ॥जावरा ॥ दर्शन०॥९॥इति॥

## ॥ श्रीरिंगणोद[1]मंडनपंचजिन स्तवन॥

॥ गीतभैरवी-ताल-कहरवा-यां-कवाली ॥

॥ अबतो प्रभुजीका लेलोशरण ॥ अथवा—मेरीवेपतंगियाखडाउडा ॥ यह चाल ॥

अबतो उद्धारो मोय चाहिये जिणंद

1 इन्स्पेक्टर साहेब. ॥

२ ॥ यह अंचल ॥ [illegible] बतां देखे, नाथ निरंजन जगदान[illegible] २ ॥ अब० ॥ १ ॥ जग उ[illegible]ारण कारण प्रगटे, रिंगणोदमें प्रभु पंच [illegible]णांद २ ॥ अब० ॥ २ ॥ देवी अंबिका साथ [illegible]हाव, पंचमी गति[illegible]ायक सुखकंद २ ॥ अब० ॥३॥ संवत् गुण्णीसो बहतर वर्षे, सातम वैशाखवदि दिलको पसंद २ ॥ अब० ॥४॥ नापित प्रजापतिके घरपासे, प्रगटभये देख दुनिया हसंद २ ॥ अब० ॥ ५ ॥ मल्हारराव महाराज राज्यमें, प्रगट होके करदिया आनंद २ ॥ अब० ॥ ६ ॥ खासे साहेब और दत्तात्रय साहेब, नमन करी मदद देना कहंद २ ॥ अब० ॥ ७ ॥ राज्यप्रजामें आनंद फेलाया, मोर कों मेघ जैसे चकवाकों चन्द २ ॥ अब० ॥ ८ ॥ दुख दारिद्र प्रभुनामसें नेडे–नावे जावे झट लगेला झंद २ ॥ अब० ॥ ९ ॥ भूत

पिशाच पलाय पलकमें, दुर्गतिके होय दरवाजे बन्द २ ॥ अब० ॥ १० ॥ रोग शोक भयत्रास न आवे, जो गावे तुम गुण गणछंद २ ॥ अब० ॥ ११ ॥ वैर विरोध नशे जटपटमें, फावे तैसा किया होवे जो फन्द २ ॥ अब० ॥ १२ ॥ देश देशांतरसें संघ आवे, यात्रा निमित्त धरी हर्ष अमंद २ ॥ अब० ॥ १३ ॥ न्हवन पूजनसें अर्ज गुजारे, आके यहां नरनारी के वृन्द २ अब० ॥ १४ ॥ लक्ष्मीविजय गुरुराज पसाये, हंस ग्रहे तुम गुण मकरंद २ ॥ अब० ॥ १५ ॥

## ॥ दशपुर मंडन श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ ऋषभ प्रभु भवजल पार उतार ॥ यह चाल ॥

प्रथम प्रभु प्रणमु वांवार प्रथम प्रभु ॥ ए अंचली ॥ पुण्य पुंज परिपूरेत प्रभुजी कर पारावार पार ॥ प्रथम० ॥ १ ॥

पाप पटल परिपेषण प्रभु तुं पवित्र परम आधार ॥ प्रथम० ॥ २ ॥ परम पुरुष पूजित प्राण प्यारा प्रमपाश हरनार ॥ प्रथम० ॥ ३ ॥ अप्रतिबद्ध प्रवाससें प्रथवी पावनके करनार ॥ प्रथम० ॥ ४ ॥ परिग्रह परित्याग तथापि प्राणी प्राण दातार ॥ प्रथम० ॥ ५ ॥ दशपुर मंदसोर में मेरु परे देवल दीपे अपार ॥ प्रथम० ॥६॥ प्रभुपद पद्ममें हंस रमण करे प्रति प्रभात धरी प्यार ॥ प्रथम० ॥ ७ ॥ इति० ॥

## ॥ परतापघढ मंडन श्री सुमति जिन स्तवन ॥

॥ धन धन वो जगमें नरनार विमला चलके जानेवाले ॥ यह चाल ॥

जयजय सुमति नाथ महाराज शुभ सुमतिके देनेवाले ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महिधर महाराज निज आत्म सुधारण काज तुम स्नात्र करे सुरराज ताप संताप

मिटानेवाले ॥ जय० २ ॥ १ ॥ संसार समुद्र अपार जगदीश्वर पार उतार रखो रक्षणके करना पार झटपट लंघानेवाले ॥ जय० २ ॥ २ ॥ में दिन हुं आपदयाल करो मेरा प्रभु कुछ ख्याल निर्धनको कर दिये न्हाल दानवार्षिकके देनेवाले ॥ जय० २ ॥ ३ ॥ हितकर पिताके समान मातापरे अमृतदान द्यो सदा करु गुण-गान मानमद मर्दन करनेवाले ॥ जय०२ ॥ ४ ॥ श्री प्रताप घढमें सार बगीचाके बिच मनोहार तुम देवल अति ही उदार हंस सम भवोदधि तरनेवाले ॥ जय० २ ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ अरनोद मंडन श्री आदि जिन स्तवन ॥

॥ राग इमण कल्याण ताल केहरवा ॥

॥ तीरथ जग जयकाररे भवि भेटो प्रभुको ॥ यह चाल ॥

आदीश्वर भगवानरे तारो तारो सेव-

कने ॥ ए अंचली ॥ पूज्य आप प्रभुमें कर्म कर हुं पृथ्वी पावन करनाररे ॥ तारो २ ॥ आदी० ॥ १ ॥ स्वामी सर्वना अंत जामी विश्व विलाकन .ाररे ॥ तारो०२ ॥ २ ॥ देव देव तुं दिनदयाल दुःख दव दहनमें वाररे ॥ तारो० २ ॥ ३ ॥ संवत उगणीसों इकोतरे वसंत ऋतु रसालरे ॥ तारो० २ ॥ ४ ॥ फागण मासका कृष्ण पक्षमें लक्षण विजयने साररे ॥ तारो० २ ॥ ५ ॥ बडी दीक्षा लिनी इहां आके एकादशी बुधवाररे ॥ तारो० २ ॥ ६ ॥ अरनोद मंडन आदिनाथ प्रभु करो विनति स्वीकाररे ॥ तारो० २ ॥ ७ ॥ भक्ति विनयसें अर्ज करत हुं सेवककी लियो साररे ॥ तारो० २ ॥ ८ ॥ हंस कहे कर जोडी स्वामी भवोदधि पार उताररे ॥ तारो० २ ॥ ९ ॥ इति० ॥

## ॥ वहीगाम मंडन श्री पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ गिरिराज दर्शपावे जग पुण्यवंत प्राणी ॥ यह चाल॥

श्रीपार्श्व गुणखाणी वही गाममांहे जाणी ॥ ए आंकणी ॥ आयामें दर्श करवा निज पाप पूंज हरवा देखा अनंतनाणी ॥ श्रीपार्श्व० ॥ १ ॥ महितलमांहे मोटा महिमा नहि हे छोटा धन्य धन्य जिनवाणी ॥ श्रीपार्श्व० ॥ २ ॥ चिंताचक चूर करता चिंतामणिको वरता चाहेकाचकोण प्राणी ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ३ ॥ प्रतिमा प्रभुकी पामी पूजामे राखे खामी कोडी न पामे काणी ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ४ ॥ योगी कमठ आया धुणीमें नाग जलाया पाया नवकार पाणी ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ५ ॥ धरणेंद्र पदधारी हुवा पार्श्व सेवाकारी वरी इंद्र थइ इंद्राणी ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ६ ॥ कहे

हंस कर जोडी प्रभु आगे मान मोडी तारो तारो हाथ ताणी ॥ श्रीपार्श्व०॥७॥ इति०॥

## ॥ नारायणघढ मंडन श्री जिनभुवन स्तवन ॥

॥ चाल चालने कुमर चाल थारी चाल ॥ यह चाल ॥

वारंवार कहुं मानवीरा मान हवेरे २ प्रभुदर्शविना सरस तेरा प्राण चवेरे २ ॥ वारंवार ॥ १ ॥ भजन भक्तितजी युक्तिसजी गाल लवेरे २ वोह जाण जन्म मरण करनार भवेरे २ ॥ वारंवार ॥ २ ॥ नारायण घढमांहे देवल दोय ठवेरे २ आदिनाथ पार्श्वनाथ पूजन काज जवेरे२॥ वारंवार ॥ ३ ॥ कहे हंस क्रुर कर्म पास नावे नवेरे २ कर जापतेरे पाप क्षय जाय सवेरे ॥ वारंवार० ॥ ४ ॥ इति० ॥



# ॥ छोटी सादरी मंडन श्री ऋषभदेव स्तवन ॥

॥ राग कव्वाली ॥

॥ गुणी श्री ऋषभ देवदर्शन छोटी सादरीमे कर भावे २ ॥ ए अंचली ॥ देवलमें जाना दिल ध्यावे तुरत उपवास फल पावे २ खडा जब आप हो जावे बेलेका फल ज्ञानी गावे २॥ गुणी० ॥ १ ॥ उद्यत जब होय जानेको अठम तप धारी बन जावे २ श्रद्धासें मार्गमे चलते चोलाधर चतुर दर्शावे २॥ गुणी०॥ २ ॥ देवलके द्वार दर्शनमें पांच उपवास फल पावे २ मध्यमे जाय जब प्राणी पक्ष तपमें तदा ठावे २ ॥ गुणी० ॥ ३ ॥ दर्शन कर देव देवनका हर्ष हैडे नज समावे २ मास उपवास फलधारी उत्तम नरनारी कहलावे २ ॥ गुणी० ॥ ४ ॥ फल आचार

उपदेशक गणी चारित्र ... २ हंस यह फल दर्शनका निरंतर भावसें चा..व २॥ गुणी० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ अथ श्रीसिद्धचक्र म..राज स्तवन ॥

॥ सेवोजी तुमें नवपद जग..तकारी। सब आल जंजाल निवारी ॥ सेवो० ॥ ए आंकणी ॥ देवगुरू ने धर्मतत्व हे । इनमें सवि सुखकारी ॥ देव तत्व अरिहंत सिद्ध हे । परमानंद पदधारी ॥ सेवोजी० ॥ १ ॥ आचारज पाठकने साधु । गुरुतत्वे मनोहारी ॥ दर्शन ज्ञानने चारित्र तप हे, धर्मतत्वमझारी ॥ सेवोजी० ॥ २ ॥ राज श्रीपाल राणी मयणा दोय । कर्मकलंक निवारी ॥ विधियोगें आराधन करके । हुवे इनपद अधिकारी ॥ सेवोजी० ॥ ३ ॥ इनका कथन श्रीपाल चरित्रे । बो..त किया हे भारी ॥ उस विधसें आराधन

करशे, सो लेहशे भवपारी ॥ सेवोजी० ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमें प्रथम एही हे, सिद्धचक्र जयकारी ॥ अ.निश इनमें रमण करे सो । शिवलक्ष्मी वरे नारी ॥ सेवोजी० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीनवपद् स्तवन ॥

॥ जोबन धन थीर नही रहेनारे ॥ ए देशी ॥

॥ सुरतरू कहेनारे । नवपद्जीको सुरतरू कहेनारे ॥ अंचली ॥ अर्हन्पद हे मूल जीसका । दृढतर बिच लखेला । साखा सिद्ध आचा ज वाचक । साधु गुण संचेला ॥ नव० ॥ १ ॥ बोधि ज्ञान चरण तप सुंद्र । चार प्रशाखा जामे ॥ स्वर अक्षर लब्धि पद आदि । दलभर शोभे तामे ॥ नव० ॥ २ ॥ वरऋद्धि हे छाया जिसकी । गुच्छा गुणगुण तास ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य फळ हे । सद्र उदयो हे जास ॥ नव० ॥ ३ ॥ ग्रह दिक्पाल

च-क्सरी देवी । विमलेशादिक देवो ॥ फूल प्रकर ए सुंदर यामें । महिमा देखो केवो ॥ नव० ॥ ४ ॥ गंधनिकर सौभाग्य प्रेयता । इत्यादिक गुणवालो ॥ कल्पतरू ए वांछित पुरे । सिद्धचक्र भवी भालो ॥ नव० ॥ ५ ॥ जैनागम नंदन वनमांहि । ऐसा सुरतरु देखा ॥ हंस हमारा यह पद पावे । तो नवि रहेवे लेखा ॥ नव० ॥ ६ ॥

## ॥ श्री चंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

॥ आंखियां चंद्रप्रभजीसें आज लगी । आज लगी प्रभु आज लगी ॥ आं० ॥१॥ चंद्रप्रभ श्रीधर्मजिनेश्वर । चोमुखकी चित्त चाह चली ॥ आं० ॥ १ ॥ आरिसाभुवनमें सोहे जिनवर । आसपास सिद्धचक्र मली ॥ आं० ॥ २ ॥ तीन छत्र शिर उपर सोहे । गलबिच हेमकी माल भली ॥ आं० ॥ ३ ॥ धातुमयी प्रभु बिंब बिराजे । दोष अढार रहित वली ॥ आं० ॥ ४ ॥

आनंदगुरुने लक्ष्मी विजयका । हंस कहे मुज आश फली ॥ आं० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री केसरीनाथ स्तवन ॥

॥ विमलाचल नितु वंदियें ॥ ए देशी ॥

केसरीया नितु वंदियें कीजे एहनुं ध्यान ॥ पार उतारे भवतणा । करतां गुण गान ॥ केसरी० ॥ १ ॥ संघ ते देश विदेशना । आवे यात्राने काज ॥ पूजे केसरथी बहु । मली मोटा समाज ॥ केसरी० ॥ २ ॥ श्यामली मूर्त्ति शोभती । लागे मुज मन प्यारी ॥ देखतां दुर्गति टले । हैये आनंदकारी ॥ केसरी० ॥ ३ ॥ इति० ॥

## ॥ धुलेवा मंडन श्री केसरीयानाथ स्तवन ॥

॥ गावोजी आज वधाइया यह चाल ॥

पूजो पूजो केसरीयानाथजी । पूजो पूजो प्रथम श्रीऋषभदेव भगवान् ॥ के-

सरी० ॥ १ ॥ पूजो पूजो श्रीधूलेवाधणी। पूजो पूजो केसरका कीच करी बहुमान ॥ केसरी० ॥ २ ॥ पूजो पूजो प्रेमधरी करी। पूजो पूजो गुणीजन गाइ गुण गणगान॥ केसरी० ॥ ३ ॥ पूजो पूजो ध्यानारूढको। पूजो पूजो उमंगे सकल सुगुण गुणवान् ॥ केसरी० ॥ ४ ॥ पूजो पूजो आदि देवको। पूजो पूजो पूर्वे पुष्कल दिधु घृत दान् ॥ केसरी० ॥ ५ ॥ पूजो पूजो सुंदर श्याम मूर्त्ति। पूजो पूजो वांछित पूरतिके शुभतान ॥ केसरी० ॥ ६ ॥ पूजो पूजो पाटण निवासीके। पूजो पूजो संघकी करके परम पहेचान ॥ केसरी० ॥ ७ ॥ पूजो पूजो नगीनचंद भाइकी । पूजो पूजो प्रसन्न बाइ साथ धरी शुभ ध्यान ॥ केसरी० ॥ ८ ॥ पूजो पूजो बतीस साधु साध्वी। पूजो पूजो धरी दिल धर्म धुरंधर ध्यान ॥ केसरी० ॥ ९ ॥

पूजो पूजो उगणीसों सितरे । पूजो पूजो पोस वदी पांचम तजी तोफान ॥ केसरी० ॥ १० ॥ पूजो पूजो विजयानंद सूरिके । पूजो पूजो पाठक श्रीलक्ष्मीविजय गुण खान ॥ केसरी० ॥ ११ ॥ पूजो पूजो हंस परे प्राणीयो । पूजो पूजो प्रभुगीर दुग्ध-का करके पान ॥ केसरी० ॥१२॥ इति० ॥

## ॥ धुलेवा मंडन श्री केसरीयानाथका स्तवन ॥

॥ मारा बंगला उपर खुरसी ॥ ए देशी ॥

चालो चालो केसरीयाजी जइये २ ॥ प्रभु पूजीदे पावन थइयेरे ॥ चालो० २ ॥ १ ॥ प्रभु पूजा द्रव्य भाव भाखी २ महानिसीथ सूत्र छे साखीरे ॥ चालो० २ ॥ २ ॥ कमलपत्रमां जलभरी लावे २ ॥ प्रथम [illegible]गलोयां भले भावेरे ॥ चालो० २ ॥ ३ ॥ इंद्र पूजीत प्रभुने निभाले २ ॥ प्रभु चरण अंगुठडो पखालेरे ॥ चालो० २

॥ ४ ॥ ते प्रभुनी मूर्त्ति बिराजे २ ॥ धू-
लेवाना देवलमां छाजेरे ॥ चालो० २ ॥५॥
केसर कंकावटी करे लइये २ ॥ प्रभु पूज-
वा जिनघरे जइयेरे ॥ चालो० २ ॥ ६ ॥
पुष्पताजां सुगंधी सारां २ ॥ जाणे कामे
कर्यां बाण न्यारांरे ॥ चालो० २ ॥ ७ ॥
वामपासे धूप धाम धरीये २ ॥ जमने
पासे दीपक जई करीयेरे ॥ चालो० २
॥ ८ ॥ अखंड अक्षत स्वस्तिक सारो २ ॥
एतोचउगति चूरण हारोरे ॥ चालो० २
॥ ९ ॥ फल पूजाथी शिव फल लइये २ ॥
संघ साथे प्रभु गुण गाइयेरे ॥ चालो० २
॥ १० ॥ नानाविध नैवेद्‌ने धरीये २ ॥
वेगे निराहारी पद् वरीयेरे ॥ चालो० २
॥ ११ ॥ श्रीविजयानंद सूरिराय २ ॥ पं-
डित लक्ष्मीविजयजी पसायरे ॥ चालो०२
॥ १२ ॥ करी यात्रा हर्ष उमंगे २ ॥ कहे
हंसमे चढते रंगेरे ॥ चालो०२ ॥१३॥इति०॥



# ॥ वनकोडा मंडन श्री चंद्रप्रभु स्तवन ॥

॥ केसरीयाथां सुं प्रीत करीरे साचा भाव सुं ॥ यह चाल ॥

वनकोडा मंडन चंद्रप्रभ प्रभु पूजीये॥ वनको० ॥ यह अंचली ॥ अष्टम प्रभुको सेवीयेरे अष्टमी गती दातार । अष्टम सिद्धी दीयेरे अष्ट मद दूरकाररे ॥ वनको० ॥ १ ॥ अष्ट कर्म रुप काष्टकोरे शुक्ल ध्यानी गुणखान । ध्यानानलसें बालकेरे हुवे सिद्ध भगवान्रे ॥ वनको० ॥ २ ॥ अष्टकर्मके नाशसेंरे भये अष्ट गुणवान् । लोकांते जाकर रहेरे गुण गावे गीर्वाणरे॥ वनको० ॥ ३ ॥ ज्ञानावर्ण अभावसेंरे सर्वज्ञ प्रभु होइ जाय दर्शनावरण वियोगसेंरे केवल दर्शन थायरे ॥ वनको० ॥ ४ ॥ वेदनीय विलयसेंरे अव्याबाधल हंत मोह कर्मके नाशसेंरे । क्षायक सम्य-

क्त्ववंतरे ॥ वनको० ॥ ५ ॥ आयु कर्मके अंतसेंरे अखंड स्थिति हे तास। नाम कर्म निर्नामसेंरे रुपातितहे खासरे ॥ वनको० ॥ ६ ॥ गोत्र कर्मके गमनसेंरे अगुरु लघु अवदात । अंतरायके अंतसेंरे अनंत विर्य ने खातर ॥ वनको० ॥ ७ ॥ संवत् गुणीसों सीतेरेरे शुक्लपक्ष माघमास । एकादशी दिन हंसको दर्शनसें पाप नाशरे ॥ वनको० ॥ ८ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री पार्श्वनाथ जिन दशभव स्तवन ॥

॥ पार्श्वनाथ अवतार हेजी अवतार । भया बनारसमें ॥ तस दस भव अमें वर्णन करशुं । कल्पसूत्र अनुसार ॥ भ०॥ पा० ॥ १ ॥ प्रथम भवे पोतनपुर नगरे । पुरोहित पुत्र सुसार ॥ भ० ॥ धार्मिक मरूभूति तिहां प्रगटयु । नाम भलुं जय-कार ॥ भ० ॥ पा० ॥ २ ॥ समेतशिखर

शैले बीजे भवे[1] इभ भयो बलवान् ॥भ०॥
अरविंद राजऋषिये प्रतिबोध्यो । जाति-
स्मरण हुवो ज्ञान ॥ भ० ॥ पा० ॥३॥ त्रीजे
भवे अष्टमे देवलोके। देव हुवो सुखसा ॥
भ० ॥ तुर्य भवे विद्याधर नामें । किणवेग
भूपाल ॥ भ० ॥ पा० ॥ ४ ॥ कुलक्रमागत
राज्य त्याग के । गुणनिधि हुवो अणगार ॥
भ० ॥ बारमें देवलोक पंचमे भव । छठे
विदेह पधार ॥ भ० ॥ पा० ॥ ५ ॥
वज्रनाभ नामे नरपति तिहां । राजऋषी-
श्वर थाय ॥ भ० ॥ सातमेभव मध्यम
ग्रैवेकें । चक्रि अष्टमें होइ जाय ॥ भ० ॥
पा० ॥ ६ ॥ तृण परें षट्खंडनां सुख
छांडी । प्रांते थयो मुनिराय ॥ भ० ॥
नवमे[2] त्रिदश प्राणत देवलोकें । दशमे
पार्श्वनाथ थाय ॥ भ० ॥ पा० ॥ ७ ॥ अष्ट
कर्मनो नाश करीने । मुक्ति पुरीमां सधाय ॥

---

१ हाथी. २ देवता.

भ०॥ आनंदसूरिने लक्ष्मी मुनिना। विनेय-ने करो उपसाय ॥ भ० ॥ पा० ॥ ८ ॥

## ॥ भावपूजा स्तवन ॥

॥ आनंद आजे आनंद आजे आनंदना दिन आज ॥ ए चाल ॥

शुद्ध आत्मदेवने पूजे, जैनमुनि महाराज भक्ति श्रद्धान रूपी निज काज । केसर श्रीखंड करी भेलांज ॥ नव ब्रह्मांग रूप अंगमांज । पूजन नित्य करे मुनिनो समाज ॥ शु० आ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ क्षमारूप पुष्प लइ ताजांज । वस्त्र युग उभय धर्म रूपनांज ॥ ध्यान आभरण धरी सारांज । पूजननो सजे एम शुभसाज ॥ शु० आ० ॥ २ ॥ अष्ट मद त्याग रूप लिखवांज । अष्ट महामंगल एह नवांज ॥ धूप संकल्प रूप करवाज । हंसपरे भवसागर तरवाज ॥ शु० आ० ॥३॥

## ॥ श्री महावीर जिन पालणु ॥

॥ झुलावे मैया श्याम झुले पालने ॥ ए चाल ॥

॥ झुलावे माइ वीरकुंवर पालने ॥ ए आंकणी ॥ रत्नजडीत सोनेका पालणा । दोरी हरीके झालने० ॥ झुलावे० ॥ १ ॥ मणी मोतियनके झुंबखे निके । घुंघरी घमकारने० ॥ झुलावे० ॥ २ ॥ रत्नदाम श्रीदाम गंडक पर । करे प्रभुजी ख्यालने० ॥ झुलावे० ॥ ३ ॥ मेना मोर शुक सारस सुंदर । हर्षे कुमर भालने० ॥ झुलावे० ॥ ४ ॥ छपन्नदिक् कुमरी उल्हरावे । बजाय बजाय तालने० ॥ झुलावे० ॥ ५ ॥ त्रीसलामाता आनंदित होवे । निरख निरख बालने० ॥ झुलावे० ॥ ६ ॥ हंस कहे प्रभु पालणे पोढे । जाणे जगत चालने० ॥ झुलावे० ॥ ७ ॥ इति० ॥



## ॥ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ श्री सिद्धाचल भेटवा । मुझ मन अधिक उमाह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री सीमंधर साहेबा । अवधारोने स्वामी ॥ अरज करूं तुम आगले । प्रभु शिवगतिगामी ॥ श्री० ॥ १ ॥ हीनपुण्यना जोगथी । तुम दर्शन स्वामी ॥ ते मुझने प्रभु दीजीयें । परहितना कामी ॥ श्री० ॥ २ ॥ दुष्ट धृष्ट पापिष्ट छुं । हुं छेक ‹रामी ॥ तुम विना कुण मुज तारशे । प्रभु अंतरजामी । श्री० ॥ ३ ॥ हुं मागुं छुं एटलुं । साहेब शिरनामी ॥ तुम पद पंकज हंस ज्युं । थाउं हुं वीशरामी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री दीवाली स्तवन ॥

॥ धारणी मनावे रें मेघकुमारने रे ॥ ए देशी ॥

॥ दीवालीने दाहाडे रे वीरप्रभु पामीया रे अनुपम पद निरवाण ॥ तेणें दिन

देवोरे सहु मली एकठा रे । आव्या अ-
पापापुरी ठाण ॥ दी० ॥ १ ॥ तिहां प्रभु-
वीर रे मोक्ष जावाथकी रे । कर्युं पापा-
पुरी नाम ॥ अनुक्रमें आव्या रे नंदीश्वर
गिरि रे । करवा कल्याणना काम ॥ दी०
॥ २ ॥ तेणे दिन काशी रे कोशल देशना
रे । त्यां गणराय अढार ॥ पोसह कर्यो
रे तेणें आहार त्यागनो रे । संसारनो अं-
तकार ॥ दी० ॥ ३ ॥ ते राजाये रे मनमां
चिंतवीरे । भावदीपकनो अभाव ॥ द्रव्य-
दीपक रे त्यां प्रगटाविया रे । थयो दिवाली
प्रभाव ॥ दी० ॥ ४ ॥ तेणे दिन करी रे भवि
दीपमालिका रे। विधि जयणायें जिनद्वार॥
तिमिर मिटावी रे निज आतमतणुं रे ।
करे शिवलक्ष्मी स्वीकार ॥ दी०॥ ५ ॥ इति०॥

## ॥ श्री कदंबगिरि स्तवन ॥

॥ सिद्धगिरि तीर्थपर जानाजी यह चाल ॥

श्री कदंबगिरि चढजानाजी, चढजा-

नाजी, गुणगानाजी ए अंचली ॥ अंतिम अतीत चोवीशीके जीन, संप्रतिनाथ सुजानाजी ॥ श्री ॥ १ ॥ एक दिन कदंब गणेशको ऐसा, करते है फरमानाजी ॥ श्री ॥ २ ॥ कदंबगिरिपर मुक्ति पावोगे, ध्यान धरो सावधानाजी ॥ श्री ॥ ३ ॥ गणपतिने फेर मुनिगण आगे, सुणादिया सब व्याख्यानाजी ॥ श्री ॥ ४ ॥ क्रोड मुनि संग अनशन करके, पाये पद निर्वाणाजी ॥ श्री ॥ ५ ॥ हंस कहे गिरि दर्शन स्पर्शन, करना मुज मन मानाजी ॥ श्री ॥ ६ ॥

## ॥ श्री मेरूगिरि स्तवन ॥

॥ मेरूशिखर न्हवरावेहो सुरपति मे० ॥ यह चाल ॥

मेरू मंदिर मनोहारा हे मानव मे० ॥ ए आंकणी ॥ भद्रशाल वनमें भद्रंकर, चार देवल चितहारा ॥ मेरू० ॥ १ ॥ नंदनवनमें आनंदकारी ॥ और चार चेताला ॥ मेरू० ॥ २ ॥ सुमनस वनमें

शाश्वत सुंदर ॥ चार देवल अति स्फारा ॥ मेरू० ॥ ३ ॥ पांडुक वनमें पाप क्षयंकर ॥ जिनव भुवन हे चारा ॥ मेरू० ॥ ४ ॥ चंचत् चूलिकाके उपर ॥ सतरमा मंदिर हे सारा ॥ मेरू० ॥ ५ ॥ सूरपति स्नात्र करे मेरूपर ॥ जिनव का जयकारा ॥ मेरू० ॥ ६ ॥ ऐसे मेरूकी रचना पर ॥ अट्ठाई महोत्सव उदारा ॥ मेरू० ॥ ७ ॥ भव्य भावनगरीने कराया ॥ भावनगरमें श्रीकारा ॥ मेरू० ॥ ८ ॥ संवत् ओगणीसें पांसठ वर्षे ॥ पोशदशमी कवि[1] वारा ॥ मेरू० ॥ ९ ॥ विजयानंद सूरीश्वर केरा ॥ हंस नमे वारंवारा ॥ मेरू० ॥ १० ॥

## ॥ श्री मल्लिनाथजीनुं स्तवन ॥

प्रकट प्रतापी मल्लिनाथजी, हुं अर्ज गुजारुं जोडी हाथजी ॥ ए आंकणी ॥ अरर उगारो भीडी बाथजी, भवावर्तमां-

---

१ शुक्रवार.

थी दीनानाथजी ॥ प्रकट० ॥ १ ॥ शलभ सम विघ्न सकळ नाशी, प्रदीप परे दीपे नवनो राशि ॥ प्रकट० ॥ २ ॥ महामोह चरटनी थइ हांसी, तुमेतो प्रभु थया जितकाशी ॥ प्रकट० ॥ ३ ॥ तुमारी अनेकांत मुद्रा धरे, लक्ष्मी अखुट नरो ते वरे ॥ प्रकट० ॥ ४ ॥ निरंतर जे जन सेवा करे, भवोदधि हंस परे ते तरे ॥ प्रकट० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ अथ श्री धर्मनाथजिन स्तवन ॥

वारी वारी जाउ ॥ वा० ॥ श्रीधर्मनाथनो मंडप देखी खुशी थाउं ॥ ए आंकणी ॥ देश हालारमां दीपतु छे, शहेर वडुं प्रख्यात ॥ जामनगर सहामणु, त्यां चैत्य बहु विख्यात ॥ वारी० ॥ १ ॥ ते देवलनी छाया रूडी, झगमग झगमग थाय ॥ मंडपमांहे चित्रो रूडां । बहुजनथी वखणाय ॥ वारी० ॥ २ ॥ ते चित्रोमां सिद्धाचलना ।

मटनां शोभा सार ॥ भाव भलेथी भेटिये तो । थाय सफ॰ अवतार ॥ वारी० ॥ ३ ॥ इत्यादिक बहु मंडप रचना । जोवाथीज जणाय ॥ त्यां बेठा श्री धर्मजिनेश्वर । तेमां चित्त तणाय ॥ वारी० ॥ ४ ॥ जे जन ए जिनसेवा करशे । चित्त धरी रंग चोल ॥ प्रभुनो सेवक किन्नर करशे । तेहना वंछित कोड ॥ वारी० ॥ ५ ॥ धर्मजिनेश्वर धर्मके धोरी । धर्मतणा दातार ॥ तस चरणांबुज सेवा चाहे । प्रतिदिन राजमराल वारी०॥६॥

## ॥ अथ द्वितीय श्रीधर्मनाथ स्तवन ॥

॥ त्रिभंगी छंद ॥

श्रीधर्मधुरंधर । धर्मजिनेश्वर । प्रगट प्रभु तुं । परमेश्वर ॥ तुं पूर्ण प्रकाशी । विपद् विनाशी । अज अविनाशी । विश्वेश्वर ॥ मोहराय विनाशी । धरी सुख राशि, ज्ञान विलासी । जगदीश्वर ॥ जय

१ राजहंस.

विभु विख्याता । पद पूजाता । प्रगुणी गणाता । साक्षाता ॥ १ ॥ तुं छे जगस्वामी अंतरजामी । नही कोइ स्वामी । गुण धामी ॥ प्रभु तुम पाय पामी । जेह हरामी, पूजे नहि दुर्गति गामी ॥ तुं परम अकामी । सुखविश्रामी । महिमामां नहि । तुज स्वामी ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रभु जगदाधारा । दुःख हरनारा । सुख करनारा । जन प्यारा ॥ गुण सहुथी सारा, सघला तारा । त्याग नठारा । गुण मारा ॥ जस तुम मत प्यारा । लागे सारा । हंस परे ते तरनारा ॥ ज० ॥ ३ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री कच्छ अंजार जिनालय स्तवन ॥

॥ माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे ॥ ए चाल ॥

चालो चालो चतुरो चरण धरीने चोंपशुं, कच्छ अंजारमां दर्शन करवा काज॥ स्वामी सुपार्श्वनाथने पूजो पूरण प्रेमथी,

पहेला देवलमां छे त्रिभुवन शिरताज ॥ चालो० (२) ॥ १ ॥ बीजा देवलमां शांतिना करनार छे, शांतिनाथ जिनेश्वर सोलमा महाराज ॥ चक्रवर्ति भला भरत भूषण थया, छोडयुं छ खंडनुं स्वामी ए साम्राज्य ॥ चालो० (२) ॥ २ ॥ त्रिजुं देवलछे वासु पूज्य जिणंदनुं ॥ काचे जडी युं ने वली सोनेरी चित्राम ॥ तेमां चवन कल्याणक चौद सुपनसह चितर्युं । जन्म महोच्छव मेरू महिधर साथ तमाम ॥ चालो० (२) ॥ ३ ॥ चितरी चोरी नेमिराजुलनी रळीयामणी, हाथी घोडाने वली रथडाना चित्कार ॥ जुगते जान जादवनी जोवा जेवी छे घणी, बनडे धार्या मोती माणेकना शणगार ॥ चालो० (२) ॥ ४ ॥ तित्तर चकला चकली मोर पोपट ने मरगडा, शसला मृगलादिकनो सुणीने पोकार ॥ नेमिनाथे राजुल छोडी रथडो वा-

लीयो, लिधो सहसावनमां जइ संयम भार ॥ चालो० (२) ॥ ५ ॥ चोथुं कल्याणक समवसरणशुं चितर्युं, पांचमुं मोक्ष कल्याणक मुक्तितणुं दातार ॥ वीर प्रभुना परिसह देखी चितडु थरथरे, पार्श्वनाथ कमठथी न चल्या लगार ॥ चालो० (२) ॥ ६ ॥ बाहुबलि मुनिवर वेलडीये विंटाइ गया, तोपण काउसग ध्याने मेरू परे रह्या थीर ॥ एवां वैराग्य जनक चित्रो छे घणां, जोइ हंस परे लहे वैरागी भवतीर ॥ चालो० (२) ॥ ७ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री भद्रेश्वर मंडन श्रीपार्श्ववीर स्तवन ॥

॥ धार तरवारनी सोहीली दोहीली ॥ ए चाल ॥

स्वच्छ श्री कच्छमां गाम भद्रेसरे, वीरने पार्श्व प्रभु दोय राजे ॥ बावन देव कुलिका कलित देवले, नित्य नोबत तणा

नाद गाजे ॥ स्वच्छ० ॥ १ ॥ शहेर वडोदराथी इहां आवीया, देशपरदेश फरताज फरता ॥ गामने नगर पुर पाटणने विशे, देव दर्शन करताज करता ॥ स्वच्छ० ॥ २ ॥ रण तणा रोझ परे रणमांहे रझलता, प्रजलता तापथी पण समाधे ॥ नद अने नदी परवतनी खीणने, लंघी आव्या हमे निर अबाधे ॥ स्वच्छ० ॥ ३ ॥ दुःख सवी दुर गयां नयन पावन थयां, देव देवलतणा दर्शथातां ॥ पंथ परिश्रम सम्यो भव भ्रमण विरमीओ, ध्वज पताकातणा पवन वाता ॥ स्वच्छ० ॥ ४ ॥ द्रव्य अटवी परे भाव अटवी भविक, लंघवाने करो झट तैयारी ॥ हंस कहे संपदा शाश्वती पामशो, पोहोचशो ज्याहरे परली पारी ॥ स्वच्छ० ॥ ५ ॥ इति० ॥



## ॥ श्री भद्रेश्वर मंडन वीर जिन स्तवन ॥

॥ भेख उतारो राजा भरतरी ॥ ए चाल ॥

वीर जिनेश्वर साहेबा, त्रिशलाउर सरहंसजी ॥ सिद्धार्थ महारायनो, शोभाव्यो शुभ वंशजी ॥ वीर० ॥ १ ॥ आंखडी अंबुज पांखडी, मुख पुनमनो चंदजी । कंबु कंठ मधुर ध्वनि, सांभले सुरनर वृंदजी ॥ वीर० ॥ २ ॥ कोमल कर कमले करी, दिधुं वरसी दानजी ॥ दारिद्र काढी लोकने, कीधा बहु धनवानजी ॥ वीर० ॥ ३ ॥ संयम लइने संचर्या, एकलडा निरधारजी ॥ केवल लइ मुकते गया, पाम्या सुख अपारजी ॥ वीर० ॥ ४ ॥ देव विमान समदेवले, भद्रेश्वरमां सारजी ॥ मूर्त्ति रूपे बिराजीया, हंस नमे वारंवारजी ॥ वीर० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री कच्छ मुद्रा जिनालय स्तवन ॥

॥ चंद्र प्रभुजीसें लालरे मोरी लागि लगनवा ॥ ए चाल ॥

मुद्रामां बहु मानथी, चालो दर्शन करवा ॥ ए आंकणी ॥ दर्शनथी दुरित दूर होवे ( २ ) वंदनथी वांछीतरे ॥ चालो दर्श० ॥ १ ॥ पूजाथी पूरक लक्ष्मीना (२) राखी पूर्ण प्रतीतरे ॥ चालो० ॥ २ ॥ चौ-गति चूरे चार देवल तीहां (२) स्थिर करी चंचल चीत्तरे ॥ चालो० ॥ ३ ॥ बे देवल-मां पार्श्व प्रभु छे (२) त्रिंजे सिंहअंकित रे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ चोथे शीतल नाथ जुहारी (२) गावो सुंदर गीतरे ॥ चालो० ॥ ५ ॥ हंस कहे अहनिश दर्शनसें (२) प्रसन्नता रहे नित्यरे ॥ चालो०॥५॥ इति० ॥



१ महावीरस्वामी.

## ॥ श्री कच्छ खाखर मंडन आदिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ हंसगया परदेश बिटोडेकुंकयुं झुरते भाइ ॥ ए चाल ॥

भरोसो भगवतनो भाई, कच्छखाखरमां आदिनाथ जिन पूजे तुमे जाई ॥ ए आंकणी ॥ पूजाथी आतंक न आवे, दारिद्र दुर थाई ॥ दुर्गति दूर पलाय पलकमां, उदय पासठाइरे ॥ भरोसो० ॥ १ ॥ देवलोक घर आंगणुने, विपद्जाय अंजाइ ॥ पुण्य प्रबल पामे ते प्राणी, लक्ष्मी आवे धाइ रे ॥ भरोसो० ॥ २ ॥ रोग शोक सरके सघला वली, सुभाग्य होय सहाइ ॥ करतल कोडे शीवसुख लोटे, शत्रु जाय संताइरे ॥ भरोसो० ॥ ३ ॥ प्रिति नवपल्लवता पामे, यश जाय विस्तराइ, कर्म कलंक कटे कंटाली, पाप जाय लोपाइरे ॥ भरोसो० ॥ ४ ॥ श्रद्धाथी सेवा

नित्य करतां, संसार जाय तराइ ॥ हंस कहे ते भवजल तरसे, पूजक भाइ बाइरे ॥ भरोसो० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री कच्छ मांडवी जिनालय स्तवन ॥

मुजे छोड चला वणझारा ॥ ए चाल ॥

तुम दर्शन करो नरनारी, कच्छ मांडवीमां मनोहारी ॥ ए अंचली ॥ प्रभु पार्श्वनाथ उपगारी, नाग उपर करुणा कारीरे ॥ तस प्रथम देवल दिलदारी ॥ कच्छ० ॥ १ ॥ बिजा देवलमां बीराजे, शीतल जिन शीतल काजरे ॥ जस नाममां खुबी बहु सारी ॥ कच्छ० ॥ २ ॥ जो प्रथम अक्षर उवेखुं, तो जलधिमां नवि देखुंरे ॥ बिजे वर्जे बलिहारी ॥ कच्छ० ॥ ॥ ३ ॥ जो त्रिजे वर्ण परिहरीये, तो कंपकारी अर्थ करीयेरे ॥ एवा नामनी जाउं हुं वारी ॥ कच्छ० ॥ ४ ॥ जुवो तिजुं देवल

घणुं सारु, धर्मनाथ तणुं आतचारे ॥ दर्शनथी दुरित हारी ॥ कच्छ० ॥ ५ ॥ चोथु शांति जिन केरुं, शोभे सुंदर जेम मेरुरे ॥ मूर्ति कांचन छबी धारी ॥ कच्छ० ॥ ६ ॥ दादावाडी जइ मालो पांचमा देवलने निहालोर ॥ तिहां पार्श्व प्रभु सुखकारी ॥ कच्छ० ॥ ७ ॥ छठ्ठु सोनेरी शोभे, काच कामथी चीतडुं लोभेरे ॥ छबी शोभे छे तस न्यारी ॥ कच्छ० ॥ ८ ॥ ते रिया काठे रंगे, जुवो झाज जेवुं मन चंगेरे ॥ तेमां अजितनाथ दिये तारी ॥ कच्छ० ॥ ९ ॥ रुडी ओ निहाली, भणो ज्ञान तुमे भाग्यशालीरे ॥ निज हंस लहे भवपारी ॥ कच्छ० ॥ १० ॥ इति० ॥

## ॥ घृतकल्लोल पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ धन्य धन्य दिवस ने धन्य घडि छे आजे, आव्या आत्मारामजी देशना देवा काजे ॥ ए चाल ॥

सेवो सेवो सकल सुख काज, सुगुण

नर आज श्रीमत् ·तकल्लाल पार्श्वनाथ म·ाराज ॥ सेवो० ॥ १ ॥ शशिसम सुंदर शोभे मुखकंज प्र· जानुं, हीरा· तिलक जस भाल पद्दमां लीनुं ॥ सेवो० ॥ २ ॥ चक्षु पण हीरा जडित जुवो ·जनजीनां, मानु तेजथी दिसे क·णा रसमां भीनां ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ त्रण छत्र त्रिभुवन नाथपणुं सुचवतां, मेघमाली तणी वृष्टिनो जय उजवतां ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ सोनानां छत्र श्रीकार शिरपर जेना, भवताप हरे दर्शन पूजन करे तेना ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ छडीदार उभा छे द्वार पास रुपाना, चांदीना चाम धार धरे धूपधाना ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ बा·ाव देवलनी कोरणीदार आरसनी, मानु जीव लोखंड सम सोनु करण पारसनी ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ देवल कच्छसुथरीमां सोनेरी तेवुं ॥ देवलोकनी अंदर देवविमानना जेवुं ॥ सेवो० ॥ ८ ॥

ते बिलोरीकाचथी जडीयुं देवल झलके, हंस सम उज्वल मुख दर्शनकारनुं चलके ॥ सेवो० ॥ ९ ॥ इति० ॥

## ॥ कच्छभुज जिनालय स्तवन ॥

॥ नमिए नमावी शिर प्रथम जिणंदा ॥ ए देशी ॥

भजीये भुजमां जाइ, भविजन वृंदा, भविजन वृंदा भला भविजन वृंदा ॥ ए आंकणी ॥ त्रिभुवन हितकारी, त्रिवेणी समना तारी ॥ त्रिदेवल सुखका ी, कटे कर्मकंदा ॥ भजी० ॥ १ ॥ भवदव जलधर, जय जय जिनवर ॥ धोरी लांछनधर, मरुदेवी नंदा ॥ भजी० ॥ २ ॥ मदन विदलन, शशिसम वदन ॥ सारंग सुलांछन, शांतिजिणंदा ॥ भजी० ॥ ३ ॥ चिंतामणि पास आश, पुरेछे तमाम खास ॥ हंस छे प्रभुनो दास, स्तवन करंदा ॥ भजी० ॥ ४ ॥

## ॥ श्री बुराणपुर मंडन जिनभुवन स्तवन ॥

॥ धीरे चालो मारा नेमि गिरनार धीरे चालो ॥ मारा नेमि ॥ ए चाल ॥

धीरे चालो धरी प्यार जिनद्वार । धीरे चालो धरी प्यार ॥ ए आंकणी ॥ बुराणपुरना नव देवलने (२) हैडे राखो धरी हार जेम सार ॥ धीरे० ॥ १ ॥ श्री सीमंधर जिन पेहेला मंदिरमें (२) वाणि अमृत रसाल दातार ॥ धीरे० ॥ २ ॥ बिजे त्रिजे प्रभु शांतिजिनेश्वर (२) शांति फेलावन हार अति फार ॥ धीरे० ॥ ३ ॥ चोथे चिंतामणि पासप्रभुजी (२) पांचमे श्रेयांस जिनेश श्रेयकार ॥ धीरे० ॥ ४ ॥ छठे गोडी पार्श्वनाथ जिनेश्वर (२) सातमें आदिनाथ देव दिलधार ॥ धीरे० ॥ ५ ॥ आठमें अरिष्ट नेमिनाथ नमीने (२) नवमें नमीये चंद्रप्रभ वारंवार ॥ धीरे०

॥ ६ ॥ विजयानंद सूरीश्वर केरी (२) मूर्त्ति दिसे तिहां झाकझमाल ॥ धीरे० ॥७॥ लक्ष्मीविजय गुरु चरणकमळमां (२) भमर परे नमो थइ उजमाळ ॥ धीरे०॥८॥ धीरे चालतां कांटो न वागे (२) पग नवी ख डाय ल्यार ॥ धीरे० ॥ ९ ॥ दया पले ने जीव बचे बहु (२) हंसगति कहेवाय नरनार ॥ धीरे० ॥ १० ॥ इति० ॥

## ॥ श्री सौभाग्यपञ्चमी तप स्तवन ॥

॥ सेवो सेवो सकल सुख काज सुगुणनर आज ॥
॥ ए लावणीनी चाल ॥

पालो पालो पंचमी तप पंच वर्ष पंचमास पंचज्ञान स॰ित पंचमी गति पामवा खास० ॥ पालो० ॥१॥ पंचमी आराधनथी पंचज्ञान नी शुद्धि ॥ पंचा चारे वलि थाय धीरता बुद्धि ॥ पालो० ॥ २ ॥ वरदत्तादिवृतांत घणा छे तांहि ॥ सुणो भविष्यदत्त संबंध तथापि उच्छाहि ॥ पालो०

॥ ३ ॥ कुरु मंडलमां गुरु शेहेर हस्तिनागपुर सारुं ॥ थया शांति कुंथु अर तीर्थंकर चक्रधारुं ॥ पालो० ॥ ४ ॥ तिहां चंद्रप्रभ तीर्थंकर तीर्थमां सारां ॥ श्रेष्ठी धनपति ठाणी कमल श्रीप्यारां ॥ पालो० ॥ ५ ॥ सिंह अने भविष्य भाषी मुनि स्वप्नथी सारो ॥ थयो भविष्यदत्तसुत राजाने पण प्यारो ॥ पालो० ॥ ६ ॥ तस बांधव बुंधुदत्त नाम नठारो ॥ रूपवत्तामातथी थयो कुल कुठारो ॥ पालो० ॥ ७ ॥ साथे बे बांधव द्वीपांतर सधावे ॥ वनमां वृद्धमुकी लघुस साथ पलावे ॥ पालो० ॥ ८ ॥ हवे भविष्य दत्तनो भविष्य उपर आधार ॥ सिंहादि भयानक वनमां गणे नवकार ॥ पालो० ॥ ९ ॥ फरतां फरतां एक नगर नजरमों आवे ॥ धन धान्य थी पूर्ण छतां कोइ जन न दिखावे ॥ पालो० ॥ १० ॥ ते शून्य नगरमां फरतां देवल

दिठुं ॥ श्री चंद्र प्रभ जिनदर्शन लाग्युं मीठुं ॥ पालो० ॥ ११ ॥ नमी पूजी स्तुती करी बाहार जइ सुतो ॥ बार मे देवलोके धर्म मित्र तस हुतो ॥ पालो० ॥ १२ ॥ ते यशोधर केवलीने पूछीने आवे ॥ श्री चं-द्रप्रभ जिनचरणे शिर नमावे ॥ पालो० ॥१३॥ निद्रानो छेद न थाय एम विचारी ॥ भींते अक्षर पंक्ति लखी दिधी सारी ॥ पालो० ॥ १४ ॥ तस रक्षा मांणि भद्र-यक्षने भलावी ॥ सुर स्वस्थाने पहोचो शुभभावना भावी ॥ पालो० ॥ १५ ॥ निद्राछेद अक्षर पंक्ति अनुसार॥गयो कनक मेहेलमां भविष्य दत्त कुमार ॥ पालो० ॥ १६ ॥ ते शून्य मेहेलमां कन्या एको की जोई ॥ पुछ्युं आ शेहरमां केम न देखे कोई ॥ पालो० ॥ १७ ॥ कन्या कहे राक्षसे करी नगर मां मारी ॥ जीवती राखी भवदत्ततणी हुं कुमारी ॥ पालो० ॥ १८ ॥

तेटलामां आव्यो राक्षस महा विकराल॥ श्रेष्ठी सुत सामे थयो काढी करवाल ॥ पालो० ॥ १९ ॥ अवधिज्ञाने मुज उपगारीछे जांणी ॥ राज्य आपी भविष्यानु रूपा करी तसराणी ॥ पालो० ॥ २० ॥ रायराणी तिलक द्विपमां राज्य करेछे ॥ हंसपरे चंद्रप्रभ चरण कमलमां ठरेछे० ॥ पालो० ॥ २१ ॥ इति० ॥

## ॥ ढाल बीजी ॥

॥ आवो आवो जशोदाना कंतह अम घर आवोरे ॥
॥ ए देशी ॥

देखोदेखो पंचमीनो प्रभाव प्रेमथी प्राणीरे जेथी पुत्र विजोग पलाय थाय सुख खाणीरे माता कमल श्री चिंते एम पुत्र न आव्योरे-बार वर्ष थया कोइ क्षेम पत्र न लाव्योरे ॥ देखो० ॥ १ ॥ रुदती सुदती आक्रंद करती निवारीरे श्रुतदेवि समा सुव्रता साध्वी ए ठारीरे, ॥ कहे शेठाणी

पुत्र वियोग कहो केम जावेरे, गुरुणी कहे पंचमी थी सकल सुख थावेरे, ॥ देखो० ॥ २ ॥ चोथने दिन एकासणु करी शील पालोरे ॥ उपवासे प्रभुपुजी पांचम उजवालोरे ॥ छठनेदिनदेइगुरुदान एकासणु करीयेरे मत्सर मुकी भवसागर पार उतरीयेरे ॥ देखो० ॥ ३ ॥ गुरु पंचमी तप पंच वर्ष पंच मास जाणरे, पंच पक्षे थाय व्रतपुरु शास्त्रथी वखाणुरे, ॥ जो शक्ति न होय तो भक्ति सहित तप कीजेरे लघु पंचमीव्रत पंच मास करी सुख लिजेरे ॥ देखो० ॥ ४ ॥ सुव्रता वचनथी पंचमी तपस्वी कार्योरे ॥ तससाथी देव गुरु वंदी प्रश्न उच्चार्योरे ॥ मम पुत्र प्रदेशथी आवशेके न स्वामीरे ॥ ज्ञान तणा तुमे भंडार नथी कांइ खामीरे ॥ देखो० ॥ ५ ॥ मुनिभाषे प्रदेशमां तारो पुत्र छे राजारे ॥ इहां अर्धराज्यने पामशे पुण्य छे ताजारे ॥

एवुं तत्वज्ञानीनु वचन सुणीने उल्लसतीरे ॥ दीनने नित्य देती दान सुखेते वसतीरे ॥ देखो० २ ॥ ६ ॥ एक दिन भविष्यानुरुपा कहे सुणो स्वामीरे संभलावो निज वृत्तांत कहुं शिर नामीरे ॥ तव भविष्य दत्ते करी वात पोतानी वीतीरे विरहे पिडातीमात उपर थइ प्रितीरे ॥ देखो० २ ॥ ७ ॥ जाय मलवा मातने समुद्र तटे-राणी साथेरे सिंधुए मोतिडे वधाव्यो तरंगरुप हाथेरे ॥ बुरा बंधु दत्तना वहाण आव्यां बुरा हालेरे भीखारीवेषे आवता बंधवने निभालेरे ॥ देखो० २ ॥ ८ ॥ वस्त्र भूषणादिकथी पोता समो कर्यो तेणेरे-कहे राणी भरोसो न करीए द्रोहकर्यो जेणेरे ॥ तथापि वहाणमां वेगे सरलतस संगेरे, नाममुद्रा झाडतले भुली भामिनी ते मंगेरे ॥ देखो० २ ॥ ९ ॥ गयो लेवा भविष्यदत्त एकलडो तत्का-

लरे, वहाण हंकारीदिधां दुष्टे मुकी नही चालरे ॥ वली भविष्यदत्त थयो एकलडो निराधाररे, राणीरुवे जुवेने घणाकरे पोकाररे ॥ देखो० २ ॥ १० ॥ भाभी पासे भडवापरे आव्यो भामटो भलवारे, सती कहे नथी देवर सूवरसमे । तुं छे छलवारे ॥ आवेला ए वहाणमां थयो घणो उत्पातरे वाहणवटीआ खमावे सतीने थइ सुख सातरे ॥ देखो० २ ॥ ११ ॥ माणिभद्र विमाने बेसाडी भविष्यने लावेरे, निज माताना चरण कमलमां शिर नमावेरे ॥ भूपाले सुमित्रा पुत्री तिहां प णावीरे, अर्ध राज्य आपीने प्रीतिपूर्ण जणावीरे ॥ देखो० २ ॥ १२ ॥ बंधुदत्त बांधी मंगावी भविष्या अपावेरे वियोग तणां दुःख धर्म पसाये खपावेरे ॥ राजाए बंधुदत्त मारवा हुकम कीधोरे, पण वृधे राजाने मनावी छोडावी दिधोरे ॥ देखो० २

॥ १३ ॥ तथापि राजा तसमात साथ निहालरे, निज देशथकी परदेश अनीति न चालेरे ॥ माताकमल श्री विघ्न विलय थयां एम विचारेरे, पंचमी तपनो ए प्रभाव प्रेमे उच्चारेरे ॥ देखो० २ ॥१४॥ हवे उजमणे पांच चैत्य नवा निपजावेरे, पंचवणी प्रतिमा पांच तिहां पधरावेरे ॥ इत्यादिक बहु विस्तार उजमणा केरोरे, करी अनुमोदनानी साथ टाले भव फेरोरे ॥ देखो० २ ॥ १५ ॥ भविष्यदत्ते भलावीराज्यपुत्रने मोटुंरे, लीधि दीक्षा जाणी संसार सुखसवी खोटुंरे ॥ पेहेली प्रिया अने मात साथ प्रव्रज्या पालीरे दशमे स्वर्गें थया देव त्रणे भाग्य शालीरे० ॥ देखो० २ ॥ १६ ॥ त्यांथी चवी मातानो जीव थयो चक्रवर्तीरे, वसुंधर नामे धरापाल फोज तस फरतीरे ॥ भविष्यानुरूपानो जीव थयो तस बेटोरे, नंदिवर्धन

नामे कुमार जेवो वड तेटोरे ॥ देखो० २ ॥ १७ ॥ श्री भावेष्य· त्तनो जीव थयो लघुभ्रातारे, श्रीवर्धननामे कुमार जीव·ो त्रातारे ॥ चक्रवर्ती अने बे पुत्रोए दीक्षा पालीरे, केवली थई मोक्षमां गया ज्यां नित्य दीवालीरे ॥ देखो० २ ॥ १८ ॥ श्री विजयानंदसूरि राज थया भाग्यशालीरे जेनुं वचन जगतमां गवा॰ घणुं टंक शालीरे ॥ तस प्रथम शिष्य श्रीलक्ष्मी विजय गुरु मलीयारे कहे हंस पसाये तास मनोरथ फलीयारे, ॥ देखो० २ ॥ १९ ॥ तेणे पंचमी तपनु स्तवन कर्युं शुभ भावेरे, श्री आदि जिनमंडल अरजकरीने करावेरे ॥ आमंडल सुंदर शेहर वडोदरे रंगेरे, करे भक्ति प्रभुनी संगीतथी मन चंगेरे ॥ देखो० २ ॥ २० ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीअष्टमीतपस्तवन. ॥

बलीहारी बलीहारी बलीहारी यह राह

॥ ढाल. १ ॥

रढीयाली रढीयाली रढीयाली जगनाथ लागे व्हाली आठम तप सेवा सेवकने सदाजी ॥ एआंकणी ॥ रत्नशेखरमंत्री मति सागर तंत्री देवथयो अनशनपाली । जगनाथ० ॥ १ ॥ ब्रह्मलोकथी आवे । सिमंधर पासे जावे, वाणी सुणे सुरसाली। जगनाथ० ॥ २ ॥ सर्व सुखनु मूल। काढे कर्मनु शूल, पर्वतिथि पापप्रणाली । जगनाथ० ॥ ३ ॥ सुरवर पुछे स्वामी छे कोइ दृढ नामी । पर्वपालक भाग्यशाली । जगनाथ० ॥ ४ ॥ प्रभु कहे तेमां साखी । जेणे न स्वामी राखी, ते सुणी चालो शुभ चाली । जगनाथ० ॥ ५ ॥ रत्नशेखर राजा । राणी संगाथे साजा, छले न देवके कोइ काली । जगनाथ० ॥ ६ ॥ स्वस्वामी नाम सुणी

आव्यो सुरसामे गुणी । फोज फेलावी अति फाली । जगनाथ० ॥ ७ ॥ पोसाती लोक नाठा राजा तो रह्या काठा । देव मल्यो हाथ झाली । जगनाथ० ॥ ८ ॥ धन्यधन्य मारा स्वामी । प्रभु प्रशंसा पामी, एम कही गयो गेंणा घाली । जगनाथ० ॥ ९ ॥ पर्व पलावे प्रेमे । देशमां कुशलखेमे । घोषणा जाय नही खाली । जगनाथ० ॥ १० ॥ पृथ्वी मंडित करी । जिन प्रासादे भरी । वछल[1] कर्यु गर्व गाली । जगनाथ० ॥ ११ ॥ बारव्रत धरी बारमे स्वर्गे ठरी । हंस रह्यो तस म्हाली । जगनाथ० ॥ १२ ॥

## ॥ ढाल बीजी ॥

॥ मुज छोड चला वणझारा ॥ यह चाल ॥

जिनकल्याणक शणगारी आठम तिथि लागे सारी ॥ एआंकणी ॥ राणी रत्नवती सती भावे । आठम दिन पोषह ठावेरे ।

---

1 स्वधर्मीवात्सल्य

तव रत्नशेखर रूपधारी ॥ आठ० ॥ १ ॥ मायावी राय कहे राणी । सुं जुवेछें आंखो ताणीरे, रमवा आव्यो प्राण प्यारी ॥ आठ० ॥ २ ॥ तुं कामराय राजधानी । मारु कह्युं तुं लें नेमानीरे, नहि तो शोक लावीश व्हारी ॥ आठ० ॥ ३ ॥ नचली चतुरा तस वयणें । काम राग रति नहि नयणेरें । ईशाने सुरी सुखकारी ॥ आठ० ॥ ४ ॥ रत्नसुरमां वली अवतरशे । राज्य कुलमां जन्मने धरशेरें । बेजण वरसे शिवनारी ॥ आठ० ॥ ५ ॥ एम आठम दिन जे पाले । ते अष्टकर्म निज बालेरे टाले दुनीया नठारी ॥ आठ० ॥ ६ ॥ धनाढ्य नामे शेठ सारो । पण आठम विराधनकारे थयो व्यंतर सुगति हारी ॥ आठ० ॥ ७ ॥ कल्याणक तिथिए कहीये दश जिननां एकादश लहियेरे । चवन जन्म मोक्ष अणगारी ॥ आठ० ॥ ८ ॥ आ-

ठम केरु स्तवन करवा आदि जिनमंडल पाप .रवारे । करे विनति विनय विचा ॥ आठ० ॥ ९ ॥ ओगणीशें बोतेर शाले । दीवाली पर्व शुभ चालेरे । मंदसोरमां रही मास चारी ॥ आठ० ॥ १० ॥ श्री विजयानंदसूरि राजा । गुरु लक्ष्मीविजय महाराजारे । हता ज्ञान दान दातारी ॥ आठ० ॥ ११ ॥ तसहंस श्री तप गुण गावे प्रतिदिन थवाने चहावेरे जगजीवन जिन आभारी ॥ आठ० ॥ १२ ॥

## ॥ श्री मौन एकादशी स्तवन ॥

॥ राग जयजयवंती ॥

सुरगण इंद मधुर ध्वनिछंदा पठणकरी करे नवन्ह जिनंदा ॥ ए चाल० ॥ नेमीश्वर कहे सुणो गोविंदा । मौन एकादशी महिमा अमंदा ॥ दोढसो कल्याणक नेवु जिननं । जापजपी कापो कर्मका कंदा ॥ नेमी०॥१॥ एकादशी दिन मौन धरी.करो, पाप औषध

सम पौषध उंदा, पारणे उत्तर पारणे करवुं। एकासणुं हरवा भवफंदा ॥ नेमी० ॥ २ ॥ पोस .पारो देव झुहारी । फल ढोवो फल लेवा अगंदा । ज्ञान पूजन साधु संविभाग करो जेहथी मटे भव अटवी अटंदा ॥ नेमी० ॥ ३ ॥ अगीयारवर्षे पूर्णकरी व्रत, बारव्रतबार अंग सुहंदा, तेहनी भावना कारण बारमें । वर्षे उजमणु करो तुमे बंदा ॥ नेमी० ॥ ४ ॥ अगीयार अंगादि शास्त्र लखावी, वात्सल्य करो साधर्मिक वृंदा, हंसपरे जिन वाणी दुधपी, कृष्ण कहे धन्य धन्य जिन चंदा, ॥ नेमी० ॥ ५ ॥ आदि जिनमंडल । अखंड[illegible], भक्ति शक्ति अनुसारकरंदा, शेहेर वडोदरामां संगीतसह, प्रभुगुणगाइ करे छे आणंदा ॥ नेमी० ॥ ६ ॥ इति०

---

१ इंद्र

## ॥ श्री रोहिणी तपस्तवन ॥

॥ राग जोगीयो ॥

करमकलंक दह्योरी नाथ जिनजगके ॥ यह चाल० ॥ श्री रोहि तप गायारे । पद्मप्रभस्वामी ॥ ए आंकणी० ॥ सात वर्ष सात मास करणसें प्रत्यक्ष फल फरमायारे ॥ पद्मप्र० ॥ १ ॥ सिंहसेन नृप निर्नामक सुत। अति दुर्गंधित कायारे ॥ पद्मप्र० ॥२॥ जिन वंदन करी निज भव पुछा। स्वामी-ने सो दिखलायारे ॥ पद्मप्र० ॥ ३ ॥ तुं शिंकारी[१] पूर्वे हिंसकथा। अग्निसें मुनिको सतायारे ॥ पद्मप्र० ॥ ४ ॥ ताप सहनकर पाप क्षयंकर। मुनि मुक्तिमें सधायारें ॥ पद्मप्र० ॥ ५ ॥ कुष्टी होके सातमों[२] नरके गया। घुवड[३] पेहेली[४] नरक ठायारे ॥ पद्मप्र० ॥६॥ सर्प[५] पंचम नरके नारक[६] सिंह[७]। चोथी[८] नरक दुःख पायारें ॥ पद्मप्र० ॥ ७ ॥ चित्ता[९] बिलाडा[१०] दुजी नरकजा[११]। घूंक[१२]पक्षी

फेर थायारे ॥ पद्मप्र० ॥ ८ ॥ प्रथम नरक[13]-
में नारक होके गोपालके[14] भव आयारे ॥
पद्मप्र० ॥ ९ ॥ दवदग्ध गोवालीयेको
श्रावकने । श्री नवकार सुणायारे ॥ पद्मप्र०
॥ १० ॥ नरपति नन्दन[15] हुवा पूर्वला ।
पापसें अंग गंधायारे ॥ पद्मप्र० ॥ ११ ॥
छठा प्रभुका वचन अमृतसरे । जाति स्म-
रण निपजायारें ॥ पद्मप्र० ॥ १२ ॥ कुंवर
कहे तारो तारो दया निधि । पद्मप्रभ जिन
रायारे ॥ पद्मप्र० ॥ १३ ॥ स्वामी वचनसें
रोहिणी तपतपी सुगंध शरिर बनायारे ॥
पद्मप्र० ॥ १४ ॥ सुगंध कुमार नाम तस
जगमें । तप गुण साथ गवायारे ॥ पद्मप्र०
॥ १५ ॥ राज्य पालके स्वर्ग गमन[16] करी ।
महाविदेह सुहायारे ॥ पद्मप्र० ॥ १६ ॥ अर्क[17]
कीर्ति चक्रवर्ती होकर। संयमसें कर्म ढायारे।
पद्मप्र० ॥ १७ ॥ इंद्रहोके बारमें देवलोके
पाया अजब देह छायारे ॥ पद्मप्र० ॥ १८ ॥

अशोकचंद्र भूपाल होके फिर । रोहिणी साथ विवाहयारे ॥ पद्मप्र० ॥१९॥ राज्य रुचि त्यजीदीक्षा लिनी । छ कायाको सुखदायारे ॥ पद्मप्र० ॥ २० ॥ परम पूज्य वासु पूज्य तीर्थमें । भवो दधिपार लंघायारे ॥ पद्मप्र० ॥ २१ ॥ तपतपी केवल पाके दोनु सीधा सिधि सधायारे ॥ पद्मप्र० ॥ २२ ॥ विजयानंदसूरिके प्रथम शिष्य लक्ष्मीविजयजी लिखायारे ॥ पद्मप्र० ॥ २३ ॥ तास हंसने तप गुण गाके । पाप पुंजको हटायारे ॥ पद्मप्र० ॥ २४ ॥ आदि जिणंद-लके मन तपए । अमृतके सम भायारे ॥ पद्मप्र० ॥ २५ ॥ इति

## ॥ श्री उपधान स्तवन ॥

॥ मान मायाना करनारारे जरी जोने तपासी तारी काया ॥ ए चाल ॥

॥ उरधारो अर्थ उरधारोरे । उपधान अर्थ उरधारो । मुखे शुद्ध करीने उच्चारोरे ॥ उप० ॥ ए टेक ॥ महानिशिथ सिद्धांते

वदे छे । वीरविभु प्राणप्या । ॥ गौतम-
स्व मां आप सुणे छे उपधानना अधिका-
रोरे ॥ उप० ॥ १ ॥ उपधान एटले ओ-
शीकुं कहीये । सुखशय्यानुं स्वीकारो ॥
संव पलंगे पोढे प्रिते करी । उपधान क्रि-
या करनारोरे ॥ उप० ॥ २ ॥ पहेलुं उप-
धान पंचमंगल नामे । बीजुं प्रतिक्रमण
धारो । त्रीजुं शक्रस्तव नामे छे चोथुं । चै-
त्यस्तवनु उदारोरे ॥ उप० ॥ ३ ॥ पांचमुं
नाम स्तव, छठ्ठु श्रुतस्तव, सिद्धस्तव
विचारो ॥ स्वर व्यंजन पद संपदा साथे ।
गुरू मुखथी सुणो सारोरे ॥ उप० ॥ ४ ॥ तप
पूर्णे मंगल महोत्सव करी हैडे धरो फूल-
मालो ॥ मुक्ति तणी वरमाला पहेरीने ।
जिन मंदिर जइ म्हालोरे ॥ उप० ॥ ५ ॥
ज्ञान: जन करी गुरू हाथेथी । वासठव
शिरे सारो ॥ निथ्थारपारग भावे सुणो
सौ । गुरूश्रीना उद्गारोरे ॥ उप० ॥ ६ ॥

आशिर्वा - गुरुजनना लेइने । करीए पर उपगारो ॥ सुलभबोधिथइ हंस परे लहो। संसारनो निस्तारोरे ॥ उप० ॥ ७ ॥ संवत ओगणीस छासठ पोस शुदि । एकादशी भृगुवारो[1] ॥ आदिजिन मंडल स्तवन भणीने । करे सफल जन्मारोरे ॥ उप० ॥ ८ ॥ इति० ॥

## ॥ बोतलगंजमंडन श्रीपद्मप्रभ जिनस्तवन ॥

॥ होइ आनंद बहाररे प्रभु बेठे मगनमें ॥ यह चाल ॥

पद्म प्रभभगवानरे तारो तारो सेवकको॥ पद्म०॥ ए अंचली॥पद्मासन प्यारा लागेतुम पद्म लंछनसें पिछानरे ॥ तारोतारो०॥१॥ निरविकारी नेत्र तुमारा, प्रफुल्ल पद्म समाने० ॥ तारो० २ ॥ २ ॥ पद्म वरण प्रभु देह देदारा । क्या करुं तिसका व्यानरे ॥ तारो० २ ॥ ३ ॥ पाणि

१ शुक्रवार.

पद्मसें पद्मादान दीया। जगजीव, करुण वानरे ॥ तारो० २ ॥ ४ ॥ बोंतल गंजके देवल मांहे। तखत बिराजे भगवान्रे ॥ तारो० २ ॥ ५ ॥ संवत गुण्णीस बहतरवर्षे। मागसर मास प्रधानरे ॥ तारो० २ ॥ ६ ॥ हंस कहे उजवाली त्रीजे। प्रतिष्टा हुइ गुण खानरे। तारो० २ ॥ ७ ॥

## ॥ चोविशजिननोछंद ॥

॥ चोपाइनि देशी ॥

पहेला ऋषभ जिनेश्वर देव। बीजा अजित[1]नमुनित्यमेव। त्रिजा संभव[2] सुख दातार। चोथा अभिनंदन दुखवार ॥१॥ पांचमा सुमति[3] आपे सदा। छठा पद्मप्रभु नमु मुदा। सातमा सुपार्श्व[4] पांसेवसु। आठमा चंद्र प्रभुथी उल्लसु ॥ २॥ नवमा पुष्पदंत[5] कहेवाय। दसमा शीतलनाथ

१ अजितनाथ. २ संभवनाथ. ३ सुमतिनाथ. ४ सुपार्श्वनाथ. ५ विधिसुनाथ.

सुहाय । अगीयारमा श्रेयांश जिनेश। बा मा वासुपूज्य भजेश ॥ ३ ॥ तेरमा विमल[1]विमल कार । चौद्मा अनंत[2] नमु वारंवार । पंद्रमा धर्म[3]धर्म दातार । सोलमा शांति[4]शांति करनार ॥ ४ ॥ सतरमा श्री कुंथुनाथ । अढारमा शोभे अरनाथ । उगणीशमा मल्लीनाथ मुनीश । वीशमा मुनि सुव्रत जगदिश ॥ ५ ॥ एकवीशमा नमि[5] समरुसदा । बावीशमा नेमि[6] नमुमुदा । तेवीशमा पुरुषाँ[7]दानीयपास । चोवीशमा महावीर पुरे आस ॥ ६ ॥ वर्तमान चोवीशी एह । सवारमां समरु गुण गेह । तपगच्छ गगनमां सूर्य समान । विजयानंदसूरि गुणवान ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य पंडित थया तास । लक्ष्मीविजय महाराजजी खास। तस शिष्य हंसविजय

---

१ विमलनाथ. २ अनंतनाथ. ३ धर्मनाथ. ४ शांतिनाथ. ५ नमिनाथ. ६ अरिष्टनेमि. ७ पार्श्वनाथ.

हंससमा। पंन्यास संपतने मनगम्या ॥८॥
॥ इति० ॥

## ॥ धर्मनुं मूल हरिगीतछंद ॥

मुल धर्मनुं मुनीराज जाणी सरस सेवा आदरो। निज नियम रागी पायलागी ग्रन्थना पोठीभरो। राजा अने प्रजा तणा तारण तरण ए जाजछे। जन जाणजो आ जगतमां मुल धर्मनुं मुनीराज छे॥ जन० ॥ १ ॥ श्री सरस वाख्यानो थकी सद्बोध आपे प्रेमथी। हंकार त्यागी भक्तिरागी विचरता शुभ नेमथी। सत साथ जडियो जीव एवा जैनना शिरताज छे॥ जन०॥ २॥ वीतराग रुपि बागमां दिनरात रमता देखीए। जल सिंचता जिनधर्मनु वृक्षो फलेलां पखीए। यश मेलवे व्रत आदरी समता सरोवर पाज छे ॥ जन० ॥ ३ ॥ जीन वरतणा गुण गानमांहे मान राज मु-

तेवर । तल मात्र नहि प्रमाद सेवे शास्त्र सिद्धांतो खरा । थाये घणा गुणवंत एवी साधुराज समाज छे ॥ जन० ॥ ४ ॥ श्रीमानके मा रंक पेखे एक सरखा भावथी । संपीवसेनि साथमां तरता विनयना नावथी । परमार्थ जेना पिंडने वैराग्यरुपी लाज छे ॥ जन० ॥ ५ ॥ तपना प्रभावे तनतणु शुभ तेज वधतुं भालीए । विखराय वदतां पुष्पते वीणतां सउ निहालीए । जतन करी ए जालवे तो फल सदा मिठांज छे ॥ जन० ॥ ६ ॥ यतनो करो आवा गुरुना चरण शीर्षनमाववा । जीववुं व्रथा नव थाय नीतिमांय मांडे आववा । अजवास प्रगटे खास एवो संतनो अवाज छे ॥ जन० ॥ ७ ॥ विषविषय विरा त्यागजो मुख मागजो गुरु वंदना । चतुरो कदी नव चुकशो सूपुत्र छो मार वीतणा । ऌढशो

नही निज नातमां शास्त्रे सदा एनाज छे ॥ जन० ॥ ८ ॥ रद्ये लखी सउराखजो वीनारे करीते केशवे । हेते प्रभु आवी मले सुख शांति पामो आ भवे । जोतां शीख निजदोष जैनिमोक्ष मारग आज छे ॥ जन० ॥ ९ ॥

## ॥ श्री शिखरगिरि स्तुति ॥

॥ शिखरगिरि महाराज बीराजे । सिंह परे स्यामला जिनछाजे । देखी कर्म केरी[1] भाजे । रिषभ नेमि वासुपूज्य श्री वीर । वर्जित वीश जिनेश्वर धीर । इण गिरि गया भव तीर ॥ जिनशास्त्रे ए तिर्थ छे साचुं । वर्णवीयुं देखी दिल राचुं । प्रगट परमपद जाचुं ॥ सम्यगदृष्टि सुर बहु सेवे संघनां संकट दूर करेवे । निज लक्ष्मी फल लेवे ॥ १ ॥ इति० ॥



1 हाथी.

## ॥ अथ पर्युषण स्तुति ॥

॥ एकादशी अति रुयडी ॥ ए चाल ॥

॥ सुण प्राणिया तुं पुण्य जोगे । पर्व पर्युषण एह ॥ इहां पामीयो छुं सारभूतं । सर्व पर्वमां तेह ॥ तेणे कारणे परमाद छोडी । भज सदा गुण गेह ॥ श्रीवीर जीनवर चरण कमळे । भमरपरे सुख लेह ॥ १ ॥ सुरराज जिम परिवार साथे । नंदीश्वर तत्खेव ॥ अट्ठाइ महोच्छव करे हर्षे । तेम भवी प्रभु सेव ॥ अट्ठमनो तप कर्म कचवर । धोयवा जिम रेव ॥ चावी[illegible] । जि[illegible]ना । काल अंतर । हृदयकमले ठेव ॥ २ ॥ श्री कल्पसूत्र निज धरे । पधरावीये धरी प्यार ॥ साडंबरे गुरुद्वार लावी । विनयथी सुणो सार ॥ पडवा तणे दिन वीरजिननो । जन्म महोत्सव धार ॥ इम पूर्ण [illegible]रतरू सूत्र सुणतां । होवे मंगलमाल ॥ ३ ॥ अ[illegible]इमां अमर पळावी । चैत्य प्रवाडी उदार ॥

पडांकमण संवत्सरी साधर्मी वत्सललार, ॥ तपगच्छ गगनमां सूर्य सम । आनंदसूरि अणगार ॥ तस हंस कहे सिद्धाइ देवी । संघने आनंदकार ॥ ४ ॥ इति० ॥

## ॥ नवपद स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय तीरथ सार ॥ ए देशी ॥

श्रीसीद्धचक्रमां छे त्रणतत्व । देवगुरु धर्म तणुं एकत्व । आराधो धरी सत्व । बपददेवतत्वनां सारां । गुरु तत्वे त्रणपद छे प्यारां । धर्म्ममां चार उदारां । विद्याप्रवाद पूर्वथी सार । सिद्धचक्रनो कर्यो उद्धार । पूर्वधरेधरीप्यार । विमलेश्वर सुरपूरे आश । जे करेनवपदतप उल्लास । हंस लहे शिवतास ॥ १ ॥

## ॥ श्री अनित्यभावना सज्झाय ॥

॥ वृथा जन्म गमाया भजन विना वृ० ॥ ए देशी ॥

॥ अति ममता क्युं धरोरे जीया तुं अति० ॥ ए आंकणी ॥ अनित्यता ए

कपिकामिनी ज्युं बहु चंचलता करेरे ॥ जी० ॥ अति० ॥१॥ कच्चा पक्का फल सम बालक । वृद्ध युवान हरेरे ॥ जी० ॥ अति० ॥ २ ॥ कारज इनका कीया सब देखे । नजर न आप पडेरे । जी० ॥ अति० ॥३॥ तीस कारण शस्त्रादिकसें नहि । एह कीसीसें मरेरे । जी० ॥ अति० ॥ ४ ॥ नेमिनाथका जीव अपराजीत । भावना अनित्य धरेरे ॥ जी० ॥ अति० ॥ ५ ॥ भववाससें कारागार ज्युं अब । राय अतिहि डरेरे ॥ जी० ॥ अति० ॥ ६ ॥ पुण्य उदयसें केवलज्ञानी । मुनिवर समवसरे रे ॥ जी० ॥ अति० ॥ ७ ॥ राणी मंत्री दोनु भाइ संग । नृपचारित्र वरे रे । जी० ॥ अति० ॥ ८ ॥ व्रत पाळी एकादशमे सबि । स्वर्गे साथ ठरे रे ॥ जी० ॥ अति० ॥ ९ ॥ अनित्यभावना भावी भवीजन । हंस समान तरे रे ॥ जी० ॥ अति० ॥ १० ॥

## ॥ श्री वासुपूज्यजिन सज्झाय ॥

॥ सुग्रीव नयर सुहामणोजी । राजा श्री बलभद्र ए देशी ॥

॥ ऋतु वसंत आवे थकेजी । वासुपूज्य भगवंत ॥ क्रिडंता जनदेखीनेजी चिंत्ते इम गुणवंतरे ॥ आते केवो मोह विकार ॥ १ ॥ मोहे मूंज्या मानवीजी । हिंदोले रही नार ॥ देखीदेवी चिंतवेजी । बेठी विमाने सार रे ॥ आते केवो मोह विकार ॥ आते० ॥ २ ॥ पण मोहांधा प्राणीयाजी । पासबंधनी मांही ॥ शिलासरीखी शोभतीजी । माने नहि कहों कांही रे ॥ आते० ॥ ३ ॥ निज हिंदोलो देखीनेजी । हर्षे मुढ अपार ॥ पुण्य पापनुंताजवुंजी । माने नाहीं गमार रे ॥ आते० ॥ ४ ॥ जलकेली करतां थइ-जी आंख प्रियानी लाल ॥ राग समुद्र तरं-गनाजी । माने मनमां फालरे ॥ आते० ॥ ५ ॥ प्रमाद अग्निथी बळेली । पुण्य

महेलनी ज्वाल ॥ केम तेहने माने न ंजी। श्या थाशे मुज हालरे ॥ आते० ॥ ६ ॥ क्रिडाजल-कण जोइनेजी । ृकाफल कहे नाम ॥ विषय तप्त शरिरमांजी । केम नहि माने डांमरे ॥ आते० ॥ ७ ॥ अल्प-बुद्धि जन गीतनेजी । काम शस्त्रटंका ॥ माने पण दुर्गति तणाजी । उघड्यां एह कमाडरे ॥ आते० ॥ ८ ॥ गीत गानना तानथीजी । जड कंपावे शिर ॥ पण तेहने महा प्रमाद ा। निषेध न माने धिररे ॥ आते० ॥ ९ ॥ त्रिभुवननी ऋद्धि थकी-जी मनुष्य जन्म नहि पाय ॥ ते चिंता-मणि सारिखोजी । फोगट इणीपरे जायरे ॥ आते० ॥ १० ॥ इम चिंतवी घरे आवी-याजी । दीधां वरसीदान ॥ दिक्षा लीधी रूवडीजि । मनपर्यव थयुं ज्ञानरे ॥ आते० ॥ ११ ॥ कर्म खपावी केवळीजी छसों मुनिवर साथ ॥ चंपापुरी चंपक तळेजी ।

शिवसुख पाम्या नाथरे ॥ आते० ॥ १२ ॥
विजयानंद सूरीशनोजी । हंस कहे करजोड ॥ वासुपूज्य जिन बारमाजी । मुज प्रभु मोह विछोडरे ॥ आते० ॥ इति ॥

## ॥ मंगलपाठ ॥

॥ मंगल करीए प्रथमज पाठनासमे ॥
विघ्ननाकार पाठनिवार दूर सवि भमे ॥ मं० ॥ १ ॥ बालो, भालो, चालो, । जइये जैनशाल । दइये नहि गाल । तजो कूडि चाल । प्यारथी तमे ॥ मं० ॥ २ ॥ ॐकार ह्रीँकार श्रीँकार । जपो जिन जाप ॥ सेवो गुरु आप नमो माने बाप एहि हंसने गमे ॥ मं० ॥ ३ ॥ इति० ॥

## ॥ विद्याविनोद ॥

॥ पढो तुम विद्या. गुणखाणी । मानी ॥

॥ विद्याधन सब धनमांहिहे । उत्तम अपरंपाररे ॥ पढो० ॥ १ ॥ चोर हरे नहि इनकुं प्यारे । राजा नहि [illegible]रनाररं ॥ पढो०

॥ २ ॥ बांधव पण पावे नहि हीस्सा ॥ भार नहि लगाररे ॥ पढो० ॥ ३ ॥ जेम देवे तेम वृद्धि पामे । खोट नहि तिल भाररे ॥ पढो० ॥ ४ ॥ मात पिता तस वैरि कहिये । जो न पढावे बालरे ॥ पढो० ॥ ५ ॥ सभा बिच मूर्खोंनहि शोभे हंस बिच बग भालरे ॥ पढो० ॥ ६ ॥

## ॥ विद्याप्रकाश ॥

॥ विद्याका उद्यम कीजे (२) धारी मनरंग । धा० वि० ॥ ए अंचली ॥ विद्या थकी सुख संपदा पावे एहि जगतमें चंग ॥ विद्या० ॥ १ ॥ धर्मीजन सब पढे पढावे । पापी निंदकका बेढंग ॥ विद्या० ॥२॥ पोथी फाडे ने पढने न देवे ज्ञानद्रव्य करे भंग ॥ विद्या० ॥ ३ ॥ पग थुंक जो तीसकुं लगावे । सो अंध मूक भीख मंग ॥ विद्या० ॥४॥ विद्यावान् नरके करकमले । लक्ष्मी करत हे संग ॥ विद्या० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ ज्ञानोपदेश कविता ॥

सुणो बालको खेलने दूर वारो । भणी ज्ञानने शुद्ध विद्या वधारो ॥ [illegible] जुओ एहथी बुद्धि ताजी । तथा मात पिता थशे राजी राजी ॥ १ ॥ सुविद्या थकी लागशे धर्म प्यारो । वलि धर्मथी अर्थ केरो वधारो ॥ मळे द्रव्यथी राजनो लाभ मोटो । रहे सुखनो कोइ वाते न तोटो ॥ २ ॥ करे हित विद्या पिता जेम पोते । लिये सार माता तरीके जुवो ते ॥ प्रियानी परे जे अति सुख आपे । वलि कर्मना पाशने जेह कापे ॥ ३ ॥ सुविद्या विना माणसो नैव राजे । भणो प्राणीयो प्यारथी तेह काजे ॥ भणीने भणावी धरो गुण सारा। बनो राजहंसो परे लोक प्यारा ॥४॥इति०॥

## ॥ जैनशाला वर्णन ॥

॥ गइ ग्रीष्म थयुं चोमासुं ॥ ए राह ॥

थइ जैनशाला सुखकारी । सौसंघने

लागे प्यारी ॥ ए अंचली ॥ श्री दरापुरा-
ना बालो । तुमे हलवे हलवे चालो । न
दियो कोइने वलि गालो धरो सान। तजो
अभिमान । सुणोदेइ कान । वातडी वारी
॥ सौ० ॥ १ ॥ बुटे न लगावो नाली ।
तजी द्यो हवे कुडी चाली । तुमें ज्ञान
भणो भाग्यशाली ॥ थशे नहि दुख ।
थाय बहु सुख । भागसे भुख । एहथी
सारी ॥ सौ० ॥ २ ॥ मुर्खो पशुसम करे
मस्ति । देखे एकांत न वस्ति । तो होय-
कहो केम स्वस्ति ॥ खरे पशु पूंछ । समा-
न छे मुछ । विशेष न कुछ । जुवो दिल
धारी ॥ सौ० ॥ ३ ॥ वस्तु उजमणा केरी।
आपी करो सहाय अनेरी । श्रावक द्यो पाप
विखेरी ॥ कहे हंस । आपणा वंस । करो
उत्तंस । एम हितकारी ॥ सौ०॥४॥ इति०॥



## ॥ अथ जैनशाला विषे कविता ॥

॥ वणझारानी देशी ॥

॥ तुमे सांभलजो नरनारी, आजे जैन-शाला शणगारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु आचार्य पदधारी, आनंदविजय उपगारिरे ॥ तस प्रथम शष्य हितकारि ॥ आ० ॥ १॥ लक्ष्मीविजय सुखकारि । थया ज्ञान दान अधिकारिरे ॥ तसु करकमल शिरधारि ॥ आ० ॥ २ ॥ मुनि हंसविजय गुणखाणी । कही नंदीसूत्रनी वाणीरे ॥ शालामां प्रथम पधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥ तसु वंदन करी सुख लेशुं । जैन शालावर्णन कहेशुं रे ॥ चित्तमां अति उलट धारि ॥ आ० ॥ ४ ॥ श्री जामनगरनी मांहे । करी अधिक मन उछांहे रे ॥ अजरामर शेठे विचारी ॥ आ० ॥ ५ ॥ हरजी जैनशाला नामें । करी ज्ञानदानने कामें रे ॥ खरच्युं धन तेमां भारी ॥ आ० ॥ ६ ॥ संवत ओ-

गणीस पिसतालो । मास फागण ते सु-
हावे ालोरे ॥ वदि एकादशी बुधवारि ॥
आ० ॥७॥ स्थापन कीधुं मनरंगे । श्रीसं-
घने उलट अंगे रे ॥ शुभ मूहुरत योग-
विचारी ॥ आ० ॥ ८ ॥ त्यां सौ लोको
मळी आव्या । मनमां बहु आनंद लाव्या
रे ॥ शुं कहु तस शोभा सारी ॥ आ०
॥९॥ भणनार पुरूष भामा जे । ते ज्ञानो-
दयने काजे रे ॥ धन दइ स्थाप्या अधि-
कारी ॥ आ० ॥ १० ॥ अन्नवस्त्रादिक जन
दे छे । ते द्रव्य उपगार करे छे रे ॥ तस
फल अनेकांतिक धारि ॥ आ० ॥ ११ ॥
उपकार भावथी कहीए । जिनधर्म पमाडी
लहीये रे । बे भेद तास निरधारि ॥ आ०
॥ १२ ॥ चारित्र अने श्रुतधर्म । जेमां
बहु गुणनो छे मर्म रे । श्रुतपूर्वक चारित्र-
चारि ॥ आ० ॥ १३ ॥ फल एकांते तिहां
लहीए । आत्यंतिक पण तस कहिंए रे ॥

जुओ नंदीसूत्र विचारि ॥ आ० ॥ १४ ॥
श्रुत केतां ज्ञान विचा े । भणी शास्त्रने
ते निरधारो रे ॥ शुं कहीए बहु विस्तारी
॥ आ० ॥ १५ ॥ उपगार ते शेठे कीधो ।
यसवाद जगतमां लीधो रे ॥ भणनारने
आनंदकारी ॥ आ० ॥ १६ ॥ भणनार वदे
एम वाणी । चित्तमां घणो उलट आणी
रे ॥ जाणी तस अति उपगारी ॥ आ०
॥ १७ ॥ भणी गणी अमे लाहो लइशुं ।
वळी शेठजीने एम कहीशुं रे ॥ धन धन्य
छे मात तमारी ॥ आ० ॥१८॥ हरजी वोरा
कुलदीवो । चतुरांबाइ सुत घणुं जीवो रे
॥ एम आशीश दीए नरनारी ॥ आ० ॥
१९ ॥ तेनुं नाम सारथक भणीए । आत्यं-
तिक कामजो गणीए रे ॥ होय अजरा-
मर पदधारी ॥ आ० ॥ २० ॥ हिरालाल
कहे करजोडी । संघ आगळ मानज मो-

डीरे ॥ रहो शाला अविचल जारी ॥ आ०
॥ २१ ॥ इति ॥

॥ सवैया ॥

नींदरडी वेरण छे। जगतनी वेरणज। द्रव्यभाव भेदे वीतरागने वखाणीहे ॥ यमकी दासी देख खासी । प्रगट [illegible] देत फांसी । शुद्ध बुद्ध सुखराशी लुटणेकुं ठानी हे ॥ जोगी भोगी ध्यानी ज्ञानी । सबकुं हे दुःखखानी । तोबी प्यारी सारी हितकारी जन जाणी हे ॥ एसी जाणी त्याग प्राणी । जेथी थाय सुख खाणी । वरे शिवराणी जिन वाणीये वखाणी हे ॥ १ ॥ सज्जनजन परमाद विदारी । हैयामां धरी हेत अनंत ॥ जो तुं भोला आयुष्य बहोला। तूटे कुण संधान करंत ॥ कुटुंब कबीला प्यारी कारण। पहेलें तो परमाद धरंत ॥ अंतकालमें कुछ नहिं बनता। ब्राह्मणिपरे संकलेश लहंत॥२॥ इति॥

# ॥ मोक्षमार्ग स्वाध्याय ( अथवा ) गुहली ॥

॥ मद आठ महामुनिवारीए ॥ ए देशी ॥

सारथवाह समाजिन उपदिशे । धर्मदेशना घोषणा काररे ॥ कहे संसारी पंथी जनो सुणो जावुं मोक्ष नगर मोजाररे ॥ सारथ० ॥ १ ॥ साधु श्रावक धर्म समान छे । मारग सिधोवांको दोय भेदरे । सिधेरस्तेथी सिघ्र जवाय छे । भव अटवी उल्लंघी खेदरे ॥ सारथ० ॥ २ ॥ राग द्वेषरुपीसिंह वाघ छे तेहथी डरशो नही भाइरे । सदोष वनिता सुंदर वृक्षनी । छांये बेसशो नहि तुमे जाइरे ॥ सारथ० ॥ ३ ॥ जीरण झाड जेवा निरदोष जे । पासरा होय तिहां वसज्योरे मीठा बोलामनुष्य जेवा पासथ्था । उसन्ना कुशीलीयाथी खसज्योरे ॥ सारथ० ॥ ४ ॥ क्रोध दावानलने बुझावता । मानमहिधर ने

लंधिजाज्यो । माया वंश जाल छे आकरी । लोभ गर्त्तांथी दुरे थाज्योरे ॥ सारथ० ॥ ५ ॥ किंपाक फलना जेवा विशय छे । परीसह वेताल विकराल रे ॥ दुर्लभ अन्नते निर्दोष आहर छे । निशि-जागरण ध्यान विशाल रे ॥ सारथ० ॥ ६ ॥ नित्य प्रयाण रुप उद्योग छे । धर्म क्रिया तणो अभिराम रे मारग जणवा मैल समान छे । सिद्धांत ग्रंथ जोवा ठामो ठाम रे ॥ सारथ० ॥ ७ ॥ एवा मारग दर्शक प्रभु नमु । कहे हंस हु वारंवार रे उपगा-री प्रभुना आधार थी । पामु मोक्ष नगर मनोहार रे ॥ सारथ० ॥ ८ ॥ इति०

## ॥ श्रीरायपसेणी सूत्र गहुंली ॥

॥ रहो गुरु राजनगर चोमासुंरे ॥ ए देशी ॥

सुणो भवी रायपसेणी उपांगरे । एनुं अंग छे सूत्र कृतांग ॥ सुणो० ॥ ए आं-कणी ॥ नास्तिकमति प्रदेशि राजारे ।

जीव मारे रातदिन झाझारे । जेम चीडियां उपर पडे बाजा ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जीव नजरे न कोइने आवेरे । तो पुण्य पाप केम थावेरे । एवां प्रश्न करी भरमावे ॥ सुणो० ॥२॥ एकदिन केशिगणधाररे । उत्तर आपे हितकाररे । तेथी थयो ते श्रावक सार ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ अमारीपटह वगडाव्यारे । जैनधर्मी तेवारे फाव्यारे । जाणे कीर्तिथंभ चढाव्या ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ दान आदि बहु धर्म साधिरे । दूर करीने पाप उपाधिरे । थयो देव धरीने समाधि ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ सूर्याभ नामे ते देवरे । वीर जिननी आवी करे सेवरे । नाटक करे तिहां ततूखेव ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ ए सूत्र तणो विस्ताररे । कहे हंस सुणो धरी प्याररे । तेथी थाय सफल अवतार ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ गणधर महाराज श्रीसुधर्मा स्वामीनी गहुंली ॥

॥वाडीना भमरा द्राक्ष मिठीरे चांपानेरनी ॥ ए देशी॥

सज्जन सुधर्मा स्वामी गुणे भर्या । सज्जन वीरप्रभुना पट्टधाररे ॥ भविक भमरा गणधरना चरणकमल नमो ॥ ए आंकणी ॥ सज्जन सर्व ऊपाधि परिहरि । गुरु सर्व समृद्धि भंडाररे ॥ भविक० ॥ १ ॥ सज्जन इंद्र समान छे शोभता । एतो ज्ञानविमान धरनाररे ॥ भविक० ॥ २ ॥ सज्जन समता शची छे सोहामणी । धरे धैर्य दंभोलि[1] श्रीकाररे ॥ भविक० ॥ ३ ॥ सज्जन चक्रवर्ती परे दीपता । वृष्टि मोह म्लेच्छनी निवाररे ॥ भविक० ॥ ४ ॥ सज्जन क्रियारूप चरम रत्न छे । कर्यो ज्ञानछत्रनो विस्ताररे ॥ भविक० ॥ ५ ॥ सज्जन शिवजी समा मुनिराज छे जेनो विवेक वृषभ

---

1 वज्र.

हुंसीयाररे ॥ भविक० ॥ ६ ॥ सज्जन विरति गंगा गौरी ज्ञप्ति छे । कैलास अध्यात्मरूप उदाररे ॥ भविक० ॥ ७ ॥ सज्जनविष्णु समाए आचार्य छे । सुखसागर शयन करनाररे ॥ भविक० ॥ ८ ॥ सज्जन दर्शे ज्ञानचक्षु धरा । तेतो सुर चंद सम साररे ॥ भविक० ॥ ९ ॥ सज्जन ब्रह्मा समान ए गणधरु । गुण सृष्टि रचि छे अपाररे ॥ भविक० ॥ १० ॥ सज्जन बार अंग रचना करी । कीधो संघने अति उपगाररे ॥ भविक० ॥ ११ ॥ सज्जन साधु साध्वी हाल विचरता हंस सम उज्वल एहना बालरे ॥ भविक० ॥ १२ ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीदेवर्धिगणिक्षमाश्रमण महाराजनी गहुंली ॥

॥ रुपैय्योतो आलु रोकडो माहरा वाहालाजीरे ॥
॥ ए देशी ॥

॥ वलभिपूर जइ वंदिये गुरुराजजीरे ।

गणिवर देवर्धिमहाराज ॥ जइने वंदिये गुरुराजजीरे ॥ आंकणी ॥ क्षमाश्रमण पद धारीयुं, गुरुराजजीरे । कीधां अति ऊत्तम काज, जइने वंदिये गुरुराजजीरे० ॥ १ ॥ महा प्रभावक ते थया गुरुराजजीरे । देवदेवीना पूजनीक० जइने वंदि० ॥ सुविहित एहवा नवी मले गुरुराजजीरे । उपदेशक ठीकठीक० जइने वंदिये० ॥ २ ॥ पुस्तक क्रोड लखावीयां गुरुराजजीरे । कीधो परम उपगार, जइने वंदिये० ॥ पांचसो दशमां ते थया गुरुराजजीरे । विक्रम संवतमां सुखकार० जइने वंदिये० ॥ ३ ॥ एक पूर्व विद्याधरु गुरुराजजीरे । हर्णगमेषीनो ए जीव० जइने वंदिये० ॥ भावस्नान भली परे करे गुरुराजजीरे, होवे जेहथी सिघ्रज शिव० जइने वंदिये० ॥ ४ ॥ दया जलेथी नाहीया गुरुराजजीरे । संतोषरुपी वस्त्रनानाधार जइने

वंदिये०॥ विवेकतिलक करी शोभता गुरुराजजीरे । भावपूजाना करनार, जइने वंदिये० ॥ ५ ॥ वलभिपूरमां बिराजीया गुरुराजजीरे । मूर्त्तिरुपे करुणावंत, जइने वंदि० ॥ हंस कहे नित्य सेवीये । गुरुराजजीरे । मुनिवर मोटा महंत, जइने० ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ अथ आचार्य महाराज श्री आत्मारामजीनी गहुंली ॥

धन धन रे आत्माराम ढुंढकमतना टालु ॥ ढुंढक टालुने भवोदधि तारु । वारु कर्म कुठाररे ॥ तस मुनिवरनुं वरणन करतां । सुणजो सहु नर नार ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ १ ॥ ढुंढकमत त्यागी करी रे । देश पंजाबनीमांह रे ॥ राजनगरमां आवीयारे, धरवा सुगुरु सन्नाह ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ २ ॥ प्रथम शिष्य तसु शोभता रे । लक्ष्मीविजय मुनिराजरे ॥ वैरागी त्यागी

खरारे । ज्ञान दान करे काज ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ ३ ॥ अवनीतल पावन गुरु करता। विचरे देश विदेश रे ॥ संजम खप करता नमुं रे । एहवा मुनि सुविशेष ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ ४ ॥ मेघध्वनि दीये देशनारे । धरी करुणा उच्छा रे ॥ जाणे सवि जग-जीवनेंरे । करुं जिन शासन मांहे ॥ ढुं०॥ ध० ॥ ५ ॥ शिष्यमंडलनें भणावतारे । छंद तर्कने कोशरे ॥ नीति रीति सिद्धां-तनारे । ग्रंथ धरी बहु होंश ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ ६ ॥ सभासदो तुमें सांभलो रे । त्यागी सकल प्रमाद रे ॥ मोक्षमार्ग सारथपति आव्या । शरण लीयो ग्रहीपाद ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ ७ ॥ निर्विघ्ने पहोचाडशे रे। मोक्ष-नगर भले भाव रे ॥ एम जाणीने सेव-जो रे ॥ लोहकील जिम नाव ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ ८ ॥ एहवा मुनि गुण गावतां रे। आवे गुण निज अंग रे ॥ ए गुरुपद से-

बनथकी रे । पामीए लक्ष्मी सुरंग ॥ ढुं० ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति० ॥

## ॥ अथ आचार्य महाराज श्री आत्माराम जीनी गहुंली बीजी ॥

॥ चालोने भवि चालोने मुनि । आत्मारामजी वंदनरे ॥ शांत मुद्रा शोभे मुनिवरनी । कैलधौतवर्ण शरीर रे ॥ पंकज दलसम नेत्र छे जेहनां । ईर्यासमितिमां थीररे ॥ चालो० ॥ १ ॥ दान आभूषण करकमलें छे । तारीफ करवा योग्य रे ॥ गुरुना चरणवंदनरूपी छे । शिरभुषण संयोग रे ॥ चालो० ॥ २ ॥ मुखें सत्यवचन रूपी छे । संघने अति उपगारी रे, श्रुतश्रवण रूपी काने छे । आभुषण सुखकारीरे ॥ चालो० ॥ ३ ॥ हृदये विमल वर्तन छे जेहना। मायानो नहीं लेश रे ॥ भुजदंडे महा प्राक्रम रूपी । आभू-

---

१ सुवर्ण.

षण सुविशेषरे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ मंडण एह अपूर्व मुनिनुं, तुमें पण धरजो सुजाण रे ॥ जे नर ए आभूषण धरशे । तस घर लक्ष्मी प्रधान रे ॥ चालो० ॥ ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ अथ आचार्य महाराज श्री आत्मारामजीनी गहुंली त्रीजी ॥

॥ वंदी जिनजी प्रभु पासरे, जसु वंदे लील विलासरे । गाऊं गुरुगुण मनने उल्लास । सूरीश्वर वीनति अवधारोरे ॥ जामनग नी मांहि पधारो ॥ सू०॥जा०॥१॥ गुरू क्षत्रिय कुल शुभ पायारे । बहु गाम नगरने दीपायारे । तेथी लागी छे तुम तणी माया ॥ सू० ॥ जा० ॥ २ ॥ आणीगम करवाथी विहाररे । थाशे लाभ घणो उपगाररे । नरनारी थशे व्रतधार ॥ सू० ॥ जा० ॥ ३ ॥ जामनगरनो संघ तुमारीरे । वाटडी देखे दिलधारीरे । तुम

आवे चढशे खुमारी ॥ सू० ॥ जा० ॥ ४ ॥ विनती सुणी संघनी सारी रे । जामनगरनी माहे पधारीरे ॥ करो देशना आनंदकारी ॥ सू० ॥ जा० ॥ ५ ॥ तपगच्छ गगन रवि राजरे । आनंदसूरि महाराजरे ॥ थया हंसविजय सुखकाज ॥ सू० ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ गहुंली चोथी ॥

॥ सुण चतुरसुजाण परनारीसु प्रित कबु नही कीजीये ॥ ए देशी ॥

सुण सखि सुखखाण । आत्माराम म[illegible]राज तणा गुण गाइये । गुण अपरंपार । केम गवासे एम मन नवी लाइये ॥ ए आंकणी ॥ तस कीर्ति रेलगाडी चाले । ते आगगाडीथी अधिक हाले । देशांतरमां कोइ नवी खाले ॥ सुण० ॥ १ ॥ सारथि सम गाडी च[illegible]ावनारा । श्रीलक्ष्मीविजय गुरू बहु सारा । भव अटवि

उलं[illegible] ॥ सुण० ॥ २ ॥ ते न्याय अंजीन जोडी चलवे । नहीं वराल यंत्र थकी हलवे। अथडाय नही का[illegible]ने मलवे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ पंथीजन सम आरूढ थइ । सर्वे गुण फेल्या दूर जइ । हुं वर्णवुं हवे गुण श्रेण कइ ॥ सुण० ॥ ४ ॥ रक्षण तस गार्ड समानकरे । गोकलभाई श्राव- क हर्ष भरे । सेठ अनोपचंद पण सहाय धरे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ विजयानंदसूरीश्वर केरी । कीर्तिरूप रेलगाडी फेरी। कहे हंस टले दुर्गति मेरी ॥ सुण० ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ गहुंली पांचमी ॥

॥ चालो तुमे चाल घणी रुडी ॥ ए देशी ॥

॥ सेवो गुरु शांत दशाधारी । जेणे म- नथी ममता मारी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ करे नही खेद कोइ साथे। लिये लडवाड नही माथे ॥ सेवो० ॥ २ ॥ योगीश्वर थइ यो- गने साधे । बने बावरा न मरण लाधे ॥

सेवो० ॥ ३ ॥ सदा सावधान रहे स्वामी। धरे नही धर्म मांही खामी ॥ सेवो० ॥४॥ पाले छकायना जीव झाजा । बोले तेवुं पाले मुनिराजा ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ जेने कंचन कामिनी वारी । वरी संयम रमणी सारी ॥ सेवो ॥ ६ ॥ मुनि शुभ मानस मांहीं रमे । बीजे कांइ हंस परे न भमे ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजनी गहुंली ॥

॥ सजनी वीर पटोधर वंदिये ॥ ए देशी ॥

॥ सखीओ लक्ष्मीविजय गुरु प्रणमीये। गुण गण रयण भंडार हो ॥ रंगीलि मिली ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ सखीयो ब्राह्मण कुलमांहि जन्मीया। वेद् पुराणना धार हो रंगीली मिली ॥ स० ॥ १ ॥ सखीयो देव गुरु धर्म तत्वमां खामी अपरंपार हो

रंगीली मिली ॥ स० ॥ २ ॥ सखीयो ते-
हथी कुल धर्म परिहरि । जिम परनर कु-
लनार हो रंगीली मिली ॥ स० ॥ ३ ॥
सखीयो रत्नभ्रमे काच जीम कर्यो । ढुं-
ढक पंथ स्वीकार हो रंगीली मिली ॥ स०
॥४॥ सखीयो ते पण पंथ कुपंथ ज्युं । जाणी
कर्यो परिहार हो रंगीली मिली ॥ स०
॥ ५ ॥ सखीयो बहु ढुंढीया लेइ साथमां ।
लीधो संयम भार हो रंगीली मिली ॥
स० ॥ ६ ॥ सखीयो विजयानंदसूरि रा-
यना । प्रथम शिष्य मनोहार हो रंगीली
मिली ॥ स० ॥ ७ ॥ सखीयो देश नगर
बहु विचरीया । कीधा बहु अणगार हो
रंगीली मिली ॥ स० ॥ ८ ॥ सखीयो ढुं-
ढक धर्मीने बुजवी । कीधा श्रावक सार
हो रंगीली मिली ॥ स० ॥ ९ ॥ सखीयो
श्राविका पण गुणे भरी । कीधी प्राये हजार
हो रंगीली मिली ॥ स० ॥ १० ॥ सखीयो

ए गुरुना पद पद्ममां। हंसज्युं धरो तुमे प्यार हो रंगीली मिली ॥ स० ॥ ११ ॥ इति० ॥

## ॥ आचार्य श्रीकमलविजयजी महाराजनी गहुंली ॥

॥ प्रभु पद्मप्रासादे आज तखत बिराजे छे ॥ ए चाल ॥

श्रीकमलविजयसूरिराज पाट बिराजे छे। जस वाणी अतिहि रसाल मेघ परे गाजे छे ॥ ए आंकणी ॥ कमलसम कोमल जस काया। धर्माधार कहायरे। नेत्र कमलदल जेवां सुंदर। इर्यामां करे सहाय ॥ पाट बि० ॥ श्रीकमलवि० ॥ १ ॥ चरणकमलमां भमर समा जन। वंदे थइ उजमालरे ॥ कोमल कर कमले करी पुस्तक। शुद्ध करे छे दयाल ॥ पाट बि० ॥ श्रीकमलवि० ॥ २ ॥ हृदयकमळमां अहनिश पोते। करता आत्मध्यानरे ॥ ध्याता ध्येयने ध्यान स्वरुपे। एकता करे गुणवान् ॥ पाट बि० ॥ श्रीकमलवि० ॥ ३ ॥

रजोहरण शोभे छे पासे । मुदगर सम
भवभंगेरे ॥ तपगच्छ रथ धारण धोरी
सम । नमीये अति उछंगे ॥ पाट बि० ॥
कमलवि० ॥ ४ ॥ विक्रम संवत ओगणी-
शेंने । सत[illegible] सालरे ॥ माहा सुदि
पुनमने शुभ दिवसे । महोच्छव करीने
विशाल ॥ पाट बि० ॥ श्रीकमलवि० ॥५॥
अणहिलपुर पाटणनी मांहे । संघ सकल
जयवंतरे ॥ हर्ष धरी पधरावे पाटे । मुनि-
वर मोटा महंत ॥ पाट बि० ॥ श्रीकम-
लवि० ॥ ६ ॥ विजयानंदसूरिना पटधर ।
जगतजीवना त्रातारे ॥ शिष्य श्रीलक्ष्मी-
विजय गुरु केरा । हंस तणा गुरुभ्राता ॥
पाट बि० ॥ श्रीकमलवि० ॥ ७ ॥ इति ॥

## ॥ श्री विजयकमलसूरि गुण स्तुति ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे ए व्रत ॥ ए देशी ॥

विजयकमलसूरि वंदो मारा प्यारा ॥
विजय० ॥ ए आंकणी ॥ विजयानंदसू-

रिक्रमें कमला । करमां कमल समान ॥ कमलाचार्यना भमर समाभव्य । गावे छे गुण गान ॥ मारा० वि० ॥१॥ वडोदरामां पचास मुनिनुं । संमिलन कर्युं प्यारुं ॥ संवत् ओगणीस अडसठ केरा । (१९६८) वैशाख जेठमां सारुं ॥ मारा० वि० ॥ २॥ उपाध्यायश्री वीरविजयजी । वीरव्रत धरनारा ॥ पूर्ण प्रतिज्ञा करीने पोते। वडोदरामां पधार्या ॥ मारा० वि० ॥ ३ ॥ प्रवर्त्तक श्री कान्तिविजयजी । आदि मुनिवर मोटा ॥ पंन्यासपदने गणिप - धारी । आव्या काढवा गोटा ॥ मारा० वि० ॥४॥ कोई मुनि न्याय व्याकरण भणे छे। कोई मुनि ध्यान धरे छे ॥ कोई मुनि काव्य तर्कमां कुशला । वादविवाद करे छे ॥ मारा० वि० ॥५॥ हंस तो हंसविनो - छपाववा । पूर्ण प्रेम धरावे ॥ वल्लभविज ' आ-

---

१ चरण सरोवरमां.

क्षेपो निवारण । ग्रंथ गुंफन करावे ॥ मारा० वि० ॥ ६ ॥ केवळबे.ननी पुत्री तरफथी । प्रभु प्रतिमा पधरावे ॥ अट्ठाइ म ोच्छव शांति स्नात्र करी । खुबचंद ह-रखावे ॥ मारा० वि० ॥ ७ ॥ दिक्षा महो-च्छवने वडी दीक्षा । एज प्रसंगमां थाय ॥ विजयानंदसूरिश्वर केरी । स्वर्गतिथि उ-जवाय ॥ मारा० वि० ॥ ८ ॥ ते जोवा देश देशना लोको । त्यां जावा ललचाया ॥ पंजाबने बंगाल दिल्लीना । श्रावको झट-पट आया ॥ मारा० वि० ॥ ९ ॥ कच्छ अने काठियावाड पैकी । भावनगरथी आव्या ॥ जेपूर मारवाड मालवा केरा । गच्छनी स्वकार्यमां फाव्या ॥ मारा० वि० ॥ १० ॥ इत्यादिक बहु गाम नगरना । नर-नारी उभराया ॥ गुरु वंदन करी जिन-वाणी सुणी । मनमां बहु हरखाया ॥ मारा० वि० ॥ ११ ॥ देश देशांतरीनी पं-

चरंगी । पाघडीयोथी रंगीला ॥ सभामं-
डपमां पधार्या पोते । आचार्य मुनि सं-
मीला ॥ मारा० वि० ॥ १२ ॥ बेठक त्रण
करीने सुधारा । चोवीश ठरावथी कीधा ॥
आदिनाथ मंडले गुण गाइने । हंससमा
यश डंका दिधा ॥ मारा० वि०॥१३॥इति०॥

## ॥ गहुंली ॥

॥ सुण साहेली जंगम तीरथ जोवा उभी रहेने ॥
॥ ए देशी ॥

सुण प्राणीरे । मुनि मुख कमले भ-
मर परे तुं रहेने । मुनि मुख वाणी अमृत
सरखी । जाणी तुं सुणि लेने ॥ ए टेक ॥
मुनि संयममां रहे छे रमता । जेने काम
कदाग्र. नथी गमता । एतो इंद्रिय पांच
ने रहे दमता ॥ सुण० ॥ १ ॥ तजी नारी
नठारी दूर वारी । संयमरमणी भली उर-
धारी । शिववहू वरवानी छे त्यारी ॥ सुण०
॥ २ ॥ जेने निंदा विकथा परि.ारी । व्रत

भार भर्यो शिरपर भारी । जिन आण खडग निजक धारी ॥ सुण० ॥ ३ ॥ जेणे कुमति हृद्यथी करि न्यारी । भली परे सुमति बहु शणगारी । एवा मुनिजननीं जाउं हुं वारी ॥ सुण० ॥ ४ ॥ मोहराय प्रबल सेना मारी । जेणे धर्मराय सेना ठारी । जयलक्ष्मी वरी सहु जन प्यारी ॥ सुण० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ श्री पर्यूषण गहुंली ॥

॥ श्रावक व्रतसुरतरु फलीयो ॥ ए देशी ॥

श्री कल्पसूत्र कल्पतरु फलीयो । एकवीशवार जेने सांभलीयो ॥ श्रीकल्प० ॥ ए आकणी ॥ श्री विरचरित्र तसबीज गणो । पार्श्वचरित्र अंकुर भणो । नेमीचरित्र खंधतेह तणो ॥ श्रीकल्प० ॥ १ ॥ ऋषभचरित्र शाखा सारी । वात तेनी तो अति न्यारी । अवलंबे सहु नर ने नारी ॥ श्रीकल्प० ॥ २ ॥ पुष्प प्रकरसम समभावे ।

खीरावली श्री गुरु संभलावे । पाप पडल तेहथी जावे ॥ श्रीकल्प० ॥ ३ ॥ सामाचारी सुगंध लीये । मुनि भमराओ रस तास पीये । आलगाल कोईने न दीये ॥ श्री कल्प० ॥ ४ ॥ ते मोक्षफल आपे चारु । जे हंसने लागे अति प्यारु । आदिजीन मंडल कहे सारु ॥ श्रीकल्प० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ गुरुस्तुति ॥

॥ राखुरे हमारे घटमें ॥ ए चाल ॥

स्वर्गे गया झटपटमां । श्री आत्माराम स्वामीरे ॥ स्वर्गे० ॥ ए अंचली ॥ तजी बाल वृद्ध चेला । संघनातजीने मेला । स्वामी गया एकीलारे ॥ स्वर्गे० ॥ १ ॥ आशा अमारी मोटी । तेतो पडीगइ खोटी । नही खोट संघमां छोटीरे ॥ स्वर्गे० ॥ २ ॥ स्वर्गे सधाया स्वामी । देहधारी कीर्तिजामी । इंग्लांडमां पण नामीरे ॥ स्वर्गे० ॥ ३ ॥ धर्माभिमान धारी । आक्षेपादि निवारी ।

म .त्मानी खोट भारीरे ॥ स्वर्गे० ॥ ४ ॥ एवा गुरु क्यां मलशे । ंघना क्लेश केम टलशे । पंजाब कोण उद्धरशेरे ॥ स्वर्गे० ॥ ५ ॥ पंजाबी लोक तरसें । गुरुवाणं ना बिनवरसें । कहे त्राता गुरु कहां मलसेरे ॥ स्वर्गे० ॥ ६ ॥ आधार हवे सूरिवरनी । मूर्त्ति सुरति दिलधरनी । ग्रंथावेली कंठ-करनारे ॥ स्वर्गे० ॥ ७ ॥ गुरुनी स्तुतिनें बनावे । हंसाभिधानभावे । आदिनाथ मंडल गावेरे ॥ स्वर्गे० ॥ ८ ॥ इति० ॥

## मुनिराज श्री आत्मरामजी महा-राज अमदावाद पधार्या ते प्रसंगे बना-ली गहुंली.

॥ मन माने नहीं । सो फेरा समजावुं तोए शुं थाय ॥
॥ ए राग ॥

गुरु गुणवंता देश विदेश ।वेच ता भविजन तारता । मत पाखंडी । खंडन करी महिमा जीन धर्म वधारता ॥ ए टेक ॥

पंजाब देश सुंदर पाया उत्तम क्षत्री कुळमां आया । लघुवय दिक्षा ले गु राया ॥ गुरु० ॥ १ ॥ दुष्कर संजम परिसह वेठी । जीन आगम सार लह्यो जेथी । ढुंढक-मत त्याग कर्यो तेथी ॥ गुरु० ॥ २ ॥ गुरु ज्ञानतण दीसे दरिया । भवोदधि तारण प्रवहण मळीआ । श्रुतसायर अमिरसथी भरीया ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ बहु ढुंढकने श्रावक करीया । जीनधर्म विषे ते अनुसरीया । मुनि उपदेशे भवजळ त रीया ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ खटदर्शन पंडितपद वरीया । जस देखी अन्यमति डरीया । [illegible] गुरु गुणथी [illegible] ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ दस वीस शीषशुं विचरंता । आव्या गुरु गुर्जरमां फरता । शुभ राजनगर पावन करता ॥ गुरु० ॥ ६ ॥ अ [illegible] [illegible]वाळोस साले । मुनि आतमराम रमण महाले । जस द-रिसण पाप सकळ बाळे ॥ गुरु० ॥ ७ ॥

आगम वाणी करुणा भावे । अति गहन अर्थथी समजावे । वितरागागे । गुरु गरजावें ॥ गुरु० ॥ ८ ॥ अमृतधारा वरषा वाणी । भवि हृदयभूमिका भींजाणी । अति शुष्क बीज अंकुर आणी ॥ गुरु० ॥९॥ लघु वयमां ज्ञानदशा जागी । अनुभव सलीला लय लागी । जीनआगम तत्ववीणा वागी ॥ गुरु० ॥ १० ॥ जंगम तिरथ ए मुनिराया । भव अटविमां शीतळ छाया । अम पुन्य थकी दर्शन पाया ॥ गुरु० ॥११॥ करुणानिधि विनती चीत्त धरजो । आ राजनगर पावन करज्यो । सांकळचंदना पातक हरज्यो ॥ गुरु० ॥१२॥ इति०॥

## गुरुश्रीना विहार समये राज्यनगर निवाशी बाईओए गायेली गहुंली.

॥ चोसठ मणनुं मोती जगमगेरे ॥ ए राग ॥

गुरुजी विहारे नयणे नीर झरेरे । अंगे

उठे विरहानळनी झाळरे ॥ गुरुजी० ॥ ए आंकणी ॥ दुशमकाळे श्रीगुरु विचरेरे, देश विदेश मोझाररे ॥ पावन पृथ्वि करता प्रेमथीरे । आतमराम आधाररे ॥ गुरुजी० ॥ १ ॥ ए गुरु दीठे दुःख दोहग टळेरे । नयण कृतारथ थायरे ॥ धर्म धुरंधर धोरी आ समेरे । प्रणमुं ए गुरुजीना पायरे ॥ गुरुजी० ॥ २ ॥ चरणकरण वृतधारक मुनीवरारे । गुणनो न लहीए पाररे ॥ राजनग मां चोमासुं रह्यारे । आज करे छे विहाररे ॥ गुरुजी० ॥ ३ ॥ पामर प्राणी पर करुणा करीरे । कीधो घणो उपकाररे ॥ रडता मूकीने विचर्या वाटमांरे । आत्माराम अणगाररे ॥ गुरुजी० ॥ ४ ॥ समकीत रसनो स्वाद चखाडीयोरे । म्हेर करी महाराजरे ॥ गुरु गुणवंता तरछोडी गयारे । क्यां उग्यो दीन आजरे ॥ गुरुजी० ॥ ५ ॥ ज्ञानना दरीया गुरु गुणथी भर्यारे

ज्ञान तणा दातारर्रे ॥ शांत सुधारस पायो प्रेमथीरें ॥ अमने कोण आधाररे ॥ गुरुजी० ॥ ६ ॥ भविभव वनमां भटकीने मळेरे । शितळ सुरतरु गुरुनी छांयरे ॥ मधुरी जिनवाणी गुरु मुखथी सुणीरें । सफळ करे मनवचकायरें ॥ गुरुजी० ॥ ७ ॥ भवरणमां जीवो मृग माफक भमेरे । पारधीं मोह विकाळरे ॥ साज्य करे गुरु निश्कारण सदारे । अशरण शरण दयाळरें ॥ गुरुजी० ॥ ८ ॥ संसारिक व्याधीथी तापे तप्यारें । जीवोने आश्रम श्री मुनिराजरे ॥ ते मुनि विचरंता दुःख उपजेरे । दर्शनथी सुख थायरें ॥ गुरुजी० ॥ ९ ॥ गुरु तुम चरणे आवी बेसतारें । पुछंता शास्त्र विचाररे ॥ संशय छेदन करता सर्वनारे । ज्ञान तणा भंडाररे ॥ गुरुजी० ॥ १० ॥ ममताने वारी समता आदरीरें । पंचमहाव्रत धाररे ॥ ज्ञानदिवाकर गुरु जगजीवनारे ।

मोह तिमीर [illegible]रनाररे ॥ गुरुजी० ॥ ११ ॥ [illegible]यालें शितळ वाशे वायरो । हेम पडे वन मांह्यरे ॥ थरथर कंपे टाढे दे[illegible]डोरे । केम सहेश्यो मुनिरायरे ॥ [illegible]० ॥१२॥ उना[illegible] ताप प्रचंड पडे घणोरे । पग प्र-जळे शीर तापरे ॥ विकट वनोमां संकट वेठवांरे । मृग पतिसम मुनि आपरे ॥ गु-रुजी० ॥ १३ ॥ बहुश्रुत आगळ शुं झाझुं कहुंरे । थोडेथी बहु जाणो गुरुरायरे ॥ व्याकुळ जळ विण जेम जळ मांछलीरें । तेम गुरुनो विरह न घडी वेठायरे ॥ गु-रुजी० ॥ १४ ॥ निरागी भाळी राग घणो थयोरे । विरह तणो परितापरे ॥ करू-णाना सागर वहेला आवजोरे । दरीशण वहेला देज्यो आपरे ॥ गुरुजी० ॥ १५ ॥ माता ने त्राता दाता धर्मनारे । बे कर-जोडी वंदु आजरे ॥ कोई दीन सेवकने संभारज्योरे । गुरुजी छो भवसागरमां झा(-

झरे ॥ गुरुजी० ॥ १६ ॥ पलक न वीसरे गुरु गुणथी भर्यारे । हुं अवगुणना भंडाररे ॥ सेवक सांकलचंद नयणे वहेरे । गुरु विरहे आंसुडानी धाररे ॥ गुरुजी० ॥ १७ ॥ इति० ॥

## मुनिराज श्री आत्मारामजीनुं संक्षिप्त जीवनचरित्र.

॥ भवी तमे वंदोरे, गीतारथ गच्छराया ॥ ए राग ॥

भवी तमे वंदोरो ॥ श्री गुरु आतमराया । पाप निकंदोरे सफळ करो निज काया ॥ ए टेक ॥ श्री गुरु दरीया । गुणना भरीया । हृदयकमळमां धरीए ॥ प्रह उठी गुरुना गुण गाइए । रसना पावन करीए ॥ भवी० ॥ १ ॥ देश मनोहर श्री पंजाबे । सुंदर ल्हेरा गामे ॥ संवत भुवन खंड वसू चंद्रे । (१८९३) जन्म सुगुरुजी पावे ॥ भवी० ॥ २ ॥ ब्रह्मक्षत्री पुर्वाश्रम ज्ञाती । पाम्या जग विख्याती ॥ जनक

गणेशचंद्र कुळ दीवो । पुर्ण चंद्रसम कान्ती ॥ भवी० ॥ ३ ॥ माता रुपदेवीना जाया । दीत्ता नाम क..ाया ॥ जोद्धमल जीने सोंपीने । स्वर्गे तात सिधाया ॥ भवी० ॥ ४ ॥ पुर्ण चंद्र भक्ति शशशी वर्षे ( १९१० ) जीवणरामजी पासे ॥ ढुंढक मतमां दिक्षा लीधी । आत्माराम उल्लासे ॥ भवी० ॥ ५ ॥ श्रुतसायरनुं मथन करीने । सार सकळ मन धार्यो ॥ व्याकरण न्याय तर्क कंठाग्रे । करी ढुंढक मत वार्यो ॥ भवी० ॥ ६ ॥ विश्नुचंद्रजी आदे मुनिए । ढुंढकरिखने छोडया ॥ सहसगमे ढुंढक प्रतिबोधी । जिनसासनमां जोडया ॥भवी० ॥ ७ ॥ देश विदेश विशे विचरंता । गुर्जरमां गुरु आव्या ॥ राजनगरने पावन करिने । संघ सकळ मन भाव्या ॥ भवी० ॥ ८ ॥ युग्म भुवन भक्ति शशि वर्षे । ( १९३२ ) बुद्धिचंद्र गुरु पासे ॥ जीन प्र-

तिमा जीन सरखी जाणी । दिक्षा ले फरी खासे ॥ भवी० ॥ ९ ॥ कुमत कुतर्क ह-ठावा उग्यो । अभिवन सुर कळिकाळे ॥ ढुंढक धर्म निवारी गुरुजी । जीनसासन अजु आळे॥ भवी० ॥ १० ॥ भवरण ताप तपित भविजनने । शितळ सुरतरु छाया॥ जीन वचनामृत पान करावी । प्रतिबोधे गुरुराया ॥ भवी० ॥ ११ ॥ न्यायांभोनिधी बिरुद ते लीधुं । संघे सूरिपद दीधुं ॥ खटदर्शन पंडितपद पाम्या । कारज स-घळुं सीधुं ॥ भवी० ॥ १२ ॥ एवा गुरुना नाम स्मरणथी । जीते भवनी बाजी ॥ सेवक सांकळचंद हृदयमां । गुरुभक्ति रही गाजी ॥ भवी० ॥ १३ ॥ इति० ॥

## मुनिराज श्री आत्मारामजीना स्वर्गवासथी जैन संघने थयेला शोकनुं वर्णन.

॥ अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए राग ॥

एवा मुनिवर क्यां मळशे हवे । श्री

गुरु आतमरामरे ॥ जंगमतीरथ सुरतरू
क्यां गयो । संघ सकळ विशरामरे ॥
एवा० ॥ १ ॥ शासन सूबोरे उठी चाली-
यो । जे सुविहीत अणगाररे ॥ परमत
वादीरे सिंह शिरोमणी। निराधार आधा-
ररे ॥ एवा० ॥ २ ॥ युग्म बाण भक्ति
शशि वर्षमां । ( १९५२ ) गुजरवाळा
गामेरे ॥ शुक्ल सप्तमीरे पेहेला जेठनी ।
काळ कर्यों ते ठामेरे ॥ एवा० ॥ ३ ॥
क्यां दीन उग्योरे आज कषायनो ।
हीरो शुभ हरतायोरे ॥ आज अमंगळ
जगमां जागीयो । काळधर्म गुरु पायोरे ॥
एवा० ॥ ४ ॥ पूछया प्रतिउत्तर कोण
आपशे । संघ साज्य कोण करशेरे ॥
करुणासागर क्यां मळशे हवे । क्यां जई
संशय टळशेरे ॥ एवा० ॥ ५ ॥ धर्मधुरं-
धर धोरी भागीयो । ज्ञान दिवाकर
डुब्योरे ॥ शासनमांथीरे सिंह सिधावी-

यो । सूरलोके गुरु पूग्योरे ॥ एवा० ॥६॥ आतमराम सुनाम प्रसिद्ध छे। आनंद-विजय संवेगीरे ॥ श्रीमद्‌विजयानंद सूरीश्वरु । जगपंडित सुविवेकीरे ॥ एवा० ॥ ७ ॥ भव अटवीमांरे शितळ सुरतरू । जळनिधीमां जेम झाझरे ॥ असरण शरण कृपा कर मुनिवरु । आलंबन गुरुराजरे ॥ एवा० ॥ ८ ॥ ते गुरु निशदीन सौने सांभरे । जे अतिशय उपगारीरे ॥ पदपंकज मन मधुकर मोही रह्यो। सांकळचंद संभारीरे ॥ एवा० ॥ ९ ॥ परभाते उठी गुरुगुण गणे । ध्यान गुरुनुं धारेरे ॥ आतमराम रटण जे नित करे । दुरगति दूर निवारेरे ॥ एवा० ॥ १० ॥ इति० ॥

## पुज्यपाद श्रीमद्विजयानंद सूरीश्वजोना निर्वाण महोत्सव वेळाए वडादरामां गवाएलुं पद.

॥ राग सोरठ ॥

आजे विजय जयंति विश्ववंद्य सूरिनी

करीरे । आजे स्वर्ग गमन तिथी विजया-
नंद सूरिनो खरीरे ॥ ए टेक० ॥ १ ॥
ओगणीसें बावननी साले । जेठ अष्टमी
दीनदुःख साले ॥ शासन सूबो स्वर्ग
सिधाव्यो छेतरीरे ॥ आजे० ॥ १ ॥ भानु
अस्त थयो वय पेहेलो । सायंकाळ सम-
यथी व्हेलो ॥ धर्मधुरंधर धोरीए तजी
धूंसरीरे ॥ आजे० ॥ २ ॥ विश्व वंद्य गणी
मूर्त्ति स्थापी । चिकागोमां कीर्त्ति व्यापी ॥
ग्रंथ गुंथ्या बहु जीनशासनथी उद्धरीरे ॥
आजे० ॥ ३ ॥ विजय वावटो धर्म राज्य-
नो । रोप्यो महावीर देव ताजनो ॥ काम
रह्यां बाकी बहु उतावळ करीरे ॥ आजे०
॥ ४ ॥ गयो सिंह जीन शासन वनथी ।
स्वापद आपद दे तनमनथी ॥ नविनपंथ
कुमति जपवा नव दे जरीरे ॥ आजे०
॥ ५ ॥ जे दीनथी गुरु स्वर्ग सिधाव्या ।
ते दीनथी पाखंडी फाव्या ॥ भेद पडा-

व्या खाय काष्ट घन कोतरीरे ॥ आजे० ॥ ६ ॥ पटोधर विजयकमळसूरि आव्या। श्रमणसंघ साथे बहु लाव्या ॥ आज जयंती वडोदरे गुरुनी करीरे ॥ आजे० ॥ ७ ॥ जीन मंदिरमां महोत्सव कीधो। गुरुगुण गाइने ल्हावो लीधो ॥ द्यो दरिशन एक वेळा स्वर्गथी उतरीरे ॥ आजे० ॥ ८ ॥ गुण किर्तन गाया भविवृंदे। अति आनंदे "सांकळचंदे" ॥ आरती उतारे "आदिजीन मंडळी" रे ॥ आजे० ॥ ९ ॥

## वडोदरामां मुनि संमेलन वखते गवाएली गहुंली.

॥आवो आवो जशोदाना कंत अमघेर आवोरे ॥ए राग॥

आज आनंदकंद अमंद अमीरस वुठ्यारे। आज जगगुरु विजयानंद सूरीश्वर त्रुठ्यारे ॥ जे वादीमतंगज पंचानन गुण दरीयारे। बहु ढुंढकने प्रतिबोधीने श्रावक करीयारे ॥ आज० ॥ १ ॥ जस

मूर्त्ति चिकागोमां विश्ववंद्य गणी स्थापीरे। गया स्वर्गे ते सूरीराज कीर्ति मही व्यापीरे ॥ तस पटोधर विजयकमळसूरि गुणना दरीयारे। धरी देह धर्म अवतार अहीं अवतरीयारे ॥ आज० ॥ २ ॥ सूरिराजाधिराजा छत्रीस गुण अजवाळेरे। विरती पट्टराणी साथ निरंतर महालेरे ॥ युवराज विनय आर्जव मार्दव बे मंत्रीरे। करे राजकाज सुखसाज सुबुद्धि तंत्रीरे ॥ आज० ॥ ३ ॥ ज्ञान दर्शन चरण ने तप सेना चतुरंगीरे। समकीत सेनापति साथ रहे उमंगीरे ॥ श्याद्वाद तूरी नय हस्तीनी शुभ रीद्धिरे। शिलांगरथे स्वारी सूरीराजे कीधीरे ॥ आज० ॥ ४ ॥ जेनुं धर्मराज आज जैनसमाजमां चालेरे। जिनशासन आणा भवि नरनारी पाळेरे। क्षमा खडग अडगने श्रद्धा डंको वाजेरे। एवा राजाधिराजसूरि वीरपुरमां

गजरे ॥ आज० ॥ ५ ॥ साथे श्रमण घणा श्रुत ज्ञानध्यान अ सरीयार । श्री वीरविजय उवज्झाय ज्ञान गुण दरीयारे ॥ गंगाजळ समजे निर्मळ महा उपकारीरे । जेना ज्ञानध्यान एकताननी जउं बलिहारीरे ॥ आज० ॥ ६ ॥ वळी स्थविरप्रवर्त्तक कान्तिविजय मुनिरायारे । समतासागर नहि मोह कोहने मायारे ॥ गुरु हंसविजयमुनि राजहंससम मानुरे । बाह्यांतर चरण करण वृत उज्ज्वळ जाणुंरे ॥ आज० ॥ ७ ॥ जगवल्लभ वल्लभविजय मुनि शोभागीरे । जेना ज्ञाननी तत्व वेणा भारतमां वागीरे ॥ लघुवयमां गुणगण साथे अनुभव धार्योरे । नाभाना राज्यमां विजय ढुंढकथी वधार्योरे ॥ आज० ॥ ८ ॥ इत्यादिक श्रमण संघ साथे परवरीयारे । धरी चरणकमळ पुर पाटण पावन करीयारे ॥ सूरिराज आज वीरपुर वडोदरे

राजेरे । परिवार सहीत पंचानन सम जे गाजेरे ॥ आज० ॥ ९ ॥ जिनशासनमां विक्षेप स्हेज आ वेळारे। थया नविन पंथ कई कुमति पाक्या मेलारे ॥ जेथी संघ विषे मत्तभेद पड्यो ते टळशेरे । सांकळचंद संप समाज विषे सूरि करशेरे ॥ आज० ॥ १० ॥ इति० ॥

## ॥ श्री विजयकमळसूरिजीने करेली विनंतीनी गहुंली.

॥ पीतळ लोटा जळे भर्यारे ॥ ए राग ॥

जिनशासन अजवाळवारे । करवा संघ संभाळरे ॥ सूरीश्वर राज्यनगरमां पधारजोरे ॥ टेक ॥ चरणकमळ धरतां थशेरे। संघमां मंगळमाळरे ॥ सूरी० ॥ १ ॥ विजयानंद सूरीश्वरेरे । कीधां चोमासां बे चाररे ॥ सूरी० ॥ २ ॥ विजयकमळसूरि विनवुंरे । करज्यो चोमासुं आ वाररे ॥ सूरी० ॥ ३ ॥ नविन पंथना पासमांरे ।

भोळां मृगलां फसायरे ॥ सूरी० ॥ ४ ॥ संघमां कोई पुछे नहींरे । फाटयामां पग ए न्यायरे ॥ सूरी० ॥५॥ सूरीश्वर आप पधारतांरे । संप थशे संघ मांह्यरे ॥ सूरी० ॥ ६ ॥ स्हेज श्रमण संघमां थयोरे । भिन्नभाव मटी जायरे ॥ सूरी० ॥ ७ ॥ राजहंस सम राजतारे । हंसविजय अणगाररे ॥ सूरी० ॥ ८ ॥ संपत्तविजय साथे कर्युंरे । चोमासुं एकवाररे ॥ सूरी० ॥ ९ ॥ क्रिया शुन्य प्रतिबोधीयारे । भवि नरनारी चकोररे ॥ सूरी० ॥ १० ॥ गुरुगुण संभारे सदारे । वाट जुवे घन मोररे ॥ सूरी० ॥ ११ ॥ जैनपुरीमां पधारतांरे । लाभ घणो सूरीराजरे ॥ सूरी० ॥ १२ ॥ वहेला आप पधारजोरे । सांकळचंद सुख साजरे ॥ सूरी० ॥ १३ ॥ इति० ॥



## वडोदरामां मुनिराजश्री हंसविजयजी पधार्या ते वखते आदि जिनमंडळे गाएलुं गायन.

॥ पशुमां पडी एक तकरार ॥ ए राग ॥

पधार्या हंसविजय मुनिराज । वीरक्षेत्रभूमि पावन कीधी ॥ आनंदनो दिन आज । सफळ सौ थयां संघनां काज ॥ पधार्या० ॥ टेक॥ ज्ञानरयण भरिया गुणदरिया । गीतारथ गंभीर ॥ उछळे वैराग्यादि तरंगो । पण छे शांत समीर ॥ भविजन पंखी बेसे पाज ॥ पधार्या० ॥१॥ परिसह नदीओनुं पूर आवे । चळे न समता धीर ॥ पंच महाव्रत क्षीरनीरथी । टाले भविभवपीड जगतमां एवा नर विरलाज ॥ पधार्या० ॥ २ ॥ पूरव दक्षिण गुर्जर मरुधर । कच्छ पंजाब श्रीकार ॥ विचरी देश विदेश कर्यो बहु । जिनशासनउद्धार ॥ वधारी उभय लोकमां लाज ॥

पधार्या० ॥ ३ ॥ प्रगटया पूरव पुण्य महोदय । आनंद आज अपार ॥ तरीया तोरण विजयवावटा । रोप्या ठारो ठार ॥ हर्ष उभारायो जैन समाज ॥ पधार्या० ॥ ४ ॥ भलुं थयुं आज सुगुरु पधार्या। जे भवसागर यान ॥ आदी जिन मंडल सांकलचंद । गाय गुरु गुण गान ॥ उच्चरे जयजय एक अवाज ॥ पधार्या० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## धर्मगुरुश्री प्रत्ये लुणशावाडाना जैनोनी विनंती,

॥ मान मायाना करनारारे ॥ ए राग ॥

ऊर धारो अरज ऊर धारोरे। गुरुराज अरज ऊर धारो ॥ दीनद्धारे कृपालु पधारोरे। नथी संसार सागर आरो ॥ टेक०॥ आशा राखीती हैए घणी पण । देख्यो निराशा किनारोरे ॥ भाग्य एवां शुं होशे अमारां । जाये चाल्यो जोग सारोरे ॥ गुरु० ॥ १ ॥ पुत्रो तजी शुं ? जाये पिताजी।

ऊरे दयालु विचार। ॥ ज्यारे नमीशुं पाये तमारा । त्यारे उदय छे अमारोरे ॥ गुरु० ॥ २ ॥ बोध आपीने पाषाण पलाळ्या । कीधो हृदयमां सुधारो ॥ ज्ञान दीवाने अमे क्यां जइ गोतीशुं । त्यागी निरागी विचारोरे ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ हंस समाना हंस-विजयजी । विनंती अमारी स्वीकारो ॥ संपतविजयजी सौए जाणो छो । आवी अमोने उद्धारोरे ॥ गुरु० ॥४॥ पोळ मोटीना जैनोने आपे । कीधा घणा आभारो ॥ बेउ कर जोडी केशव कहे छे । तारो गुरु हवे तारोरे ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ धर्मगुरुश्रीना वीहार प्रसंगे गावा लायक गहुंली ॥

॥ मारे सोना सरीखो सुरज उगीयो ॥ ए राग ॥

गुरुराज विहार करशो नहि । जाणी शेवक शोच करे घणो ॥ कोण सुणावशे सिद्धांत । गुरुराज विहार करशो नहि ॥

मिठी वाणीने निरमळ वाक्यथी । बोध आपशे आवो हवे कोण ॥ गुरु० ॥१॥ पूरा पुन्ये ञळ्या छे जोग जैनोने । तज्यो तेह ते केम तजाय ॥ गुरु० ॥ २ ॥ बोध आपी गराणो पलाञोआ । पायुं धर्मरुपी शुभ नीर ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ कोइदी उपाश्रये नव आवता । तेवा क्यां जइ पामशे बोध ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ अनाचारीए आडो मारग मूकीओ । शूणी आप तणो उपदेश ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ अती छट्ठ अठम थता होंशथी । थशे एकासणुं शुं कदी एक ॥ गुरु० ॥ ६ ॥ हीरो हाथमां आव्यो पाछो जाय छे । दीवो ञानना गोतीशुं क्यांय ॥ गुरु० ॥ ७ ॥ सिंह समु सिंहासन शोभतु । तेह खाली जोयुं केम जाय ॥ गुरु० ॥ ८ ॥ नरनारी भरे छे नीर नेत्रमां । घर काम न सूझे कांइ ॥ गुरु० ॥ ९ ॥ कहे केशव बेउ करजोडीने । करो फागण चोमासु यांह्य ॥ गुरु० ॥१०॥

## ॥ धर्मगुरुश्रीना वीहारनुं जाणी थयेली उदाशी वीषे गहुंली ॥

॥ मा'री पुन्य उदय दशा जागीरे ॥ ए राग ॥

गुरुराज हवे क्यां मळशेरे। मम भाग्य दशा क्यां फळशेरे॥ तम शेवक क्यां जइ ठरशेरे। गुरुराज हवे क्यां मळशेरे ॥ १ ॥ मीठी वाणी छे साकर सेलरे। थाए हृदयमां अम्रत वेलरे ॥ चाले धर्म रुपी रस रेलरे। गुरुराज हवे क्यां मळशेरे ॥ २ ॥ गुरु विहारनुं सउ जाणीरे। नरनारी भरे नेत्र पाणीरे ॥ जाए निरमळ गुणनां खाणीरे। गुरुराज हवे क्यां मळशेरे ॥ ३ ॥ मुनि हंसविजय महाराजरे। रहो अविचळ अम शिरताजरे ॥ कीधां भव्य जनोनां काजरे। गुरुराज हवे क्यां मळशेरे ॥ ४ ॥ दीपे आसन 'वीरना जेवुंरे। बेठा समवसरणमां तेवुंरे॥ लागे संघ सकळने एवुंरे। गुरुराज हवे क्यां मळशेरे ॥ ५ ॥

जैन धर्म मणी शुभ पामीरे । टळ्यां कर्मने कीर्ती जामीरे ॥ कहे श्राविका शीर नामीरे । गुरुराज हवे क्यां मळशेरे ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ मुनिश्रीहंसविजयमहाराजनी गहुंली ॥

॥वाडीना भमराद्राख मिठीरे चांपानेरनी ए देशी ॥

व्हाला मुनिवर दरिशन कीजीये । व्हाला भवजल तारणहाररे ॥ जयवंता गुरुजी ज्ञानी आव्यारे जिन मततणां ॥ ए आंकणी ॥ व्हाला तपगण गगन प्रभाकरु । व्हाला विजयानंद सूरीशरे ॥ जयवंता० ॥ १ ॥ व्हाला तेना प्रतापी शिष्य पाटवी । व्हाला लक्ष्मीविजय उवज्झायरे ॥ जयवंता० ॥ २ ॥ व्हाला तेहनी पासे संयम आदरे । व्हाला हंसविजय मुनिरायरे ॥ जयवंता० ॥ ३ ॥ व्हाला गुर्जर देश सोहामणो । व्हाला नगर वडोदरा शेहेररे ॥ जयवंता० ॥ ४ ॥ व्हालानंदन ज-

गजोंचनतणा । व्हाला माणेक मात म-ल्हाररे ॥ जयवंता० ॥ ५ ॥ व्हाला यावन-वय संयम लह्युं । व्हाला त्यागी वैभव संसाररे ॥ जयवंता० ॥ ६ ॥ व्हाला देश देशांतर विचरिने । व्हाला कीधो बहु उपगाररे ॥ जयवंता० ॥ ७ ॥ व्हाला दीपे कीर्त्ति जगमें घणी । व्हाला कहेतां न आवे पाररे ॥ जयवंता० ॥ ८ ॥ व्हाला राग द्वेष दोनो जीतीया । व्हाला गुप्ति त्रण उरधाररे ॥ जयवंता० ॥ ९ ॥ व्हाला चार कषायन पारिहरी। व्हाला पाले पांच आचाररे ॥ जयवंता० ॥ १० ॥ व्हाला षट जीवना प्रतिपालछे। व्हाला भय सात परिहाररे ॥ जयवंता० ॥ ११ ॥ व्हाला अष्टकर्म हणता थका । व्हाला नव वेध ब्रह्मचर्य धाररे ॥ जयवंता० ॥ १२ ॥ व्हाला दशविध यति धर्म शोभता । व्हाला संयम सत्तर प्रकाररे ॥ जयवंता०

॥ १३ ॥ व्हाला गुण सत्तावीस करी सं-युता । व्हाला वीरशासन शणगाररे ॥ जयवंता० ॥ १४ ॥ व्हाला वीरक्षेत्रना संघनी । व्हाला विनतडी उरधाररे ॥ जयवंता० ॥ १५ ॥ व्हाला करुणानिधि करुणाकरी । व्हाला आव्या भवदुःख भंजन हाररे ॥ जयवंता० ॥ १६ ॥ व्हाला अज्ञान तिमिरथी आंधला । व्हाला अं-जन ज्ञान सलाईरे ॥ जयवंता० ॥ १७ ॥ व्हाला नाखी नेत्र उघाडिया । व्हाला ते गुरु नमो निशदीसरे ॥ जयवंता० ॥ १८ ॥ व्हाला आतम लक्ष्मी कारणे । व्हाला हर्ष अति उरधाररे ॥ जयवंता० ॥ १९ ॥ व्हाला वल्लभ गुरुपद सेवतो । व्हाला विमल विजय गुण गायरे ॥ जयवंता० ॥ २० ॥ इति० ॥

## ॥ धर्मगुरुश्रीना दर्शनार्थे वडोदरे गया त्यां करेली विनंती ॥

॥ मा'रे सोना सरीखो सुरज उगीयो ॥ ए राग ॥

गुरुराजजी वहेला पधारजो । शे'र राजनगर सुनुं पडयुं । झुरे रात दिवस नरनार ॥ गुरुराज० ॥ १ ॥ पूरा पुन्ये मल्या तो जोग जैनोने । तज्यो तेह ते केम तजाय ॥ गुरुराज० ॥ २ ॥ लांखा हंस विनानो उपासरो । सूनो संपतिसिंह विण शंघ ॥ गुरुराज० ॥ ३ ॥ जेह शुभ सिंहासन शोभतुं । तेह वाली खावाने धाय ॥ गुरुराज० ॥ ४ ॥ आपे आवी पाणो पलाळीआ । पायु धर्मरुपी शुभ नीर ॥ गुरुराज० ॥ ५ ॥ नरनारी भरे छे नीर नेत्रमां । शाणी वाणी सांभळवा काज ॥ गुरुराज० ॥ ६ ॥ दीवो ज्ञाननो गोती अमे थाकीयां । हीरो आवी वस्यो छे यांय ॥ गुरुराज० ॥ ७ ॥ मीठी वा-

णीने विमल वदनना । स्वाद सौने रह्यो छे एह ॥ गुरुराज० ॥ ८ ॥ मुनी हंसविजयजी सांभळो । साथे संपत वेजय सुजाण ॥ गुरुराज० ॥ ९ ॥ साल छासठ मागशर मासमां । शुद आठमे कीधी अर्ज ॥ गुरुराज० ॥ १० ॥ करजोडी कहे छे जैन श्रावीका । मळयो धर्म मणी तम पास ॥ गुरुराज० ॥ ११ ॥ इति० ॥

## ॥ मुनिश्री हंसविजयजीनुं संक्षीप्त जीवनचरित्र ॥

श्री हंसविजय महाराज मेरे मन भाये ॥ २ ॥ जेने छति संपदा छोड जाग पाये ॥ ए अंचली ॥ हे भरत दक्षिणके बिच नगर एक भारी (२) सोहे बडोदा नाम वसे नरनारी ॥ तीसी नगरके बीच एक साऊकारी (२) हे सेठ जगजीवनदास बडा वपारी ॥ धनमाणक वामात जीदाने जाए (२) जेने० ॥ १ ॥ हे छो-

टालाल दीया नाम बडे सुकमाला (२) माये राखे गोदके बीच होते है नीहाला ॥ पायाहै जोवनवय जोबनरकमाल (२) शेठ कीया महोत्सव विहा लगन सुभ-भाल ॥ हे सविकलामे चतरपठण हे क-राये ( २ ) जेने० ॥ २ ॥ दिनरात धर-ममे ख्याल तरण ए हारे (२) सुद्ध पाले श्रावक धरम जपे नवकारे ॥ शेत्रुंजा ती-रथको भेटी आबु गीरनारे ( २ ) नित करता पद तपस क्के अनुसारे ॥ हे गुरु भक्तिमें लीन चरण चीत लाये ( २ ) ॥ जेने० ॥ ३ ॥ एक दिवस तिलक बीच वात एक आइ ( २ ) ए धन दोलत और माल सबीहे पराई ॥ ए मात तात सुत भ्रात तेरा नही कोई (२) ए सबी पडा रहे जात हंसजब जाई ॥ धनगुरु हे आत्माराम दीये समजाये ॥ जेने० ॥ ४ ॥ संवत उगणांसोतीस पांचके मांही ( २ )

मुनि लक्ष्मी वेजय महाराज चरणमें आइ॥ लीया पेहेर साधुका वेश वासक्षेप पाइ (२) जब सुणा तात और भ्रातडीगे गछखाइ॥ क्या कहुं में मो.की वात रोए कुरलाए (२) ॥ जेने० ॥ ५ ॥ लीया जांतप ीसा भारी मुनि म.राया (२) जेने स्वजन तात ओर भ्रात सवि समजाया ॥ गए भीज संजमका रंग ज्ञान घट छाया (२) करी नगर नगर मै विहार धरमकुं वधाया ॥ सुतशाल उगुंण–जे बीच जीरे मै आया (२) ॥ जेने० ॥ ६ ॥ धरतेहे आत्मध्यांन अती ितकारी (२) दीये ेशना सूत्रा.सार तारे नरनारी (२) वरसे हे अमृत वेण जाऊं बलीहारी ॥ संपतिविजय महाराज शिष्य सुखकारी ॥ .रद्यालजीरे केवासी मुनि गुण गाये (२) जेने० ॥ ७ ॥ इति० ॥

———>०<———

## ॥ गुरुस्तुति ॥

वाणी हे मुनि हंस प्यारि । जेने तार दीये न दारी ॥ वाणी० ॥ ए आंकणी ॥ नगर वडोदे जनम लीयो हे । हरखत भये न नारी ॥ शेठ जगजीवनदास किया हे । जन्म महोत्सव भारी ॥ वाणी० ॥ १ ॥ सुण उपदेश हुये वैरागी । दिक्षा सुखदा वां धारी ॥ माततात बंधव सब छोडी । धन दौलत और नारी ॥ वाणी० ॥ २ ॥ व्याकर्ण तरकादि बहु पढीया । विद्यावान् हे भारी ॥ पंचमहाव्रत धारी लावे । आहार बेतालीस टाली ॥ वाणी० ॥ ३ ॥ करे वखाण फुलहै खरते । मोह ले परखदा सारी ॥ तनमन हरखे चित नहि डोले । अमृतरस वाणी प्यारी ॥ वाणी० ॥ ४ ॥ संपत्ति विजय शिष्य गुणवंता । संपत् ज्ञान दातारां ॥ वृतपचखाणने नियम करावै । सामायक सुखकारी ॥ वाणी० ॥ ५ ॥

जीरे शहर कीया चोमासा । श्रावक जन हितकारी । ॥ खूब उद्योत किया जिनमतका। धन्य सुगुरु सुखकारी ॥ वाणी० ॥६॥ हंसविजय गुरु मनमें वसिया । महिमा अपरंपारी॥ माघीराम चरणोंका चेरा। नमो नमो त्रिकाली ॥ वाणी० ॥ ७ ॥ इति० ॥

## ॥ मुनि गुणस्तुति ॥

मुनि हंसविजयजी नमो नमो पायारे ॥ ए अंचली ॥ पंचमहाव्रतधारी । पांचही प्रमाद् टारी २ जगजन उपगारी । भवी नमो पायारे ॥ मुनि० ॥ १ ॥ गुरु दौलत त्यागी । ओरतके नही रागी २ आतमसें लयलागी । धन्य मुनि रायारे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ क्षीर नीर हंस जाने । पुण्य पापको पिछाने २ जीवद्याको वखाने । शीव सुखदायारे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ महापुण्य उद्य मानो । आतम उधार टाणो २ तस धन्य भाग्य जानो । गुरुचरण आ-

यारे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ हंस सम हंस थावे। आतम संपत पावे २ वल्लभ नमावे भावे। शांशगुण गाया ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ मुनिराज श्री हंसविजयजी महाराजने मारवार मंडळीए तलगा-रामां अभिवंदन करती वखते गाएलां गायनो ॥

॥ मनहर छंद ॥

क्षिर नीर न्यारां करी । हंस पयपान करे ॥ तेम मुनिहंस पान । करे श्रुतज्ञाननुं ॥ हंसमोती चुनि खाय । गुरुजी कषाय खाय ॥ अप्रमत ठाणे रही । मुळ काढ्युं माननुं ॥ हंसनो वरण श्वेत । मुनिनो आचार श्वेत ॥ वखाणी वखाणी करुं । वर्णन शुं ध्याननुं ॥ हंसथी परमहंस । मुनिमां ए राजहंस ॥ मानु मुनि हंस दीसे । छोरु खानदाननुं ॥

॥ पाटणना नृप नथी तुज द्वारे पद्मणी राणी ॥
॥ ए राग ॥

हंस विजय गुरु भेटया भावे आनंदनो दिन आज । सफळ दिन सफळ घडी पळ आज ॥ उग्यो कंचन वरणो रविराज । गएलां वळ्यां आज शूभ झाझ ॥ तिलारापूर भेटया महाराज ॥ हंस० ॥ १ ॥ मानसरोंस हंसमुनिराज । दीठो देदार सर्यां शुभ काज ॥ पुरवभव पुण्य आज प्रगटयंज । मळया भवसागरमां गुरु झाझ ॥ हंस० ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत धारक माहाराज। भविभवताप नीवारक साज॥ वधारी उभय लोकनी लाज । सुधार्यां आतमकाज महाराज ॥ हंस० ॥ ३ ॥ इति० ॥

॥ इंद्रविजय छंद ॥

मानसहंस ज्युं हंस महामुनि । पंच महाव्रत धारक धोरी ॥ तन धन यौवन चंचळ जानके । दौलत दुनीयां दिवानीको छोरी ॥ भवरण थंमको रोपके ध्या-

नसें । हाथ कीनी श्रुत ज्ञानकी दोरी ॥ परिसह फोजको घेरलीनी अब । मुक्ति पुरीसें निशानको जोरी ॥ १ ॥ वैरीको वारके चौर विदारके । शांति कटारिसें मोहको मोडी ॥ मंगलकारी सुधर्मकी मूर्तिसें । करतन कोउ [illegible]में होडी ॥ ऐसे महा मु[illegible] वंदन । आवत म[illegible]वीरमंडल दोडी ॥ सांकलचंद सदा मुनि[illegible]सका । वंदन करत उभय क[illegible] जोडी ॥ २ ॥ इति० ॥

## ॥ मुनिराज श्री [illegible]सवीजयजी तथा श्री संपत्विजयजीनुं संसारीक संक्षिप्त जी[illegible]नचरि[illegible]त्र ॥

॥ वाडीना भमरा । द्राक्ष मिठीरे चांपानेरनी ॥ ए राग ॥

सूणो सूजनो । जीवनचरित्र संसारनुं ॥ ए टेक० ॥ गुरु हंसविजयजी जे आपणा । हता वीशाश्रीमाळी श्रावक एह रे ॥ सूणो [illegible]जना० ॥ १ ॥ माता माणे-

॰बाइ कूखे उपन्या । शूभ पाडयुं छोटा-
लाल नाम रे ॥ सूणो सूजनो० ॥ २ ॥
पीता जगजीवनना सुकुळमां । पाक्या प्रा-
क्रमी महा पुन्यवंत रे ॥ सूणो सूजनो०
॥ ३ ॥ शेहेर वडोदराना ए निवाशीने ।
हतो साचो धरमप राग रे ॥ सूणो सू-
जनो० ॥ ४ ॥ हता लक्षाधीपति तोये ते
तजी । लीधो संजम हीरो निज हाथ रे ॥
सूणो सूजनो० ॥ ५ ॥ एह हंसविजयजी
छे हालमां । जीनशासन केरा शणगार रे ॥
सूणो सूजनो० ॥ ६ ॥ मुनि संपतवि-
जयनी वातडी । भाखु भाव धरीने तम-
पास रे ॥ सूणो सूजनो० ॥ ७ ॥ माता
उजमबाई कूखे उपन्या । नाम लाडथी
पाडयुं लेरचंद रे ॥ सूणो सूजनो० ॥ ८ ॥
पाक्यो कोहीनुर हीराचंदना कुळमां । रुडा
पाटण शे’रनी मोझार रे ॥ सूणो सूज-
नो० ॥ ९ ॥ ज्ञाते पोरवाड जैनी वाणीया ।

लघु वयमां लीधो तो संजमभार रे ॥ सूणो सूजनो० ॥ १० ॥ एह संपत्तविजय पन्यास छे । बाळब्रह्मचारी चतुर सुजाण रे ॥ सूणो सूजनो० ॥ ११ ॥ कहे केशव बेउ करजोडीने । पाम्यो आप प्रतापे उ-पदेश रे ॥ सूणो सूजनो० ॥ १२ ॥ इति० ॥

## ॥ श्रीमान् मुनीराज श्री हंसविजय-जी महाराज सीनोर पधार्या ते वखते गहुंलीओ गवाएली ते ॥

## ॥ श्रावक चंदुलालकृत गुरुगुण गहुंली ॥

॥ विमला नवी करशो उच्चाट के व्हेला आवशुंरे ॥ ए राग ॥

धन धन भाग्य दिवस मुज आज उग्यो सूर आंगणेरे । मानु वरस्या मो-तीडे मेह भला मम बारणेरे ॥ धन धन० ॥ आंकणी ॥ सिनोर शहेर विषे शुभ दि-वसे । हंसविजयजी पधार्या हर्षे ॥ वरसे

गंभिर प्रवचनसार तणी गिरारे ॥ धन धन० ॥ १ ॥ नयज्ञ नेमी चंद्रसूरीश्वर। चउसठ पाठ प्ररुपे सुंदर ॥ प्ररुपे अभिनव अर्थ शिलांगांकी (१८०००) टीकारे ॥ धन धन० ॥ २ ॥ शिष्य प्रवर श्री संपत्तविजयजी । सेवकरे श्री सोमविजयजी ॥ सिद्ध ेमपठिता श्री कुसुमविजय ुनिरे ॥ धन धन० ॥ ३ ॥ तरुणविजयजी तृष्णा त्यागी । गुरुभक्ति मन ्ति जागी ॥ भागी भवसाग नी भीती आकरीरे ॥ धन धन० ॥ ४ ॥ गीतारथ गुरु हंसविजयजी । नमो नमो [illegible] वरजी ॥ सरजीचंद्र कहे तस शिवअधिरोहिणीरे ॥ धन धन० ॥ ५ ॥ इति०

## ॥ गुरुगुण गहुंली बीजी ॥

॥ सांभलजो मुनि संजम रागे उपसमश्रेणे चढीयारे ॥
ए देशी ॥

ए उपगार अधिक मुनिवरनो केम वि-

---

१ श्री सिद्धसेनाचार्यकृत अढारहजारी टीका—

सरिये मनथीरे ॥ ए आंकणी ॥ हंसविजय मुनि सुरत लेनमां आवी दिये उपदेशोरे । आरब एकने पारसी बेने मदिरा मांस न लेशोरे ॥ ए उपगार० ॥ १ ॥ पारसी मुनि वचन प्रमाणी । लेई प्रतिज्ञा प्रेमेरे ॥ जिनदरशन करि निज घेर आवे । धारे दृढता नेमेरे ॥ ए उपगार० ॥ २ ॥ सचीनपुरे श्री मुनिवर आवे । जिन उपदेश सुणावेरे ॥ नगर नवाबना राजवरगमां । जसमुनि वरनो जावेरे ॥ ए उपगार० ॥३॥ निशि आमंत्रण दिध नवाबे । जो मुनि मेहेल पधारोरे ॥ त्यां निशिगमन दुषण दरशावी । आमंत्रण न स्वीकारेरे ॥ ए उपगार० ॥ ४ ॥ पण मुनि दरशनना अभिलाषी । आप उपाश्रय आवेरे ॥ धर्म तणो उपदेश सुणंतां । हरषीत । मनमां थावेरे ॥ ए उपगार० ॥ ५ ॥ शालदुसाला ने अत्तर आपे । मुनि स्वागत

मन धारीरे ॥ पण गुरु तो परिग्र.ना त्यागी । स्वागत तेह निवारेरे ॥ ए उपगा० ॥ ६ ॥ ते गुरु अरपीत वस्तु ्रतमां । संघने नामे आवेरे ॥ जीवदया उपदश पुनरपि । गुरुजी सत्य ्णावेरे ॥ ए उपगार० ॥ ७ ॥ जीव अहिंसा जगजयवंती । एम नवाब विचारेरे ॥ मुनिवरना उपदेश वचनथी । धर्म दया मन धारेरे ॥ ए उपगार० ॥ ८ ॥ तदनंतर मुनि ंसविजयजी । संपतविजयजी संगरे ॥ विचरंता आवे नगरीमां । नवसारी मन रंगेरे ॥ ए उपगार० ॥ ९ ॥ दान अभयथी उतम जगमां । ज्ञान्ुं दान गणावेरे ॥ ए उपदेश सुणावि सहुने । विद्याशाला थपावेरे ॥ ए उपगार० ॥ १० ॥ बीलीमारा नगर बबरकुल । पावन मुनिने पगलेरे ॥ फोजदार उद्यमनो वादि । माने उद्यम सघलेरे ॥ ए उपगार० ॥ ११ ॥ मुनिवर कर्म स ंात

उद्यमथी । फलासे ि समजावेरे ॥ उद्यम एके फल नवी पामे । जो कदि कर्म भमावेरे ॥ ए उपगार० ॥ १२ ॥ लाभ गणी व्यापार वधारे । पुरवपुण्य अभावेरे ॥ खोट जतां धन घरनुं जावे । उद्यम त्यां नवी फावेरे ॥ ए उपगा ० ॥ १३ ॥ इत्यादिक उदाहरण सुणीने । संकाजाल विसारेरे ॥ वाद स्वीकारे सत्य कर्मनो । माने मुनि उपगारेरे ॥ ए उपगार० ॥ १४ ॥ आरब अ स्तानननो वासी । मुनिवर पासे आवेरे ॥ अवसर ज णी जीव याना । शुभ उपदेश णावेरे ॥ ए उपगा ० ॥ १५ ॥ प्रीत धरी गुरुवर मुज प्रत्ये । काम कहे फरमावोरे ॥ भीमपुरा डुम्मस सागरमां । मच्छवध बंध करावोरे ॥ ए उपगार०॥१६॥ ए उपकारी कार्य सुणिने । पर्वपजुसणमांहीरे ॥ धन पुष्कल खरची मन रंगे । जाल बंध करी तांहीरे ॥ ए उपगार० ॥ १७ ॥

ए.वा अति उपगार मुनिना । जगमां उत्तम जोयारे ॥ चंद्र कहे मुनि वंदन करतां । प पना पुंजने धोयारे ॥ ए उपगार० ॥ १८ ॥ इति० ॥

## ॥ गहुंली त्रिजी ॥

होवे सखी हंस कमलना रागी रे । एमां अचरीज वात शुं लागी ॥ होवे सखी० ॥ ॥ १ ॥ हंस देहथी उज्वल देख्यारे । गतिमंद म.....ता पेख्यारे ॥ जेणे तृणना चारा ..... ॥ होवे सखी० ॥ २ ॥ सुदेवादितत्व जे दुग्धरे । .देवादि जलथी अशुद्धरे ॥ हंसे शोधी कर्युं अति शुद्ध ॥ होवे सखी० ॥ ३ ॥ जिन वचना. तसु सलीलेरे । नवलां नयकमलो खीलेरे ॥ हंस एवा सरोवरे झीले ॥ होवे सखी० ॥ ४ ॥ शुभवर्ण मुक्ताफल ..... । शुद्ध श्रद्धा चंचुथी उदारारे ॥ हंस एवा चरे नित्य चारा ॥ होवे सखी० ॥ ५ ॥ कली

श्यामघटा ... थीरे । कुवचन वर्षे सरे ज्यांथीरे ॥ हंस स्थानांतर करे त्यांथी ॥ होवे सखी० ॥ ६ ॥ हंसविजयजी हंस समानरे । उपमा सम छे अभिधानरे ॥ भवी जीवो करे बहु मान ॥ होवे सखी० ॥७॥ शुभ दीने सीनोर पधारीरे । करी संघने बहु आभारीरे ॥ कहे चंद्र सुभक्ति विचारी ॥ होवे सखी० ॥ ८ ॥ इति०

॥ गहुंली चोथी ॥

॥ जिनराजाताजा मल्ली बीराजे भोयणी गाममां ॥ ए चाल ॥

१ आतम आनंदी हंसविजय गुरु वंदिये ॥ए आंकणी ॥ तत्व सुणाव अमी वरसावे सांभलतां गुण थावे । अनुपम सुरत शांत स्वभावी देखी चित उल्लसावरे ॥ आतम० ॥ १ ॥ मारण शूरा ज्ञान खडगथी विषम इंद्रियो वैरी । निजशक्ति व्यक्ति क वान तप संयम धरे ल्हे-

रीरे ॥ आतम० ॥ २ ॥ राशी ज ।की-
र्तिनो जगमें जयध्वज जिनना ।पे । देश-
वि- शना तीर्थ वंदीन पाप पंकने लोपेरे॥
आतम० ॥ ३ ॥ मनन करी ...नुं
पोते यतिगुण गण आधारे । भव्यजनोना
...ह बंधु धर्म कार्यने साधेरे॥ आतम०
॥ ४ ॥ जीमूतपरे जगजन उपगारी
जीवरक्षक कहावे । जे नरनारी गुरु ण
गावे तसगुण लब्धि थावेरे ॥ आतम०
॥ ५ ॥ इति० ॥

## ॥ गहुंली पांचमी ॥

॥ सुण सटोरीया सट्टाना कुसंगे बटो लागसे ए चाल ॥

हे भक्तजन। हंसाविजयगुरु सेवो पूरण
प्रीते । एथी मल । रुधिसिद्धि स ह। रुडी
रीते ॥ ए आंकणी ॥ गुरुसेवन सौथी छे
मोटुं । ते आगल बीजुं छे छोटुं ॥ सौ
साधन एह विना खोटुं ॥ हे भक्त० ॥ १ ॥
गुरु सेव्या भक्तिथी जेणे । सुखनुं साधन

सौ कर्युं तेने ॥ भय देखे नहीं कदी ते नेणे ॥ हे भक्त० ॥ २ ॥ गुरुने परमार्थथी गुरु जाणो । ज्ञानदीपक सौ तनमन आणो ॥ हेवा निश्चयनो नर शाणो ॥ हे भक्त० ॥ ३ ॥ थया पूर्वे श्री गौतम स्वामी । न हती तेमां कांइये खामी॥ पण तरीया ते गुरुपद नामी॥ हे भक्त० ॥ ४ ॥ जे भवसागर मांहे तारे। पलमां दुःख दावानल वारे ॥ दुष्टो ते गुरुपद नव धारे ॥ हे भक्त० ॥ ५ ॥ धारोने आ निश्चय सार । मुनिवरे कर्यो छे निरधार॥ एथी भवसागरनो पार ॥ हे भक्त० ॥ ६ ॥ इति० ॥

## ॥ वैराग्यजनक ज्ञानप्रबोध पद ॥

स्हेज शिखामण मनवा मानी ले मारी'। पळवुं परपंथे एक दीन दुनीयां विसारी ॥ मनवा मानी ले मारी ॥ टेक० ॥ पर्णकुटीना जेवी काची कायानी माया । पवन झपाटे पळमां ढळी पडनारी ॥ मनवा०

॥ १ ॥ संभाळी पाळीपोषी पण नहि रहे-
नारी। एक दीन जंगलमां जइने डेरो
देनारी ॥ मनवा० ॥ २ ॥ शेज तळाइ
फुलनी चादर खुंचे वहाला । शमशाने
जइने करवी काष्ट पथारी ॥ मनवा० ॥ ३ ॥
खोखरी दुणी आखर वांसनी घोडी वहाली।
लाडी वाडीने गाडी नहि आवे ला' री ॥
मनवा० ॥ ४ ॥ शेरीतक नारी चहे लग
सगांने सबंधी । वळशे वळावी काया भष्म
थनारी ॥ मनवा० ॥ ५ ॥ भक्ति कर प्र-
भुनी प्यारा ले तुं भलाइ । सांकळचंद
कुडी काया माटी थनारी ॥ मनवा० ॥ ६ ॥

## ॥ भक्तिरस भरपूर जिणेंद्र स्तुति ॥

॥ राग उपरनो ॥

आटली आ अरजी जिनजी ध्यानमां
लेजो । जेवोतेवो पण प्रभुजी पोतानो क-
हेजो ॥ जिनजी ध्यानमां लेजो ॥ टेक०॥
अमे तमे रमीआ भेळा नाथ अनंती
वेळा । प्रितलडी पाळी समकित सुखड-

लीं देजो ॥ जिनजी० ॥ १ ॥ अलगा जइ बेठा भक्ते मनधर पेठा । कबजे आव्या नहि मुकुं अंत मां रहेजो ॥ जिनजी० ॥ २ ॥ कागळनो कटको के संदेशो नहि पोंचे । कोने कहुं प्रभुने जइने संदेशो कहेजो ॥ जिनजी० ॥३॥ शक्ति नथी पण भक्ति मुक्तिने खेंचे । लोहचुंबक जेम लोहने तेम निरवहेजो ॥ जिनजी० ॥ ४ ॥ जीवाने दहल:रमां मोह लुटारे घेर्यो । धर्मराजाने प्रभुजी वहारे अहीं भेजो ॥ जिनजी० ॥ ५ ॥ मो'टानो महिमा मो'टो आशरो मो'टो । सेवक सांकळचंद मागे शिवसुख देजो ॥ जिनजी० ॥६॥ इति० ॥

## ॥ बहेनो अने बाळाओने हितशिक्षा ॥

### ॥ गरबी ॥

॥ बहेनी सांभळ पेली कोयलडी तरु वृंदमांरे ॥
॥ ए राग ॥

सखी सदाचार पाळी संसार सुधारी-

एरे । लाज वधारीएरे ॥ ए टेक०॥ बहेनी शियळ सुभुषण सजीए । पर निंद्या तजीए प्रभु भजीए। पतिव्रत पाळी उभय सुकुळ अजवाळीएरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥ १ ॥ विनय विवेक वडा नो करीए । वे'रझेरने वाद विसरीए । अधिक उणे संतोषी रही मन वारीएरे ।लाज वधारीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥ २ ॥ पतिनी आवकजा क भाळी । खरचखुटण करीए संभाळी । हठ करीं कांइ न लेंइए निज मन मारीएरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥ ३ ॥ जुठी वात न मुख उच्चरीए। परनी वाते पेट न भरीए । खोटी आळे परने पिड न पाडी एरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥ ४ ॥ चोरी चाडी चूगली तजीए । अदेखाइ तजीए सुख सजीये। शोक्य बाळने निज बाळक सम पाळीएरें । लाज वधा-

रीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥ ५ ॥ झीणां आछां वस्त्र न सजीए । अंग अछकलां वेडा तजीए । कुळवंती कजीओ [illegible] निवारीएरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥ ६ ॥ सीता [illegible]मयंती पंचाळी । [illegible] गुण नित्य संभाळी । तस पगले चाली जगजश विस्तारीएरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी सदाचार० ॥७॥ विद्या भणी विप्रीत जे चाले । माततात लजवे दुःख साले । भण्युं गण्युं बोळ्युं दरीए ए नारीएरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी स[illegible]चार० ॥ ८ ॥ [illegible] सदाचार शिल पाळे । सुकुळा स्त्री चाले शुभ चाले । सांक[illegible]चंद सुजश संसारे सारीएरे । लाज वधारीएरे ॥ सखी स[illegible]चार० ॥९॥ इति० ॥

## ॥ अभण अने विद्वाननो विवाद ॥

॥ पशुमां पडी एक तकरार ॥ ए राग ॥

अभण ने पंडीत तणो विवाद । थयो

एक वेळा दरबारे ॥ सभा सुणे फरियाद । आपवा नेक न्यायनी दाद ॥ अभण ने पंडित तणो विवाद ॥ ए टेक० ॥ कहे अभण [illegible]रखजन भोजन । शयन करे सुख पेर ॥ चिंता के कांइ फिकर न तेने । मस्त करे बहु ले'र ॥ जरी नहि कोई वाते विखवाद ॥ अभण ने० ॥ १ ॥ भणवुं गणवुं ने वळी भूलवुं । फरी फरीं करवुं याद ॥ मनने मगजमारी करी करवुं । नेत्र तेज बरबाद ॥ मळे क्यां परमेश्वरनो चांद ॥ अभण ने० ॥ २ ॥ अभण रळे ने भण्यो खूवे धन । भाग्य प्रमाणे हाल ॥ भण्यो गण्यो कोई आगळ दोडे। अभण चढे सुखपाल ॥ शुं करवा करीए काय विशाद ॥ अभण नें० ॥ ३ ॥ कोट बुट चस्मा नें टोपी । पाटलुन सोंटी तोर ॥ मळे न नोकरी सुझे न धंधो । फरे हरायुं ढोर ॥ थाय नहि महेनत मिथ्या वा-

द् ॥ अभण ने० ॥ ४ ॥ वळतुं कहे विद्वान अभणने । निंद्रा मैथुन अहार ॥ भय संज्ञा पशु नरमां सरखां । ज्ञान मनुष्यमां सार ॥ ज्ञान विण पशुथी नर बरबाद ॥ अभण ने० ॥ ५ ॥ चतुर घटे चिंता मूरख मन । नहिं चिंता नहि भान ॥ तत्वा तत्व लहे पंडित जन । मूरख जन मस्तान ॥ विबुधजन ले ज्ञानामृत स्वाद ॥ अभण ने० ॥ ६ ॥ अभण रळे विद्वान खूवे धन । ए जुगतो नहि न्याय ॥ राजा देश पुजाय विबुधजन । देशविदेश पुजाय ॥ करे नहि पंडित कदी प्रमाद ॥ अभण ने० ॥ ७ ॥ भर्यो न छलके पठीत मूर्खजन । सजे विदेशी वेष ॥ विबुध देशनो वेष तजे नहि । नम्र छके नहि लेश ॥ विबुधने विद्यानो आस्वाद ॥ अभण ने० ॥ ८ ॥ ज्ञानीने आनंद ज्ञानथी । मगजमारी नव होय ॥ चर्मचक्षु कोई चस्मा

घाले । दिव्य नेत्रथी जोय ॥ करे महेनत भुंके खरनाद ॥ अभण ने० ॥ ९ ॥ विद्या धनने चोर न लुटे । भाई न मागे भाग॥ पंथे पळतां भार न लागे । खरचे वधे अथाग ॥ हंसमां अभण जेम बकवा ॥ अभण ने० ॥ १० ॥ राज्यसभाए कर्यो न्याय शुभ । ज्ञान सार संसार ॥ विबुध विश्वमां साचो सौथी । धन्यधरा गणगार ॥ विबुध धन सांकळचंद आल्हाद ॥ अभण ने० ॥ ११ ॥ इति० ॥

## ॥ मानथी थती हानी ॥

पंचपोथीरे ठवणी पाठां विटांगणा ॥ ए राग ॥

मान मर्कटरे मदगिरिना शिखरे चडे । मारी छदकारे अवर शिखर उपर पडे ॥ अनुक्रमेरे आठ शिखर पर आथडे । त्यांथी भूतळरे पडी अधोगतिमां रडवडे ॥१॥ स्वार्थ के पर्मार्थमां अभिमान धार्मिक काममां । धर्मार्थ कामे मान माया रा-

चता जीव नाममां ॥ सभामंडळ समा-
जोमां मान इच्छे गाममां । गुरुदेव भक्ते
मानते केम रमे आत्माराममां ॥ २ ॥ जी-
व एवारे मिथ्या गौरवता धरे । पण वि-
रलारे सरळ निस्पृहता आदरे ॥ नव रा-
चेरे नामे शुभ कामो करे । धर्म अर्थनेरे
काम साधी शिव संचरे ॥ ३ ॥ तजी रा-
गद्वेष कषाय ममता शुद्ध समता आदरे ।
पर्मार्थ साधी गुप्तदानदया दमनमां सं-
चरे ॥ भक्ति अने वैराग्य वाशीत आत-
मा उज्वळ करे। गुण गाय सांकळचंद ते
नर विमळ जयकमळा वरे ॥ ४ ॥ इति० ॥

## ॥ बीजतिथि स्तवन ॥

बलीहारी २ ॥ ए देशी ॥

मंगलकारा मंगलकारा मंगलकारा ।
महावीर मंगलकारा । बीजना तपनो म-
हिमा महेरथी दाखीयेजी ॥ ए आंक-
णी ॥ [illegible]णीपर शिरनामी । पुछे गौत-

स्वामी । इंद्रभूति नाम अणगारा ॥ म.ावीर० ॥ १ ॥ मगने गर्जावी गिरा । वचन वर्षावी नीरा । कहे स्वामी सृष्टि शणगारा ॥ महावीर० ॥ २ ॥ दुजे दुविधधर्म । आराधि कापे कर्म । साधुश्रावक न्यारा न्यारा ॥ महावीर० ॥ ३ ॥ निरयावलीया सूत्रसाखे । बीज तप फल आखे । बंधाय आयुष्यउदारा ॥ महावीर० ॥ ४ ॥ महासुदि बीज दिने । केवल वासुपूज्य जिने । तेंम अभिनंदन जिन अवतारा ॥ महावीर० ॥ ५ ॥ फागण सुदि बीज सारी । अरजिनव अवधिधारी । चविया चतुर चमत्कारा ॥ महावीर० ॥ ६ ॥ माधव वदि बीज आवे । शीतल जिन मोक्ष जावे । शैलेशी समेतशिखरधारा ॥ महावीर० ॥ ७ ॥ माता मंगला कुखे । श्रावणसुदि बीज सु-

१ जन्मकल्याणक० २ वैशाख० गुजरातीचैतर

खे । सुमति जिन चवीया जगहारा ॥ महावीर० ॥ ८ ॥ जिनव जन्में अजवालु । प्रांते अंधारु कालु । थाय स्थिति अनुसारा ॥ महावीर० ॥ ९ ॥ ते कारण श्रमण श्रमणी । श्रावकनें श्रावक रमणी । आराधी पामे भवपारा ॥ महावीर० ॥ १० ॥ आदिजिन मंडल गावे । बीजनु स्तवन भावे । हैडे धरी हर्ष अपारा ॥ महावीर० ॥ ११ ॥ बीजना चंद्र जेवा । तप गुण मुक्ताफल मेवा । प्रति दिन हंस चाहे चारा ॥ म.ावीर० ॥ १२ ॥ इति० ॥

## ॥ परासली मंडन श्रीआदिनाथ स्तवन ॥

॥सिद्धगिरि तिरथ जैसा और नहि धाम हे यहचाल॥

गाम परासली मांहे आदिनाथ धाम हे । आदिनाथ धाम हे आदिनाथ धाम हे ॥ गाम० ॥ ए आंकणी ॥ देवका विमान जैसा । देवल सुंदर तैसा तिन शी-

खर शोभे मानु । भुवन विसराम हे ॥ गाम० ॥१॥ पारस समान आरस । सफेदीमे जैसा सारस । शाम आरस साथ फरस । खेलो तमाम हे ॥ गाम० ॥२॥ ऐसा देवलमा मूर्ति । प्राणीयोके पाप चूरति । जीसका स्वरूप आगे कंमाल सम काम हे ॥ गाम० ॥ ३ ॥ योगारूढ देव दीपे । अन्य देव तेज छीपे । ध्यानमें मगन नेत्र शांत रस ठाम हे ॥ गाम० ॥ ४ ॥ हंस कहे क जोड । प्रभु आगे मान मोड । मेरे तो आधार ऋषभ देवका हि नाम हे ॥ गाम० ॥५॥

॥ इन्द्रवज्रावृत्त ॥

अपार्थमुत्सूत्रमपप्रयोगं ।
मयायदासूत्रितमत्र किंचित् ॥
परोपकारैकरसैरखिन्नै ।
स्तच्छोध्यमेवाशु बुधैः प्रसद्य ॥ १ ॥

समाप्तः.

# श्रीमल्लक्ष्मीविजयजी माहाराजनी-
## गहुंली

### कव्वाली

श्री गुरु लक्ष्मी माहाराया। विष्णु चंद्नाम अपर पाया॥ विजय आनंद् श्री सूरि। थयातस्स शिष्योमां धूरि श्री० ॥१॥ जगत जनना छो हितकारी। तार्यां अनेक नर नारी॥ जंगम तीरथ जग जाणी। नमे तमने भविप्राणी श्री० ॥ २ ॥ धरुदिल धर्मके नायक। अपूरवज्ञानके दायक॥ द्या सब जीवपर करता। प्रमादो पांचपरिहरता श्री० ॥ ३ ॥ सूरीश्वरने सहायकथई। कर्यां शुभकार्य साथमां जई॥ रूषी थई रीषनेत्यागी। कुमति कुलटागई भागी श्री० ॥४॥ तपजप संयमे शूरा। ज्ञानने ध्यानमां पूरा॥ समितिपांचना धारक। गुरु मन्मथना टारक श्री० ॥ ५ ॥ लक्षणयुत

अंग मनोहारी। प्रतापन्गपति भारी ॥ क्षमासागर संयमधारी। शांत शसी सम छबीप्यारी श्री० ॥ ६ ॥ मित भाषी आश्रव त्यागी। थयाशीववधुनारागी ॥ विजय वावटो फ काव्या। वादिगजगण राव्या श्री० ॥ ७ ॥ जनम सफल कर्यो आपे। टाली कुपंथ सुपंथ थापे ॥ यतिशिरोमणिसारा। विजय लक्ष्मी गुरुप्यारा श्री० ॥८॥ जीवनदर्शननुं जोवानूर। आराछ मुजने भरपूर ॥ मधूरी देशना देता। मनुष्यनां मन हरीलेता श्री० ॥ ९ ॥ हाथ जोडी नमुं हुं आज। स्वर्गवासी गुरु माराज ॥ राजकुमारना जेवा। गणचिंतकनाहिं तेवा श्री० ॥ १० ॥ जय आत्मिक शुभ संपत्। मले गुरुथीटलेविपत् ॥ जीवनदर्शन विना सबाल। तरसे करीरकरोतुमख्याल श्री० ॥११॥

## ॥ श्रीमान् लक्ष्मीविजय माहाराजनी गहुंली ॥

॥ सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासे जाजो । देशी ॥

सुण साहेली लक्ष्मीविजय गुरुराज तणा गुण गाईए । गुण गावाथी पाप पुंज क्षय थाय एम दील लाईए । सुण० ॥ आंकणी ॥ गुरु मरुधरदेश जन्म पाया । पुष्कर ब्राह्मण कुलमां आया । भण्या वेदपुराण गुरुराया ॥ सुण० ॥ १ ॥ गुरु बालपणे दीक्षा व लीया । ढुंढक मतमां शास्त्रो भणं या । कल्पित मत जाणीने फरीया ॥ सुण० ॥ २ ॥ विजयानंद सूरिनी साथे । शुद्ध संयम भार ग्रह्यो माथे । तार्या भवि जीवने निज हाथे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ गुरु शांतसुधा रसना दरीया शुद्ध ज्ञानादिक गुणे भरीया । जस उपदेशथी ढुंढक तरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ गुरु छकायना रक्षाकारी । मोह ममता मनमांथी वारी ।

गुरु भव्य जनोने दे तारी ॥ सुण० ॥५॥ गुरुनामथी आतम सुख पावे । ंससम उज्वल ते तो थावे । भवभवनां दुःख दोहग जावे ॥ सुण० ॥ ६ ॥ गुरुधर्म संपद दे सुखकारी । जस शिष्य संपदा मनोहारी । कर्पूरनमे वारंवारी ॥ सुण० ॥ ७ ॥



## ॥ श्री विज॰ कमल ॰ रिनी ग ॰लो ॥

॥ सुंदर शामलाथ ॥ ए देशी ॥

विजय कमल सूरि । नमनकरो भविप्राणी । तपगच्छकेधूरि । आनंद अंगमां आणी । विजय कम ॰० ॥ आंकणी ॥

षट्त्रिंशत्‌गुणथीसूरिसोहे । भविजननातन मनने मोहे आतम स्वरूपके दानी । विजय कमल० ॥ १ ॥ ब्राह्मण कुलमांही अवतरीया । बाल पणामां दीक्षावरीया शिवलक्ष्मी उरआनी । विजय कमल० ॥२॥ तत्वातत्वने दिलमां देखी । ॰ त्वलता अ-

तत्व उवेखी हंस जेम क्षीरपानी । विजय कमल० ॥३॥ सूरीश्वर छे बाल ब्रह्मचारी कामनीनो संगमूलथी निवारी दोलत दील नहि मानी । विजय कमल० ॥ ४ ॥ विचर्या सूरीश्वर बहु देशो । तार्या जीवो दई उपदेशो । भरततणी ए निधानी० । विजय कमल० ॥ ५ ॥ राजराजेश्वर सम गुरु कांति । देखतां थाय दीलमांहि शांति । कर्पूरसमगुणज्ञानी । विजय कमल० ॥ ६ ॥ पाटे पाटणमां बिराज्याजाना । विजया नंदसूरि पटधरमानो कहे देशना गुणखानी । विजय कमल० ॥ ७ ॥

## ॥ गुरुवर्य श्री हंसविजयजी महाराजनी गहुंली

मल्लिजिन नाथजी व्रत लीजेरे ॥ ए देशी ॥

सखी श्रीहंस गुरुना गुणगाइ एरे । गुण गाईने निरमल थाई ए ॥ सखी० ॥ आंकणी ॥ गुरु शुद्ध संजमना रसीयारे ।

धर्मध्यान थकी नवि खसी यारे। कर्मरिपुसांमा गुरु धसीया। सखी०॥१॥ त्रण गुप्ति धारक सुखकारकरे। चार कषाय विकथानिवार करे। गुरुपांचमहाव्रत धारक। सखी० ॥ २ ॥ गुरु समिति पालण हारारे। पांच आश्रव दूरकरनारारे। षट् जीवतणा हितकारा। सखी० ॥ ३ ॥ पांच करणतुरंग वसकारीरे। मोह मदन सदन विडारीरे शोभे शांत वदन छबीप्यारी। सखी०॥४॥ गुरुज्ञान रयणथी भरीयारे। शांत सुधारसना छे दरीयार। सात भयथकी नविडरीया। सखी० ॥ ५ ॥ अष्ट प्रवचन माताने पालीरे। अष्ट कर्मकी चडले गालीरे। ध्यान जलथी दिये छे पखाल। सखी० ॥ ६ ॥ ईत्यादिक गुण छे अपार। नावे कहेतां कांई पाररे। योवनमां लीधो संजमभार। सखी० ॥ ७ ॥ शेठजगजीवन कुल [illegible]पायारे [illegible]णक देवीना जायारे

थया वीरक्षेत्रमां गुरुराया । सखी० ॥ ८ ॥ गुणवंती सहियरो मळी आवेरे । गुरु आगे स्वस्तिकबनावेरे कपूरजेवाउज्वल गुणगावे । सखी० ॥ ९ ॥

## ॥ परम गुरु श्रीहंसविजयजी माहाराजनी गहुंली ॥

सहियरसुण ज्योरे भगवती सुत्रनी वाणी ॥ए देशी॥

सखीयो चालोरे । जईए वंदनकाज ॥ गुरु गुणभंडारी हंसविजय माहाराज० ॥ सखीयो०॥आंकणी॥ विजयानंदसूरीश्वर केरा सकल शिष्य अणगार॥ लक्ष्मी विजय माहाराज थया तस हंसविजय अणगार ॥ सखीयो० ॥ १ ॥ शूरवीर थई महाव्रतपाले । रमता निज गुणमांही। शासन उन्नतीनां काम थावे ।पधारे ज्यां गुरु तांही ॥ सखीयो० ॥२॥ हिंसा जुठ चोरीने टारी । ब्रह्मचर्यने धारे॥ मनवच कायथी परिग्रह छोडी । भोग तृष्णाने मारे ॥ सखीयो०

॥ ३ ॥ तप जप संयमनो खप करता । जग जनना उपकारी । पूजक निंदकने सम जाणे । गुरुजी उग्र विहारी ॥ सखीयो० ॥ ४ ॥ तत्वा तत्वनी खोज करीने । तत्व रमण गुरु करता । स्वपर समता भावमां रहीने । जिनआणा शीर धरता ॥ सखीयो० ॥ ५ ॥ पंजाब पूरव माळवाने कच्छ । बंगाल मरुधरदेश । दक्षिण गुर्जर सोरठमांही । फरी कर्यो उपदेश ॥ सखीयो० ॥ ६ ॥ वादी घूक दिवाकरु जाणुं । सायर सम गंभीर । शीतलता जस चंद्रथी अधीकी । कपट रहीत बहु धीर ॥ सखीयो० ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया दोयथी गुरु शोभे । हंस समान छे चाल । अमृत रससम मीठी वाणी । सुणावे गुरुजी साल ॥ सखीयो० ॥ ८ ॥ भवभय भंजनने करनारी । समकीत जेहथी थावे । एवी गुरुनी वाणी सुणीने । नरनारी हर-

खावे ॥ सखीयो० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु गुण गुरुमांहे । कहेतां नावे पार । जीवदया वेलडीने सिंचे । ेधपर हितकार ॥ सखीयो० ॥ १० ॥ आतम लक्ष्मी संपदापामी । धर्म दोलत दातारी । आप तरे परने पण तारे । धन्य गुरु बलीहारी ॥ सखीयो० ॥ ११ ॥ पुन्य संयोगथी दादागुरुनो । सुंदर पाम्यो ं संग । कहे कर्पूर मुजपर रहेजो । गुरुनो प्रेम अभंग ॥ सखीयो० ॥ १२ ॥

## परमगुरु श्रीहंसविजय माहाराजनी गहुंली ॥

सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासे जाजो ए देशी ।

सुण सा ेली ंसाविजय माहाराज तणा गुण गाईए । गुण गाईने मनवचन कायाथकी आपण शुद्ध थाईए० ॥ सुण० ॥ आंकणी ॥ गुरु पांच महाव्रतना धारी । संयम मारग रमणाकारी । सत्तावीस गुणनी

बलीहारी ॥ सुण० ॥ १ ॥ स-ता गुणना ते दरिया छे । गाम नगर अनेक विचरीया छे । जिन शासन सुंदर वरीया छे ॥ सुण० ॥ २ ॥ गुरुचार कषायने दूर करता । नहिं राग द्वेषने ते धरता । शुद्ध संयममां नित्य रहे फरता ॥ सुण० ॥ ३ ॥ षट्काय जीव रक्षाकारी । समता रस गुणना भंडारी । गुरु हंसनी जाऊं हुं तो वारी ॥ सुण० ॥ ४ ॥ गुरु भवि जीवन पडि बोहे छे । आतम गुणथी गुरु सोहे छे । मुखदेखी मनडुं मोहे छे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ श्रीविजयानंद सूरिराया । तस शिष्य श्रीलक्ष्मिविजय गाया । तेमना शिष्य हंसविजय पाया ॥ सुण० ॥ ६ ॥ गुरुने वंदन नित्य नित्य करीए । भवभवनां पातक दूर हरीए । तो शिव रमणी सुखथी वरीए ॥ सुण० ॥ ७ ॥ उपदेश नानाविध बहु करीया । भविजीवो भवसागर

तरीया । राय राणा जस पायें पडीया ॥ सुण० ॥ ८ ॥ गुरु हंसतणा गुण जे गासे तस पापपंक क्षय थई जासे। तेकर्पूरसमउज्वलथासे ॥ सुण० ॥ ९ ॥

## ॥ परमगुरु श्रीहंसविजय महाराजनी गहुंली ॥

मल्लि जिननाथजी व्रत लीजेरे देशी ।

सखी गुरु राजने नित्य वंदोरे । वंदीने पाप निकंदो । सखी०॥आंकणी ॥गुरुमाणक कुंवीना जायारे । पिता जगजीवन कुल आयारे । राज कुंवर सम रूप पाया ॥ सखी० ॥ १ ॥ संसारने असार जाणीरे । वैराग्य मन मांहे आणीरे । लीधी दीक्षा गुणनी खाणी ॥ सखी० ॥२॥ विजयानंद्सूरि राजेरे । शिष्य लक्ष्मीविजय तस छाजेरे । तेमना शिष्य थया शीव काजे । सखी० ॥ ३ ॥ भण्या ज्ञानने विचर्या

देशरे । कच्छ मरु पंजाब परदेशरे ॥ आपे भवी जीवने उपदेश ॥ सखी० ॥ ४ ॥ गुरु देशना अमृत धाररे । थया जैन शासन जयकाररे । कर्या गुरुए बहु उपकार ॥ सखी० ॥५॥ पक्षिओमां उत्तम जेम हंसरे । मुनिओमां गुरु उत्तंसरे । शोभाव्यो उभय कुल वंस ॥ सखी० ॥६॥ गुरु शुद्ध धर्मना रागीरे । षट्जीवनी हिंसा त्यागीरे । जेनें संसार माया न लागी ॥ सखी० ॥७॥ गुरु करुणारस भंडार रे । उतरावे भवनो पार रे । करे भविजीवना उद्धार ॥ सखी० ॥ ८ ॥ गुरु मनवच कायथी साधेरे । ज्ञानदर्शन चरण आराधेरे । अज्ञानतिमिरने बाधे ॥ सखी० ॥ ९ ॥ गुरुवंदनभावथीकरसेरे ते भव सागरथी तरसेरे । शीवलक्ष्मीआनंद-थीवरसे ॥ सखी० ॥ १० ॥ गुरु प्रपितामह सुख दायारें । श्रीहंसविजयमाहारायारे । कर्पूरेगुरुगुणगाया ॥ सखी० ॥ ११ ॥

## ॥ पन्यासजी संपतविजयजी महाराजनी गहुंली ॥

॥ सनेही वीरजी जयकारीरे । देशी ॥

सखी गुणवंत गुरुने देखीरे । भवभव नांध्यो पाप उवेखी ॥ सखी० । आंकणी ॥ गुरु बालपणे व्रतधारीरे । ज्ञान रयण तणा भंडारीरे । छकाय तणा हितकारी ॥ सखी० ॥ १ ॥ योग वहन क्रियाना कर्त्तारे । मान मायाने परि हरतारे । पन्यासपणे पद वरता ॥ सखी० ॥ २ ॥ विनयादिक गुणमां पूरारे । गुरु भक्तिमां नहि अधूरारे । करे कर्म तणा चकचूरा ॥ सखी० ॥ ३ ॥ गुरु हंसविजयजीनी पासेरे । लीधी दिक्षा मनना उल्लासेरे । देखंतां दुर्गति नासे ॥ सखी० ॥ ४ ॥ माता उजम बाईना जायारे । हीराचंद कुलमां सधायारे । पाटणशेहेरमां जन्मने पाया ॥ सखी० ॥ ५ ॥ सर्व जीवना ए

तो त्रातारे । मुनि दोलतना गुरु भ्राता रे । देखी दीलमां थाय शाता ॥ सखी० ॥६॥ धन्यधन्य संपत् मुनि रायारे । गुरु सेवाथी कर्म खपायारे । नमे कर्पूर नित्य तस पाया ॥ सखी० ॥ ७ ॥

## श्रीहेमचंद्र सूरीश्वरजीनी गहुंली ।

॥ ढंढणऋषिने वंदणाहुं वारी ॥ ए देशी ॥

श्री .मचंद्र सूरीशने नरनारी । करीए वंदन वारंवार नरनारीरे ॥ मिथ्यामत पन्नग नसाडवा नरनारी । गरुडसमान निरधार नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ १ ॥ धंधुका शहेरमां ही जाणीए नरनारी । मौढज्ञाति प्हेंकाय नरनारीरे ॥ शेठ चांचीगना कुलमां नरनारी । पाहिनी उदरमां आय नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ २ ॥ संवत अगीयारसें उपरे नरनारी । पीस्तालीसे जन्म थाय नरनारीरे ॥ राजकुमारना रुपथी नरनारी । अधिक रुप सुहाय नरनारीरे० ॥ श्री० ॥

॥ ३ ॥ अगीयारसें [illegible]मां नरना[illegible]ी । देवचंद्र सूरिपास नरनारीरे ॥ बालुडो योगी बनी गयो नरनारी । लीधी दिक्षा उल्लास नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तपजप संयम साधतां नरनारी । थया गीतारथ गंभीर नरनारीरे ॥ वैराग्य रंगे रंगाइया नरनारी । मेरुपरे थया थीर नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अगीयारसें छासठमां नर-नारी । आचार्यपदना धार नरनारीरे ॥ छत्रीस गुणथी शोभता नरनारी । अज्ञान तिमिरहरनार नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ श्रीकलिकाल सर्वज्ञनुं नरनारी । कर्युं बि-रुद स्वीका[illegible] नरनारीरे ॥ [illegible]मारपाल नर-पालनें नरनारी । कर्यो श्रावक शिरदार नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ दया पळावी देश अढारमां नरनारी । गुरु उपदेश पसाय नरनारीरे ॥ अनेकग्रंथ बनावीया नर-नारी । हिंद युरोप वखणाय नरनारीरे०

॥ श्री० ॥ ८ ॥ देश विदेशमां विचर्या नरनारी। कीधा उपकार अपार नरनारीरे ॥ गीर्पति पार नलही शके नरनारी । तो मुजमतिनो शो भार नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ ॥ ९ ॥ बारसें ओगणत्रीसमां नरनारी । गुरुजी स्वर्गे सधाय नरनारीरे ॥ गुरु उपगार संभारतां न नारी । विरहथी मन गभराय नरनारीरे० ॥ श्री० ॥१०॥ श्रीहंसविजय गुरुतणा नरनारी । उपदेशथी मनोहार नरनारीरे ॥ शेठ वीरचंद दीपचंदनी नरनारी । डाही शेठाणी धरोप्या नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ मूर्ति करावी मनोहरु नरनारी । शोभे छे अपरंपार नरनारीरे ॥ धंधुका नगरमां दीपती नरनारी । मानुं लीधो अवतार नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ १२ ॥ ओगणीसें छासठमं नरनारी । श्री धंधुकामां जाय नरनारीरे ॥ हंसविजय कवि रायनो नरनारी । कर्पूर वंदे तसपाय नरनारीरे० ॥ श्री० ॥ १३ ॥

# श्री विजयानंदसूरीश्वर-जीनी गहुंली ।

॥ सजनीमोरीपास जीनेश्वर पूजोरे देशी ॥

सजनीमोरी विजयानंद सूरि रायारे । सजनीमोरी नमी ए नित्यनित्य पायारे ॥ सजनीमोरी प्रसिद्ध आतमारामरे । सजनीमोरी गुरुकरुणाना धामरे ॥ सजनी० ॥१॥ सजनीमोरी ढुंढक पंथने टाळीरे। सजनीमोरी संवेगपंथ संभाळीरे ॥ सजनीमोरी लीधी दीक्षा मनोहारीरे । सजनीमोरी थया ज्ञान भंडारीरे ॥ सजनी० ॥ २ ॥ सजनीमोरी वैरागी त्यागी सौभागीरे । सजनीमोरी संयम रमणीना रागीरे ॥ सजनीमोरी जंगमतीर्थ ज्ञानी ध्यानीरे । सजनीमोरी नहि क्रोधी नहिं मानीरे ॥सजनी०॥ ॥ ३ ॥ सजनीमोरी वादिघूक दिवाकररे। सजनीमोरी वांछा पूरक सूरतरुरे ॥ सजनीमोरी सूरिपद पालीताणे लीधुंरे । सज-

नीमोरी सकल संघे मळीदीधुंरे ॥ सजनी० ॥ ४ ॥ सजनीमोरी मिथ्यात्वनुं बीज बाळ्युंरे । सजनीमोरी जैन शासन अजवाळ्युंरे ॥ सजनीमोरी ज्ञान ध्यान मां शूरारे । सजनीमोरी निश्चय व्यवहारे पूरारे ॥ सजनी० ॥ ५ ॥ सजनीमोरी आतम लक्ष्मीना नायकरे । सजनीमोरी धर्म दोलतना दायकरे ॥ सजनीमोरी हंस विजय कवि रायरे । सजनीमोरी तस कर्पूर गुण गायरे ॥ सजनी० ॥ ६ ॥

## अगीयार गणधर माहाराजनी गहुंली ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे देशी ॥

अगीयारगणधर वंदो हे गुणीजनो । अगीयार गणधर वंदो भवभव पाप निकंदो ॥ हे गुणीजनो० ॥ आंकणी ॥ प्रातःसमये नित्य नाम जपीए दुःख दोहग सहु जावे । वीर प्रभुना अगीयार गणधर अनु-

क्रमे इणी परे थावे ॥ हे गुणीजनो० ॥१॥
प्रथम गौतम गुरुने समरीजे। वांछितफल-
दातार। अनेक लब्धिओथी भरपूर गुण-
गणनाआगार ॥ हे गुणीजनो० ॥२॥ बीजा
अग्निभूति वायुभूतित्रीजा चोथा व्यक्त
उदार। पांचमागणपति सुधर्मा स्वामी
नमीए वार हजार ॥ हे गुणीजनो० ॥ ३ ॥
मंडित छट्ठा सातमा मौर्यपुत्र गणधर
गुणना धाम। अकंपित आठमाने नवमा
अचल भ्राता नाम ॥ हे गुणीजनो० ॥ ४ ॥
नमो मेतारज गणधर दशमा अगीयारमा
छे प्रभास। ए सर्वे गुणीयल गणधरने
वंदीए धरी उल्लास ॥ हे गुणीजनो० ॥ ५ ॥
त्रिपदी प्रभुपासेथी लेईने रचना सूत्रनी
करता। द्वादश अंग गुंथीने पोते आण
प्रभुनी अनुसरता ॥ हे गुणीजनो० ॥ ६ ॥
केवळ ज्ञान पामीने अनशन वैभार गिरिपर
पाळी। आतमलक्ष्मी संपदा पामी मोक्षे

गया भाग्यशाली ॥ हे गुणीजनो० ॥ ७ ॥ वीरप्रभुना पटधर गणधर सुधर्मा स्वामी सुखकारी । हंसविजय कवि रायनो कर्पूर करे वंदन वारंवारी ॥ हे गुणीजनो० ॥ ८ ॥

## सद्गुरु माहाराजनी गहुंली ॥

॥ ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने देशी ॥

सहियर नमीए आपणे नित्ये सद्गुरु । पंचमहा व्रत धारक श्रीगुरु राय जो ॥ षट्-कायनी सद्गुरु रक्षा नित्ये करे । धर्म उप-देश सुणावे नित्य सुखकार जो ॥ सहि-यर० ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान तप जपथी आतम साधता । कपट करे नहिं कोई दिवस तलभार जो ॥ क्रोध लोभमान मायाथी वर्जित छे । चारित्र आपी करता जन उद्धार जो ॥ सहियर० ॥ २ ॥ संवर सेवी आश्रवनो करे रोध ए । बाह्य अभ्यं-तर तपनाते करनार जो ॥ त्रसस्थावर प्रतिपालक शोभे सद्गुरु । जगजीवना करु-

णासिंधु हितकार जो ॥ सहियर० ॥ ३ ॥ कंचनने पण तृण माफक गणी परी हरे । नारीने नागणी । परे निरखणहार जो ॥ मात तात अरु भ्रात तरिके जाणीए । असार संसार समुद्रथकी दिये तार जो ॥ सहियर० ॥ ४ ॥ पगथी विहार करी विचरे परदेशमां । परनी खटपटमां न पडे गुरुराज जो ॥ भवजलधिमां गुरु नौका-सम जाणीए । तेमने नमीए जाणीने शीर-ताज जो ॥ सहियर० ॥ ५ ॥ आतम-लक्ष्मी संपादन करता सदा । भाव दयानी मूर्ति सद्गुरु खास जो ॥ हंसपरे गुण गंगा-जलमां झीलता । कहे कर्पूर थईए नित्य तेमना दास जो ॥ ६ ॥

## श्री जसविजयउपाध्याय माहाराजनी गहुंली ॥

माजी तुं पावानी पटराणीके कालीकाळकारेलोल देशी ॥

सहियर यशो विजयमाहाराज तणा

गुण गाईएरे लोल । गुणीना गुण गावाथी
आपणे गुणीयल थाईएरे लोल ॥ न्यायवि-
शारद वैयाकरणि तार्किकशिरोमणी रे
लोल । महोपाध्याय षट्शास्त्रनावेता थया
ते भणीगणी रे लोल ॥ १ ॥ बारवरसका
शीमां रहीने विद्या शीखीयारे लोल ।
विद्या भणावणहार ब्राह्मणे । प्राज्ञ तस पेखी-
यारे लोल ॥ मोटीमोटी सभाओ भरीने
जय कमला वर्यारे लोल । एकसोदश
ग्रंथोने बनाव्या तत्वोथी भर्यारे लोल ॥२॥
न्याय दिवाकर गुरुने सुंदर । वरवाचक
तणी रे लोल ॥ पदवी दीधी संघे मळीने
यशोविजय गणी रे लोल । सुक्षम्पणे सम-
जावता गुरुजी । द्रव्य गुण पर्यवारे लोल ॥
तेमना बनावेला रासोने । ग्रंथो छे नवारे
लोल ॥ ३ ॥ ढुंढकमत अने शीथील
अचारने । दूर करवा भणी रे लोल । क्रिया
उद्धार कर्यो आज्ञाथी सूरिविजयसिंह
तणी रे लोल ॥ जसवाणी बंसीथी अन्य-

वंसी । चुक्या माननेरे लोल । गुरुना चरणमां नमन करे । मुकी निज माननेरे लोल ॥ ४ ॥ देशविदेशमां विचरी धर्म । ध्वजा फरकावतारे लोल । भव्य जीवोने मोक्ष निस णां । ज्ञानी बतावतारे लोल ॥ व्याख्यानवाणी सुणावी गुरुए । तार्या बहु जनोरे लोल । वार्या मार्गांतरथी सुमार्गे भव्यजन जीवनोरे लोल ॥५॥ गुरुए काल कर्यो दरभावती नगरीनी मांहीरे लोल । लोढन पार्श्वनाथ तिर्थादि आठ देवल तांहीरे लोल ॥ गुरुनी चरणपादुका सोहे बाहार उद्यानमांरे लोल । दर्शनकरतां पाप पलाय जेम गुण गानमांरे लोल ॥ ६ ॥ गुरुनी चरणपादुका केरा दर्शन कारणेरे लोल । आवे डभोईमां थोके थोक । लोक दुःखवारणेरे लोल ॥ में पण पंदर मुनिजन साथे । चोमासुं त्यां कर्युंरे लोल । देवगुरुना दर्शनथी । कारज मारुं सर्युंरे लोल ॥७॥ ओगणीसें अगन्योतेर कार्त्तिक । पुनमदिन

प्रीतेरे लोल। संघसाथे पादुकानां दर्शन। कर्यां में शुभ रीतेरे लोल॥ मनथी ध्यान वचनथी स्तुतिए। कायथी शीष नमावुंरे लोल। हंसविजय कविरायनो कर्पूर। कहे गुरु गुण गावुंरे लोल॥ ८॥

## सातवारनी गहुंली॥

सुण चतुर सुजाण परनारीसुंप्रीत कबु नवि कीजीए–देशी॥

चालो साहेली गुरुमुख मधुरी वाणी सुणवा आजे। महा गुणवंता गुरुजी देशना आपे छे सुख काजे॥ चालो०॥ आंकणी॥ सोमवारे दील समता धारी। क्रोध मान माया लोभने टारी। सामायिक व्रत लहो जयकारी॥ चालो०॥ १॥ मंगलवारे मंगलकारी। चार मंगल लहीए संभारी। जेहथी उतरीए भवपारी॥ चालो०॥ २॥ बुधवारे सुबुद्धि कीजे। गुरु ज्ञान तणो लाहो लीजे। जेथी भवनां पातीक छीजे॥ चालो०॥ ३॥ गुरुवारे गुरुना गुणगावा।

वंदन करीने पावन थावो । गुरुभक्तिमां नथी कोईनो दावो ॥ चालो० ॥ ४ ॥ शुकरवारे थईए शूरा । करीए मोह माया चक चूरा । दुरजनथी रहीए नित्य दूरा ॥ चालो० ॥ ५ ॥ शनिवारे शंसय दूर टाळी । तप जप करी कर्म दीजे बाळी । लहीए केवल कमलाझाली ॥ चालो० ॥६॥ रविवारे राग द्वेष परिहरीए। वेर झेर न कोई साथे करीए । अहंकारपणुं नवि आदरीए ॥ चालो० ॥ ७ ॥ सातवार सदा सहियर गईए । देव गुरु वंदन करी शुद्ध थईए । आतम लक्ष्मी संपदा लईए ॥ चालो०॥८॥ शुद्ध समकितथी भवजल तरीए । हंससम धर्मेनिजगति करीए। कर्पूर कहे प्रभु अनुसरीए ॥ चालो० ॥ ९ ॥

## पंदर तीथिनी गहुंली ॥

॥ वालाजीनी वाटडी अमे जोतांरे देशी ॥

वाल्हा गुरुराजने में तो दीठारे। ए तो हैडामां लाग्या मीठा ॥ वाल्हा ॥ आंक-

णी ॥ पडवें पहेंरी शुभ चीररे । गुरुवाणी सुणो थई धीररे। तपकरी कापो कर्म जंजीर ॥ वाल्हा० ॥ १ ॥ बीजे दुविध धर्म सुणावेरें । साधु श्रावक भेद कहावेरे । राग रोष जेनाथी जावे ॥ वाल्हा० ॥ २ ॥ त्रीजे त्रण तत्वथी भरीयारे । गुणगण रयणना दरीयारे । संयम पटराणी वरीया ॥ वाल्हा० ॥ ३ ॥ चोथे चार कषाय निवारेरे । चार शरण हृदयमां धारेरे । चार विकथा जीगरथी टारें ॥ वाल्हा० ॥ ४ ॥ पांचमे पांच महाव्रत धारीरे । पाप पुंज तणा परि हारीरे । पांच प्रमाद दीए नीवारी ॥ वाल्हा० ॥ ५ ॥ छट्ठे षट्काय रक्षा कारीरे । प्रभुभक्ति हृदयमां भारीरे। एवा गुरुनी जाऊं बलीहारी ॥ वाल्हा० ॥ ॥ ६ ॥ सातमे सात भयथी न डरतारे। अहंकारपणुं नवि धरतारे । आणागुरुनी नित्य अनुसरता ॥ वाल्हा० ॥ ७॥ आठमे आठमदने टाळीरे । अष्ट प्रवचन मातने

पाळीरे । दीए कठीन करमने गाळी ॥ वाल्हा० ॥ ८ ॥ नोमे नवविध ब्रह्मचारीरे । नारीने नागणी निरधारीरे । भारंड परे उग्र विहारी ॥ वाल्हा० ॥ ९ ॥ दशमे दशविध यति धर्मरे । पालीने टाले सवी-कर्मरे । जेहथी पामे शीवशर्म ॥ वाल्हा० ॥ ॥ १० ॥ एकादशीए अंग अगीयाररे । पठन पाठन करे जयकाररे । जेथी थाय सफल अवतार ॥ वाल्हा० ॥ ११ ॥ बारसे तप बार प्रकाररे । करे न धरे रोष लगा-ररे । गुरुना गुण अपरंपार ॥ वाल्हा० ॥ १२ ॥ तेरसे तेर काठीया वाररे । धर्मध्यान हृद-यमां धारेरे । फरकावे धर्म धजा सारे ॥ वाल्हा० ॥ १३ ॥ चौदसे गुणठाणा चऊ-दरे । शिखवेथी टले कुदाकुदरे । एवो उपदेश दीए गुरु खुद ॥ वाल्हा० ॥ १४ ॥ पुनमदीन पूर्ण प्रतापीरे । किर्तिजेनी दश-दीशे व्यापीरे । गुरु ज्ञानने कोण शके मापी ॥ वाल्हा० ॥ १५ ॥ गुरु हंसविजय

कविरायरे । तीथिपन्नरता सपसायरे । कर्पूर इणी परे गाय ॥ वाल्हा० ॥ १६ ॥

## ॥ महिदपुर तिनदेवालयस्तवन ॥

राग केदारो ।

कपूर होय अति उजलोरे ए देशी ॥

महिदपुर मंदिर भलांरे । शिखरबंध तिनसार । त्रिभुवन तिलक समानहेरे । शोभा अपरंपार चतुरनर चरचो श्रीजिनचंद । आणी हर्ष अमंदचतुरनर । ए हिज शिव सुखकंद चतुरनर । एहथी परम आनंद चतुरनर० ॥ १ ॥ एक देवल किल्ला विशेरे, बे देवल घढ बहार, दर्शन पूजनकारणेरे, जाना उठके सवार चतुरनर० । आणी । एहि । एह० ॥ २ ॥ दुःख सबीदुरे होवेरे, सुख सकलहोइ जाय इन्द्र चन्द्र नागेन्द्रकीरे, ऋद्धिसिद्धि मिले आय चतुरनर० । आणी । एहि । एह० ॥ ३ ॥ हीर चीर रत्नकंबलीरे, वस्त्र सोनेरी भली भात, पहेरण होढण नवनवांरे, जे हथी

होय सुख शात चतुरनर० । आणी । एहि । एह० ॥ ४ ॥ मणि माणेक मोती तणा े, मिले सुंदर शणगार, सुरनर विद्याधर तणारे, भवभव वारंवार चतुरनर० आणी । एहि । एह० ॥ ५ ॥ आत्मिक सुख पण संप े रे, प्रभु पूजनसें अपार, नागके परे पामीयेरे, केवल ज्ञान उदार च रनर० । आणी । एहि । एह० ॥ ६ ॥ विजयानन्द सूरीशकारे, प्रथम शिष्य पण्डित लक्ष्मीविजय गुरुरायकारे, हंस गाये प्रभुगीत चतुरनर० । आणी । एहि । एह० ॥ ७ ॥ इति० ॥

## मालव स्थ बरनगर मंडन श्रीआदिनाथ स्तवन ॥

॥ बुटीलानेका कैसा बहाना हुवा ॥ यह चाल ॥

ऋषभ देवदेदारका ध्यान धरुं ॥ बरनगरका देवलमें जाके ठरुं ॥ टेक ॥ मेघ गंभीर राव । भव जलनिधि नाव । दोष कंतार दाव । ऐसे देवनके देवकुं

नमन करुं ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ कमल विमल देह । सुकृत वनमें मेह । नाणलच्छिके गेह । ऐसे नाथ निरंजन कैसे विसरुं ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ भुवन विहित बोध । कृतकरण निरोध । भग्न कंदर्प जोध । ऐसे प्यारे प्रभुजीके पायपरुं ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ गत सकल विकार । पाप पुंज प्रहार । मुक्तिकांता उर ार । ऐसे प्रभुके पाखल प्रदक्षिणा फरुं ॥ ऋषभ० ॥ ॥ ४ ॥ निर्मल उत्तंग वंस । त्रिभुवन अवतंस । जडिमतिमिर हंस । ऐसे स्वामीसे हंस समान तरुं ॥ ऋषभ० ॥५॥

## ॥ श्रीसिद्धचक्र स्तवन ॥

सहेज शिखामण मनवा मानी ले मारी ॥ ए देशी ॥

नवपद जीकी सेवा । मानव मानी ले प्यारी । जानाहे जन्मांतर जरुर गफलत कर न्यारी । मानव मानी ले प्यारी ॥ टेक ॥ अरिहंत सिद्ध सूरीश्वर वाचक साधु जी सारा । सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण

तप पदकी बलीहारी ॥ मानव० ॥ १ ॥ ॐकार ह्रींकार आदिमे अंते नमस्कार । जाप जपो हजार तेर अथवा दो हजारी ॥ मानव० ॥ २ ॥ बार आठ अरु छतीश पचीश सताविश क्रमसें । सत सठ एका[1]वन ने सीतेर पचास गुण भारी ॥ मानव० ॥ ३ ॥ गुण बराबरकाउसग्ग करले । फिर प्रदक्षिणा फेरा । अखंड अक्षत स्वस्तिक करके । प्र[2]णिपात उच्चारी ॥ मानव० ॥ ४ ॥ इत्यादि विधिपूर्वक आंबिल तप करके वहाला । नवनव दिवसकी नवओली करनी निर्धारी ॥ मानव० ॥ ५ ॥ श्रीपाल नृप मयणा सुंदरी समनव पद आराधी । भव्य जीव हंसो पामे । भवसागर पारी ॥ मानव० ॥ ६ ॥ आदि जिन मंडल श्रेणिक राजा । परे शुभ भावे । सुणे श्रीपाल चरित्र पवित्र आतम हितकारी ॥ मानव० ॥ ७ ॥ ॥ इति ॥

---

१ अथवा ५-१७-१२. २ गुणप्रमाणे खमासमणां.

# ॥ परम गुरु श्री हंसविजयजी माहाराजनी स्तुति ॥

## कवाली.

॥ श्री गुरु राजनां दर्शन करे मुज दील होय परसन ॥

## आंकणी.

गुरु करुणा रससागर । गुरु गुणगणना आगर ॥
रूप शशीसम, शीतल सोहे । देखी भविजन मनमोहे श्री० १॥
[1]हंससम जैन[2]खे छाजे । कीर्ति चौदिशीमां गाजे ॥
सद्गुरु रुपमां जेवा । रतिपति छे नहिं तेवा श्री० ॥ २ ॥
विजय आनंद जेसूरि । शिष्य लक्ष्मी विजय धूरि ॥
जगत जनना छे हितकारी । थया तस्य शिष्यजयकारी श्री० ३॥
यतिदशधर्मना धोरी । माया ममताथी मन मोडी ॥
जीती वादिगण भारी । वर्या यशलक्ष्मी मनोहारी श्री० ॥ ४॥
माता अरु तातने भ्राता । थकी अधिका गुरु त्राता ॥
हाथ जोडी नमावुं शीष । पडी पाये मागुं आशीष श्री० ॥ ५॥
राय अरुरंक समगणता । रागनेरोषनहिं धरता ॥
जगजीवन कुलमां चंदा । माता माणेक देवी नंदा श्री० ॥ ६॥
जीवन सफलुं करी आप । टाली भव शोक संताप ॥
तरणतारण थया झाज । प्रपिता मह गुरुराज श्री० ॥ ७॥
समता धारी आनंददायक । आतम लक्ष्मी तणानायक ॥
कपूर कहे पामीए संपत् । गुरु सेवाथीटले विपत् श्री० ॥ ८॥

---

१ सूर्यसमान. २ आकाशमां.

# हंसविनोदका शुद्धिपत्र.

| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ११ | १७ | ॥ र ॥ | ॥ २ ॥ |
| १२ | ४ | थशे | थाशे |
| १५ | ५ | कयांय | क्यांय |
| १६ | सर्व ठेकाणे गाथापछी | । ५० । | ॥ पद्म० |
| १६ | २ | बार | टाल |
| १६ | १६ | भुज | भुजा |
| १७ | १५ | स्त्रत्र | स्नात्र |
| ३० | १८ | पद्य | पद्म |
| ३५ | ६ | अश्वसने | अश्वसेन |
| ३९ | ११ | ॥ आदि०॥ | ॥ हे आदि०॥ |
| ४१ | १५ | पुंडरिक | पुंडरीक |
| ४४ | १३ | आव्यां | आव्या |
| ४५ | १२ | श्रीसीं | श्रीसी |
| ५४ | १६ | महाड | महाट |
| ६२ | १५ | ज्व | जव |
| ६२ | १८ | भोलींरे | करीभोलींरे |
| ६८ | ११ | गिर | गिरि |
| ७१ | टीपमां | १ १००० | १* १००० |
| ७३ | १० | हूर | दूर |
| ७३ | ११ | प्रभुजी | प्रभु |
| ८० | ७ | ज्योरे | जयोरे |
| ८४ | १३ | करज | करजा |
| ८४ | १५ | जणी | जांणी |
| ८५ | ७ | इहा | इहां |
| ९४ | ६ | १ | [1]छेकरे- |

| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ९५ | ५ | ज्ञानवर्ण | ज्ञानावरण |
| १०४ | १० | छे | छो |
| १०४ | ११ | घडघेरा | घडगेरा |
| ११३ | ३ | विर | वीर |
| ११४ | १४ | गश | गछ |
| ११५ | ८ | गावे | गाये |
| १२२ | ९ | ठार | टार |
| १२६ | १८ | ऋपभ | ऋषभेश |
| १२८ | ८ | १ | [१]सुरपति |
| १३६ | ११ | तररे | टररे |
| १५१ | १ | शाति | शांति |
| १५५ | २ | देण | देह |
| १५६ | १७ | उपसर्गे | उपसर्ग |
| १५९ | १२ | दिये | दीपे |
| १८२ | १७ | कुमारेरे | कुमाररे |
| १८२ | १८ | गुमारेरे | गुमाररे |
| १८३ | १५ | भभरालुरे | भमरालुरे |
| १८९ | ११ | अजितजीन | अजितजिन |
| २०६ | १८ | दरदान | वरदान |
| २०७ | १२ | सबि | सखि |
| २१७ | २ | संरिणी | संहारिणी |
| २१८ | १३ | खातरा | खातर |
| २२० | ५ | जोता | जोतां |
| २२१ | ६ | मनुचरेजो | उचरेजो |
| २२१ | १२ | मंदिर | मंदिरथी |
| २२३ | ८ | उत्तंशरे | उत्तंश |
| २२६ | ११ | छाय | छाप |

| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २२८ | ११ | सुमति कुमति | सुमति०कुमति० |
| २३१ | १२ | हो जानुं | हो जाउं |
| २३३ | २ | मातानउर | मातानओर |
| २३३ | ३ | शाक | शोक |
| २३३ | १३ | १ टीप २३४ पृष्टनी | १३ पंक्तिपर दत्तात्रय उपर जाणवी |
| २३५ | ५ | जटपटमे | झटपटमें |
| २४२ | १३ | राज | राजा |
| २४६ | ७ | गुण | गण |
| २४६ | ९ | दान् | दान |
| २४६ | ११ | शुभतान | शुभठान |
| २५१ | १ | १ इभ | १ हाथी |
| २५१ | १५ | २ त्रिदश | २ देवता |
| २५२ | ६ | आत्मदेवने | आत्मदेवोने |
| २५६ | २ | जीन | जिन |
| २५७ | ३ | जीनवर | जिनवर |
| २५७ | ६ | जीनवरका | जिनवरका |
| २६३ | १२ | वाता | वातां |
| २६६ | ५ | पूजे | पूजो |
| २६७ | १६ | त्रिजे | त्रिजो |
| २७३ | ८ | बुंधु | वंधु |
| २७४ | १४ | एकोकी | एकाकी |
| २७५ | १० | कंतह | कंत |
| २७६ | ८ | जाणरे | जाणुरे |
| २७६ | १३ | तससाथी | तससाथे |
| २७६ | १५ | नस्वामीर | नहीस्वामीरे |
| २७७ | १५ | वेगे | बेठो |

| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २७९ | ७ | पंचवणी | पंचवर्णी |
| २८१ | ११ | पाप प्रणाली | पुण्य प्रणाली |
| २८३ | ६ | व्हारी | त्हारी |
| २८३ | १५ | विरोध | विराध |
| २८६ | ३ | जिनजगके | जिनजजके |
| २८७ | ७ | अमृतसरे | अमृतसें |
| २९१ | १६ | ५ टीप | सुविधिनाथ |
| २९२ | ३ | कार | करनार |
| २९३ | ३ | हरिगीत छंदना मथाले धर्मनु मूल वांचवुं | |
| २९४ | ५ | संपीवसेनि | संपीवसेनिज |
| २९४ | १७ | मार वीतणा | महा वीरतणा |
| २९७ | १७ | धरोरे | धरेरे |
| ३०० | १४ | धरे | घरे |
| ३०३ | ६ | वधारो | प्रसारो |
| ३१० | ९ | जावा ठामो | ठामो |
| ३२८ | १७ | नरने नारी | नरनारी |
| ३२९ | १ | श्रीगुरू | गुरु |
| ३२९ | ३ | भमरओ | भमरा |
| ३३० | ७ | ग्रंथावेली | ग्रंथावली |
| ३५९ | ४ | हरखत | हरखंत |
| ३७२ | ५ | आधारे | आराधे |
| ३७५ | २ | धर | घर |
| ३८२ | २ | मगने | गगने |
| ३८३ | १२ | अरजिनव | अरजिनवर |

# पहेलेथी ग्राहक थनारना नाम.

## ९२ मंदसोर.

१५ शेठ. उतमचंद रीषवदास नाहार.
१५ शा. गणेस रामलक्षमणदास.
१० संघवी. कुंदनमल फूलचंद.
१० जडावसिंघ रतलाल संचेति भालोटना.
५ सवाई रामजी चोपडा.
५ गुमानजी नाना लालजी.
५ वृधीचंदजी चंपालाल पोरवाड.
४ भगवानजी मोतिलाल भजनवाला.
२ उतमचंदजी नंदलाल वांकीयावाला.
२ मनाजी केशरीमल रतलामी.
२ रीषभदास घासीराम राजा खेडीवाला.
१ नाथुजी उदाजी नवापुरावाला.
१ गुलाबचंदजी "राठोड."
१ रीषवदास चंपालाल तमाकुवाला.
१ वृधिचंद कीसनलाल पोरवाड.
१ धनराज गुलाबचंदजी.
१ संघवी. कीसनलाल केसरीमल.
१ चीमनलाल मच्छीवाला श्रावक.
१ मनाजी ढिलीया परताप घढना.
१ मोदी. दुवाजी परताप गढवाला.
१ बहादर मलजी दुगड.
१ पुनमचंदजी चंपालालजी पो.
१ कोठारी. लक्ष्मीचंद नारायण गढना.
१ कालुजी थावरचंद मालपरोया.

१ चुनिलाल घासीराम अमरावाद.
१ लक्ष्मणजी रत्नलालजी.
१ चुनिलाल चंपालाल खानपुरा.
१ वच्छराज नाथुराम खानपुरा.

### १० [illegible]ढ.

२ कोठारी. मोतिलालजी.
२ कोठारी. इश्वरलालजी.
२ लोढा. उतमचंदजी.
१ मनालाल मोहनलाल चोरडीया.
१ गबुजी रत्नलाल पांमेचा.
१ सागरमल चोथमलजी.
१ फकीरचंदजी पोरवाड.

### ३ परताप घढ.

३ शेठ. लक्ष्मीचंदजी घीया.

### २५ छोटीसादरी.

२५ शेठ. नंदरामजी पन्नालालजी.

### ५ जीरण.

५ उँकारलालजी चीमनलालजी.

### १ धमनार.

१ केशरी मल्लजी मेघराजजी.

### १ भाणपुरा.

१ चूनिलालजी साहेरवाला.

### १२ रींगणोद.

२ चंपालाल चोगचंद सालगीया.
१ ठाकोर. रणजीत सिंहजी.
१ सुखराम जडावचंद चोपडा.
१ मेहेता. फतेचंदवृधिचंदजी.
१ यति. प्रेमचंदजी पुनमचंदजी.
१ पूजारी. नाना लालजी.

१ मूलचंद धूलचंद ललवाणी.
१ गंभीरचंदजी कांकरीया.
१ सीवलाल मोतिलाल पोरवाड.
१ बृधिचंदजी चांदमल चोपडा.
१ धुलचंदजी चोपडा.

### १४ सीतामउ.

१ शेठ. जवारमलजी.
१ तेसीलदार. लालसिंहजी नवलखा.
१ तखतमलजी नवलखा.
१ वकील. जसवंत सिहजी.
१ उंकारलालजी बेरडीया.
१ इंद्रमलजी तातेड.
१ हीरालालजी भणसाली.
१ समेरमलजी तमाकुवाला.
१ मेहेता. नंदलालजी.
१ पुनमचंदजी भणसाली.
१ चोधरी. रामलालजी.
१ केशरीमल हरखावत.
१ खुमानसिंहजी नवलखा.
१ भणसाली. मोतिलालजी.

### १२ जावरा.

५ मोहनलालजी लुणिया.
५ जवेरी. नथमल भगीरथ.
२ भवरलाल पारेख.

### २ वांगरोडजी, सलाणा.

२ उंकारलाल रूपचंदजी.

### ६० रतलाम.

११ शा. कालुजी वीरचंदजी पीपाडा.
७ शा. भागीरथ शांतिदास मालवि.

५ जवारमलजी लुणावत.
५ केशरीमलजी पुनमचंद चंडालीया.
२ नथुजी दुगडवाजणावाला.
२ शा. रतीचंद रेखराज वोडाणा.
१ डुंगरसि केशरीमल गुगलीया.
१ भुदरजी ताराचंदजी.
१ जीतमल मीसरी मलदलाल.
१ भगीरथ मनाजी सुराणा.
१ बापणा. नाथुजी सोभाग्यचंद वांजगा.
१ कालुजी पांड्या.
१ श्राविका सुंदरबाई.
१ डुंगरसी केसरिमल लुणीया.
६ भंडारी. केशरीमलजी- ३७
१ मोदी. धनाजी केशरीमलजी मालवी.
१ रुपचंदजी नानालालजी.
१ गबुजी कासवाजी.
१ मेघाजी भगवान नाहार.
१ गुलाबचंद शोभाग्यचंद लोढा.
१ भगजी केशरीमलजी मालवी.
१ गुलाबचंद उदेचंद चोपडा.
१ पोरवाड. गुलाबचंद उदेचंद.
१ जेठमलजी केशरीमलजी.
१ बालजी गुलाबचंद वहोरा.
१ चांदमलजी अगरवाल.
१ चंपालाल मालवी.
१ मेराजी सराफ.

## ७ निमचच्छावणी.

७ शा. बीजराजजी भणसाली.

३ महु छावणी.

१ मनाजी दयारामजी.
१ बंबोरी. केवलराम पन्नालाल.
१ बंबोरी. थावरजी धनराजजी.

२ बदनावर.

२ ज्ञानमंडली जैनसभा—

३ उजयन.

३ नरसीकरमसी कछि. ह. पद्मसी.

५७ इंदोर.

१५ शेठ. नथमलजी गंभीरमलजी.
७ घमंडसी जुवारमलजी—
७ श्राविका भूरीबाई.
७ श्राविका केशरबाई.
७ नथमलजी मुंबाइवाला.
७ मास्तरणी. मीसरींबाई.
३ श्राविका. केशरबाई.
३ श्राविका. गेंदीबाई.
१ नगरवाला खेमचंदभाई.

६ रुनीजा.

२ चतुरभुज जडावचंद संकलेचा.
१ हीरालालजी संकलेचा.
१ हजारी मलजी संकलेचा.
१ रूपचंदजी संकलेचा.
१ रतलालजी.

३ मु. डग.

१ मीलापचंदजी.
१ गुलालचंद गीरधारिलाल.
१ गीरधारीलाल जमनादास.

१ मु. सावण.

१ गुरां. डुंगरसी कालुराम.

१ रामपुरा.

१ गुरां राजमलजी.

२ देलवाडा.

२ गुरां श्रीलाल लक्ष्मीलाल नेणावाल.

३ मु. बडोद दे० मालवा.

१ पोखरजी. भैरुलाल.

१ महात्मा. हुकमीचंदजी.

१ केशरीमल दलाल.

१६ मु. झारडा.

११ शेठ. धुरचंदजी नानालाल.

५ नेमचंद भेराजी नाहार.

२ सुजानपुर.

१ शा. धनजी खेराजजी.

१ शा. भाणजी माणेकचंद.

४ आकोदीया. मालवा.

१ शा. रवजी देवजी.

१ शा. गोवधजी कुंवरजी.

१ शा. पासुदेवजी.

१ शा. रतसी भाईचंद.

१५४ महिदपुर–

१११ शेठः धुरजी गणेसजी मालवी.

७ कोचर गुलाबचंद केशरीमल्ल.

५ सेतानमल्ल रुंडवाला.

५ पोरवाड. रीखदास रतलामी.

२ खुबचंदजी चुनीलालजी.

२ केसरीमलजी हर्षचंद मेसरी.

२ छगन मलजी कोचर.

२ केशरी मलजी भटवरा.
२ जडावचंदजी असाडीवाला.
२ चांदमलजी संखलेचा.
२ भगाजीकेशरी मलजी लुंकड.
१ कालुमी चुनीलाल चोपडा.
१ लख[illegible]जी मुता.
१ नगीनचंद बागमल्ल बुरड.
१ चांदमलजी रुंडवाल.
१ उंकारजी लुंकड.
१ हीरालाल मालवी.
१ चांदमलजी भटवरा.
१ कस्तुरचंद गांधी.
१ टेकचंदजी नवलखा.
१ तीलोकचंदजी खाचरोदवाला.
१ अमीचंदजी नेमचंद लुंकड.
१ चंपालालजी मोतिलाल मास्तर.

## ३ नायका. पोष्टसमी.

१ हालचंद हाथीचंद.
१ वाडीलाल न्यालचंद.
१ अमथालाल मंछाचंद.

## १ पालणपुर.

१ पारी. मणीलाल खुसालचंद.

## ५ दाहोद.

४ माणेकलाल नाहलचंदजी.
१ बाठीया. शोभाग्य मलबाग मलजी.

## ३ परभास पाटण.

२ हंसराज खुसालचंद.
१ पानाचंद नेमचंद.

२ चाणसमां.

१ शा. मणीलाल डाह्याचंद.

१ शा. गभरुचंद हेमचंद कापडीया.

१५ बालापुर.

१५ जैनपाठशाला ह. हांसीलालजी.

२ कामठी.

२ केशरीमल प्यारचंदजी पोरवाड.

२ धुलीया.

२ भांणजीभाई देवजी कच्छि.

३ लुणावाडा.

३ शा. रायचंद कालीदास.

१० सुजाण घढ'

५ संघवी. पनेचंदजी.

२ गुलाबचंद चिंतामणदास ढोर. जेपुरवाला.

१ इंद्रचंदजी संघवी.

१ वच्छराजजी संघवी.

१ कनकमलजी लोढा.

५ पाली.

१ नवलचंद संपतचंदजी.

१ चंदनमलजी छाजेड.

१ बचु लालजी मूता.

१ तेज मालजी.

१ लालचंदजी.

२ जयपुर.

१ जवेरी. कनैयालाल इंद्रमल ढढा,

१ फूलचंदजी परतापचंद ढढा.

३ वल्ला ( वलभी. )

१ शेठ. गुलाबचंद जीवाभाई.

१ मेहेता, मोहनलाल नरसींह.

१ भीखाभाई हकमचंद.

### ४ आदरणा.

२ बेलाज्ञान भंडार.
१ दोसी. नेमचंद कुंवरजी.
१ दोसी. प्राणजीवन कीरचंद.

### ३ जामनगर.

१ साहित्य प्रकाश मंडल.
१ कस्तुरचंद कसलचंद.
१ रूपसी देवजी–

### २ चूडा. राणपरपासे.

१ कपासी. कस्तुरभाई चतुर.
१ जैनोत्तेजक सभा, ह. तंत्री पानाचंद,

### २० वीरमगाम.

१ जैनधर्म विजय पुस्तकालय.
१ गांधी. कचराभाई कस्तुरचंद.
१ बाई नाथी तपगच्छना उपाश्रयमां.
१ कमलसी लाडकचंद.
१ कस्तुरचंद बल्यमचंद.
१ बाई. परसन पालणपुरना.
१ जवेरी. माणेकचंद खेतसी.
१ संघवी. उमेदचंद अमथा.
१ मणीयार. केवलचंद पानाचंद.
१ छोटालाल जोइतादास.
१ पारीख. छगनलाल फूलचंद.
१ ललुभाई रत्नचंद.
१ गोपालजी केशवजी.
१ नथुभाई खेतसी.
१ दोसी. सोभाग्यचंद नथुभाई.
१ प्रेमचंद गणजी.
१ शेठ. छगनलाल चतुरदास.

१ जवेरी. वीरचंद धर्मचंद.
१ गांधी. मगनलाल सांकलचंद.
१ मेहेता. मणीलाल घेलचंद छनीयार.

५३ अमदावाद.

४७ शा. दलसुखराम मोतीचंद तथा रत्नचंद हीराचंद्र ना स्मरणार्थे.
१ लालभाई मणीलाल ४० हजारी.
१ बुधाभाई भुराभाइ कपालकुटीया.
१ केवलदास गगलचंद्र.
१ मफतलाल ठाकरसी.
१ सोभागीलाल सोमदास.
१ वाडीलाल गगलदास..

१ कोंठ.

१ आचार्यश्री आत्मारामजी पाठशाला.

२४ मुंबई बंदर.

१५ संघवी. कस्तुरचंद नानाचंद रुपालवाला.
२ दोलचंद वेणीचंद मांणसावाला.
१ जयचंद शोभाग्यचंद बाहारकोट.
५ गुलाबचंद यकमाची.
१ शा. चूनिलाल उजमचंद पालणपुरी.

५ दमण बंदर.

१ वीरचंद हरखचंद.
१ हेमचंद नेमचंद.
१ भुखणदास अनुपचंद.
१ जवेरचंद हंसराज.
१ नवलचंद दीपचंद.

५ शीनोर.

५ शेठ. नाथाभाई नरोतमदास.

९ वडोदरा.

५ आदिजिन मंडल.

२ वैद्य. वाडीलाल मगनभाई.

१ सेठ दलपतभाई जगजीवनदास.

१ शेठ, नेमचंद बेहचरदास.

१० सुरत बंदर.

१० जवेरी. नगीनचंद कपूरचंद.

१ सादरा.

१ कालीदास देवचंद.

१ एडण-अरबस्थान.

१ फूलचंद रखजी.

१० कलकत्ता बंदर.

१० रामचंद जेठाभाई जयचंद.

१५ हेदराबाद.

३ कीसनचंद घाडावत.

३ शेठ. लालजी मेघजी कच्छी.

२ लक्ष्मीलाल विजयलाल निमाणी.

२ पुनमचंद गणेसमलजी.

२ अमरसी सुजानमलजी.

२ हीराचंदजी पुनमचंदजी छेलाणी.

१ मुनिम. जेठमलजी.

२० गुरुकाझंडीया- पंजाब.

२० खरातीमल लक्ष्मणजी भावडा—

५ अंबाला. पंजाब.

१ भावडा. हरीचंद इंद्रसेन.

१ भावडा. जगतमल सदासुख.

१ भावडा. जगननाथ सादीराम.

१ भावडा. विलायतिराम चिंतामणिदास.

१ भावडा. गोपिचंद दीपचंद.

## २ लाहोर. पंजाब.

२ हीरालाल गंगाराम जैनी.

## ३ बणकोडा.

३ चंपालाल नीहालचंद तारवत.

## १ डुंगरपुर.

१ कस्तुरचंदजी चंपालाल कोटडीया.

## ५ रोबरटस पेंठ.

५ हीरालाल रीषवचंद बापगा.

## ६२ बडनगर.

११ शा० छोटालाल हमीरमलजी.
५ महेता० ताराचंद कस्तुरचंदजी.
५ शा० लखमीचंद कानजीभाई.
५ बापुजी फतेचंदजी बरबोटा.
१ नंदरामजी सागरमल.
१ थावरजी भोलारामबुरड.
१ अमरचंदजी मउवाला.
१ जोरजी गणपतजी बरेडीवाला.
१ मोतिलालजी नथमल.
१ मोतिलालजी चोपडा.
१ शांतिलाल नेमचंद इंदोरवाला.
१ हजारी मलजी हीराचंदजी.
१ पन्नालालजी चोरडीया.
१ कुंवरजी पृथ्वीराज.
१ भगजी नानुराम.
२५ शा. लखमसी माणेकचंद.

## १ कायथा.

१ वागमल मेलापचंद गुलेछा.



# શ્રી હંસવિનોદનાં અગાઉથી થયેલાં ગ્રાહકોનાં નામ.

### ૧ પુના.
૧ શા. રતનચંદ કીસનાજી

### ૨ ભોસરી.
૨ શેઠ બાબુરાવ હુકમચંદજી

### ૨ ચાકણ.
૧ શા. કંકુચંદ મયાચંદ

૧ શા. બાપુભાઇ લક્ષ્મીચંદ

### ૧ ખેડ.
૧ શા. નેમચંદ નાનચંદ

### ૧ પેઠ.
૧ શા. માનચંદ મંછારામ.

### ૩ મનચર.
૧ શા. આણંદરાવ માનમલ.

૧ પારેખ રામચંદ કેશવલાલ.

૧ ,, દલીચંદ રવચંદ

### ૧ કલમ.
૧ શા. હેમચંદ મોતીચંદ

### ૩ કંતુલ.
૧ શા. ચુનીલાલ ખીમચંદ

૧ શા. ધનજીભાઇ લક્ષ્મીચંદ

૧ શા. કલ્યાણજી નથુભાઇ.

### ૧ વડગામ.
૧ શા. મોહનલાલ લલુભાઇ

### ૧ કોપરગામ.
૧ શા. પન્નાજી ખુશાલચંદ

### ૨ મનમાડ.
૧ શા. મોતીલાલ ગુલાબચંદ

૧ શા. છગનલાલ વાલચંદ

### ૧ શીરૂડ.
૧ મણીલાલ ઉત્તમચંદ ટાઇમકીપર

### ૧ વીરમગામ.
૧ શા. પરસોતમ ગેલાભાઇ

### ૧ ચુંડી જલગામ.
૧ શાંતિલાલ પન્નાલાલ મારવાડી.

### ૨૧ માલેગામ.
૫ શા. વેલચંદ ચતુરની વિધવા પત્ની સોનબાઇ.

૨ શા. મગનલાલ માણેકચંદ

૨ ભંડારી જવાનમલજી જીતમલજી

૨ શેઠ હસ્તીમલજી શેરસિંગજી

૧ શા. મોતીલાલ વીરચંદ

૧ શા. કીસનદાસ ભૂખણદાસ

૧ શા. લાલચંદ કેવળચંદ

૧ શા. બાલુભાઇ રૂપચંદ

૧ શા. રૂપચંદ પ્રેમચંદ

૧ શા. સાંકળચંદ હીરાચંદ

૧ શા. ગુલાબચંદ નાનચંદ

૧ શા. ભાગ્યચંદ દગડુશા.

૧ શા. ધરમચંદ લાલચંદ હસ્તે હીરાબાઇ

૧ શા. ચુનીલાલ ખીમચંદ

**૪૭ ધુળીયા.**

૭ શેઠ સખારામ દુર્લભદાસ
૫ અંબાવીદાસ શામદાસ
૫ જોગીલાલ ગુલાબચંદ
૫ હીરજી રતનશીની કુંપની
૩ શા. ફોજમલ માનમલજી
૧ શા. ખીમજી ખેતસી
૧ શા. શીવચંદ વખતચંદ
૧ શા. નાગસી ભોજરાજ
૧ શા. રતનલાલ માંગીલાલ
૧ શા. અરજણ લાધાભાઇ
૧ શા. ગોવીંદજી ખીમજી
૧ શ્રી જૈન જ્ઞાન શાળા.
૧ પ્રાણી રક્ષક સંસ્થા.
૧ શા. મીઠાલાલ દીપચંદ
૧ શા. કાનજી તેજસી
૧ શા. કુંવરજી કાનજી
૧ શા. ઉભાયાભાઇ રાઘવજી
૧ શા. જેઠુભાઇ લાલજી
૧ શા. હંસાજી કરતાજી
૧ શા. રતનાજી કાનાજી
૧ શા. ચાંપાજી હુકમાજી
૧ શા. હીરજી નાંગસી
૧ શા. હીરાચંદ મુળચંદ
૧ શા. જેઠુ મુરારજી
૧ શા. લધુ સોજ્યાલજી
૧ શા. દેવસી ખીયસી
૧ શા. જેઠાલાલ રાઘાણી

**૫૬ મુંબાઇ.**

૧ શા. રતનસી શામજી
૫૦ કોટમાં શ્રી શાંતિનાથજીના દેરાસરમાં બેસનાર વગેરે તરફથી
૫ કલ્યાણજી થોભણ

**૩૩ વડોદરા.**

૩૩ એક શ્રાવક તરફથી સાધુ સાધ્વીને આપવા માટે.

**૧ પાંચોરા.**

૧ શા. ગુલાબચંદ બાલચંદ

**૧ મુરબાડ.**

૧ શા. મોહનલાલ સરૂપચંદ

**૫ આકોલા.**

૫ શા. પૃથ્વીરાજ રતનલાલ

**૩૫ શીરપુર.**

૪ શા. મોતીચંદ મનછાશા.
૩ શા. હીરજી રતનશીની કુંપની
૨ બાઇ કુંવરશી વરશી
૧ શા. નથુ પદમશી
૧ શા. પાસુ પદમશી
૨ શા. મગનચંદ તારાચંદ
૧ શા. ઝીપરૂ નગીનચંદ
૧ શા. હંસરાજ ખુશાખીદાસ
૧ શા. હેમચંદ લક્ષમીચંદ
૧ હીરાલાલ ક્રીસનદાસ ભાગવી
૧ શા. હીરાલાલ જીવરાજ
૧ શા. વીરચંદ લહેરચંદ
૧ શા. માણેકચંદ મુલચંદ

૧ શા. જેચંદ કસ્તુરચંદ
૧ શા. નાનચંદ રવચંદ
૧ શા. ખેમચંદ વેલચંદ
૧ શા. ધરમચંદ રાયચંદ
૧ શા. વાલચંદ દેવચંદ
૨ બાઇ સુંદરબાઇ
૧ દગડીબાઇ
૧ જેકીબાઇ
૩ તેજાંબાઇ
૧ જેઠાંબાઇ
૧ ભીખીબાઇ
૧ મુનિ માણેક જૈન કન્યાશાળા.

**૬ બુરાનપુર.**

૧ શા. દુર્લભદાસ મીઠાશા.
૫ શા. મગનદાસ દેવચંદ

**૧ બેટમા.**

૧ શા. લુણીરામ ચંપાલાલ.

**૧૨૪ ઇંદોર.**

૫ **રા. બ.** શા. હુકમચંદ ભીખમચંદ જૈન શ્વેતાંબર વકીલ
૫ શા. સરદારમલજી ગુલચંદજી
૫ શા. દેવચંદ પનાલાલ.
૨ શા. શાંતિલાલ નાનચંદ
૫ જીતમલજી નથમલજી
૫ નંદલાલ મોતીલાલ.
૫ ચંપાલાલ રૂપચંદ
૫ તારાચંદ માણેકચંદ
૩ શીવબખસ નંદરામ ચોધરી
૨ કુંજીલાલજી ચુનિલાલજી
૧ હીરાચંદજી બાલકીસનજી શ્રી શ્રીમાલ.
૧ કરનીદાનજી ખેમચંદ કોચર
૧ નંદલાલજી મોતીલાલજી ચોધરી
૧ સોવંકસજી નંદરામજી ચોધરી
૧ ચાંદમલજી વાઢીયા.
૧ તેજકરનજી સુરાના.
૧ મોતીલાલજી દેપાલપુર
૧ પનાલાલજી તમાખુવાલા.
૧ લખમીચંદ અમરચંદ લુનાવત
૧ શીરચંદજી ભંડારી
૧ પુનમચંદજી મનોત.
૧ નંદરામજી કનૈયાલાલજી
૧ ચુનીલાલજી માનકચંદજી
૧ સમરતમલજી માનકચંદજી ભાંડાવત.
૧ સાગરમલજી મુતા જાવરાવાલા.
૧ પુનમચંદજી ફુલચંદજી સેખાવત.
૧ અંબાલાલ ગેંદાલાલ.
૬૬ એક ભાવિક શ્રાવક તરફથી સાધુ સાધ્વીઓને આપવા માટે.

**૬ ડભોઈ.**

૨ શ્રી આત્મારામજી જૈન પાઠશાલા.
૧ ડાહ્યાભાઇ ગુલાબચંદ
૧ શીવલાલ જયચંદ

૧ ચુનીલાલ ગરબડ
૧ જેચંદ વનમાલી

## ૨૦ શીનોર.

૨૦ શા. નાથાભાઇ નરોતમદાસ

## ૨૯ રતલામ.

૨૫ જોરાવરમલજી ચોથમલજી
૨ માણેકલાલજી ભંડારી
૨ વૃદ્ધિચંદજી છોગાલાલ

## ૧ ભરૂચ.

૧ શા. રાયચંદ વધુભાઇ

## ૩૧ પાટણ.

૩ સાગરગચ્છના ઉપાશ્રયે હા. વાડીલાલ દલાલ
૨ શા. મોહનલાલ અમુલખચંદ.
૨ શા. છગનલાલ આલમચંદ.
૨ બાઇ ચંચલ ફોફલીયાવાડાવાળાં
૨ શા. ચુનીલાલ વીરચંદ
૨ શા. પ્રેમચંદ દેવચંદ.
૧ શા. ચુનીલાલ મગન.
૧ શેઠ હરીચંદ દલછારામ.
૧ શા. ઉત્તમચંદ વીરચંદ.
૧ શા. મોતીચંદ સાકરચંદ.
૧ શા. વેલચંદ દેવચંદ.
૧ શા. ત્રિભોવન નાલચંદ.
૧ શા. મોહનલાલ ડાહ્યા.
૧ શેઠ કેવલ પાનાચંદ
૧ શેઠ નાલચંદ પાનાચંદ
૧ શા. મોતીલાલ રતનચંદ
૧ શા. નગીનદાસ વેલચંદ
૧ શેઠ માણેકચંદ ખેમચંદ
૧ શા. પુનમચંદ રામચંદ
૧ કંસારા રામચંદ આલમ
૧ દીપચંદ ચુનીલાલ
૧ મયામી વેલજી
૧ તલકચંદ ડાહ્યા.
૧ બાઇ ભુરી
૧ ચોકસી મણીલાલ ચુનીલાલ

## ૧૪ વેરાવલબંદર.

૧ શા. જેપાલ પાનાચંદ.
૧ શા. જેચંદ ખીમજી.
૧ શા. હંસરાજ વશનજી.
૧ શા. ખુશાલ કરમચંદ.
૧ શા. લાલચંદ દેવચંદ.
૧ શા. ખુશાલ વીરજી.
૧ શા. માધવજી રતનજી.
૧ શા. વલભજી તારાચંદ.
૧ શા. લીલાધર પાનાચંદ
૧ શા. લખમીચંદ મૂરચંદ.
૧ બાઇ પારવતી ધરમસી
૧ શા. લાલજી દીઆરચંદ
૧ વશા નેમચંદ માણેકચંદ.
૧ મેઘજી માણેકચંદ
૧ શ્રી જ્ઞાનવર્ધક શાળા

## ૯ લશ્કર ગ્વાલીયર.

૬ શા. નથમલજી બાગમલજી ગુલેછા

૧ ઝવેરી નથમલજી
૧ શા. જાતરી મલજી મુથા
૧ શા. ગોપી મલજી સુરાણા

### ૧ રૂઇ.

૧ પુનમચંદજી જવરચંદ

### ૪ ઉજજન.

૨ કેસરીમલજી સરદારમલજી વહોરા
૧ રખબદાસ રતનલાલ
૧ ઘેવરચંદ હ્રઢ્ઢા

### ૨ પાલણપુર.

૨ દલાલ લાલચંદ જેઠાચંદ

### ૧ ચાણસમા.

૧ ખુશાલ શવચંદભાઇ

### ૧ જલગામ.

૧ શા. કલ્યાણજી કેશવજી

### ૨ દેવગઢબારીઆ.

૨ શંકરલાલ ગીરધરલાલ

### ૧ હાંસલપુર.

૧ રૂપચંદજી ભેરૂલાલજી

### ૨ માનપુર.

૨ પુનમચંદ કનૈયાલાલ

### ૧ સુરત.

૧ શા. ખીમચંદ કલ્યાણચંદ
જરીવાળા

### ૧ દમન.

૧ શા. નેમચંદ ચુનીલાલ

### ૨ અમદાવાદ.

૧ જેશંગભાઇ કાળીદાસ
૧ ખીમચંદ દલીચંદ

### ૯ મુદ્રાબંદર (કચ્છ)

૧ શા. હીરાચંદ લીલાધર
૧ શા. પોપટ ઝુરચંદ
૧ પા. હાથી નાથા
૧ શા. જસરાજ ખીમજી
૧ દામા જીવા તથા સાકરચંદ કાનજી
૧ શા. ટોકરસી ગોપાળજી
૧ શા. વર્ધમાન હીરાચંદ
૧ શા. સાકરચંદ કપુરચંદ
૧ મેહેતા નાગજી હંશરાજ

### ૧ રાધનપુર.

૧ કરમચંદ મનસુખરામ

### ૧ ગોતમપુરા.

૧ શા. ધનજીશા મુળચંદ

### ૨ ખાખર મોટી ( કચ્છ )

૧ શા. લધા મોણસી
૧ શા. જગસી લખમીચંદ

### ૧૫ યેવલા.

૧ આશારામ માનચંદ હસ્તે
વેલચંદ
૧ રૂપચંદ ચિંતામણીદાસ હ.
માણેકચંદ
૧ શા. સાકરચંદ અંબાવીદાસ
૧ શા. માણેકચંદ ગુલાબચંદ

૧ શા. પોપટલાલ ચુનીલાલ
૧ શેઠ હરખચંદ રતનચંદ
૧ શા. દીપચંદ હેમચંદ
૧ શા. છગનલાલ દુલભદાસ હ. રૂપચંદશા.
૨ શા. રંગીલાલ દેવચંદશા. હ. બાલુભાઇ
૧ જાનકીબાઇ તે કલ્યાણજીભાઇની દીકરી
૧ બબુબાઇ વધુશા હરખચંદની દીકરી
૧ સીતાબાઇ તે બાલુશાની મા
૧ વાલબાઇ તે માણેકચંદ વીરચંદની મા.
૧ હીરાબાઇ તે નાનચંદ કીકાશાની દુકાને

## ૧૦ સંગમનેર.

૧ શા. પીતાંબર કચરાભાઇ
૧ શા. દલીચંદ જયચંદ
૧ શા. કસ્તુરચંદ ખુશાલચંદ
૧ દોશી ચુનીલાલ ભીખચંદ
૧ દોશી લક્ષ્મીચંદ વીરચંદ
૧ શા. જીવરાજ કેશરચંદ કટારીવા
૧ શા. મોહનલાલ માણેકચંદ ગુજરાતી
૧ શા. ધરમચંદ અમુલખ
૧ શેઠ કસ્તુરભાઇ ભાવસાહેબ
૧ મોહનલાલ લલુ વડગામવાળા

## ૨ ચીકણુ.

૨ શા. કંકુચંદજી મયાચંદજી તથા બાપુભાઇ લક્ષ્મીચંદ

## ૭ જુનાગઢ.

૧ છોટાલાલ ત્રીભોવન શેઠ
૧ છોટાલાલ પ્રેમજી શેઠ
૨ રૈવતગીરી વિદ્યાશાળા જુનાગઢ
૧ રા. રા. મણીલાલ મનસુખરામ
૧ શેઠ નથુભાઇ લખમીચંદ
૧ તલકચંદ પ્રભુદાસ શંઘવી

## ૧૦ કલકત્તા.

૧૦ શા. સુમેરમલજી સુલાણા